समभाव-समदृष्टि के

सबक़

दिनांक 07 अप्रैल 2019 - 01 सितम्बर 2019

एकता का प्रतीक

प्रकाशक
सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजि.)
"वसुन्धरा" ग्राम भूपानी–लालपुर रोड फरीदाबाद–121002 (हरियाणा)
ई–मेलः info@satyugdarshantrust.org
website: www.satyugdarshantrust.org
© सर्वाधिकार सुरक्षित सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजि.)
ISBN : 978-93-85423-21-5

प्रथम संस्करण
सितम्बर, 2019

समभाव-समदृष्टि के

सबक़

दिनांक 07 अप्रैल 2019 - 01 सितम्बर 2019

सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार

★ महामन्त्र★

साडा है सजन राम,
राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है।
उसी को जानो,
मानो और वैसे ही
गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु,
शरीर नहीं है।

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं,
ज्ञान को अपनाओ ।
निमित्त में नहीं,
नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

अनुक्रमणिका

क्रमांक	विवरण	पृष्ठ संख्या
अप्रैल 2019		
1. दिः 07 का सबक़	परमार्थ दृष्टि-1	01
2. दिः 14 का सबक़	परमार्थ दृष्टि-2	07
3. दिः 21 का सबक़	आओ युक्तिसंगत बढ़ें विजय-पथ की ओर	12
4. दिः 28 का सबक़	आओ दृढ़ संकल्प होकर बढ़ें अपने जीवन लक्ष्य की ओर	24
मई 2019		
5. दिः 05 का सबक़	साडा है सजन राम, राम है कुल जहान	32
6. दिः 12 का सबक़	हम बढ़ रहे हैं दुर्जनता से सजनता की ओर	40
7. दिः 19 का सबक़	आओ बढ़ें स्वार्थपरता छोड़ निःस्वार्थता की ओर	51
8. दिः 26 का सबक़	आओ अविचार छोड़ विचार को अपनाएं	63
जून 2019		
9. दिः 02 का सबक़	कुसंगति छोड़ सत्संगति अपनाने का आवाहन	74
10. दिः 09 का सबक़	आओ श्रेष्ठ मानव बनें	83
11. दिः 16 का सबक़	आओ मूर्खता छोड़ विद्वान बनने का संकल्प लें	93
12. दिः 23 का सबक़	आओ अवगुण त्याग गुणवान बनने का निश्चय लें	102
13. दिः 30 का सबक़	आओ निर्बलता छोड़ बलवान बनने का संकल्प लें	109

अनुक्रमणिका

क्रमांक	विवरण	पृष्ठ संख्या
जुलाई 2019		
14. दिः 07 का सबक़	आओ निर्धनता से उबर धनवान बनें	119
15. दिः 14 का सबक़	आओ बुद्धिहीनता त्याग, बुद्धिमान बनने का संकल्प लें	129
16. दिः 21 का सबक़	आओ अज्ञानता का त्याग कर ज्ञानवान बनें	139
17. दिः 28 का सबक़	आओ अधम व मंद अधम अवस्था से उबर उत्तम पुरुष बनने हेतु महाबीर जी के वचनों की पालना करने का संकल्प लें	154
अगस्त 2019		
18. दिः 04 का सबक़	आओ बहिर्मुखी बने रह अपना जीवन बिगाड़ने के स्थान पर अंतर्मुखी हो व सद्ज्ञान प्राप्त कर अपना जीवन संवार लें	165
19. दिः 11 का सबक़	आओ चरित्रहीनता का त्याग कर, चरित्रवान बनने का दृढ़ संकल्प लें	178
20. दिः 18 का सबक़	आओ चंचलता छोड़ एकाग्रचित्त होने का पुरुषार्थ दिखाएं	192
21. दिः 25 का सबक़	सबक़	202
सितम्बर 2019		
22. दिः 01 का सबक़	सबक़	208

दिनाँक 7 अप्रैल 2019 का सबक़

परमार्थ दृष्टि-1

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,

उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों भौतिक दृष्टि जिसके द्वारा आप इस परिवर्तनशील जगत को देखते हो उसके विषय में तो आप सब जानते ही हैं परन्तु आज हम निष्कंटक परमार्थ के रास्ते पर सहजता से चलते हुए, मंजिल तक पहुँचने के लिए जिस दृष्टिकोण की आवश्यकता है उस परमार्थी दृष्टि के विषय में जानेंगे। कृपया ध्यान स्थिर होकर सुनो व समझो।

सजनों हम सब जानते हैं कि परिवर्तन सृष्टि का नियम है। जैविक, भौतिक तथा सामाजिक तीनों जगत में यह परिवर्तन दिखाई देता है। क्षण-प्रतिक्षण व्यतीत होते हुए समय का बदलना, दिन के बाद रात का आना, ऋतुओं का बदलना, जीवन अवस्थाओं का बदलना, क्रमवार युगों का बदलना, जीवन घटनाओं व परिस्थितियों का बदलना, मानव की आंतरिक स्थिति और व्यक्तित्व का बदलना, बार-बार उपजना-बिनसना आदि सब कुदरत के इस अटल परिवर्तन

के नियम को दर्शाते हैं और जतलाते हैं कि इस जगत में कुछ भी अपरिवर्तनशील व स्थिर नहीं अपितु सब कुछ नश्वर और क्षणभंगुर है। परन्तु समझने की बात यह है कि जो इस परिवर्तनशील सत्ता के पीछे विद्यमान अपरिवर्तनशील चिरंतन सत्ता की धारणा को अपना यथार्थ मानते हुए उस सत्य के आलोक में विकसित विचारधारा अनुरूप अपना समभाव से विकास करता है यानि इस अनित्य देह के द्वारा इस परिवर्तनशील जगत में प्रविष्ट कर, अपनी आत्मा/परमात्मा की शाश्वत अजर-अमर व अटल अवस्था को स्वीकार, तद्नुकूल अपनी मनोवृत्ति, दृष्टिकोण और स्वभाव ढाल लेता है, वह ही इस क्षणभंगुर संसार की निस्सारता को जान, समय अनुसार स्वयं में आपेक्षित स्वाभाविक परिवर्तन लाने में कामयाब हो पाता है। इस प्रकार सत्य का व्यावहारिक व क्रियाशील वाहक बन वह उस ईश्वर की सर्वोत्कृष्ट कृति होने का सत्य जग जाहिर कर परोपकारी नाम कहाता है।

इस संदर्भ में सजनों यदि हम युग परिवर्तन के इस महत्त्वपूर्ण संक्रमण काल को लें तो मानव जीवन के परम लक्ष्य अर्थात् श्रेष्ठतम परम पद को इसी जीवन काल में प्राप्त करने हेतु, सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ जो यथा समय हमें आगामी स्वर्णिम युग की विशेष प्रवृत्ति यानि युग चेतना को धारण कर, तद्नुरूप अपनी चाल या व्यवहार ढाल कर युगधर्मी बनने का संदेश दे रहा है, उस बात को समझते हुए हमें अपनी वृत्ति, स्मृति व बुद्धि को निर्मल रखते हुए ग्रन्थ में विदित नियमानुसार अपने स्वभावों का ताना-बाना बुनना सुनिश्चित करना होगा। कहने का तात्पर्य यह है कि हमें तत्क्षण ही कलुकाल के कलुषित भाव-स्वभाव छोड़, अविलम्ब सतवस्तु के उच्च व पावन भाव-स्वभाव व आचार-संहिता को अपनाने के लिए तत्पर होना होगा और ए विध् उच्च बुद्धि, उच्च ख़्याल हो एकता, एक अवस्था में आना होगा। ऐसा इसलिए भी कह रहे हैं क्योंकि यही समय की माँग भी है। इस माँग को समझते हुए अपने व अपने परिवार के बचाव हेतु स्थिर बुद्धि द्वारा, इस कुदरती ग्रन्थ में विदित, समभाव-

समदृष्टि की युक्ति अनुकूल संतोष, धैर्य का श्रृंगार पहन, सच्चाई-धर्म की राह पर निष्काम भाव से चलते हुए, समाज को, राष्ट्र को व कुल विश्व को जीर्ण करने वाली मान्यताओं को समाप्त या सुसंस्कृत कर आगामी युग सतयुग की नवीन मान्यताओं को स्थापित करने वाले महापुरुष यानि नव युग के निर्माता बनो। मानो इसी में हम सबका कल्याण है और इस शुभ परिवर्तन के आने पर ही समस्त मानव जाति मनमत अनुरूप स्वार्थपरता का अविचार युक्त व द्वि-द्वेष पूर्ण, दुःख भरा चलन छोड़, परमार्थ दृष्टि अनुरूप विचारयुक्त चलन अपना पाएगी और अपने आचार-विचार व व्यवहार को ब्रह्म विचारों अनुसार अलंकृत कर, अपना जीवन सफल बनाने के साथ साथ पुनः सत्य-धर्म का परचम बुलंद कर, अखंड यश-कीर्ति को प्राप्त कर पाएगी।

इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों सर्वकल्याणकारी इस शुभ परिवर्तन को लाने के प्रति अपने मन में उमंग व उत्साह जाग्रत करो और इस हेतु सर्वप्रथम समझो कि परमार्थ दृष्टि होती क्या है?

इस परिप्रेक्ष्य में जानो कि परमार्थ का अर्थ है सर्वोच्च या सर्वोत्कृष्ट सत्य, नाम, रूप आदि से परे यथार्थ तत्त्व, वास्तविक सत्ता, ब्रह्म, सत्य आत्मज्ञान, दुःख का सर्वथा अभावरूप सुख, सार वस्तु।

तथा

दृष्टि से तात्पर्य देखने की वृत्ति या शक्ति से है जिसे आँख की ज्योति, ध्यान, नजर व अवलोकन भी कहते हैं।

इस आशय से परमार्थ दृष्टि से तात्पर्य नाम, रूप आदि से परे सर्वोच्च या सर्वोत्कृष्ट सत्य/वास्तविक ब्रह्म सत्ता का बोध कर आत्मज्ञान प्राप्त करने वाली ध्यान दृष्टि से है। चूंकि यह दृष्टि ही विभिन्न रूप, रंगों वाले प्राणियों व जीवन की परिस्थितियों के मध्य विचरते समय ध्यान द्वारा यथार्थ स्वरूप में ठहरी रह

सकती है और किसी विध् भी संसार से अपना सम्बन्ध नहीं जोड़ती इसलिए इसे अभेद दृष्टि, ज्ञान दृष्टि या समदृष्टि भी कहते हैं। इस संदर्भ में किसी ने कहा भी है:-

जो मनुष्य परस्पर भिन्न दिखाई पड़ते हुए समस्त चराचर प्राणियों में एक अव्यय (परमात्म) भाव की दृष्टि रखता है वही सच्चा सात्विक ज्ञान प्राप्त कर पाता है।

परमार्थ दृष्टि से युक्त मानव सर्वव्यापक भगवान का बोध होने के कारण, सबको भेदभाव रहित होकर समान दृष्टि से देखता है। कहने का आशय यह है कि संसारी मनुष्यों को बाह्यकरण अर्थात् चक्षु आदि पाँचों ज्ञानेन्द्रियों तथा मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार रूप अंतःकरणः चतुष्टय के द्वारा जिस जगत में विभिन्नता, विचित्रता और विविधता दिखाई देती है, परमार्थी मनुष्य सम्यक् और पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने हेतु उस असमन्वित अनेकता के बीच एकत्व की अवधारणा को अपनाता है और इस जगत को ब्रह्ममय जानता है। जैसा कि कहा भी गया है:-

जो व्यक्ति सभी नष्ट होते हुए चराचर प्राणियों में अविनाशी और समरूप से विराजमान परमेश्वर को देखता है वही सचमुच देखता है।

इस तथ्य से स्पष्ट है कि इस संसार में देखते सब हैं, पर सम्यक् रूपेण देखने वाले कम ही होते हैं। अधिकांश बाहर से देखते हैं। कुछ पारखी भीतर तक देख लेते हैं। जो बाहर से देखते हैं, वे उनमें भेद बुद्धि कर लेते हैं। पर जो द्वि-द्वेष व छल-कपट होने के कारण भीतर से निरखते हैं, उन्हें सबके भीतर एक चेतन का ही परिदर्शन होता है। उनकी नजरों में समभाव यानि दृष्टि में समत्व होता है। ऐसे देखने को ही समदर्शिता या परमार्थ दृष्टि कहते हैं। ऐसा व्यक्ति 'एक ही आत्मतत्व सर्वत्र व्याप्त है' इस अवधारणा को आत्मसात् कर, अनेक नामरूपात्मक इस जगत के प्राणियों में किसी भी प्रकार का भेद अनुभव न

करते हुए सबको एक ही नज़र से देखता है और सहज ही आत्मीयता के भाव से विचर पाता है। तभी तो इससे परिवार, समाज व राष्ट्र में अपनेपन का प्रसार होता है और मानव औरों के सुख-दुःख को अपना अनुभव करता है। परिणामस्वरूप दूसरों का सुख बढ़ता है और दुःख घटता है। एकता व एक अवस्था पनपती है और अपना अपकार करने वाले वैरी-दुश्मन के प्रति भी आंतरिक रूप से कोई द्वेष या खेद उत्पन्न नहीं होता यानि सब अपने व सजन मित्र प्रतीत होते हैं। ऐसा ही मानव सहृदय और उदार माना जाता है जिसका अंतर्मन इस प्रकार व्यापक और निष्कलुष हो जाता है।

इस संदर्भ में सजनों हम सब जानते हैं कि संसार निजत्व मोह और पर भेद से पीड़ित है। इसलिए सब लड़-मर रहे हैं और उन्हें लगता है कि अपना, अपना है, पराया, पराया है। यह सोच और यह दृष्टि सांसारिक है। जो औसत से ऊपर उठे मानव हैं, वे अपने जैसा ही दूसरों को देखते हैं। अपने जैसा समस्त लोक को मानो अर्थात दूसरे का सुख-दुःख अपना ही सुख-दुःख समझो, तो यह आदर्श परमार्थ दृष्टि कहलाती है। यह मेरा है, यह दूसरे का है यह विचार लघु यानि संकुचित कमजोर चेतना वालों का होता है। परन्तु उदारचरित महापुरुष वे होते हैं, जो अपनी सहजात स्वार्थ वृत्ति को दबा कर अर्जित परमार्थ वृत्ति या संस्कारगत परोपकार वृत्ति के कारण, समस्त वसुधा को अपना कुटुम्ब मानते हुए सबके प्रति लोकहित की भावना रखते हैं और उन्हें एक जैसा मानते हैं। इसीलिए तो सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में भी कहा गया हैः-

समभाव नज़रों में कर, सजन वृत्ति फड़ियो
सजन भाव नज़रों में कर, सजन भाव प्रकृति में लियाइयो

इस प्रकार परमार्थ दृष्टि से संकुचित स्वार्थ-दृष्टि परिष्कृत होती है और इससे उत्तरोतर अन्तर्मन भी परिष्कृत हो जाता है। तब व्यक्ति का व्यक्तित्त्व सामाजिक, राष्ट्रीय और निखिल मानवता के कल्याण की कामना में निरत हो, परमपिता

परमेश्वर के चरणों में निछावर हो जाता है और आत्म-सत्ता परसत्ता के प्रति पूर्ण समर्पित हो जाती है। यह होता है परमार्थ दृष्टि का कमाल।

इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों मानो कि वह परमतत्त्व विभागरहित, एकरूप होकर भी (ऊपरी दृष्टि से जगदाकार होकर) विभिन्न नाम-रूपों में विभक्त हुआ सा स्थित है। उसकी इस एकता में अनेकता और अनेकता में एकता के रहस्य को समझने हेतु स्वार्थ की संकीर्ण परिधि से ऊपर उठकर उदार और व्यापक परमार्थ दृष्टि से इस जगत को देखो और ए विध् लघुता से प्रभुता की ओर बढ़ते हुए यानि सर्व राम रूप देखते हुए, परमेश्वर के हुक्म अनुसार, निष्काम व त्याग भाव से प्राणी मात्र की सेवा करने में ही अपने जीवन का कल्याण मानो। अंततः ऐसा सुनिश्चित करने के प्रति पुरुषार्थी बनो और अदम्य उद्यम दिखा अपने जीवन की यथार्थ महत्ता को जान आनन्दस्वरूप हो जाओ।

सबकी जानकारी हेतु परमार्थ दृष्टि के विषय में इससे आगे बातचीत आगामी सप्ताह करेंगे। तब तक अपने अन्दर भरपूर उमंग और उत्साह पैदा करो और संकीर्ण मानसिकता को त्याग उदारता में आ जाओ।

दिनाँक 14 अप्रैल 2019 का सबक़

परमार्थ दृष्टि-2

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

गत सप्ताह सजनों हमने जाना कि परमार्थ दृष्टि वह चिन्तन-धारा है जिसमें हम व्यक्त और गोचर जगत के हित-चिन्तन से भी आगे अव्यक्त और अगोचर शक्ति/सत्ता में आस्था रखकर, तद्नुसार श्रेयस्कर, कल्याणकारी आचरण व ध्यान में लीन रहते हैं। इस प्रकार इस उपक्रम के अंतर्गत हम संसार को क्षणभंगुर व बहिर्गत मानकर, मर्यादित संयमित व्यवहार द्वारा सब कार्यव्यवहार अकर्ता भाव से करते हुए, जगत से निर्लिप्त रहते हैं और समभाव-समदृष्टि की युक्ति अनुसार सर्व में ही आत्मेश्वर का दर्शन कर परस्पर सजन भाव का व्यवहार करते हुए, परोपकार कमाते हैं।

इस संदर्भ में सजनों अब आगे जानो कि परमार्थ से बढ़कर कोई धर्म नहीं है। इस संसार में 'स्व' और 'पर' का विभेद ही सांसारिक माया है। आशय यह है कि हम अधिकांश कार्य स्वार्थ भावना से ओत-प्रोत हो, अपने हितार्थ करते हैं किन्तु 'स्व' की संकुचित सीमा से निकलकर 'पर' के लिये निष्काम भाव से अपना सर्वस्व बलिदान करना ही सच्ची मानवता है। यही धर्म है और यही

पुण्य है। आत्मिक सुख और जीवन की शान्ति के लिये इसी प्रकार की परमार्थ दृष्टि का होना परम आवश्यक है।

यदि ध्यान से देखो तो 'परमार्थ-दृष्टि' शब्द विन्यास से यह स्पष्ट भी होता है कि 'पर' उपसर्ग में 'अर्थ' प्रत्यय लगने से 'परार्थ' और संस्कृत स्वरूप प्रदान करके 'परमार्थ' शब्द का सृजन हुआ है जिससे 'परहित' या 'लोकहित' शब्दार्थ निरुपित होता है एवं इस प्रकार की विचारधारा से अलंकृत स्वरूप संयोजन से जो 'दृष्टि' बनती है वह 'परमार्थ-दृष्टि' कहलाती है।

कहने का आशय यह है कि मनुष्य की दो वृत्तियाँ होती हैं यथा स्वार्थ वृत्ति और परमार्थ वृत्ति। स्वार्थ से पृथक यह परमार्थ या परहित वृत्ति ही उसकी परोपकारी दृष्टि का निर्माण करती है। इसमें अपने सिवाय दूसरों के हित को ध्यान में रखकर, सबके कल्याणार्थ तन-मन-धन से अपना सहयोग दिया जाता है। देखा जाए तो मानवता का उद्देश्य और मानव जीवन की सार्थकता भी इसी में है कि वह अपने कल्याण के साथ दूसरों के कल्याण की भी सोचे यानि उसका कर्त्तव्य है कि स्वयं उठे और दूसरों को भी उठाये और इस प्रकार अपने धर्म या कर्त्तव्य का निष्ठापूर्वक पालन करे।

उपरोक्त तथ्य से सजनों स्पष्ट होता है कि मनुष्य जीवन का उद्देश्य केवल यही नहीं कि वह अपने आप को विषय-वासनाओं में व्यस्त कर भोग विलास का साधन बना दे अपितु उसका प्रयोजन तो निष्काम व निष्कपट भाव से परमार्थ कमाने से सिद्ध होता है। ऐसा इसलिए भी कह रहे हैं क्योंकि जीवन के जितने भी कृत्य एक मानव करता है जैसे कि भोजन, शयन, मैथुन आदि उन्हें पशु भी बड़ी तल्लीनता से करते हैं। मानव की गृहस्थी भी बढ़ती है और उनकी भी। वे भी अपने हित-अहित से परिचित होते हैं और मानव भी। इस संदर्भ में मनुष्य और पशु में यदि कोई अन्तर है तो यही है कि पशु परमार्थ दृष्टि नहीं रखते। इसलिए पशु के जितने भी कार्य होते हैं सब के सब स्वयं तक सीमित होते हैं। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए सजनों इस बात पर गहनता से विचार करो कि यदि मनुष्य भी स्वार्थी होकर दूसरे मनुष्य के साथ ऐसा ही व्यवहार करने

लगे यानि उसके सुख-दुःख को अपना सुख-दुःख न समझे तो फिर मनुष्य और पशु में अन्तर ही क्या रहेगा?

यह सारी बात आपको समझाने का अर्थ यह है कि पशुवत् श्रेणी से ऊपर उठने के लिए परमार्थ दृष्टि से युक्त होकर, अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के उपरान्त अपनी अतिरिक्त सम्पदा और क्षमता का, अभावग्रस्तों का दुःख-दर्द दूर करने में इस्तेमाल करो। ए विध् निजी सामर्थ्य अनुसार पतितों को शारीरिक-मानसिक व आत्मिक रूप से ऊपर उठाओ। ऐसा करने पर ही पशुबुद्धि एवं आसुरी भाव से ऊपर उठकर, सच्ची मनुजता यानि मनुष्यत्व प्राप्त कर पाओगे।

इस परिप्रेक्ष्य में हम मानते हैं कि आज अधिकतर मनुष्यों के संकुचित स्वार्थ ने उन्हें अन्धा कर दिया है और वे ये भूल गए हैं कि उनका जन्म क्यों हुआ है? यानि अधिकाधिक धन कमाने व संचय करने की कामना/ लालसा ने उन्हें मोहग्रस्त कर क्रोधी, कृपण व लोभी बना दिया है और वे मानवता को विस्मृत कर, निजी इच्छाओं की पूर्ति में ही रत हो, मानव धर्म से गिर अहंकारी बन गए हैं। यही कारण है कि परमार्थ जैसे शब्दों को समझना उनकी समझ से बाहर हो गया है और वे केवल अपने ही हित के विषय में सोचते हैं। पर सजनों हमें देखा देखी, उन जैसा नहीं बनना है अपितु हमें तो अपने परमपिता सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की निष्काम व परोपकारी प्रवृत्ति का अनुकरण कर, उन जैसा उदार हृदय व परोपकारी बनना है जिसके निमित्त तमाम भौतिक आकर्षणों व लाभों की संकीर्णता से उबर कर परमार्थ दृष्टि से ओतप्रोत होना अनिवार्य है।

इस विषय में सदा याद रखना कि परमार्थ से आत्मबल बढ़ता है और चारित्रिक निखार आता है। परमार्थ में अहंकार का कोई स्थान नहीं होता और न ही यह कोई घाटे का सौदा होता है अपितु इस परमार्थ दृष्टि से अभीभूत जीवन ही सर्वोत्तम माना जाता है क्योंकि विश्व रूप में प्रकट ईश्वर की निःस्वार्थ सेवा ही कल्याण का परम साधन है। यही भक्ति का सर्वश्रेष्ठ स्वरूप है। कहने का

आशय यह है कि मानव मात्र की सेवा-सहायता, निखिल मानवता से अपनत्व का भाव तथा सबका स्वामी उस एक ईश्वर को ही मानना, परमार्थ दृष्टि की विस्तारक मानसिकता है जिसके द्वारा अहं को वयं में समर्पित किया जा सकता है। इस प्रकार सब सुखी हों, सब निरोगी हों, सबका कल्याण हो, किसी को दुःख प्राप्त न हो - ऐसी पुनीत भावनायें ही मानव के आत्म उत्कर्ष का साधन बनती हैं।

इस बात को मध्य नज़र रखते हुए सजनों काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार जैसी दुर्भावनाओं का त्याग कर संतोष, धैर्य, समता, वैराग्य, निष्कामता, अनासक्ति, निर्लिप्तता, दीन-बन्धुता, परोपकारिता, निःस्वार्थ सेवा आदि भावों से युक्त होकर, परमार्थ दृष्टि का विकास करो। इसके लिए स्वस्थ चिन्तन यानि विचार व ध्यान भी आवश्यक है क्योंकि इसके अभाव में हृदय की कोमल भूमि असिंचित रह जाती है और स्वार्थ की कड़ी धूप उसे बंजर बना डालती है। अधिकांश लोग हृदय से कोमल होते हैं, भावुक होते हैं किन्तु स्वस्थ चिन्तन के अभाव में लोभ, मोह, स्वार्थ, पक्षपात जैसे क्षुद्र भावों-विचारों के मकड़जाल में उलझकर अपनी भावुकता खो बैठते हैं। हृदय उन्हें परमार्थ अर्जन की ओर अग्रसर करता है, किन्तु स्वस्थ चिन्तन दृष्टि के अभाव में स्वार्थ-बुद्धि उन्हें उस पथ पर प्रशस्त होने से रोकती है। भावगत कोमल बुद्धि, स्वार्थ बुद्धि के कठोर अंकुश से आहत हो जाती है और मनुष्य परमार्थ दृष्टि का विकास करने से वंचित रह जाता है।

ऐसा न हो इसलिए सजनों सत् शास्त्र का अध्ययन व मनन कर उनमें वर्णित शब्द ब्रह्म विचारों को अपने आचरण व व्यवहार में ढालने का भरसक प्रयास करो। इससे विचारों में सकारात्मकता के साथ-साथ विशालता व दृढ़ता भी आएगी और सर्व हित में ही अपना व अपने परिवार का हित नजर आएगा। ऐसा होने पर लगने लगेगा कि 'विश्व ही हमारा परिवार है'। इस अनुभूति के होने पर ही सर्वहित की भावना से ओत-प्रोत हो, सर्व के प्रति अपने धर्म का निष्कामता से पालन कर पाओगे और ईश्वरमय हो जाओगे। जैसा कि कहा भी गया है:-

'जो पुरुष स्वयं को विश्व रूप देखता है, वह अनन्य भाव से सर्व का हित (कल्याण) करता हुआ विश्व रूप यानि ईश्वरमय ही हो जाता है।'

इस संदर्भ में याद रखना कि निःस्वार्थ सेवा विश्व कल्याण की संज्ञा है। दूसरा समझकर सच्ची सेवा नहीं होती, आत्मरूप जानकर की गई सेवा ही सच्ची सेवा कहलाती है। आत्मरूप जानकर की गई सच्ची सेवा से ही सेवक के विषय में सेव्य को प्रियत्व उत्पन्न होता है। इससे वह आलसी नहीं बनता, किन्तु सब प्रकार से पुरुषार्थी बनता है। अतः ऐसा पुरुषार्थी बन परमार्थ दृष्टि हो जाओ। मतलब यह है कि केवल अपने लिए कुछ मत चाहो, सब दूसरों के लिए करो। सदैव दूसरों की भलाई सोचो, दूसरों की भलाई करो और इस भलाई को करने में यदि प्राणों की बाजी भी लगानी पड़े तो उससे भी मत घबराओ। याद रखो इसी तरह त्याग भावना अपनाकर स्वार्थ से परमार्थ की ओर बढ़ सकते हो और समाज में प्रतिष्ठा यानि यश कीर्ति प्राप्त करने के अधिकारी सिद्ध हो सकते हो।

अंततः याद रखो कि मानवीय जीवन को प्रेम और उत्सर्ग (त्याग) मार्ग पर चलाते हुए, अपने आप को तुच्छ मानकर अन्य के लिये विसर्जित (परित्याग) कर देने में जीवन का महत्त्व निरूपित होता है। कहने का आशय यह है कि 'स्व' का परित्याग व 'पर' का आलिंगन करके ही यानि दूसरों की भलाई के निमित्त अपने स्वार्थ व लाभ का विसर्जन करने पर ही व्यक्ति लोकहित का साधक बन पाता है और मानव जीवन की सार्थकता को सिद्ध कर सफलता प्राप्त कर जगतहितकारी नाम कहाता है। आप भी सजनों परमार्थ दृष्टि युक्त हो ऐसे ही लोकहितकारी बनो और अपने साथ-साथ अपने परिवार व कुल समाज का कल्याण कर अपना जीवन सफल बनाओ।

दिनाँक 21 अप्रैल 2019 का सबक़

आओ युक्तिसंगत बढ़ें विजय-पथ की ओर.....

सजनों आज की कक्षा आरम्भ करने से पूर्व हम आप सबको स्पष्ट करना चाहते हैं कि अब से सबको अनुशासनबद्ध होना पड़ेगा। इस अनुशासनबद्धता का सर्वप्रथम नियम है कि पढ़ाई के समय आपका ख़्याल व ध्यान जो कहा जा रहा है उसको ग्रहण कर धारण करने में रत हो जाये अर्थात् ख़्याल इधर-उधर किसी सोच में न जाये अपितु ध्यान स्थिर हो जाये। इस नियम का पालन करने पर ही सजनों विधिवत् आत्मिक ज्ञान प्राप्त कर विजयी हो पाओगे और कह पाओगेः-

'जीतेंगे जीतेंगे, हम जन्म की बाजी जीतेंगे।
हनुमान जी दे वचनां ते चल चल के;
हम जन्म की बाजी जीतेंगे।'

सजनों आपकी यह कथनी करनी में तबदील हो जाये उसके लिये आपको सावधान होकर आगे बढ़ना होगा यानि स्वार्थ का रास्ता छोड़ परमार्थ के रास्ते पर हर कदम सुदृढ़ता से विचार संगत आगे बढ़ाना होगा, तभी सफलता को प्राप्त कर पाओगे। इसी संकल्प को लेकर आओ अब आगे बढ़ते हैंः-

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान
अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,
अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-
ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों परमेश्वर कहते हैं:-

'परमधाम है घर हमारा, हम परमधाम में रहते हैं'

सजनों अगर आत्मस्मृति में बने रह व मन पर अंकुश रखते हुए यानि संकल्प रहित अवस्था को धारण कर, प्रसन्नचित्तता से निर्वैर, निर्दोष, निर्विकार, निरासक्त, निष्कलंक व निर्भय यथार्थतापूर्ण धर्मसंगत जीवन जीने के योग्य बन, परमधाम का नजारा देखना चाहते हो तो सुनिश्चित रूप से ऐसा श्रेष्ठ मानव बनने हेतु सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विहित् - ग्रहण करने योग्य शब्द ब्रह्म विचारों को, अविलम्ब धारण करने का पराक्रम दिखा विचारशील बन जाओ। यह अविचारयुक्त स्वार्थपरता का रास्ता छोड़ विचारयुक्त सवलड़े रास्ते पर चढ़ने की बात है जिसके लिये समस्त दूषणाओं के त्याग की आवश्यकता है। जो यह त्याग दिखाने की हिम्मत दिखा पायेगा वह ही शारीरिक, मानसिक रूप से स्वस्थ हो 'विचार ईश्वर है अपना आप' युक्त ब्रह्म भाव अपनाकर जगत से पार उतर पायेगा।

इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों इन ब्रह्म विचारों को धारण कर निर्बाध वैसे ही विचारयुक्त आचरण पर स्थिरता से बने रहने के लिए अब तक बैहरुनी वृत्ति में अपनाये सांसारिक अविचारयुक्त दूषित भाव-स्वभाव को निःसंकोच होकर सहर्ष त्याग दो यानि यकदम ख़्याल का मुख संसार की तरफ से पलट परमात्मा की ओर कर दो। इस तरह इस विशुद्धिकरण यानि जिह्वा स्वतन्त्र, संकल्प स्वच्छ व दृष्टि कंचन करने की प्रक्रिया को सुचारू ढंग से सम्पन्न कर, इसी जीवनकाल में ही वांछित शुभ परिणाम प्राप्त करो अर्थात् अपने जीवन चरित्र को परम पावन व पवित्र बना, अपने सच्चे घर परमधाम पहुँच, अपने असलियत ज्योति स्वरूप को पा ब्रह्म नाम कहाओ।

इस संदर्भ में सजनों जानो व मानो कि जैसे संतुलित व पौष्टिक सात्विक आहार, जीवनदायक होने के कारण शारीरिक स्वस्थता का रक्षक व आवश्यक रूप से ग्रहण करने योग्य होता है तथा असंतुलित, अपौष्टिक, चरपरा, तीक्ष्ण

राजसिक व तामसिक आहार, शारीरिक स्वस्थता का भक्षक व आधि-व्याधि का हेतु होने के कारण त्याज्य होता है, वैसे ही अध्ययन द्वारा सार्थक व सात्विक शब्द ब्रह्म विचारों का ग्रहण मन की शांति, स्थिरता व मानसिक स्वस्थता के लिए नितांत आवश्यक होता है तथा इसी सात्विक खुराक के द्वारा बुद्धि अर्थात् सोचने समझने की शक्ति सदा निर्मल व विवेकशील बनी रहती है और किसी प्रकार का भ्रम या कामना अन्दर जाग्रत नहीं होती। आशय यह है कि ऐसे विशुद्ध अंतःकरण वाले मानव के हृदय में सदा सत्य प्रकट रहता है और उसके लिए सत्यपरायणता से जीवन जीना सहज हो जाता है।

इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों सुनिश्चित रूप से अपने मन को सदा एकरस शांत अर्थात् संकल्प रहित अवस्था में साधे रखने के लिए, राजसिक व तामसिक दूषित भाव से युक्त, किसी प्रकार का भी मनगढ़ंत सांसारिक ज्ञान प्राप्त कर, अपने मन को मलिन व बुद्धि को भ्रष्ट करने वाले झूठ, चतुराईयों भरे छल-कपट युक्त विनाशकारी स्वार्थपर मार्ग पर चलने की भूल कदापि न करो।

यकीन मानो सजनों कि सत्यता से अपनी इस मूल वृत्ति अर्थात् धर्म/स्वभाव पर समान रूप से स्थिर बने रहने का अदम्य पुरुषार्थ दिखाने पर सहज ही नित्य पारलौकिक सुख की प्राप्ति कर सकते हो और एक विवेकशील व निपुण इंसान की तरह अपने जीवन के सब कार्य व्यवहार अर्थात् कर्त्तव्य आत्मनिर्भर होकर, समयबद्ध उचित ढंग से करते हुए, अपनी व समाज की सुख शांति में वृद्धि करने का उद्यम दिखा, अंत उत्तम गति को प्राप्त हो सकते हो। सजनों जानो यही अपने आप में उचित-अनुचित का विचार करने वाली चित्तवृत्ति के प्रयोग द्वारा सदाचारी बन, सत्य-धर्म के निष्काम रास्ते पर अटलता से बने रह, सुकर्म करते हुए धर्म कमाने की बात है।

इस संदर्भ में सजनों आप सभी अपने आप को सौभाग्यशाली मानो क्योंकि आपको वर्तमान कलियुग के घोर अंधकारमय वातावरण में, सत्य को धारण

कर, सक्षमता से सत्य पथ पर निष्कंटक बने रहने के योग्य बनने हेतु सजन श्री शहनशाह हनुमान जी का द्वारा मिला है। अतः हे खुशनसीबो ! चौरासी लाख योनियों की त्रास भुगतने के पश्चात् अब तो समुचित पुरुषार्थ द्वारा सुरत का शब्द संग अटूट रिश्ता स्थापित कर यानि मन को सदा एकरस परमात्मा में लीन रख, अटल सुहागन बनने का साहस दर्शाओ और उस परमात्मा के दिव्य वैभव यानि ऐश्वर्य को मानते हुए, आनन्द अवस्था को प्राप्त हो जाओ यानि अपने यथार्थ इलाही स्वरूप को जान, अपना सोया भाग्य जगा खुशहाल हो जाओ। सजनों क्या आप सब इस युक्ति को अपना कर इस प्रकार खुशहाल होना चाहते हो?

हाँ जी।

तो फिर समझो कि आत्मोद्धार हेतु आपके जीवन का अब अच्छा समय आ गया है। अतः इस सुअवसर को कदापि व्यर्थ मत जाने देना ताकि आपकी यह कथनी 'जीतेंगे जीतेंगे, हम जन्म की बाजी जीतेंगे, हनुमान जी दे वचनां ते चल चल कर, हम जन्म की बाजी जीतेंगे' हकीकत में करनी में परिवर्तित हो जाए और आप अखंड यश-कीर्ति को प्राप्त कर इस जगत में अपना नाम रोशन कर लो। यहाँ प्रश्न यह उठता है कि ऐसा सहजता से करना यानि आज के कलुषित वातावरण में यकदम भाव-स्वाभाविक परिवर्तन दर्शाना हमारे लिए कैसे संभव हो पाएगा?

इस विषय में जानो कि यथार्थ रूप में ऐसा कर पाने हेतु हमारे पास सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ है। अतः यह याद रखते हुए कि मानव शरीर सहित इस भौतिक जगत की रचना, ईश्वरीय मायावी शक्ति, कुदरत ने ही की है, दिलचस्पी में आकर इस सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ का गहनता से अध्ययन करो। जानो जब तक हम इस सतवस्तु के शास्त्र में वर्णित कुदरती ज्ञान का ए विध् गहनता से अध्ययन कर, उसे चिंतन व मनन द्वारा, समुचित ढंग से आत्मसात् करने का पुरुषार्थ नहीं दिखाते तब तक हम कुदरत की रमज़ नहीं

जान सकते यानि इस भ्रमित माया जाल को तोड़, अपने मूल स्वाभाविक गुण पर स्थिरता से बने रह, किसी विध् भी अपना व जगत का कल्याण नहीं कर सकते। तात्पर्य यह है कि फिर परोपकारी बन ब्रह्म नाम नहीं कहा सकते जो अपने आप में जन्म की बाजी हारने की बात है।

इस बात को समझते हुए सजनों समभाव नजरों में कर, सजन वृत्ति पकड़ो यानि आत्मा और परमात्मा की शाश्वतता, शाश्वत जीवन और शाश्वत मूल्यों में विश्वास रखते हुए व नैतिक व्यवस्था को भौतिक व्यवस्था से उच्चतर मानते हुए, तद्नुरूप आचार-व्यवहार अपनाने का साहस दर्शाओ व ए विध् एक परोपकारी, क्षमाशील व जितेन्द्रिय सजन पुरुष की भांति, मानव धर्म के सिद्धान्तों और नियमों पर स्थिरता से सुदृढ़ बने रह सहजता से सत्कर्म करने में सफल हो जाओ व जन्म की बाजी जीत बुद्धिमान नाम कहाओ। स्पष्ट है कि जहाँ विवेकशीलता से इस जीवन-पथ पर अग्रसर होना पुण्य पथ पर अग्रसर होने की बात है, वहीं मनोभावों के अनुसार इस जीवन मार्ग पर बढ़ना पापयुक्त रास्ता अपनाने की बात है। ऐसा न हो इस हेतु सजनों गुरुमत की अपेक्षा मनमत को महत्त्व मत दो यानि मनमत की परवाह न करो। याद रखो इस नीति पर स्थिर बने रह जितनी इसकी अवहेलना करोगे उतना ही मन शान्त होता जायेगा और धीरे-धीरे स्वतः ही संकल्प-रहित हो जायेगा अन्यथा जितना इसको महत्त्व दोगे उतना ही अधिक यह अन्दर शोर करेगा व उत्पात मचायेगा और संकल्प-विकल्प के चक्रव्यूह में फँसाकर बुद्धि को भरमा देगा। यहाँ सजनों हमें आत्मनियन्त्रण रखते हुए हर पल सजग व सावधान बने रहने की महत्ता को समझना होगा ताकि हम किसी भी क्षणभंगुर प्रलोभन या सुख के वशीभूत हो, अपने तन-मन से हारने की भूल न कर बैठें और ए विध् धर्म भ्रष्ट हो, अधर्म का पापयुक्त रास्ता न अपना बैठें।

इस भूल से बचने हेतु ही सजनों कह रहे हैं कि नियमित रूप व समुचित ढंग से सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ का समझदारी से अध्ययन करो। इस प्रकार इस क्रिया को अपनी दिनचर्या का अभिन्न अंग बना अपने स्वभाव के अंतर्गत कर लो

और ए विध् धर्म सम्बन्धी सिद्धान्तों, नियमों व उनके अनुसार व्यवहार करने के योग्य बन जाओ। जानो इस अदम्य प्रयास द्वारा जब वास्तविक रूप से अपने धर्म को जान जाओगे तो आपके मन में धर्मज्ञ होने का भाव उत्पन्न होगा और आप सहजता से न्यायसंगत जीवन जीते हुए एक सजन पुरुष की भांति सदा निर्दोष बने रहोगे।

कहने का तात्पर्य यह है कि इस प्रयत्न द्वारा एक तो आप खुद निष्काम भाव से हर कर्म शास्त्र अनुकूल धर्मसंगत करने में सक्षम हो जाओगे, दूसरा अपने बच्चों व समाज को भी धर्म के रास्ते पर प्रशस्त करने में इस तरह दक्ष हो जाओगे कि वे धर्म का आडम्बरयुक्त स्वार्थपर रास्ता छोड़, सहर्ष जीवनदायक परमार्थ के रास्ते पर ईमानदारी से बने रहने में ही अपनी शान समझेंगे। स्पष्ट है सजनों ऐसा होने पर ही वे धर्मबुद्धि यानि धर्म और अधर्म का विवेक यानि अच्छे बुरे का विचार रखने वाले विचारशील धर्मपरायण इंसान बन पाएंगे। सजनों यह अपने आप में एक सत्-वादी व नेक इंसान की तरह धर्म का स्वरूप जान, धर्म पर धीरता से स्थिर बने रहने की बात है।

इस संदर्भ में सजनों किसी भी कारणवश या प्रभाव में आकर हम धार्मिक नियम या मर्यादा का उल्लंघन न कर बैठें इस हेतु हमें सदा यानि जीवन की हर परिस्थिति व अवस्था में अपने वास्तविक धर्म अनुसार धर्मार्थ आचरण करना सुनिश्चित करना होगा और पुण्य कर्म करते हुए धर्मशील बने रहना होगा। स्मरण रहे ऐसा करने पर ही हम अपने अंतर्मन से मैं-मेरी, तेरी-मेरी, द्वि-द्वेष, वैर-विरोध का भाव मिटा और एक निगाह एक दृष्टि द्वारा सर्व एकात्मा का भाव अपना एकता एक अवस्था में आ पाएंगे और सजनता के प्रतीक बन श्रेष्ठ मानव बन जाएंगे और सजन श्री शहनशाह हनुमान जी का संग प्राप्त कर लेंगे। कहने का आशय यह है कि इस प्रयास में पूर्णरूपेण कामयाब होने हेतु हमें स्वार्थपूर्ण अविचारयुक्त अधर्म का मार्ग त्यागना ही होगा व विचारयुक्त सवलड़ा रास्ता अपना कर परमार्थ दृष्टि (जिसके बारे में गत दो सप्ताहों में भली-भांति परिचित कराया जा चुका है) हो जाना होगा। इस तरह देखने का

नज़रिया बदल कुदरत प्रदत्त विवेकशक्ति का समुचित प्रयोग कर हमें विचारशील बनना होगा और एक अक्लमन्द इन्सान की तरह आत्मनिर्भरता और निर्भयता से आत्मविश्वास के साथ अपने जीवन का महान कारज सिद्ध कर, श्रेष्ठ मानव बनना होगा। जानो सजनों यह अपने आप में आत्मतुष्ट यानि संतुष्ट होने की बात होगी।

सारतः सजनों अब जब इसी जीवन में परम पद प्राप्त करने के विषय में ठान ही लिया है तो मन में भरपूर उमंग व उत्साह रखते हुए अपनी मंजिल की ओर समझदारी से प्रशस्त होवो और ए विध् आत्मिक ज्ञान प्राप्त कर आत्मोद्धार करो। इस संदर्भ में सजनो मन में संतोष व धैर्य धारण कर, निष्कलंकता से आत्मविश्वास के साथ निरंतर आगे बढ़ने का साहस यानि हिम्मत दर्शा, सुनिश्चित रूप से विजय प्राप्त करने हेतु निम्नलिखित विधि अपनाओः-

1. सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के प्रथम सोपान से प्रारंभ करके, प्रति सप्ताह क्रमवार चार भजन/कीर्तन नियमित रूप से एकांत में बैठ कर पढ़ने का नियम बनाओ।

2. इन भजनों/कीर्तनों को पढ़ने के साथ-साथ, जो भी उन में ग्रहण करने योग्य विचार/भाव/स्वभाव विदित हैं और जो-जो भी सांसारिक भाव-स्वभाव त्यागने का आदेश है उनको अलग-अलग लिखो।

3. इस संदर्भ में पहले निर्विकार अवस्था में सुनिश्चित रूप से बने रहने के लिए जिन धारने योग्य शब्द ब्रह्म विचारों का चयन किया है उनके अर्थों को युक्तिसंगत समझने हेतु शब्द कोश में से उनके भावार्थों व लक्षणों को समझो व अलग से नोट कर लो।

4. फिर चरित्र पर दुष्प्रभाव डालने वाले जिन त्याज्य विकारयुक्त सांसारिक भाव-स्वभावों का चयन किया है उनके अर्थों व लक्षणों को शब्दकोश में से समझो व अलग से नोट कर लो।

5. तत्पश्चात् भजनों/कीर्तनों में विहित् ग्राह्य/त्याज्य शब्दों के भाव आशयों को इस तरह स्मृति में लो कि समय पड़ने पर आप अपनी बुद्धि द्वारा आवश्यकता अनुसार उनका प्रयोग करने में सक्षम हो पाओ व इस तरह जीवन की ऊँच-नीच में सम अवस्था में बने रहो।

6. इसके पश्चात् चिंतन व मनन द्वारा सम्बन्धित अर्थों व लक्षणों के आधार पर, अंतर्मन में, आत्मनिरीक्षण करो और विवेक बुद्धि द्वारा अपने हिताहित की परख कर, दोषयुक्त लक्षणों का निवारण कर दोषमुक्त अवस्था में आने का भरसक प्रयास करो यानि देखो कि जैसा मैं पढ़ या लिख रहा हूँ, कहीं वैसे विपरीत लक्षण मेरे अन्दर तो नहीं? ऐसा करने से आपको अपने अन्दर व्यापक दुर्भावों का बोध होना शुरु हो जायेगा अर्थात् आप खुद को खुद ही पकड़कर उन दुर्भावों का त्याग करने में सक्षम हो जाओगे। इसी तरह आपको अपने अन्दर जिन सद्भावों के लक्षण दिखायी देंगे आप उनका विकास करने में समर्थ हो जाओगे। कहने का आशय यह है कि इस तरह जो नकारात्मक त्यागना है उसे त्यागकर व जो सकारात्मक धारणा है उसे धारण कर सीढ़ी दर सीढ़ी ऊपर चढ़ते हुए सचेतन अवस्था में आते जाओगे।

इस सन्दर्भ में मत भूलो कि एक भजन/कीर्तन में मुश्किल से आपको दो/तीन या चार शब्द ही त्यागने या धारणे योग्य मिलेंगे। इसका एक फायदा यह भी होगा कि इस प्रयास द्वारा परमार्थी शब्दकोष आपके अन्दर ही बनता जायेगा। फिर जब भी कहीं कोई उस परमार्थी शब्द का इस्तेमाल करेगा, वह आपको स्पष्टता समझ आ जायेगा यानि आपको कोई भरमा नहीं सकेगा। इस तरह इतने से प्रयत्न द्वारा आप जीवन का कितना बड़ा कार्य सहजता से सिद्ध कर एक ज्ञानवान इंसान की तरह यश-कीर्ति प्राप्त करने के अधिकारी बनोगे। यही नहीं खुद पर पकड़ रखने के इसी प्रयास द्वारा आपकी वृत्ति-स्मृति, बुद्धि व भाव स्वभाव रूपी बाणा निर्मल हो पाएगा और आप एक निरोगी व सदाचारी इंसान बन सजन पुरुष कहलाओगे। यह अपने आप में जीवन पथ पर चलते हुए जो कदम-कदम पर इम्तिहान होते हैं उन इम्तिहानों में विजयी हो

यथार्थतापूर्ण जीवन जी पाने के योग्य बनने के प्रति अद्वितीय पराक्रम दर्शाने की बात होगी।

7. इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों अविलम्ब पढ़े हुए भजन/कीर्तन में विदित शब्द ब्रह्म विचारों की पालना कर, तद्नुरूप अपने आचार-विचार व व्यवहार को ढालने में किंचित् मात्र भी विलम्ब न दर्शाओ और ए विध् निर्विकारी बनते जाओ, बनते जाओ व अपना जीवन सफल बनाओ।

सारतः सजनों यह सब जानने के पश्चात् अगर आपके अन्दर अनुशासनबद्ध होकर दिल से इस क्रिया में सम्मिलित हो परमपद पाने की उमंग जाग्रत हुई है तो तत्क्षण ही इस शुभ कार्य की सिद्धि हेतु तत्पर हो जाओ और दिलचस्पी में आकर अपने सच्चे घर की ओर प्रस्थान करो। इस हेतु सजनों जो भी आप में से ऐसा करना चाहता है वह सहर्ष अपना नाम आज ही लिखवा देना ताकि आगामी कक्षा से आपके बैठने की व्यवस्था के संदर्भ में तद्नुरूप प्रबंध किया जा सके। आशय यह है कि सजनों अब आगे हम आपको और समय नहीं दे सकते। अब तो जो सीधी चाल चलेगा वही संग रहेगा।

इस संदर्भ में सजनों आप सब यह जीवनदायक कार्य सफलता से करने में सक्षम हो जाओ, उसके लिए उदाहरण रूप में आगामी सप्ताह हम आपको सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में सर्वप्रथम विदित कीर्तन 'भारे वाले कुएँ ते लगा बगीचा' से ग्राह्य व त्याज्य शब्दों/भावों को पढ़ने-समझने का सही तरीका बताएंगे। अतः आप भी इस विषय में घर से पूरी तरह तैयार होकर आना। इस तैयारी के अन्तर्गत आपको अपने मन को संसार से हटाकर आद् अक्षर की रटन द्वारा प्रभु में इस तरह लीन रखना पड़ेगा कि वहाँ से शब्द ब्रह्म विचार ग्रहण कर पूरे संसार पर राज्य कर सको। याद रखो यदि मन परमात्मा में लीन हो जाता है तो आत्म-स्मृति हो जाती है और हमारी सुरत परमात्मा में लय होनी आरम्भ हो जाती है। इस तरह धीरे-धीरे लय होते-होते वह उसी की ही होकर रह जाती है और अति आनन्द का अनुभव करते हुए उस परमात्मा

को रिझा लेती है। रीझने पर परमात्मा उस पर प्रसन्न हो जाते हैं और उस सुरत को अपना लेते हैं। जब ऐसा हो जाता है तो फिर परमात्मा भी उसमें लीन हो जाते हैं। आशय यह है कि जब ऐसा अद्‌भुत हो जाता है यानि तूं-मैं का भेद समाप्त हो जाता है तो इंसान परमात्म-स्वरूप होकर इस जगत में निर्भयता से विचरता है। इस सन्दर्भ में सच्चेपातशाह जी का उदाहरण हमारे सामने ही हैं जिन्होंने सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के प्रति अटूट समर्पित भाव रखते हुए व उनके वचनों की पालना करते हुए उनसे सब कुछ प्राप्त किया। नतीज़ा उनकी सुरत परमात्मा में लीन हो गई, 'तूं-मैं' का भेद समाप्त हो गया और वह परमात्म-स्वरूप होकर निर्विकारता से इस जगत में विचर पाये। ऐसा होने पर सजन श्री शहनशाह हनुमान जी सहसा ही कह उठेः-

(सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के मुख के शब्द)

मग्न हुए श्री साजन जी, श्री राम रमणे वाले दे विच।
श्री राम रमणे वाले दयालु, मग्न हुए श्री साजन जी दे विच।।

फिर दुःख में सजनों सुख मनाइये, तां शौह अपने दा दर्शन पाइये।
जैंदे महाराज दे नैनां नाल नैन मग्न हुए,
ओ सजन चरणों में रैहंदा अस्थित।
उस सजन दी सब तरह से होसी फतह और जित्त।।

ए ग्रन्थ कुदरती सतवस्तु दा आ रिहा, तूं मैं किसे दा सवाल नहीं।
ए ग्रन्थ सब दा है ओ सांझा, ऐथे वड छोट दा कोई प्रभाव नहीं।
वड छोट दा कोई प्रभाव नहीं।।

सतवस्तु दी सजनों चाल चलो, सतवस्तु दे वचन इस्तेमाल करो।
सतवस्तु दे असूलां नूं फड़ो सजनों सत सत वचनां नाल प्यार करो।
सत सत वचनां नाल प्यार करो।।

ओथे संयोग कहाँ और वियोग कहाँ, ओथे रोग कहाँ और सोग कहाँ।
जेहड़े मन मन्दिर प्रकाश करैंदे ने, ओथे खुशी कहाँ और ग़मी कहाँ।
ओथे खुशी कहाँ और ग़मी कहाँ।।

जैं सतवस्तु दा ग्रन्थ पहचान लिया,
ओ सुच्चा भांडा खोट न ओहदे है बदन में।
ओ चमके सारे जग अन्दर, ओ चमके सारे जगत में।
ओ चमके सारे जगत में।।

ओ ही तो हुआ सारे जगत तों न्यारा, ओ ही तो हुआ जगत ते सारा।
ओही ईश्वर पारब्रह्म परमेश्वर हुआ, ओही तो हुआ रग-रग में।
ओही बेअन्त है सारा सर्वज्ञ में।।

शब्दः-

इक पासे प्यारे दे श्री रामचन्द्र जी,
दूजे पासे रैहंदे हिन शहनशाह हनुमान।
दुःख नूं ओ सुख किवें न मनावे, जैंदे संग रैहंदे खुद आप भगवान।।

श्री राम मग्न कोई विरला सजन हो गया,
जेहड़ा पकड़े आप नूं नित्तो नित।
ओ खालस सोना हो गया, जैंदा खोट न रिहा इस बदन दे विच।।

स्पष्ट है सजनों परमात्म-स्वरूप होने पर सच्चेपातशाह जी ने सतवस्तु पहचान ली और कुदरत की रमज़ समझ सत्य का व्यवहार करने में निपुण हो गये। तभी तो कुल दुनियां के उद्धार के निमित्त सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ आ गया। सजनों इस कीर्तन में इसी तथ्य का वर्णन है। सजनों अब तो आपको समझ आ गया होगा कि जब सुरत शब्द में और शब्द सुरत में लय हो जाती है तो एक-अवस्था आ जाती है। इस एक-अवस्था में सुरत जो शब्द ब्रह्म यानि परमात्मा है उसके ज्ञान, गुण व शक्ति को धारण कर लेती है यानि जो

परमात्मा के पास है वह उसका हो जाता है और इन्सान चैतन्य व शक्तिशाली हो जाता है। फिर वह परमात्म-सम ज्ञान, गुण और शक्ति को धारण कर एक आत्मज्ञानी की तरह इस जगत में भ्रम रहित आत्मतुष्ट होकर निषंग विचरता है। यह होता है मन को सन्तोष प्राप्त होना यानि सन्तोष अपने आप उसके स्वभावों का श्रृंगार बन जाता है। सन्तोष के पश्चात् उसको सुदृढ़ता व स्थिरता प्रदान करने हेतु उसमें धैर्य आता है और इन्सान के लिये सत्य-धर्म का निष्काम रास्ता अपनाकर परोपकार करना सहज हो जाता है। इस तरह स्वभावों की पोशाक ही बदल जाती है जिसका आधार उस परमात्मा का ज्ञान, गुण व शक्ति होती है। फिर सजनों उस परमात्मा के ज्ञान, गुण व शक्ति का प्रयोग आरम्भ होता है। इस प्रयोग के दौरान सजनों 'मैं-भाव' को पनपने से रोकना होता है और याद रखना होता है कि मैं कुछ नहीं बना अपितु लीन होने पर उस परमात्मा ने मुझे अपना सब कुछ दे दिया। इस तरह झुकाव-भाव में रहते हुए उन्हीं के वचनों की ही पालना करनी होती है। आपने भी सजनों यही करना है।

अंत में सभी सजनों से प्रार्थना है कि अगर आप में से किसी के पास इस क्रिया को और बेहतर बनाने के लिए कोई सुझाव है तो सहर्ष उसका सुझाव आमंत्रित है।

दिनाँक 28 अप्रैल 2019 का सबक़

आओ दृढ़ संकल्प होकर बढ़ें अपने जीवन लक्ष्य की ओर.....

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों जैसे कि पहले भी कहा जा चुका है कि आत्मा में परमात्मा कैसे निहित है इस सत्य को पहले जानो, फिर इसे मानते हुए, 'विचार ईश्वर है अपना आप' इस भाव पर सुदृढ़ता से खड़े हो जाओ और निर्विकारी बन अपना जीवन बनाओ।

सजनों आज के दिन जब हम आत्मशुद्धि की क्रिया विधिवत् करते हुए परमपद प्राप्त करने की ओर बढ़ने का शुभ आरंभ करने जा रहे हैं तो हमें सही दिशा में चलते हुए, सुदृढ़ता व सतर्कता से इस जीवन हितकारी कारज में अवश्यमेव सफलता प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित सूचना/ चेतावनी को ठीक ढंग से समझना होगा व इसे सदा याद रखते हुए अपने जीवन के महान कार्य की सिद्धि के प्रति निरंतर एकरस प्रयत्नशील बने रहना होगा। आओ अब जानें कि यह सूचना क्या हैः-

सूचना

सजनों जानो व मानो कि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में वर्णित शब्द ब्रह्म विचारों को पठन, मनन द्वारा व्यावहारिक रूप में आत्मसात् करते हुए, आत्म विशुद्धि करने की यह क्रिया अपने आप में परिपूर्ण है। जानो इस क्रिया के माध्यम से हम शास्त्र विहित् वचनों की पालना द्वारा सुनिश्चित रूप से अपने शुभ लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल हो, समभाव पर स्थित हो सकते हैं व समबुद्धि बन सकते हैं।

इस संदर्भ में हम अपनी किसी भूल या नासमझी के कारण, वांछित परिणाम को प्राप्त करने में असफल न रहें उसके लिए हमें सदा याद रखना होगा कि यह आत्म उद्धार की प्रक्रिया सांसारिक फर्ज़ अदा की तरफ से पूर्णतः विरक्त, निरपेक्ष व उदासीन हो मुनि व सन्यासी बनने की बात नहीं अपितु यह तो संसार में सक्रियता व समझदारी से विचरते हुए भी उससे निर्लिप्त बने रह यानि मोह बंधन से मुक्त रह, अपना व जगत का उद्धार करने का अदम्य पुरुषार्थ दिखाने की बात है। इसी पुरुषार्थ द्वारा हम सब के प्रति अपने जीवन के समस्त कर्त्तव्यों का सचेतनता से हँस कर निर्वाह करते हुए, सत्य-धर्म के निष्काम रास्ते पर स्थिरता से बने रह सकते हैं और परोपकारी प्रवृत्ति हो, अफुर अवस्था को प्राप्त रह सकते हैं।

इस तरह इसी क्रिया द्वारा हम बुधवार व वीरवार के बोर्डों व दोनों पैगामों वाले कीर्तनों में वर्णित युक्ति का उचित ढंग से पालन करते हुए निष्कलंक जीवन जी सकते हैं व ए विध् सजन पुरुष बन अपना घर सतयुग बना सकते हैं।

अतः इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों हमें भी इस क्रिया के युक्तिसंगत अनुशीलन द्वारा, बच्चों, बुजुर्गों व समाज के प्रति अपना फर्ज अदा अफुरता से व नीति अनुसार अच्छे ढंग से यानि नेक नीयती से हँस कर करने के स्वभाव में ढलना होगा ताकि हर तरफ प्रसन्नता और एकता का निर्मल वातावरण बनें। इस हेतु हमें अपनी घर-गृहस्थी के साथ-साथ, दुकानों-दफ्तरों का काम, समभाव पर स्थित रहते हुए सत्यनिष्ठा व धर्मानुसार ठीक ढंग से संचालित

करना सुनिश्चित करना होगा ताकि किसी भी प्रकार की रोक-टोक के कारण लक्ष्य की ओर बढ़ते हमारे कदम अवरुद्ध न हो जाएं। अतः याद रखना कि इसके प्रति किसी किस्म की लापरवाही जीवन के महान लक्ष्य की ओर बढ़ते हुए हमारे कदमों में बाधक साबित हो सकती है। अतः साग को कड़ाह समझते हुए व अपने संकल्प को स्वच्छ रखते हुए सदा प्रसन्नचित्त व सतर्क बने रहना अति आवश्यक है।

इस संदर्भ में सजनों पूर्ण कामयाबी प्राप्त करने हेतु हमारे लिए, सजन श्री शहनशाह हनुमान जी द्वारा प्रदत्त नाम ध्यान की युक्ति को व्यावहारिक रूप में लाना अति आवश्यक है ताकि हम समस्त कार्यव्यवहार करते हुए भी, सदा अपना ख़्याल ध्यान वल व ध्यान प्रकाश वल साधे रखते हुए, आत्मज्ञानी बनने का पराक्रम दर्शा सकें और इस प्रकार आत्मतुष्ट होकर संतोष, धैर्य, सच्चाई, धर्म का सिंगार पहन, आत्मविश्वास के साथ जीवन में आने वाले दुःखों-सुखों का सामना समता व निर्भीकता से करते हुए सतत् आगे बढ़ते जाएं। यह होगा सजनों सजनता के प्रतीक बन, इस सम्पूर्ण जगत को अपनी श्रेष्ठता का परिचय दे जगत विजयी होना।

अंततः सजनों जानो कि हमारा मकसद है कि प्रत्येक मनुष्य सत्य का पारखी बने ताकि दुनियां में कोई भी उसे छल कर धर्म के रास्ते से भटका, अधर्म के रास्ते पर न चढ़ा सके। ऐसा मानव बनने हेतु सजनों मानो कि मैं सबसे सुन्दर सत्य हूँ और सत्य ही मेरा धर्म है। जब मैं इस सत्य को भूल कर झूठ की स्याही पोत लेता हूँ अर्थात् असत्य को अपनाकर निज धर्म के प्रति विभ्रमित हो आत्मविस्मृत हो जाता हूँ तो ही मैं इस शरीर के धर्म अर्थात् जड़ता/नश्वरता को अपनाकर मिथ्यात्व से प्रीत लगा बैठता हूँ और यह संसार मुझे छल कर कुरूप यानि दुराचारी, व्यभिचारी व भ्रष्टाचारी बना देता है। ऐसा न हो इसलिए स्वीकारो कि मैं यथार्थ रूप में प्रकाशित सत्य हूँ और धर्मपरायणता मेरा कर्त्तव्य है। इस तरह सजनों अपने मन-वचन-कर्म द्वारा सत्य को प्रतिष्ठित करने वाले समभावी इंसान बनो। याद रखो समभाव का विचार मनुष्य की बुद्धि की समस्त पाबंदियों और कमजोरियों का नाश कर विवेकशक्ति के प्रयोग द्वारा उसे निर्मल

व प्रकाशित अवस्था में ले आता है और निर्भय व स्वतन्त्र पद पर आसीन कर देता है। आप भी सब ऐसे ही मानव बनने में कामयाब हों इस संदर्भ में अब सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में सर्वप्रथम विदित कीर्तन 'भारे वाले कुएँ उत्ते लगा बगीचा' इस कीर्तन से ग्राह्य व त्याज्य शब्दों/भावों को पढ़ने समझने का सही तरीका ध्यान से समझोः-

ग्राह्य शब्द या भाव

साधनाः- जानो साधना किसी काम को सिद्ध करने की क्रिया या भाव है। यह क्रिया युक्तिसंगत किया जाने वाला वह अभ्यास है जिसके सतत् अनुशीलन द्वारा हमारा मन विकार वृत्तियों के पंजे से छूट पुनः विचारशील हो एकाग्र हो सकता है और हम एकचित्त यानि ध्यान स्थिर हो अपने जीवन लक्ष्य को न केवल भेद सकते हैं अपितु मन-वचन-कर्म से तद्नुकूल व्यवहार दर्शा कर उसकी सत्यता को प्रमाणित भी कर सकते हैं। इस संदर्भ में जानो कि धारणा शक्ति के विकृत होने के कारण जो विकार हमारे अन्दर उत्पन्न हो गए हैं व जिन्होने हमारी अफुरता भंग कर दी है और हम फुरने के संबंधों और दृश्यों में उलझ कर अपना रूप-स्वरूप बिगाड़ बैठे हैं, तो पुनः अपने उस असलियत स्वरूप में स्थित होने के लिए हमें अपना शोधन यानि सुधार करना है जो कि मात्र साधना द्वारा ही संभव है। इसी के द्वारा हमारा अस्थिर ध्यान क्रमशः एकीकृत व स्थिर हो सकता है और हम लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं।

ध्यान- जानो चित्त के अवरोध का नाम ध्यान है। यह ध्यान किसी कार्य में मन के लीन होने की क्रिया, दशा या भाव भी है। इसके अतिरिक्त यह चित्त की ग्रहण या विचार करने की वृत्ति या शक्ति है व अंतःकरण की जागृत स्थिति है। आशय यह है कि यदि हमारा ध्यान सांसारिक विषयों व सम्बन्धों में गलतान है तो हमारा मन व ख्याल उन्हीं में लीन रहेगा और सतत् रूप से नश्वरता का ग्रहण करेगा। इसके विपरीत यदि हमारा ध्यान प्रभु की ओर है तो हमारे मन व ख्याल में प्रभु के श्रेष्ठतम आचार-विचार ही उतरेंगे और वह नित्यता का ग्रहण करेगा।

यही नहीं ध्यान ही बोध या ज्ञान कराने वाली वृत्ति या शक्ति है। ध्यान द्वारा मन व चित्त चारों ओर से हटाकर निरंतर एक ही विषय (परमेश्वर) के ग्रहण में बराबर तत्पर रहता है। परिणामतः जगत में इधर-उधर बिखरा हुआ हमारा ख्याल प्रभु की चरण-शरण में आ व उनके निर्मल आचार-विचार धारण कर क्रमशः निर्मल व एकाग्र हो, आत्मस्वरूप में स्थित हो जाता है।

निष्काम- निष्काम से तात्पर्य हर प्रकार की कामना, आसक्ति या इच्छा से विमुक्त रहने से है। निष्कामी हर कार्य बिना किसी कामना अथवा इच्छा के करता है। निष्काम कर्म करने से सब सांसारिक वासनाओं से मुक्ति प्राप्त होती है, चित्त शुद्ध होता है और मुक्ति प्राप्त होती है। यही नहीं निष्कामता द्वारा जिह्वा स्वतन्त्र, संकल्प स्वच्छ व दृष्टि भी कंचन हो जाती है क्योंकि समभाव नजरों में स्थित हो जाता है।

त्याज्य शब्द या भाव

फुरनाः- सामान्य शब्दों में फुरने से तात्पर्य सोच या संकल्प से है जो मनुराज यानि अविचार की उपज है और अंतःकरण को पूर्णतः अज्ञान आवरण से आच्छादित कर जीव को संकल्प-विकल्पों में विभ्रमित कर अविचारी बनाने की क्षमता रखता है। शाब्दिक अर्थ के रूप में, मन-मस्तिष्क पर किसी वस्तु/बात या किसी क्रिया के पड़ने वाले प्रभाव या परिणाम को फुरना कहते हैं। फुरना किसी व्यक्ति की शक्ति, प्रताप, सम्मान, अधिकार आदि पर पड़ने वाले प्रभाव के कारण हृदय में स्फुटित व विकसित होता है व अंत परिणाम को प्राप्त होता है। चूंकि फुरने में विशुद्ध अंतःकरण को किसी ओर यानि अच्छाई या बुराई की ओर प्रवृत्त करने का गुण होता है इसलिए यह जीवन उन्नति में बाधक सिद्ध होता है यानि इसके उपजने पर एकता, एक अवस्था में बने रहना कठिन हो जाता है और जीवन खेल बिगड़ जाता है। इस तथ्य के दृष्टिगत सजनों जब भी मन में फुरना उपजने लगे युक्तिसंगत नाम-अक्षर चलाना आरंभ कर दो और अफुर अवस्था को धारण करने हेतु ईश्वरीय हुकम पालना को अपने स्वभाव के अंतर्गत करो।

गरूरी-मगरूरीः- जानो गरूरी-मगरूरी घमंड व अभिमान का दूसरा नाम है। यहाँ घमंड से तात्पर्य स्वयं को दूसरों से धन, बुद्धि, शक्ति, पद, निपुणता आदि में उच्चतर मानने से है। ऐसा अहंकारी व्यक्ति शेखी मारता है और दूसरों की भावनाओं और परामर्शों की उपेक्षा करता है।

कर्मकांडः-ज्ञान और भक्ति से भिन्न बाह्य धार्मिक विधानों को कर्मकांड कहते हैं। यज्ञ, संस्कार, नित्य और नैमित्तिक कर्म इसके अंतर्गत आते हैं। कर्मकांडी अभीष्ट सिद्धि हेतु ज्ञान और भक्ति की अपेक्षा कर्मकांडों को महत्त्व देता है और आत्मज्ञान से वंचित रहता है।

मनमत -मनमत को जानने से पूर्व जानो कि मन प्राणियों में वह शक्ति है जिससे अनुभव, संकल्प-विकल्प, इच्छा, विचार आदि होता है। यह अन्तःकरण की वह वृत्ति है जिससे संकल्प-विकल्प होता है। मनमत पर चलने वाला स्वेच्छाचारी व निरंकुश व्यक्ति भले-बुरे का विचार किए बगैर जो मन में आता है उसी अनुसार काम करता है। इसी कारण वह मन के मत में मदोन्मत्त मनमानी करने वाला व्यक्ति अभिमानी व अहंकारी कहलाता है।

अब सजनों इन ग्राह्य व त्याज्य शब्दों/भावों के व्यक्त अर्थों व विदित लक्षणों के आधार पर आत्मनिरीक्षण करो और जाँचो परखो कि कहीं मेरे अन्दर सतत् रूप से संकल्प विकल्प तो नहीं उठते रहते? कहीं मैं हर समय फुरनों में तो नहीं जकड़ा रहता? कहीं मैं कर्मकांडों का शिकार हो अंधविश्वासों में तो नहीं फँस गया? कहीं गरूरी-मगरूरी ने मुझ पर अपना आधिपत्य तो नहीं जमाया हुआ? कहीं दूसरों पर अपना प्रभुत्व जमाने हेतु मैं हर समय अपनी शेखी ही तो नहीं बघारता रहता? क्या मैं साधना द्वारा अपने मन को स्थिर रख पाता हूँ? क्या मैं सुख-दुःख में सम रह पाता हूँ? क्या ध्यान द्वारा मेरा मन हर समय प्रभु में लीन रह पाता है?

इस तरह सजनों आत्मनिरीक्षण द्वारा तत्क्षण ही बुरे भाव त्याग व अच्छे भाव ग्रहण कर निर्विकारी इंसान बनने का निश्चय ले अपने सच्चे घर परमधाम की ओर बढ़ चलो।

उपरोक्त शब्दार्थों को जानने व आत्मनिरीक्षण करने के पश्चात् सजनों इस कीर्तन का सारतः आशय जानो। जानो इस संदर्भ में सजन श्री शहनशाह हनुमान जी कहते हैं किः-

1. युग-युगांतरों से इस फुरने की सृष्टि के उद्धार के निमित्त यानि अधर्मकारी शक्तियों का विनाश कर पुनः-पुनः धर्म की स्थापना करने हेतु, समय-समय पर भगवान को भी फुरने के रचित माता-पिता के घर प्रगटना पड़ता है और समस्त सांसारिक व पारिवारिक फुरनों के बीच रह कर निर्विरोध निष्काम रास्ते पर अफुरता से यह याद रखते हुए प्रशस्त रहना होता है किः-

फुरना मरे ते फुरना जम्मे फुरने ठाठ रचाया,
फुरना है ओ अफुर गुसांईं, ओहदा अंत किसे वी न पाया
इस तथ्य के दृष्टिगत सजनों फुरने से बचने हेतु
फुरने नाल झगड़ लै, फुरना छोड़ अफुरना कर लै

2. निष्काम रास्ते पर स्थिरता से बने रहने से न केवल स्वतः ही गरूरी-मगरूरी मिट जाती है अपितु बड़े-बड़े बिगड़े हुए इंसान भी सहजता से भवसागर से पार उतर जाते हैं।

3. कर्मकांडों में उलझ किसी भी प्रकार की साधना का तरीका अपनाने से मन कभी विश्राम नहीं पा सकता, अतः अविचारयुक्त इस कठिनाईयों भरे मार्ग को त्याग दो।

4. सुनिश्चित रूप से सफलता प्राप्त करने हेतु ब्रह्म शब्द विचारों को ध्यानशक्ति द्वारा साध कर अपने आचरण यानि व्यावहारिक रूप में उतार समुचित ढंग से उनका समय अनुसार प्रयोग करने की प्रक्रिया में निपुण बनो और इस तरह अपने शासक खुद बनो।

5. इस तरह सत्य-धर्म के निष्काम रास्ते पर सुदृढ़ता से बने रहते हुए अपने हृदय स्थित आत्मा में व्याप्त उस सर्वनिवासी परमात्मा का दर्शन कर, उसी के इलाही रंग में रंग जाओ व 'विचार ईश्वर है अपना आप' पर खड़े हो आनन्द से

जीवन बिताओ व परमपद को पाओ। इस शुभ कार्य को समयबद्ध सम्पन्न करने के लिए हम तो यही कहेंगे किः-

उठो उठो अब तो उठ जाओ
और ए विध् आत्मज्ञानी बन
परमधाम की ओर कदम बढ़ाओ
जो अपना घर है वहाँ पहुँचकर
विश्राम को पाओ हाँ विश्राम को पाओ
ए विध् श्रेष्ठ मानव कहाकर
जगत में अपना नाम कमाओ
और रूप रंग रेखा का मोह त्याग कर
परब्रह्म परमेश्वर नाम कहाओ

जानो सजनों जो इस प्रकार परमेश्वर का कहना मानकर एक बार में खुद जाग्रति में आ जाता है तो परमेश्वर वचनों की पालना कर चरण-शरण में आने वाले उस सपुत्र को कहते हैंः-

विजयी भव, विजयी भव, विजयी भव।

सबकी सूचनार्थ इसी क्रमवार आगामी सप्ताह हम पहले सोपान से उद्धृत प्रथम चार भजनों के आधार पर विचार विमर्श करेंगे। अतः आप भी इस विषय में घर से पूरी तरह तैयार होकर आना।

अंततः आज का विचार याद रखो व इस पर अमल फरमाओः-

सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ
ए ग्रन्थ कुदरती सतवस्तु दा आ रिहा।
तूं मैं किसे दा सवाल नहीं।।
ए ग्रन्थ सब दा है ओ सांझा।
ऐथे वड छोट दा कोई प्रभाव नहीं।।

दिनाँक 5 मई 2019 का सबक़

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों आओ आज से, आत्मसुधार कर सुनिश्चित रूप से आत्मोद्धार करने के प्रति, अपने मन में उमंग व उत्साह रखते हुए, इसी जीवन में ही परमपद प्राप्त करने के प्रति दृढ़ संकल्प होकर, इस शुभ कार्य की समयबद्ध सिद्धि हेतु, आत्मविश्वास व आत्मनिर्भरता के साथ, विवेकशीलता से आगे बढ़ते हैं। इस परिप्रेक्ष्य में सजनों सर्वप्रथम हमें जानना व मानना है कि इस प्रयास द्वारा हम असत्य यानि बुराई का रास्ता छोड़ सत्य यानि अच्छाई के रास्ते पर प्रशस्त होने का पराक्रम दिखाने जा रहे हैं। अतः सबसे पहले हमें अपना हृदय सचखंड बनाने के लिए एक विवेकशील इंसान की तरह सत्य और असत्य यानि अच्छाई और बुराई के वास्तविक अंतर को समझना होगा जो इस प्रकार हैः-

सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार सजनों जानोः-

सच चानणा है। झूठ अंधेरा है। इसलिए थोड़े से लालच के लिये या भय के मारे झूठ नहीं बोलना चाहिए अपितु यह याद रखना है कि जब ख़्याल सत्य के प्रकाश में विचरता है तो मानव को आत्मस्मृति रहती है और जब वह अज्ञान अन्धकार में विचरता है तो उसे आत्मविस्मृति हो जाती है।

सत्य स्वयं पारमार्थिक सत्ता यानि परब्रह्म परमेश्वर परमात्मा या खुद आप भगवान व सर्वमहान है। झूठ मिथ्या संसार है। अतः संसारी स्वभाव छोड़ो और ब्रह्म-भाव अपनाओ।

सच जैसा है वैसा ही स्पष्ट है यानि वास्तविकता है। झूठ आडम्बर युक्त व बनावटी है।
सत्य हर वस्तु का आधार है। झूठ निराधार है।
सत्य यथार्थ है। झूठ भ्रम है, धोखा है यानि किसी वस्तु को और का और समझना है।
सत्य नित्य व स्थाई है। झूठ अनित्य व अस्थाई है।
सत्य व्यापक, सूक्ष्म, गम्भीर और जटिल है। झूठ व्यक्तिपरक, स्थूल और उथला है।
सच तथ्ययुक्त है। झूठ तथ्यहीन है।
सच सोने की भांति शुद्ध और खरा है। झूठ सिक्के की भांति अशुद्ध व खोटा है।
सत्य निःस्वार्थता का द्योतक है। झूठ स्वार्थ-सिद्धि का सूचक है।
सच प्रमाणित किया जा सकता है। झूठ का कोई प्रमाण नहीं है।
सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं है। असत्य से बढ़कर कोई अधर्म नहीं है।
सत्य अमृत/मोक्ष प्राप्ति का मार्ग है। झूठ नरक का द्वार यानि पतन का मार्ग है।

सत्य पथ पर सद्ग्रन्थों का अध्ययन करने वाले विद्वान चलते हैं और सत्य वचनों को धारण कर उनका सदुपयोग करते हुए जगत का उद्धार करते हैं। असत्य पथ पर मूर्ख, अज्ञानी चलते हैं और मिथ्यात्व को धारण कर मिथ्याचारी बनते हैं व समाज की पतनता का कारण बनते हैं।

सत्य का सर्वश्रेष्ठ अभिनंदन सत्य को आचरण में लाना है। झूठ का अभिनंदन मिथ्या छल-कपट युक्त आचरण करना है।

सत्यतापूर्ण आचरण से मन-चित्त में सत्य धारणा, सत्य वृत्ति, सत्य प्रेम,

सत्यनिष्ठा, सत्यपरायणता, सात्विकता, स्वच्छता, स्पष्टता, सचेतनता, सज्जनता, विश्वसनीयता, निर्भयता व आदर्शवादिता पनपती है। असत्यता पूर्ण आचरण से मन-चित्त में मिथ्या धारणा, चंचल वृत्ति, कल्पना, सांसारिकता, संशय/संदेह, तमो व रजोगुण, मलीनता, अस्पष्टता, अचेतनता, भ्रष्टता, दुर्जनता, भय, कमज़ोरी व बिगड़ाव उत्पन्न होता है और तीनों ताप सताने लगते हैं।

सच बोलने वाला शुद्ध हृदय, शुद्धाशय, सत्यवादी, सत्यानुरागी, नैतिक, सात्विक, खरा, मितभाषी, ईमानदार, सरल, सदाचारी, सद्‌गुणी, निश्छल-निष्कपट यानि भोला, चरित्रवान व विश्वसनीय होता है। झूठ बोलने वाला अस्पष्ट, मिथ्यावादी, अनैतिक, बहानेबाज, दोगला, गपोड़ी, दुष्प्रचारक, विश्वासघाती, छली, ख़ुशामदी टट्‌टू, अफ़वाहबाज़, डींगबाज, पाखंडी, भ्रष्ट, धूर्त, कुटिल, चरित्रहीन व बेईमान होता है।

सत्य का साधक सकल सृष्टि के प्रति एकात्मा का भाव रखते हुए आत्मीयतापूर्ण व्यवहार करता है। झूठा व्यक्ति जगत के चराचर जीवों में विभेदता का भाव रखते हुए द्वि-द्वेषपूर्ण व्यवहार करता है।

सत्य का आचरण व व्यवहार प्रशंसनीय है। झूठ का आचरण व व्यवहार निंदनीय है।

सत्य का पारखी बनने हेतु सूक्ष्म विचार, विवेकशीलता व एक निगाह एक दृष्टि होना आवश्यक है। सामान्य इंसान भी अपने बुद्धि कौशल के प्रयोग द्वारा झूठ को परख उसको धारण करने से बचा रह सकता है ।

सत्य की पराकाष्ठा सर्वश्रेष्ठ युग सतयुग में प्रमाणित होती है। झूठ का बोलबाला पापमय कलियुग में दृष्टिगोचर होता है।

सत्य आत्मस्मृति का परिचायक है। झूठ आत्मविस्मृति का परिचायक है।

सच्चा मानव सत्यात्मा, पुण्यात्मा नाम से सम्बोधित किया जाता है। झूठा मानव

दुरात्मा के नाम से सम्बोधित किया जाता है।

सच बोलने से लोक-परलोक संवर जाता है। झूठ बोलने से लोक-परलोक बिगड़ जाता है।

सत्य की हमेशा विजय होती है। असत्य की हमेशा हार होती है।

निःसंदेह सत्य अनंत रूप में असत्य/झूठ की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली है। इसलिए तो सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा गया हैः-

झूठ पहरेवा लहाणा जे सजनों जेहड़ा करदा जे औखा।
सच दा पहरेवा पाना जे जेहड़ा करदा ओ सौखा,
जेहड़ा करदा ओ सौखा।।
सच ओ मौज उड़ावे, झूठ ओ ठोकरां खावे।
ठोकरां खा-खा उठ-उठ के ओ,
फिर ओ सजन पछतावे, फिर ओ सजन पछतावे।।

इस तथ्य के दृष्टिगत सजनों यदि मौज से जीवन जीना है तो सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने के लिए सदा उद्यत रहो तथा सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य का विचार करके करो क्योंकि सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ हम सजनों को कह रहा हैः-

सत् सत् बोलना सीखो, सजनों सत् सत् करो प्रवान
सत् है गुरु, सत् नाम सत् ध्यान लाणा सीखो
सजनों सत् सत् बड़ा है महान,
सत् सत् वर्त्त वर्ताओ करना सीखो
सजनो सत् सत् करो प्रवान
सत् सत् बोलना सीखो सजनों सत् आप पढ़ो ते
सजनां नूं पढ़ाओ
इसे शब्द नाल हिवे विश्राम

इस बात को समझते हुए सजनों हमारे लिए बनता है कि हम सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के गहन अध्ययन द्वारा सच का पहरेवा पाकर अपना हृदय सचखंड कर लें और आत्मज्ञानी बन अपने स्वरूप को पा परमात्मा नाम कहाएं। कहने का तात्पर्य यह है कि ए विध् मेल महाराज जी नाल खा आप त्रिकालदर्शी तो हो ही जाएं साथ ही परिवारजनों व समाज को भी इस योग्य बनाने में कामयाब हो जाएँ।

आओ अब इस शुभ क्रिया का आरम्भ करते हुए सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ से उद्धृत प्रथम चार भजनों में से ग्राह्य व त्याज्य भावार्थों को समझते हैं व आत्मसुधार के प्रति विधिवत् आगे बढ़ते हैं:-

भजन न0 1
आओ भज भज के

1. अविलम्ब महाबीर जी का संग प्राप्त कर हृदयगत परमात्मा का साक्षात्कार करने हेतु मन में निर्मल प्रेम व तीव्र उत्कंठा पैदा करो। इस संदर्भ में याद रखो कि निर्मल प्रेम इतना सशक्त व निःस्वार्थ होता है कि उसके प्रभाववश सुरत के लिए स्थाई रूप से पति परमेश्वर के संग बने रह मन को उनमें लीन रखना सहज हो जाता है।

2. समर्पित व निष्काम भाव से उनको अपने हृदय के सिंहासन पर शोभित होने के लिए बारम्बार पुकार करो यानि नाम-अक्षर का निरन्तर जाप करो। ऐसा करने पर सुनिश्चित रूप से आपकी पुकार सुनी जायेगी।

3. उनके वचनों रूपी अमृत का नित्य सेवन करते हुए सर्वप्रथम अपने मस्तक की ताकी खोलो यानि स्थिर दृष्टि हो जाओ व तत्पश्चात् मस्तक की बारी यानि खिड़की खोल यथार्थता से पूर्णतः परिचित हो जाओ।

4. अपने हृदय की स्वच्छता सुनिश्चित कर उनके वचनों पर अपना सब कुछ यानि तन-मन-धन निछावर करने के लिए तत्पर हो जाओ।

5. अपने अतृप्त मन की प्यास बुझाने हेतु उनकी कृपा प्राप्त कर, संसार से विरक्त होने का पुरुषार्थ दिखाओ।

भजन न० 2
रंगन वालिया रंगीलाए

1. अंतर्मन व पूरे दिल से ख़्याल ध्यान-स्थिर कर परमेश्वर को प्रार्थना करो कि वह अपने इलाही रंग में हमें रंग दे। इस तरह अपने अन्दर प्रभु दर्शन के प्रति लोच पैदा करो।

2. संतोष, धैर्य का सुन्दर साज पहन कर मन को इस तरह से प्रभु में लीन रखो कि वह अंतर्घट में प्रकट हो जाए और अन्दर कोई भ्रम न रह जाये।

3. उनके चरणों में स्थान प्राप्त करने हेतु उन संग मित्र सम बातें कर प्रीति बढ़ाओ व उनके वचनों की पालना करने वाले आज्ञाकारी सपुत्र बनो।

4. सजन श्री शहनशाह हनुमान जी जैसा पावन प्रेम और निर्मल भक्ति भाव धारण कर परमेश्वर संग निष्काम प्रेम करना अपने स्वभाव के अंतर्गत करो ताकि वह आपके सब संकट हर आपको मुक्ति प्रदान करने का योग्य अधिकारी बना सहर्ष परमार्थी राज सौंप दें और आप अपने शासक आप बन कुल त्रिलोकी को दंग कर दो।

5. ऐसा ही हो इस हेतु सजन श्री शहनशाह हनुमान जी द्वारा प्रदत्त परमपद प्राप्त करने की नाम युक्ति के प्रति अटल विश्वास रखते हुए सदा स्थिर बने रहो।

भजन न० 3
उपमा कही न जाए

1. महाबीर जी की महान उपमा के वर्णन को दृष्टिगत रखते हुए अपने ख़्याल का नाता ध्यान स्थिर होकर उन संग सहर्ष जोड़ने का पराक्रम दिखाओ। जानो

यह अपने आप में संसार की तरफ से मुख घुमा परमार्थ की ओर मुख घुमाने जैसी हितकर बात है।

2. महाबीर जी की तरह ही बुद्धिमत्ता, निर्भयता व वीरता से परोपकार प्रवृत्ति में ढलना सुनिश्चित करो व परोपकारी नाम कहाओ।

3. उनकी ही तरह परमेश्वर के सच्चे सेवक बन, अन्दर की लंका जीतने के लिए विकार वृत्तियों के कारण अपने मन में उपजे राक्षसी स्वभावों पर फ़तह पाओ।

4. सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की मंत्रणा प्रवान कर अपने ख़्याल को सच्चे घर में ध्यान स्थिर करने वाले आत्मज्ञानी बनो।

5. अचेतन अवस्था को प्राप्त हुई अपनी व्याकुल सुरत को पुनः चेतन अवस्था में ला अपनी बुद्धि को इस तरह सचेत करो कि आपके लिए विवेकशीलता से अपने मन को वश में रख शब्द ब्रह्म के साथ अटूट सम्पर्क स्थापित करना सहज हो जाए और परमेश्वर आप पर प्रसन्न हो अपनी समीपता प्रदान कर दें।

भजन न॰ 4
सुन लौ मेरी बेनती

1. भवसागर से पार उतरने हेतु तहे दिल से प्रार्थना करके महाबीर जी से नाम युक्ति प्राप्त करो।

2. शांति व शक्ति का भाव हृदयगत करने के लिए युक्तिसंगत दिन रात समस्त कार्य-व्यवहार करते हुए नाम-अक्षर ध्याओ।

3. अपने सच्चे घर में ख़्याल ध्यान स्थिर रखने की महत्ता को समझो और आत्मनिरीक्षण द्वारा पाए अंतर्निहित दोषों से मुक्त होने के लिए शब्द ब्रह्म विचार अपना उन्हें आत्मसात् करना सुनिश्चित करो।

4. झुखना रोना छोड़ो व प्रभु का गुणगान/यशोगान करते हुए सदा प्रसन्नचित्त

बने रहते हुए जीवन के सच्चे आनन्द का अनुभव करो।

इस हेतु

5. जानो काम का परिवार है कामना और काम की दोस्ती है क्रोध से। यहाँ काम से तात्पर्य इन्द्रियों की अपने-अपने विषयों की ओर प्रवृत्ति से है तथा क्रोध से आशय चित्तवृत्ति के उस उग्रभाव से है जो कष्ट या हानि पहुँचाने वाले अथवा अनुचित कार्य करने वाले के प्रति उग्र भाव के रूप में मन में उत्पन्न होता है। अपने मन में दुष्टता का भाव उत्पन्न करने वाले इन विकराल दुश्मनों को, महाबीर जी की युक्ति अपना यानि सम, संतोष, धैर्य, सच्चाई, धर्म के सवाल हल कर, समाप्त कर अपने विशुद्ध मन को प्रभु में लीन रखने योग्य बनो। ऐसा पुरुषार्थ दिखा समदृष्टि हो जाओ अर्थात् सबको एकसा समझते व देखते हुए अमर पद को पाओ और भवसागर से पार हो अपना जीवन सफल बनाओ।

अंत में सजनों यह जानने समझने के पश्चात् मानो कि सत्य धारण करके ही धर्म के रास्ते पर निष्कामता से बने रह सकते हो और परस्पर सत्य अनुरूप व्यवहार करते हुए निश्चिंतता से परोपकार कमा ब्रह्म नाम कहा सकते हो। इस तरह नेक कमाई द्वारा सहजता से अपने सच्चे घर पहुँच विश्राम को पा सकते हो। आपकी जानकारी हेतु आगामी सप्ताह हम क्रमवार अगले चार भजनों के आधार पर विचार विमर्श करेंगे। अतः आप भी इन्हें समझ कर आना।

आज का विचार

सतवस्तु दी सजनों चाल चलो।
सतवस्तु दे वचन इस्तेमाल करो।।
सतवस्तु दे असूलां नू फड़ो सजनो।
सत सत वचनां नाल प्यार करो।।

दिनाँक 12 मई 2019 का सबक़

हम बढ़ रहे हैं दुर्जनता से सजनता की ओर.....

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों यह प्रश्न तो आदिम काल से उठता रहा है, कि मानव बनने का क्या प्रयोजन है? मनुष्य सच्चे अर्थों में मनुष्य बना रहे, यही उसकी प्रयोजनीयता और सार्थकता है। इस प्रयोजन के दृष्टिगत सर्वप्रथम मनुष्य बनने के लिए व्यक्ति के लिए सहृदय अर्थात् संवेदनशील होना आवश्यक है। जब व्यक्ति संवेदनशील होता है, तभी वह दूसरों के दुःखों से द्रवित होता है। द्रवित होकर ही वह मनुष्य उदार और सहृदय बनता है। उदारता और सहृदयता से मनुष्य में सज्जनता आती है। सज्जनता वह गुण है, जो मनुष्य को व्यष्टि के धरातल से ऊपर उठाकर समष्टि के धरातल पर प्रतिष्ठित कर देता है। इस स्थिति में पहुँचकर वह परोपकारी, समाज, देश और लोक यानि विश्व का अंग बन जाता है। वह स्वार्थी नहीं, निःस्वार्थी बन जाता है। निःस्वार्थी बनकर वह वैश्विक कल्याण से जुड़ जाता है। इस सोपान पर पहुँचकर उसमें विश्व के दुःखी व अभावग्रस्त लोगों के प्रति जो प्रेम व सहानुभूति जागती है, वह अंततः दया व करुणा में परिणत हो जाती है। निष्काम सेवा की चेतना इसी से उद्भूत होती

है, जिससे प्रेरित होकर मनुष्य परोपकार की राह पकड़ लेता है। यह ही तो मानवता का सिद्धान्त है। इसी तथ्य के दृष्टिगत ही सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा गया हैः-

सजन सजन दा है गहणा,
सजन सजन दा है सिंगार।।
सजन है जे आत्मा में परमात्मा,
है ओ सिरजनहार - है ओ सिरजनहार।।

सजनता की इसी महत्ता को भली भांति समझने हेतु आओ सजनों आज हम सजनता व दुर्जनता के मध्य अंतर को ध्यानपूर्वक समझते हैंः-

सज्जन व्यक्ति कुलीन यानि पवित्र, साफ व भला आदमी होता है। दुर्जन व्यक्ति मलीन, अपवित्र व कपटी इंसान होता है।

सज्जन व्यक्ति उत्तम प्रकृति वाला व अच्छे स्वभाव वाला खरा इंसान होता है। दुर्जन व्यक्ति दुष्ट प्रकृति वाला, बुरे स्वभाव वाला खोटा आदमी होता है।

सज्जन व्यक्ति का चिंतन स्वच्छ व सोच सकारात्मक होती है। दुर्जन व्यक्ति का चिंतन अशुद्ध व सोच नकारात्मक होती है।

सज्जन व्यक्ति अच्छे अंतःकरण वाला यानि अच्छी नीयत वाला, आत्मतुष्ट व निष्काम इंसान होने के नाते सदाशय कहलाता है तथा उसका संकल्प स्वच्छ होता है। दुर्जन व्यक्ति बुरे अंतःकरण वाला यानि कुचेष्टा, बुरी नीयत व चालबाज बदमाश इंसान होने के कारण दुराशय होता है और उसका संकल्प अस्वच्छ होता है ।

सज्जन व्यक्ति कुदरत की वाणी अनुसार कदम-कदम पर यानि जीवन के हर पहलू में विचार पकड़ता है और तद्नुसार ही क्रियाकलाप करता है। दुर्जन व्यक्ति मनुराज के अधीन हो मनमत अनुसार चलता है और तद्नुसार ही समस्त क्रियाक्लाप करता है।

सज्जन व्यक्ति जिह्वा से सबको सजन जी करके बुलाते हुए विचारयुक्त वाजिब सार्थक बातें करता है इसलिए उसकी जिह्वा स्वतन्त्र होती है। दुर्जन व्यक्ति तूं-तेरा करके सबको सम्बोधित करता है तथा अविचारपूर्ण तथा अपशब्दों व गाली-गलौच युक्त उलटी-सीधी अनुचित निरर्थक बातें करता है।

सज्जन व्यक्ति अपने आपको नितोनित पकड़ता हुआ इस बदन से खोट दूर कर खालस सोना हो जाता है और अपने असलियत प्रकाश को पा लेता है। दुर्जन व्यक्ति असंयमी व अनियन्त्रित होता है इसलिए अपने असलियत प्रकाश को नहीं जान पाता।

सज्जन व्यक्ति सबको एक निगाह एक दृष्टि से देखता है इसलिए उसकी दृष्टि कंचन होती है। दुर्जन व्यक्ति की दृष्टि कामनायुक्त होती है।

सज्जन व्यक्ति की वृत्ति, स्मृति, बुद्धि, भाव स्वभाव रूपी बाणा व रैहणी-बैहणी निर्मल होती है। दुर्जन व्यक्ति की वृत्ति, स्मृति, बुद्धि, भाव स्वभाव रूपी बाणा व रैहणी-बैहणी दोषपूर्ण होती है।

सज्जन व्यक्ति के विचार, संस्कार, आचार, व्यवहार व स्वभाव सब सुसंस्कृत होते हैं। दुर्जन व्यक्ति के विचार, संस्कार, आचार, व्यवहार व स्वभाव सब असंस्कृत होते हैं।

सज्जन व्यक्ति सदा प्रसन्न, प्रफुल्लित व अफुर रहता है और शांत चित्त होता है। दुर्जन व्यक्ति सदा दुश्चिंता, तनाव, अवसाद आदि फुरनों से ग्रस्त रहता है इसलिए अशांत चित्त कहलाता है।

सज्जन व्यक्ति का हृदय पात्र विशाल होता है। दुर्जन व्यक्ति का हृदय पात्र संकीर्ण होता है।

सज्जन व्यक्ति स्वतन्त्र व स्वावलंबी होता है। दुर्जन व्यक्ति सदा परतन्त्र व पराश्रित होता है।

सज्जन व्यक्ति के मन के भाव व विचार उच्च, महान और उदार होते हैं। दुर्जन व्यक्ति के मन के भाव व विचार अधम, क्षुद्र व अनुदार होते हैं।

सज्जन व्यक्ति पतिव्रत-पत्नीव्रत धर्म का पालन करते हुए सदा अपनी पत्नी/पति में ही अनुराग रखता है। दुर्जन व्यक्ति परपुरुष परस्त्री के प्रति कामुक हो जाता है इसलिए व्यभिचारी कहलाता है।

सज्जन व्यक्ति नेक दिल होने के कारण सद्‌गुणों से युक्त होता है। दुर्जन व्यक्ति दुष्ट हृदय होने के कारण दोषग्रस्त यानि दुर्गुणों से युक्त होता है।

सज्जन व्यक्ति सदाचारी यानि नैतिक दृष्टि से अच्छे आचरण वाला धर्मात्मा इंसान होता है। दुर्जन व्यक्ति दुराचारी यानि नैतिक दृष्टि से बुरे चाल चलन वाला दुरात्मा इंसान होता है।

सज्जन व्यक्ति सज्ञान यानि ज्ञानवान, बुद्धिमान व विवेकशील होता है इसलिए सुबुद्धिवान या सन्मति कहलाता है। दुर्जन व्यक्ति अज्ञानी, बुद्धिहीन व अविवेकी होता है इसलिए दुर्बुद्धि कुमतिवान इंसान कहलाता है।

सात्विक आहारी होने के कारण सज्जन व्यक्ति शारीरिक-मानसिक रूप से स्वस्थ होता है। राजसिक व तामसिक आहारी होने के कारण दुर्जन व्यक्ति शारीरिक-मानसिक रूप से अस्वस्थ होता है।

सज्जन व्यक्ति अपराध वृत्तियों से कोसों दूर होता है, इसलिए वह किसी से यहाँ तक की मौत से भी नहीं डरता। दुर्जन व्यक्ति अपराध प्रवृत्ति में धँसा होता है इसलिए सदा भयभीत रहता है।

सज्जन व्यक्ति अपने हानि-लाभ का विचार त्याग कर निष्काम भाव से सबका कल्याण यानि भलाई करता है इसलिए हितकारी व परोपकारी कहलाता है। दुर्जन व्यक्ति अहिताकांक्षी होने के कारण स्वार्थ सिद्धि की भावना से सबका अहित करता है।

सज्जन व्यक्ति सुकर्म व पुण्य यानि अच्छे कर्म करता है। दुर्जन व्यक्ति कुकर्म-अधर्म यानि बुरे व अधर्मयुक्त पापमय कृत्य करता है।

सज्जन व्यक्ति चरित्रवान होता है। दुर्जन व्यक्ति बदचलन होने के कारण दुश्चरित्र कहलाता है।

सज्जन व्यक्ति आत्मतत्व की भक्ति-भाव से उपासना करता है। दुर्जन व्यक्ति शरीरों-तस्वीरों की उपासना करता है और अजब-गजब आडम्बर युक्त कर्मकांडों में फँसा रहता है।

समभाव-समदृष्टि से युक्त होने के कारण सज्जन व्यक्ति को सारा ब्रह्माण्ड एक समान भासित प्रतीत होता है। द्वि-द्वेष से युक्त होने के कारण दुर्जन व्यक्ति को सारा ब्रह्माण्ड भिन्न भिन्न रूप रंगों से अलंकृत जान पड़ता है।

सर्वव्यापक भगवान के सत्य पर निरंतर मजबूत बने रहने के कारण सज्जन व्यक्ति एकात्मा के भाव में ठहरा रहता है और सबके साथ अच्छा, प्रिय तथा उचित आत्मीयता युक्त समता का व्यवहार करता है। दुर्जन व्यक्ति सबके साथ बुरा, अप्रिय तथा अनुचित द्वि-द्वेष युक्त विषमता का व्यवहार करता है।

सज्जन व्यक्ति के सारे मित्र होते हैं। दुर्जन व्यक्ति के सारे दुश्मन व वैरी होते हैं।

सज्जन व्यक्ति ईमानदार, निश्छल, सरल, सभ्य, सत्यवादी, सुसंस्कृत, सुशील, दयालु, विनम्र, शालीन, शिष्ट, क्षमाशील, निराभिमानी, संतोषी, धीर, धर्मपरायण, अनासक्त व मृदुभाषी होता है। दुर्जन व्यक्ति झूठा, बेईमान, चालाक, कुटिल, छली, कपटी, मक्कार, कठोर, असभ्य, दुशील, अशिष्ट, अभिमानी, महत्त्वाकांक्षी, कामी, क्रोधी, लोभी, भ्रष्टाचारी, व्यभिचारी, अत्याचारी, ठग, आसक्त व दुर्व्यसनी होता है।

सज्जन व्यक्ति कभी किसी को मन, वचन, कर्म द्वारा हानि नहीं पहुँचाता यानि अहिंसावादी होता है। दुर्जन व्यक्ति अपना मतलब साधने हेतु अपने मन-वचन-

कर्म द्वारा किसी को भी हानि पहुँचाने से नहीं कतराता।

सज्जन व्यक्ति अच्छी दशा या अवस्था को प्राप्त हो सुख व आनन्द से जीवनयापन करता है। दुर्जन व्यक्ति बुरी दशा या अवस्था यानि दुर्दशा को प्राप्त हो दुःख-क्लेश भुगतता है।

सज्जन व्यक्ति सर्वदा यश-कीर्ति का पात्र माना जाता है। दुर्जन व्यक्ति सर्वथा निंदनीय माना जाता है।

सज्जन व्यक्ति जन्म की बाजी जीत मानव जीवन सकारा करने वाला सौभाग्यशाली इंसान कहलाता है। दुर्जन व्यक्ति जन्म की बाजी हार जीवन व्यर्थ गँवाने वाला दुर्भाग्यशाली अभागा इंसान कहलाता है।

सारतः हम कह सकते हैं कि सज्जन व्यक्ति आत्मा-परमात्मा की एकता एवं अखंडता का बोध कर सजन युग का पहरेवा पहन लेता है और ए विध् सजन युग की बुनियाद को पक्का कर सतवस्तु में प्रवेश पा जाता है। इसके विपरीत दुर्जन व्यक्ति कलियुगी भाव-स्वभावों का त्याग न कर पाने के कारण दग्ध भस्म की त्रास भुगतता है।

स्पष्ट है सजनों सज्जनता व्यक्ति के उदार आशय चरित्र, निश्चल स्वभाव और लोकहितकारी कर्मों की वह त्रिवेणी है जो उनके मन-वचन-कर्म द्वारा सदैव निर्झरित होती रहती है। यह वह सहज साधु स्वभाव है जिसे छल-कपट, ईर्ष्या-द्वेष, निंदा-प्रतिशोध, दुर्वाद, दुष्टता आदि दुर्गुण छू तक नहीं सकते। यह सत्य, क्षमा, दया, संयम व सहनशीलता का प्रतीक है। याद रखो जिसके मन-वचन और कर्म सज्जनता के अनुकूल शुद्ध हो जाते हैं, उसी विशुद्ध हृदय सजन को आत्म साक्षात्कार होता है और वह आत्मज्ञानी ही सौभाग्यशाली कहलाता है। इस तरह हम कह सकते हैं कि सज्जनता मनुष्यता की विभूति है। सांसारिक जीवन में इसी से सौमनस्य (प्रेम, प्रीति, संतोष, प्रसन्नता) व सामंजस्य (एकरसता, मेल) स्थापित होता है और पारस्परिक सद्व्यवहार

पनपता है। अतः यदि सुख-शांति की चाह हो तो इसी को आत्मसात् कीजिए और दुर्जनता यानि बुराई छोड़ समभाव-समदृष्टि की युक्ति अनुसार सजन पुरुष बनने का दृढ़ संकल्प ले, सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के इस विचार को तहे दिल से अपना लीजिएः-

जिह्वा सजन ख्याल सजन, सजन नज़रों में पहचान,
हम हैं सजन तुम हो सजन, सजनों सजन सजन ही मान

निःसंदेह सजनों सजनता व दुर्जनता के इस तुलनात्मक अध्ययन द्वारा आपको ज्ञात हो गया होगा कि विषय जन्यक दुर्जनता यानि अंतर्निहित कलुषित भाव-स्वभावों को त्यागना क्योंकर परम आवश्यक है व सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित समभाव-समदृष्टि की युक्ति को अपना कर परस्पर सजनता का व्यवहार करना क्योंकर अनिवार्य है। अतः इस अनिवार्यता को समझते हुए आओ सजन भाव अपनाना सुनिश्चित करें और इस मकसद में पूर्णतः कामयाब होने हेतु क्रमवार जो हम सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित भजनों/कीर्तनों के भावाशयों को समझ कर आत्मसात् करने की क्रिया कर रहे हैं उस श्रृंखला में आगे बढ़ेंः-

क्रमवार आज का पहला भजन है धन मेरे बलधारी ब्रह्मचारी, आओ सर्वप्रथम इस में वर्णित भावाशयों को ही समझ कर आत्मसात् करेंः-

भजन न० 5
धन मेरे बलधारी

1. जानो महाबीर जी इस जगत में अद्वितीय प्रशंसा के योग्य हैं क्योंकि उन्होंने ही आजीवन सुदृढ़ता से ब्रह्म भाव अनुसार आचार-व्यवहार करते हुए निष्काम कर्म करने का पराक्रम दिखा भक्त हितकारी व परोपकारी नाम कहाया। अतः हमें उन्हीं का संग प्राप्त कर, उन्हीं के मार्गदर्शन में बने रहने वाला पुण्यवान इंसान बनना है।

2. उनकी उपमा व यश के वर्णन को दृष्टिगत रखते हुए हमें समर्पित भाव से उनके वचनों की पालना करने वाला समझदार इंसान बनना है व इस प्रकार अपने समस्त संकटों का निवारण आप कर, अपनी व अपने कुल की कलुकाल से रक्षा कर, सत्-वादी नाम कहाना है।

3. ऐसा ही हो उसके लिए हमें मन में द्वि-द्वेष का भाव उपजाने वाले काम (इच्छा, मनोरथ), क्रोध (चित्तवृत्ति का उग्र भाव) जैसे असुरी विकारों का नाश करना है ताकि ये मन की सुख-चैन व शान्ति न लूट लें। इस हेतु शांति-शक्ति (मन की क्षोभ, चिंता आदि से रहित निश्चल व गंभीर अवस्था) को धारण कर, हृदय में विधिवत् नाम अक्षर ध्याना है। इस तरह उन संग बने रह आत्मतुष्ट हो जाना है व ए विध् अपने साथ न्याय कर सजन पुरुष बन जाना है।

4. उपरोक्त तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए हमारे लिए बनता है कि हम अपने मन में महाबीर जी के प्रति निर्मल प्रेम बढ़ाएँ और जो भी वह कहें, वैसे ही करते जाएँ। इस तरह उनके तेज प्रताप के प्रभाव से सभी दुःखों से छुटकारा पा, अविचार युक्त अवलड़ा रास्ता छोड़ विचारयुक्त सीधे रास्ते पर आने में ही अपना हित समझें।

5. सजनों इस तरह सत्य-धर्म के निष्काम रास्ते पर आप तो चलो ही साथ ही महाबीर जी की तरह परोपकार की भावना से ओत-प्रोत हो अपने परिवारजनों, संगी साथियों को भी सद्मार्ग पर प्रवृत्त करो और अपने व सबके सजन बन जाओ।

भजन न0 6

सदके जावां बलिहार मैं सदके जावां अंजनी लाल तों।।

1. सजनों मन से काम, क्रोध जैसे विकृत स्वभाव त्याग निष्काम हो जाओ और महाबीर जी द्वारा बताए हुए निष्काम रास्ते पर चलते हुए अफुर बने रहो व दिन-रात चैन से व्यतीत करो।

2. अपने परिवारजनों के प्रति फर्ज अदा तो नीतिसंगत हँस कर अवश्य करो पर मोह-माया के प्रभाव से उनमें बंधनमान कदापि मत होवो। ऐसा पुरुषार्थ दिखा सभी कष्ट-क्लेशों से मुक्त हो सुख भरा जीवन जीना आरम्भ कर दो। यहाँ मोह से तात्पर्य ईश्वर का ध्यान छोड़कर शरीर तथा सांसारिक वस्तुओं को अपना सब कुछ समझने से है तथा माया से तात्पर्य मिथ्या प्रतीति यानि भ्रमित करने वाली कल्पित शक्ति से है।

3. आध्यात्मिक, आधिभौतिक, आधिदैविक ये तीनों ताप मिटाने हेतु अर्थात् मानसिक कष्ट व हृदय का दुःख मिटाने हेतु महाबीर जी के द्वारे पर निष्काम भाव से बने रहो। इस प्रकार उस परमपिता का एक बार में कहना मानने वाले सपुत्र बन उनकी कृपा से तीनों ताप मिटा नौनिहाल हो जाओ।

4. त्रिलोकी के दुःख भंजन महाबीर जी के वचनों पर सब कुछ निछावर कर इन्द्रियों के पाँचों विषयों यथा रूप, रस, गंध, शब्द, स्पर्श के दुष्प्रभाव से छुटकारा पा, इन्द्रिय निग्रही बनो व इस प्रकार सदा अपने मन को परमेश्वर में लीन रखने मे समर्थ हो, जितेन्द्रिय हो जाओ।

5. महाबीर जी के चरणों में ख़्याल ध्यान स्थिर रखने की महत्ता को समझो और वैसा पराक्रम दिखा अपने वास्तविक स्वरूप को पा आनन्दित हो जाओ।

भजन न० 7
जी मैं सदके जावां कुर्बान

1. जानो महाबीर जी ने अपनी अपार कृपा दिखा हमें अपने द्वारे पर स्थान दिया है इसलिए हमारे लिए बनता है कि हम सच्चे दिल से उनकी शरण में आ जाएँ और उनकी इस मेहरबानी पर अपना सर्वस्व निछावर करने से कदापि न सकुचाएँ।

2. जानो जो आज हर मानव के हृदय में तीनों तापों के दुष्प्रभाव से आग लगी हुई है और जिसके कारण मानव के स्वभावों का टैम्प्रैचर सम नहीं रह पाता,

वह केवल उन द्वारा प्रदत्त नाम की अमृत वर्षा से ही शांत हो सकती है और हम समभावी बन सकते हैं। अतः उन द्वारा प्रदत्त युक्ति विधिवत् अपनाओ। ऐसा पुरुषार्थ दिखाने पर ही काम, क्रोध जैसे स्वभावों से छुटकारा पा सकोगे और समदृष्टि का सबक प्राप्त हो सकेगा।

3. पिछली जो बीती विहाणी है, वे बातें ख़्याल में मत लाओ यानि उनको याद कर रोना-झुखना छोड़ो और महाबीर जी द्वारा प्रदत्त नाम यानि आत्मबोध कराने वाले शब्द का निरंतर स्मरण करते हुए अपने कुसंगी संकल्प को स्वच्छ बना परमेश्वर का संग प्राप्त कर लो।

4. ऐसा ही हो इसके लिए गहनता से आत्मनिरीक्षण कर दिल से वैर-विरोध यानि शत्रुता व विपरीतता का नकारात्मक भाव हटा समभाव-समदृष्टि के सबक अनुसार परस्पर सजन भाव का व्यवहार करने में विलम्ब मत करो।

5. कहने का तात्पर्य यह है कि महाबीर जी की मंत्रणा अनुसार जो त्याज्य है उसे सहर्ष त्याग दो व जो धारणीय है उसे धारण करने का पराक्रम दिखा विजयी हो जाओ।

भजन न॰ 8
मन नूं भावन जी

1. जिस परमेश्वर का संग प्राप्त करने हेतु, मानव तो क्या शिव ब्रह्मा भी ध्यानस्थ रहने में कल्याण समझते हैं उस यथार्थ को दृष्टिगत रखते हुए हमारे लिए भी बनता है कि हम अपने मन में उनके संग बने रहने हेतु इतनी उमंग व उत्साह पैदा करें कि उनका संग हमारे मन को भाने लगे और हम परमेश्वर के वचनानुकूल अपनी जीवन यात्रा निष्पाप सम्पन्न करते हुए निष्कंटक जीवन के सर्वोच्च लक्ष्य को प्राप्त कर सकें।

2. निःसंदेह इस यत्न में सफलता प्राप्त करने हेतु हमें इस भजन में वर्णित कर्मकांडों व आडम्बरों में न उलझते हुए महाबीर जी द्वारा प्रदत्त सत्य धर्म के

भक्ति भाव पर स्थिर डटे रह अपना घर सतयुग बनाना होगा।

3. इस संदर्भ में यह तथ्य कदापि नहीं भूलना कि काम, क्रोध को दिल से हटाने पर ही हमें परमेश्वर की समीपता प्राप्त हो सकेगी और हम हृदय व्याप्त परमेश्वर का सहजता से साक्षात्कार कर अपना जीवन सकार्थ कर विश्राम को पा सकेंगे।

अंत में सजनों उपरोक्त भजनों के आधार पर आत्मनिरीक्षण करो और ख़ुद में पाए अवगुणों को त्याग सद्गुणों का विकास करो अर्थात् दुर्जनता छोड़ सज्जनता अपनाओ। इस हेतु मिल कर बोलोः-

भय और दुर्बलता से बचने के लिए,
अपनी प्रसन्नता और शांति को सुरक्षित रखने के लिए तथा
मृत्तलोक पर फ़तह पाने के लिए यानि जन्म-मरण के चक्रव्यूह से
आज़ाद होने के लिए
मुझे अपने अन्दर सजन भाव का विकास करना ही करना है।

आप सबकी जानकारी हेतु आगामी सप्ताह हम क्रमवार अगले चार भजनों के भावाशयों को समझ कर उन पर विचार विर्मश करेंगे। अतः आप भी इन्हें घर से पढ़-समझ कर आना।

आज का विचार

विचार ईश्वर आप नूं मान।
अवविचार ईश्वर इक जान ।।
विचार इक अपना आप ही मान।
अवविचार कुल दुनियां जान ।।

दिनाँक 19 मई 2019 का सबक़

आओ बढ़ें स्वार्थपरता छोड़ निःस्वार्थता की ओर.....

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों ध्यान कक्ष में हो रही विभिन्न कक्षाओं के माध्यम से हर संभव प्रयास द्वारा प्रत्येक सजन को अपने आप की पहचान कर, आत्मबोध करने हेतु प्रेरित किया जा रहा है। परन्तु यह आप, हम सब भली भांति जानते हैं कि यह पहचान तभी संभव है यदि हम 'स्व' और 'पर' यानि 'अपने-पराए', 'तेरी-मेरी' के भेदभाव से ऊपर उठकर, निःस्वार्थी बनेंगे अर्थात् सांसारिक वस्तुओं और विषयों के मोहपाश से विमुक्त रह, आत्मिक ज्ञान प्राप्ति को व तद्नुरूप आत्मिक शुद्धता व परोपकार के निमित्त स्वयं को निष्काम भाव से समर्पित करने को प्राथमिकता देंगे।

जानो ऐसा पुरुषार्थ दिखाने पर ही हमारा मन-चित्त शांत व वृत्ति-स्मृति, बुद्धि व भाव स्वभाव रूपी बाणा निर्मल बना रहेगा व हम 'स्व' यानि 'आत्मा' और उस 'आत्मा' में स्थित 'परमात्मा' से सम्बन्ध स्थापित कर, अज्ञानजनित माया का बहिष्कार कर पाएंगे यानि भौतिक प्रपंचों और प्रलोभनों से स्वयं को दूर रख संतोषी, धीर व जितेन्द्रिय बनने में सक्षम हो पाएंगे। इस प्रकार बैहरुनी व

स्वाभाविक सुन्दरता को धारण कर समुच्चय विश्व को आत्मस्वरूप जान, उसके कल्याण की भावना से ओत-प्रोत हो निःस्वार्थता की राह पर प्रशस्त हो जाएंगे और अंत पूर्ण आनन्द को प्राप्त हो विश्राम पा जाएंगे। सजनों मानव जीवन में निःस्वार्थता की इसी महत्ता को देखते हुए आओ आज हम स्वार्थी और निःस्वार्थी इंसान के स्वाभाविक अंतर को सूक्ष्मतया जानें व तद्नुरूप अपना सूक्ष्मतया आत्मनिरीक्षण कर निःस्वार्थ हो जाने में ही अपना कल्याण मानें:-

निःस्वार्थी और स्वार्थी इंसान

निःस्वार्थी इंसान प्रत्येक कार्य अपनी निजी इच्छा, प्रयोजन या उद्देश्य से ऊपर उठकर परहित यानि विशिष्ट प्रयोजन के निमित्त अकर्त्ता व सेवा भाव से करता है। स्वार्थी इंसान प्रत्येक कार्य अपने उद्देश्य या प्रयोजन सिद्धि के निमित्त अपने लाभ, स्वार्थ या हित को ध्यान में रखकर कर्त्ता भाव से करता है।

निःस्वार्थी इंसान के हृदय में मूलतः त्याग व दया की भावना होती है इसलिए मानवता की भलाई हेतु वह निजी लाभ, स्वार्थ, धन-दौलत, राजपाट, यशोलिप्सा यानि व्यक्तिगत हितों व यहाँ तक कि प्राणों की बलि देने से भी नहीं सकुचाता। स्वार्थी इंसान विषयी पदार्थों में लिप्त होता है इसलिए परिग्रह यानि सब कुछ ग्रहण कर, संग्रह व संचय करने की प्रवृत्ति को बढ़ावा देता है और त्याग जैसे सर्वोच्च गुण के अनुकूल मानवोचित व्यवहार दर्शाना उसके बस की बात नहीं रहती।

निःस्वार्थी इंसान परमार्थ यानि सर्वोच्च सत्य को जानने-पहचानने वाला व तद्नुकूल सत्ययुक्त आचरण करने वाला होता है। स्वार्थी इंसान अपना कार्य सिद्ध करने हेतु सत्य की अवहेलना कर झूठ व छल-कपट का सहारा लेता है इसलिए असत्ययुक्त मिथ्याचार करता है।

निःस्वार्थी इंसान का शरीर व अंतःकरण दोनों शुद्ध होते हैं इसलिए उस निर्विकारी के हृदय में ईश्वर का प्रतिबिंब स्पष्टता परिलक्षित होता है। स्वार्थी

इंसान बैहरूनी वृत्ति में शारीरिक रूप से भले ही साफ-सुथरे वस्त्र पहन या साज-सज्जा कर सुन्दर प्रतीत होता है पर अन्दरुनी वृत्ति में उसका मन/हृदय विकारग्रस्तता के कारण दोषयुक्त व मलीन होता है। ऐसे में जैसे मैले शीशे में सूर्य की किरणों का प्रतिबिंब नहीं दिखता ठीक उसी प्रकार उसके मलिन और अपवित्र अंतःकरण में आत्मसत्ता दृष्टिगोचर नहीं होती और वह अपने आप को नहीं पहचान पाता।

निःस्वार्थी इंसान वैरागी होता है यानि उसका ख़्याल जीवनाकर्षणों को बंधन का मूल कारण मानते हुए उनसे तटस्थ रहता है और मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति तक सीमित रह जीवनमुक्त बना रहता है। स्वार्थी इंसान का ख़्याल लुभायमान करने वाले जीवनाकर्षणों के प्रति बुरी तरह आसक्त होता है इसलिए आवश्यकता और इच्छाओं के मूल अंतर को कदाचित् नहीं समझ पाता। यही कारण है कि ऐसा अहंकारी इंसान सदैव मोह-माया में बंधनमान रहता है।

निःस्वार्थी इंसान धन-ऐश्वर्य से मुक्त रहते हुए सादा जीवन स्वतन्त्रता से व्यतीत करता है। स्वार्थी इंसान धन-लोलुप होता है इसलिए वह माया का दास बनकर कदम-कदम पर धर्म हारते हुए, गुलामों की भांति जीवनयापन करता है।

निःस्वार्थी इंसान नेकनीयत व उच्चाशय होता है। स्वार्थी इंसान की नीयत कपटी व आशय अस्पष्ट होता है।

निःस्वार्थी इंसान उदार मन वाला, विशाल हृदय इंसान होता है। स्वार्थी इंसान कंजूस व संकीर्ण मन वाला क्षुद्र इंसान होता है।

निःस्वार्थी संकल्प रहित यानि अफुर रह सदा सचेतन बना रहता है। स्वार्थी संकल्प कुसंगी के चक्रव्यूह में फँसे रह फुरनों से ग्रस्त रहता है और अचेतन अवस्था को प्राप्त हो मूर्खों जैसा जीवन जीता है।

निःस्वार्थी इंसान की दृष्टि कंचन होती है। स्वार्थी इंसान की दृष्टि कामुक होती है।

निःस्वार्थी इंसान सार्थक व हितकारी बात करता है इसलिए उसकी जिह्वा स्वतन्त्र होती है। स्वार्थी इंसान खुदगर्ज़ होता है इसलिए अपना कार्य सिद्ध करने हेतु चतुराई से दूसरों की खुशामद करने वाली यानि निंदा-उस्तत युक्त मीठी-मीठी बनावटी व लाग-लपेट वाली बातें करता है इसलिए उसकी जिह्वा स्वतन्त्र नहीं रह पाती।

निःस्वार्थी इंसान कर्म फल की इच्छा से रहित होकर निष्काम व नेक कर्म करता है। स्वार्थी इंसान फल की शुभेच्छा से सदैव काम्य व पाप युक्त कर्म करता है।

निःस्वार्थी इंसान गुरुमत को महत्ता देता है इसलिए सत्य-धर्म के रास्ते पर चलता है। स्वार्थी इंसान मनमत को महत्ता देता है और तद्नुरूप ही अविचार व अधर्म युक्त कवलड़े रास्ते पर चलता है। कहने का आशय यह है कि ऐसा मनमत पर चलने वाला इन्सान कामुक व छली इन्सान की बातों से भावुक होकर जल्दी ही भावनाओं में बह जाता है और उसकी कामुकता का शिकार हो जाता है। इस सन्दर्भ में युवा पीढ़ी को खुद पर अत्यन्त सावधान होने की आवश्यकता है क्योंकि वर्तमान युग में उन्हें हर तरफ से कामुकता के दृश्य नज़र आते हैं जिससे कामुकता इनके अन्दर भर जाती है और ये विवेकशक्ति खो बैठते हैं और उनके अन्त परिणामों से परिचित नहीं हो पाते। तभी तो ये किसी के भी बहकावे में आकर शीघ्र ही बहक जाते हैं और अपनी होश-हवाश खोकर बुराई के रास्ते पर प्रशस्त हो जाते हैं।

निःस्वार्थी इंसान अन्दर-बाहर से एक होता है इसलिए वह आत्मीयता की भावना से युक्त हो, मन-वचन-कर्म से सबके साथ एक सा समता व सजनता पूर्ण व्यवहार करता है। स्वार्थी इंसान अन्दर से कुछ व बाहर से कुछ और होता है इसलिए वह धोखेबाज जो मन में सोचता है, अपने वचन व कर्म द्वारा वैसा व्यवहार नहीं करता और छली कहलाता है।

निःस्वार्थी इंसान ईमानदार व संतोषी होता है इसलिए किसी तरह की अपेक्षा, चिंता या शिकायत नहीं करता। चूंकि आशा-तृष्णा से ग्रस्त स्वार्थी इंसान को हर हाल में अपना मतलब साधना होता है इसलिए वह चालबाज़, झूठा, छली, लोभी व चोर कहलाता है और बात-बात पर दूसरों की शिकायतें करता है।

निःस्वार्थी इंसान सकारात्मक, आत्मसंयमी, विवेकशील व समबुद्धि होता है। स्वार्थी इंसान नकारात्मक, अनियन्त्रित यानि चंचल, अविवेकी व भ्रमित बुद्धि इंसान होता है।

निःस्वार्थी इंसान प्रत्येक कार्य खुशी-खुशी प्रसन्नचित्तता से करता है। स्वार्थी इंसान मतलब पूरा होने पर प्रसन्न व न पूरा होने पर खिन्न हो जाता है इसलिए काम करते हुए कभी हँसता तो कभी रोता है।

निःस्वार्थी इंसान के मन में लोकमंगल की भावना सदैव प्रधान रहती है इसलिए वह सबके हितों को दृष्टिगत रखकर विचारपूर्वक प्रत्येक कार्य करता है। स्वार्थी इंसान केवल अपने बारे में सोचता है इसलिए अपने स्वार्थ या हित के सामने किसी और बात का विचार नहीं करता।

निःस्वार्थी इंसान निडर होता है। स्वार्थी इंसान डरपोक होता है क्योंकि उसे सदैव अपना कुछ लूट जाने या छिन जाने का भय सताता रहता है।

निःस्वार्थी इंसान का मन राग-द्वेष, अपने-पराए, तेरी-मेरी, ईर्ष्या-द्वेष आदि भौतिक जीवन के द्वन्द्वों से मुक्त रह, दृढ़ता व धीरता से समभाव में स्थित रहता है। स्वार्थी इंसान का मन स्वार्थ सिद्धि को महत्ता देने के कारण भौतिक जीवन के द्वन्द्वों व विषमताओं से घिरा रहता है।

निःस्वार्थी इंसान में किसी कारण भी दिखावे की भावना या विकार वृत्तियाँ उत्पन्न नहीं होती। स्वार्थी इंसान ईर्ष्या व प्रतिस्पर्धा का शिकार होता है इसलिए दिखावा उसके जीवन का अभिन्न अंग होता है। इसी होड़ में वह नाना प्रकार की विकार-वृत्तियों यथा काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि का

शिकार हो स्वेच्छाचारी व आत्मकेन्द्रित हो जाता है।

निःस्वार्थी इंसान शब्द को गुरु मान उसी की बन्दगी करता है। स्वार्थी इंसान मनोरथ सिद्धि हेतु गुरुओं, शरीरों, तस्वीरों व देवताओं की पूजा मानता को प्राथमिकता देता है।

निःस्वार्थी इंसान चूंकि 'ईश्वर है अपना आप' इस विचार पर खड़ा होता है इसलिए कभी भी ईश्वर व किसी से अपने लिए कुछ नहीं माँगता। स्वार्थी इंसान हमेशा स्वार्थपूर्ति का रोना ईश्वर व सबके आगे रोता रहता है। इसी कारण उसका संकल्प सदा झुखता रहता है।

निःस्वार्थी इंसान का जीवन सबके लिए उपकारी साबित होता है। स्वार्थी इंसान का जीवन सबके लिए तो क्या अपने लिए भी हितकारी साबित नहीं होता यानि वह तो अपना भी वैरी ही होता है।

निःस्वार्थी इंसान तीनों तापों से मुक्त रह जन्म की बाजी जीत जाता है। स्वार्थी इंसान मनोरथ सिद्धि की चेष्टा में आध्यात्मिक, आधिभौतिक व आधिदैविक तापों से त्रस्त रहता है। आशय यह है कि ऐसा इंसान कभी क्षणभंगुर इस सुख के पीछे भागता है तो कभी उस सुख के पीछे। कभी एक देवता की पूजा करता है तो कभी दूसरे की। इस तरह वह जीवन की आपाधापी में मानव जीवन किस लिए मिला है इस बात पर विचार नहीं कर पाता और जन्म की बाजी हार जाता है।

निःस्वार्थी इंसान का जीवन शांति और आनन्द से व्यतीत होता-होता, अंत अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँच परमपद को प्राप्त कर लेता है। स्वार्थी इंसान का जीवन मृगतृष्णा की भांति विषय प्राप्ति की अंधी दौड़ में दौड़ते-दौड़ते अंत छीना-झपटी व मारा मारी के कारण स्वार्थ की बलि चढ़ जाता है।

स्पष्ट है सजनों मानव जिन आंतरिक गुणों से अपने जीवन काल और उसके बाद भी पूजनीय बनता है, उसमें निःस्वार्थता का स्थान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

प्रकृति के विभिन्न घटक जैसे सूरज-चाँद-सितारे, इसका पालन कर मानवों को अहर्निश यानि दिन-रात यही संदेश देते रहते हैं। प्राकृतिक जगत से हटकर देखें, तो हमारा मानवीय इतिहास भी ऐसे महामानवों से भरा-पड़ा है, जिन्होंने लोकहित में अपने स्वार्थ की बलि चढ़ा दी। निःस्वार्थ भावना ही व्यक्ति को महानता के सर्वोच्च शिखर पर प्रतिष्ठित करती है। स्वयं के लिए हर कोई सोचता और करता है लेकिन, जो लोग औरों के लिए जीते और मरते हैं, वे सचमुच महान होते हैं। वे मरकर भी अमर रहते हैं। उनका यह आत्मविस्तार न केवल उन्हें विश्व नर के रूप में प्रतिष्ठित करता है, अपितु ईश्वर के करीब भी ले जाता है यानि वह लोक-परलोक हर जगह यश कीर्ति प्राप्त करता है। इसलिए तो किसी ने ठीक कहा है कि निःस्वार्थता धर्म की कसौटी है। जो जितना निःस्वार्थी है वह उतना ही आध्यात्मिक और ईश्वर के समीप है। इस समीपता को प्राप्त करने हेतु ही सजनों ख़्याल को ध्यान वल व ध्यान को प्रकाश वल जोड़ आत्मिकज्ञान प्राप्त करने का निर्देश दिया गया है।

इसी महत्ता को दृष्टिगत रखते हुए सच्चेपातशाह जी ने प्रत्येक सजन को निःस्वार्थता से रुढ़दे सजन को पकड़ने का, गिरते हुए सजन को खड़ा करने का, रोते हुए सजन को हँसाने का, सोए हुए सजन को जगाने का व कुरस्ते पड़े हुए सजन को रास्ते पर लाने का आवाहन् दिया है। आओ हम भी उनके इस आवाहन् के प्रति उत्तर में निःस्वार्थ होने का दृढ़ संकल्प लें और इस हेतु श्रृंखलाबद्ध तरीके से प्रदान किए जा रहे आत्मिक ज्ञान को साथ साथ ही आत्मसात् कर अपना जीवन सफल बनाएं। इस संदर्भ में सजनों आज का हमारा पहला भजन है महाबीर जी प्यारे छन छन करेंदे आओ। आओ सर्वप्रथम इसके भावाशयों को समझेंः-

भजन न॰ 9
महबीर जी प्यारे छन छन करेंदे

1. महाबीर जी का संग प्राप्त करने के प्रति अपने मन में अविलम्ब ऐसी लोच पैदा करो कि वह त्रिलोकी के सहारे गदाधारी आपके मन की अभिलाषा पूर्ण करने हेतु अपने इलाही स्वरूप में प्रकट हो, आपको प्रतिक्षण अपने हृदय में

गुंजायमान ब्रह्म शब्द की ध्वनि से परिचित करा, सद्मार्ग पर प्रशस्त करने अर्थ सहायक बन जाएँ।

2. साक्षात्कार होने पर उनकी अलौकिक छवि आँखों में बसा उनके सिंगार को निहारते हुए धारण करते जाओ ताकि आपके मन में जो द्वि-द्वेष का भाव पनपकर आपको सता रहा है व अचेत बना रहा है वह स्वाभाविक सद्-परिवर्तन के प्रभाव से समाप्त हो जाए और आप पुनः सचेत हो एकता, एक अवस्था में आ जाओ। याद रखो यही सतवस्तु का चलन है।

3. मानो वह परमपिता इस जगत के हर जीव से स्नेह रखते हैं और जो भी उनके प्रेमपात्र बनने का उद्यम दिखाता है वह उस अनन्य भक्त पर प्रसन्न हो उसके अंतर्घट में उत्पात मचाने वाले, काम-क्रोध को मिटा यानि अशांत अवस्था से उबार पुनः शांति स्थापित कर देते हैं।

4. जानो महाबीर जी ही अपने निष्काम भक्ति भाव के कारण परमेश्वर के सर्वमहान प्रेमपात्र हैं जिन्हें वह सदा अपने संग रखना उचित समझते हैं। सजनों इस बात से हमें महाबीर जी के वचनों पर बने रह उनके रंग में रंगने का औचित्य समझ आ जाना चाहिए।

5. उपरोक्त तथ्य के दृष्टिगत आत्मसाक्षात्कार करने हेतु सहर्ष विरक्त भाव से भक्त हितकारी महाबीर जी द्वारा बताए भक्ति-भाव पर स्थिर बने रहने का पराक्रम दिखाने में ही अपना हित समझो।

भजन न॰ 10
महाबीर जी ने तीनों ताप मिटाए

1. मानो हमारे लिए सारी दुनियां के सहारे महाबीर जी के प्रति अपने मन में स्नेह रखना इसलिए आवश्यक है क्योंकि वह ही परम पिता परमेश्वर को सबसे प्रिय लगते हैं और वह श्रेष्ठ ही हम जन्म-मरण के चक्रव्यूह में उलझे हुए व कष्ट-क्लेशों में पड़े हुए जीवों को उचित युक्ति प्रदान कर, तीनों ताप मिटाने

वाले व पुनः शांति प्रदान करने वाले हैं। यह अपने श्रद्धा और विश्वास को उनके प्रति अटल करने की बात है।

2. सुग्रीव-विभीषण और तुलसीदास के दृष्टांत को दृष्टिगत रखो और समझो कि जैसे महाबीर जी ने उन सब शरणागतों को अपना संग व उचित मंत्रणा प्रदान कर उनके तीनों ताप मिटा दिए व परमेश्वर का साक्षात्कार करा, जीवनमुक्त बना दिया वैसे ही अगर हम भी उनके प्रति निर्मल प्रेम रखें व उनको भा जाएं तो कोई कारण नहीं बनता कि हम इसी जीवन में परमपद न पा सकें।

3. जानो तीनों तापों के प्रकोप से हम अचेतन अवस्था को प्राप्त हुए इंसान भी मूर्छित लक्ष्मण जी की तरह पुनः जी उठ सकते हैं, अगर हम महाबीर जी द्वारा नाम अक्षर के रूप में प्रदत्त संजीवनी की तीन खुराकों का नित्य विधिवत् सेवन करने का पुरुषार्थ दिखाते हैं।

4. तीनों तापों से छुटकारा पा भवसागर से पार उतरने हेतु हमें महाबीर जी के प्रति समर्पित रहना है ताकि हम उन्हें अच्छे लगने लगें और उनसे उपदेश यानि गुरुमंत्र प्राप्त होने की क्रिया का शुभारंभ हो और ए विध् हम उनके वचनों का मनन व ध्यान से प्रयोग करने की कला में निपुण बन सहजता से अपना जीवन लक्ष्य प्राप्त कर लें।

5. महाबीर जी के समझौते अनुसार ऐसा सुनिश्चित करने हेतु नाम ध्याते हुए अपना ख़्याल उनके चरणों में स्थित रखने में निपुण बनो और इस तरह अपनी लाज आप बचा लो।

भजन न॰ 11
महाबीर जी दी रचना है अति भारी

1. जानो व मानो कि केवल महाबीर जी के पास ही हम परमार्थ से भटके इंसानों का स्वाभाविक पुनर्निमाण कर, सद्मार्ग पर लाने का उचित कौशल है इसलिए ही तो बारम्बार उनकी चरण-शरण में स्थिरता से बने रहने का

आवाहन दिया जाता है ताकि हम अपना सर्वस्व कुर्बान कर, लघुता से प्रभुता की ओर बढ़ें और हृदय व्याप्त आत्मप्रकाश का अनुभव करने में सक्षम बनें।

2. यह भी जानो व मानो कि उनके मुख की छवि इतनी अनुपम व अनोखी है कि जो भी भाग्यवान उसे निहारता है वह सहज ही उसके मन को लुभा अपना बना लेती है और अपने इलाही रंग में रंग इलाही जोत का नजारा दिखा देती है।

3. हम पहले भी जान चुके हैं कि केवल महाबीर जी ही परमेश्वर के सबसे प्रिय भक्त हैं। अतः उनके अनुकूल ज्ञान, गुण व शक्ति के भंडार होने के कारण वह सारी सृष्टि की शोभा अर्थात् सितारे हैं।

4. सर्वविदित है कि हनुमान जी ने कुल सृष्टि के समक्ष अपने प्रियवर राम, लक्ष्मण सीता को अपने हृदय में प्रकट करके दिखाया और सबको जगत में विवेकशीलता से विचरने हेतु अपने ही अनुकूल अपने इष्ट की संगति में ध्यान स्थिर होकर बने रहने का बारम्बार आवाहन दिया।

5. जानो हनुमान जी के कंठ से ब्रह्म शब्द की ध्वनि निरंतर ध्वनित रहती है और उसके प्रवाह के प्रभाव से उनके हृदय सहित रोम-रोम, रग-रग से चार वेदों व छः शास्त्रों का प्रकाश इस तरह प्रकाशित रहता है कि उनके लिए सदा आत्मस्वरूप में बने रहना सहज होता है। सजनों हमें भी अपने पिता के अनुरूप वही चाल अपना कर, अफुरता से अपना ख़्याल ध्यान उस प्रकाश में स्थिर रख, आत्मिक ज्ञान प्राप्त कर उन जैसा आत्मिक ज्ञानी बनना है और सेवा भाव से उस ज्ञान का जगत उद्धार हेतु प्रयोग कर परोपकार कमा परोपकारी नाम कहाना है।

इस सन्दर्भ में याद रखो यदि कण्ठ में ब्रह्म शब्द की ध्वनि निरन्तर ध्वनित होती रहती है तो इन्सान के अन्दर कोई सोच नहीं पनपती यानि उसका मानस समस्त फुरनों से आज़ाद हो बिल्कुल शान्त हो जाता है और आत्मिकज्ञान का सतत् प्रवाह रोम-रोम को सींचने लगता है। नतीजा शारीरिक व मानसिक बल

का वर्धन होता है। सजनों ऐसा होने पर इन्सान आत्मज्ञानी हो जाता है। आत्मज्ञानी बनने के पश्चात सतर्क रहना होता है कि कहीं हम 'हौ-मैं' के वशीभूत होकर अहंकारी न बन जायें। याद रखो अहंकारी वही बनता है जो अपने आप को कुछ अलग समझ बैठता है पर जो अभिमान रहित होकर अकर्त्ता भाव में ठहरा रहता है वह खुद की वास्तविकता को समझ जाता है और उसका भुलेखा मिट जाता है। इस तरह वह जन्म की बाज़ी को जीत जाता है।

भजन न० 12
हुन संगत बैठी काहली है

1. हमारे मन में महाबीर जी की संगति कर उनसे आत्मिक ज्ञान प्राप्त करने की तीव्र उत्कंठा होनी चाहिए। इसके लिए हमें नियमानुसार उन द्वारा प्रदत्त नाम अक्षर युक्तिसंगत ध्या कर उसे स्थिर करने का पराक्रम दिखाना होगा ताकि वह परोपकारी हमारे निष्काम भक्ति भाव से प्रसन्न हो हमारे हृदय में प्रकट हो हमें अपना वास्तविक स्वरूप जना दें और ए विध् हम अपने जीवन का मुख्य प्रयोजन सिद्ध करने में सफल हो जाएं।

2. हमें विधिवत् अपनी सुरत महाबीर जी संग निरंतर जोड़े रख उस सृष्टि के वाली से मेहर माँगनी है ताकि वह हमें चाहे समझा कर, चाहे धमका कर विचारयुक्त रास्ते पर अग्रसर होने के प्रति सक्षम बना दें और ए विध् हम उनकी इस अपार लीला का अनुभव करते हुए जीवन का आनन्द मान सकें। इस प्रसंग से शिक्षा ले सजनों याद रखो कि जब भी प्रभु धमकायें तो यह न हो कि हमारे अहं को ठेस लगे और हम बौखला जायें। इसके विपरीत ऐसा होने पर प्रभु की लीला को समझना और इस बात का बोध करना कि इस क्रिया द्वारा प्रभु मुझ कच्चे घड़े को पका रहे हैं और फिर ठोक-ठोककर देख रहे हैं कि कहीं कोई कमी तो नहीं रह गई क्योंकि यदि कमी रह गई तो जगत में विचरते समय कोई भी उसे तोड़ देगा यानि स्वार्थसिद्धि में उलझा कुरस्ते चढ़ा देगा। ऐसा न हो इसलिए सजनों जब भी प्रभु कच्चा घड़ा पकाने की कोशिश करें तो

हँसकर उस तकलीफ यानि सेक को सह जाना है। इस तरह उनके प्रति अपने इस विश्वास को सुदृढ़ करना है कि प्रभु कभी भी मेरा अहित नहीं होने दे सकते। विश्वास पक्का होने पर सजनों सहजता से निर्बाध आगे बढ़ते जाना है।

3. हमें याद रखना है कि जब ऋषि मुनि भी परमेश्वर की विशेष कृपा के पात्र सजन श्री शहनशाह हनुमान जी का नाम ध्याते हुए उनका अंत नहीं पा सकते और सब उनकी कृपा प्राप्त कर ही सौभाग्यवान कहलाते हैं, तो हमें भी इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए उनकी कृपा प्राप्त करने हेतु अपना सर्वस्व उन पुण्यवान बलधारी जी पर निछावर कर सुकर्म करने से नहीं सकुचाना चाहिए।

अंत में सजनों उपरोक्त भजनों के आधार पर आत्मनिरीक्षण करो और तद्नुरूप स्वार्थपरता छोड़ निःस्वार्थता अपनाओ और जगत हितकारी नाम कहाओ।

आप सबकी जानकारी हेतु आगामी सप्ताह हम क्रमवार अगले चार भजनों के भावाशयों को समझ कर उन पर विचार विमर्श करेंगे। अतः आप भी घर से इस विषय में पढ़-समझ कर आना।

आज का विचार

विचार करो है ईश्वर अपना आप ।
अवविचार ईश्वर है इक साथ।।

ईश्वर है अपना आप प्रकाश ।
ईश्वर है जे अजपा जाप।।

दिनाँक 26 मई 2019 का सबक़

आओ अविचार छोड़ विचार को अपनाएं

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों समय रहते ही अपना जीवन प्रयोजन सिद्ध कर परमपद पाने हेतु सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ हमें बार बार आवाहन दे रहा है कि अविचार यानि कलुकाल के अविचारी भाव-स्वभाव छोड़ो और विचार यानि सतवस्तु के श्रेष्ठतम भाव-स्वभाव अपनाकर, इन्सानियत में आ जाओ और इस तरह आत्मबोध कर ईश्वर के कर्त्तव्यपरायण सुपुत्र कहलाओ। परन्तु विडम्बना की बात यह है कि हम नादान बार-बार समझौता दिए जाने के बावजूद भी पिछली आदतों व परिस्थितियों के वशीभूत हो ऐसा करने की सामर्थ्य नहीं जुटा पा रहे इसलिए चाह कर भी जन्म की बाजी नहीं जीत पा रहे और जीवन हार रहे हैं। इस संदर्भ में सजनों जहाँ एक तरफ इंसानों की यह विवशता नज़र आ रही है वहीं दूसरी ओर सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ से उद्धृत यह पंक्तियाँ भी हमें कुछ सार्थक संदेश दे रही हैंः-

समय बीत गया, समय आ रिहा,
समय दे मुताबिक समय आसी, ओ आसी
बातचीत इन्सानां नूं समझन विच तां ओ आसी, ओ आसी
समय मुताबिक समय अनुसार विचार शब्द जो पासी ओ पासी
जीवन उसने बना ही लिया, ओ रौशन नाम कहासी ओ कहासी

अर्थात् जो समय व्यतीत हो गया सो व्यतीत हो गया पर अब समय अनुसार अर्थात् कुदरत के नियमानुसार, वह समय शीघ्र ही नजदीक आ रहा है जब इन्सानों को सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में परस्पर ईश्वरीय वार्तालाप के रूप में वर्णित शब्द विचार समझ में आएगा। इस तरह वक्त के मुताबिक ही इंसान विचार शब्द पाएंगे और जो भाग्यशाली अविचार छोड़, उन विचारों पर बिना किसी तर्क-वितर्क के समर्पित भाव से चल पड़ेगा वह अपना जीवन बना रौशन नाम कहाएगा। सजनों हम भी अपने मन पर विजय पा, जगत में रौशन होने का यह गौरव प्राप्त कर सकें इस हेतु आओ अत्यन्त सूक्ष्मता से विचार और अविचार शब्द के अंतर को जानते हैं। इस हेतु सजनों सबसे निवेदन है कि अपना हृदय पात्र पसार कर बैठोः-

विचार और अविचार

विचार किसी विषय, वस्तु या बात पर, भली-भांति बुद्धि से सोचकर यानि उसके सब अंग देख कर या उसकी ऊँच-नीच, उचित-अनुचित पर विचार कर, निश्चय करने की क्रिया है। अविचार हर काम बिना उचित-अनुचित, न्याय, औचित्य आदि का विचार किए, नासमझी से करने की क्रिया है। इस संदर्भ में सब विचार करो कि आप विचारयुक्त चल रहे हो या अविचारयुक्त।

विचार निश्चयात्मक बोध है। मन में संकल्प-विकल्पों के निरंतर उपजने के कारण अविचार अनिश्चयात्मक बोध है।

विचार से तात्पर्य आत्मज्ञान अनुरुप सुविचारों या परिष्कृत विचारों को अपनाने से है। अविचार से तात्पर्य जगतीय मिथ्या ज्ञान अनुरुप कुविचारों यानि दुष्ट,

बुरे व अशुभ दुर्विचारों को अपनाने से है।

विचार महाराज जी/ईश्वर के मुख की वाणी है यानि आत्मा की आवाज है। अविचार मनुराज ने रची है। सजनों यदि मानते हो कि हम शरीर नहीं आत्मा हैं तो आत्मा की आवाज को सुनो और उसे ही अपना मार्गदर्शक बनाओ।

विचार कुदरती आई हुई है इसलिए स्थाई है। अविचार कुसंग की देन है इसलिए अस्थाई है।

विचार प्रक्रिया का अभिन्न अंग है मंथन, चिंतन व मनन। मंथन, चिंतन व मनन का अविचारी के जीवन में कोई स्थान नहीं।

विचार विवेकपूर्ण, न्यायसम्मत व विधिसम्मत होता है। अविचार विवेकशून्य, असंगत, आधारहीन व निर्मूल होता है।

विचार कहता है ईश्वर अपना आप प्रकाश है, ईश्वर अजपा जाप है, अतः उसे कहीं खोजने की आवश्यकता नहीं है। अविचार इंसान को ईश्वर की खोज में नाना प्रकार के कर्मकांडों व आडम्बरों में उलझा दर-दर भटकाता है व कष्टों की प्राप्ति कराता है।

विचारों का उद्‌भव इंसान की मन-मस्तिष्क की पवित्रता व गंभीरता पर निर्भर करता है यानि यदि मन शुद्ध है तो विचार भी शुद्ध व उच्च होते हैं। अविचारों का उद्‌भव मलीन, अधीर व उथले मन में ही होता है।

जो विचार को अपनाता है उसकी मनोवृत्ति दृढ़ व तुष्ट, चित्त स्थिर, चिंतन स्वतन्त्र, विचारधारा निर्मल व दृष्टिकोण सकारात्मक होता है इसलिए ऐसा इंसान सदा इंसानियत में ठहरा रहता है। जो अविचार को अपनाता है उसकी मनोवृत्ति चंचल व असंतुष्ट, चित्त अस्थिर, चिंतन दूषित, विचारधारा मलीन व दृष्टिकोण नकारात्मक होता है इसलिए ऐसा इंसान इंसानियत से गिर जाता है।

विचार से मानवता का भाव सदा बलिष्ठ रहता है क्योंकि इसके निरंतर प्रयोग से

हमारे हृदय में निहित चार वेद-छः शास्त्रों का गुप्त ज्ञान निरन्तर प्राप्त होता रहता है। अविचार से दुष्ट अमानवीय भाव जन्म लेते हैं।

विचार मनुष्य के बौद्धिक स्तर को ऊपर उठाता है जिससे इन्सान उच्च बुद्धि, उच्च ख़्याल हो, सच्चाई-धर्म के निष्काम रास्ते पर बने रहने की क्षमता हासिल करता है। अविचार मनुष्य के बौद्धिक स्तर को पतनोन्मुख करता है जिससे मन में फुरनों का अंबार लग जाता है और इंसान के लिए सत्य-धर्म के रास्ते पर बने रहना कठिन हो जाता है।

विचार विशाल हृदयता का द्योतक है। अविचार संकीर्णता का सूचक है।

विचार रूपी अमोघ शक्ति (निर्विघ्न लक्ष्य पर पहुँचाने वाली शक्ति) द्वारा, इंसान अपना परीक्षण यानि जाँचना व परख कर सकता है। यह परख करके वह मंदी बातों का संग छोड़ सकता है और अच्छी बातें धारण कर सकता है। अविचार को अपनाने वाला आत्मनिरीक्षण व आत्मनियन्त्रण द्वारा आत्मसुधार करने की कला नहीं जानता इसलिए उसका मन-चित्त दूषित रहता है और वह अज्ञानमय मूर्च्छित अवस्था में ही जीवन बिताता है। इस तथ्य के दृष्टिगत एकांत में बैठकर, नितांत शान्त मन से, आत्मनिरीक्षण करने की कला को सीखो।

विचार न्याय व नीति की मननकारी को बढ़ावा देता है।
अविचार अन्याय व अनीति को बढ़ावा देता है।

विचार सवलड़ा यानि सरल व सुगम रास्ता है।
अव विचार कवलड़ा अर्थात् उलझनों भरा रास्ता है।

विचार जीत और फ़तह है।
अविचार हार है।

विचारवान-अविचारी

विचारवान ईश्वर आप नूं अर्थात् अपने असलियत यथार्थ स्वरूप को मानता है और एक उसी को सर्वत्र जानता है इसलिए उसका कोई वैरी दुश्मन नहीं रहता। अविचारी ईश्वर को अपने से भिन्न कोई दूसरा या साथ मानता है।

विचारवान मानसिक खुराक के रूप में शब्द ब्रह्म विचारों का सेवन करता है। वह सदा सकारात्मक व तृप्त रहता है क्योंकि उसका ख़्याल ध्यान सदा सच्चे घर में स्थिर रहता है। अविचारी मानसिक आहार के रूप में इन्द्रिय विषयों का सेवन करता है। वह सदा नकारात्मक व अतृप्त रहता है और संसार में भटक जाता है।

विचारक हर परिस्थिति व हर अवस्था में अपना संकल्प स्वच्छ, जिह्वा स्वतन्त्र, दृष्टि कंचन, मन उपशम और ख़्याल अफुर रख अपने अंतःकरण की शुद्धता बनाए रख सकता है। अविचारी ऐसा करने में असमर्थ होता है इसलिए उसका मलिन मन, बुद्धि का हरण कर उसे अधर्म के मार्ग पर प्रशस्त कर देता है।

विचारवान परस्पर विचारविमर्श कर योजनाबद्ध तरीके से कार्य करता है इसलिए जीवन के हर क्षेत्र में सफलता को प्राप्त करता है। अविचारी अपनी मत को सब पर थोपता है इसलिए बिना विचारे, अनियोजित तरीके से कार्य करता है और अंत असफलता को प्राप्त होता है।

विचारवान विवेकी, पुरुषार्थी, सत्यदर्शी, सहनशील, ध्यानी, विवादहीन व सावधान होता है इसलिए बुद्धिजीवी कहलाता है। अविचारी विवेकहीन, लापरवाह, असावधान, अधीर व वाद-विवाद युक्त होता है इसलिए विचारमूढ़ यानि अज्ञानी व बुद्धिहीन कहलाता है।

विचारवान सदा वर्तमान में रहता है इसलिए निष्कामी कहलाता है। अविचारी का ख़्याल भूत या भविष्य की सांसारिक कामनाओं में जकड़ा रहता है इसलिए कामी व स्वार्थपर कहलाता है।

विचारवान जो बात भी किसी के साथ करता है विचार से करता है और विचार से ही उत्तर देता है। अविचारी जो भी मन में आए, बिना सोचे समझे वही बोलता है।

चूंकि विचारवान कुल दुनियां में एक प्रकाश समझता है इसलिए वह ही युवावस्था की भक्ति यानि समभाव-समदृष्टि की युक्ति को धारण कर, सजन-भाव का वर्त्त-वर्त्ताव कर पाता है। अविचारी बाल अवस्था के आडम्बरयुक्त भक्ति भावों को अपनाने के कारण आजीवन द्वि-द्वेष में फँसा रहता है।

विचारवान अंतर्दर्शी होता है इसलिए सहजता से आत्मदर्शन कर व दिव्य दृष्टि का सबक प्राप्त कर त्रिकालदर्शी हो जाता है। अविचारी के लिए ऐसा करना संभव नही होता इसलिए वह भ्रमित बुद्धि भ्रष्टाचारी, दुराचारी व व्यभिचारी हो जाता है।

विचारवान सदा प्रसन्न रहता है। अविचारी रोता-झुखता रहता है।

विचारवान हर तरफ से यश प्राप्त करता है। अविचारी हर तरफ से निंदा का पात्र होने के कारण दर-दर की ठोकरें खाता है।

विचारवान जगत से आजाद हो जाता है। अविचारी आवागमन के चक्रव्यूह में फँस जाता है।

जीवन में विचार का महत्त्व जानने के पश्चात् सजनों जीवन में शब्द विचार अनुसार जीवन जीने की कला सीखो और वर्त्तमान में ही सुख व आनन्द का अनुभव करो क्योंकि सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ हमें यही आदेश दे रहा है कि 'शब्द विचार पकड़ के ओहदी करो अराधना'। अर्थात् यदि एक बार शब्द विचार पकड़ लिया तो फिर उसकी साधना करो और कदाचित् किसी परिस्थिति या अवस्था में उससे गिरो नहीं। इससे ख़्याल निज सत्-चित्त-आनन्द स्वरूप में ठहरा रहेगा और बातचीत के दौरान चेहरे पर मुस्कराहट आएगी, बदन प्रफुल्लित होगा हृदय बहार की तरह खिड़ेगा, और मुख चमकेगा। इस बात को

समझते हुए सजनों विचार शब्द को पकड़ कर पूरी तरह समदृष्टि दिखाओ। इससे मन-वचन-कर्म में स्पष्टता व शुद्धता का संचार होगा और जीवन जीने का मज़ा आ जाएगा। यही नहीं ऐसा करने से मोक्ष प्राप्ति भी सहज हो जाएगी अर्थात् जन्म-मरण की पीड़ा से छूट विश्राम अवस्था को पा जाओगे। इस संदर्भ में हम सब भी ऐसा करने में कामयाब हों इस हेतु आओ अब भजनों के भावाशयों के माध्यम से क्रमबद्ध प्राप्त हो रहे आत्मिक ज्ञान के सिलसिले को आगे बढ़ाएँ और जाने कि हमें युक्तिसंगत अपने आप को पकड़ते हुए कैसे आत्मसुधार के मार्ग पर प्रशस्त होना है।

आज का पहला भजन है महाबीर जी दा गदा हीरियाँ जड़त जड़ायाः-
भजन न॰ 13

1. हम तीनों तापों से संतप्त व विषय विकारों में ग्रस्त यानि हर पल मौत के भय से व्याकुल इंसानों ने महाबीर जी के वचनों पर चलते हुए, अपने यथार्थ को पहचानना है और हीरे जड़त गदा रूपी शांति शक्ति को धारण कर, उन सम ही शक्तिशाली बन इस तरह निर्विकारी बनना है कि सचखंड में वास करने वाले परमेश्वर हम पर प्रसन्न हो, प्रकट हो जाएं और हमें अपने यथार्थ से परिचित करा आनन्दित कर दें।

2. इस तरह श्रेष्ठता को प्राप्त हो उन संग पक्की मित्रता करनी है ताकि भूत पिशाच यानि अतीत की स्मृतियों व वासनाओं से छुटकारा प्राप्त हो और हम वैष्णव जन बन जगत का उद्धार कर सकें।

3. इस संदर्भ में याद रखो कि महाबीर जी ने इस सर्वश्रेष्ठ पद को प्राप्त कर ही अनेकानेक अद्वितीय कार्य किए और बिछुड़े हुओं को मिला उन्हें मनवांछित फल प्रदान कर हर्षा दिया। इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए हमारे लिए भी बनता है कि हम भी वैसा ही पराक्रम दिखाएं और परमेश्वर को लुभा इस तरह अपना लें कि मैं-तूं का भेद समाप्त हो जाए।

4. इस प्रयोजन में शत्-प्रतिशत् सफल होने हेतु हमें अपने ख़्याल को अंधकूप

से निकाल ध्यान स्थिरता से प्रकाश की ओर मोड़ देना है और इस प्रकार प्रभु प्रेम में मस्त रहते हुए, प्रकाश ग्रहण क्रिया द्वारा, अपने हृदय को प्रकाशित कर, यथार्थतापूर्ण निष्कंटक जीवन जीना आरम्भ कर देना है।

भजन न0 14
जल्दी मिलादे बलधार, ओ दिल मंगे नाथ कीते

1. अपने मन में प्रभु मिलन की प्रबल इच्छा पैदा करो और इस प्रयोजन में सफलता प्राप्ति हेतु सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की शरण में आ उनके वचनों पर स्थिरता से बने रहो ताकि आपकी सुरत भी सीता महारानी की तरह सदा प्रभु चरणों में जुड़ी रहे और अपने अटल सुहाग को वर ले।

2. ऐसा सुनिश्चित कर अपना उपकार तो करो ही साथ ही अन्य संगी-साथियों को भी महाबीर जी द्वारा बताए मार्ग पर प्रशस्त कर उनके मन में भी परमेश्वर के मिलन की उत्कंठा व उत्साह पैदा करो ताकि वे सब भी प्रभु सिमरन करते हुए आत्म-साक्षात्कार कर, अपने मन की उमंग पूरी कर लें।

3. याद रखो महाबीर जी ही आत्मेश्वर से मिलन कराने वाले हैं अतः उन परमश्रेष्ठ, विद्वान, गुणवान, बलवान, बुद्धिमान दाता द्वारा प्रदत्त युक्तियों व निर्धारित नीति नियमों का अनुसरण करने में किसी प्रकार की कोई कमजोरी न दिखाओ।

भजन न0 15
महाबीर रघुनाथ जी दे चरण प्यारे

1. महाबीर-रघुनाथ जी का संग अर्थात् समीपता प्राप्त कर, उनकी विचारयुक्त आचार-संहिता को इस प्रकार आत्मसात् करो कि वह आत्मिक ज्ञान आपके दिल को भा जाए। कहने का आशय यह है कि महाबीर जी की अपार कृपा से जो आपको नाम युक्ति प्राप्त हुई है, उसका विधिवत् नाम जाप करो ताकि जो कार्य ऋषि मुनि नहीं कर पाए आप अपने अलौकिक स्वरूप को पहचान व

परमेश्वर की समीपता प्राप्त कर उसे सिद्ध कर लो और ज्ञातात्मा बन उनके ज्ञान, गुण व शक्ति की मर्म जान लो।

2. याद रखो वह चाहे देवी देवता हो या अन्य प्राणी, उन सब शरणागत में आए हुओं के तीनों ताप मिटा व विकार रूपी दुष्टों को मार मुका उनकी आस पुजा देते हैं और व्याकुलता मिटा शांति प्रदान कर देते हैं यानि मन की चाहना अनुसार वह उन्हें संसारी या परमार्थी राज प्रदान कर देते हैं। इस उपलब्धि के दृष्टिगत सजनों हमें भी परमार्थी राज प्राप्त करने हेतु उन दाता की चरण-शरण में निष्काम भाव से बने रहना सुनिश्चित करना है।

3. महाबीर जी की तरह हमें भी सत्य धर्म के निष्काम भक्ति भाव पर स्थिर बने रह व उनके वचनों को धारण कर, एक तो अपने पर उपकार करना है, दूसरा साथ ही साथ कुल दुनियां को भी उन द्वारा दर्शाए सद्मार्ग पर अग्रसर कर परोपकार कमाना है। जानो उनकी दया प्राप्त करने का योग्य सुपात्र बनने हेतु हमें अपने हृदय में उनके प्रति निर्मल प्रीत का भाव उत्पन्न करना होगा।

4. हमें युग-युगान्तरों के प्रसंग से शिक्षा लेनी है और समझना है कि जैसे महाबीर जी ने मननकार व्याकुल भरत जी और तुलसीदास जी का अपनी कृपा से पुनर्मिलन करा उन्हें हर्षित कर दिया, वैसे ही हमें भी अपने मनोभावों को हनुमान जी के वचनानुकूल ढालना है ताकि वह हमें भी बिछुड़े हुए कंत से मिला आत्मानुभूति करा दें।

5. निःसंदेह इस हेतु हमें तहे दिल से समस्त कार्यव्यवहार के दौरान नाम जाप करते हुए अपनी रक्षार्थ सजन श्री शहनशाह हनुमान जी को पुकारना होगा ताकि हम समस्त जगतीय फुरनों से छुटकारा पा उनके चरणों में इस तरह प्रीत लगा सकें कि वह प्रसन्न होकर हमारे संग बने रह हमारा उद्धार कर दें।

भजन न॰ 16
मैं बलिहार बलिहार बलिहार महाबीर जी

1. अंतःकरण की चार वृत्तियों में से जो मन रूपी वृत्ति है उसको सदा एकरस विशुद्ध अवस्था में रखने हेतु, अपने मन में उठने वाली इच्छाओं और विचारों की आत्मनिरीक्षण द्वारा नियन्त्रित ढंग से समीक्षा करो ताकि आप अपने मन को संकल्प-विकल्प रहित यानि शांत अवस्था में साधे रखने में सक्षम हो जाओ। इसके लिए नित्य प्रति मात्र शास्त्रविहित् सार्थक विचारों को धारण करने का पुरुषार्थ दिखाओ और ए विध् अपने निर्मल मन को सहज ही परमात्मा में लीन रखते हुए, स्थिर बुद्धि हो जाओ और प्रसन्नचित्तता से निष्पाप जीवन जीना आरम्भ कर दो।

2. ऐसा ही हो उसके लिए जानो कि इस संसार में अगर कोई बुरा भासता है तो यह केवल अपने मन में पनपी बुराई के प्रभाववश ही होता है। यदि चाहते हो कि हमारा बेलगाम मन अब मस्त हाथी की तरह हमारी सुरत को जिधर चाहे उधर न भटका पाए, तो उसके लिए इस मिथ्या संसार से कुछ भी धारण करने के स्थान पर अपने मन को महाबीर जी के प्रति इस तरह समर्पित कर दो कि उसमें जो भी विचार उठे वह केवल उन्हीं के समझौते अनुसार ही हो। सजनों ऐसा पुरुषार्थ दिखा निःस्वार्थता से जीवन के सद्मार्ग पर बने रहो।

3. मन में सतत् रूप से उठने वाली संकल्प विकल्प की तरंगों के कुप्रभाव से घबराकर, कहीं हम सत्य पथ से हट, छल-कपट युक्त अधर्म का रास्ता न अपना लें, इसके प्रति सतर्क रहने हेतु महाबीर जी के वचनों पर स्थिर बने रह अपना सब कुछ उन पर निछावर करने से न सकुचाओ। आशय यह है कि अपने मन को उपशम कर अर्थात् तृष्णा का नाश कर इन्द्रिय निग्रही बनो और जीवन के समस्त क्लेशों व विपत्तियों से छुटकारा पा आनन्द से जीवन बिताओ। याद रखो ऐसा करने से ही मनमत से उबर गुरुमत पर स्थिर बने रहना सहज हो पाएगा।

4. जानो आत्मविस्मृति का कारण निरंकुश व अस्थिर मन ही होता है। इसी कमजोरी के कारण हमारा ख़्याल संसार के साथ सहजता से जा जुड़ता है यानि मन की यही भूल हमारी सुरत को सांसारिक प्रपंचों में फँसा इस तरह

अचेतन बना देती है कि हमारे लिए अपने ख़्याल को अपने सच्चे घर परमधाम में ध्यान स्थिर करना कठिन हो जाता है। नतीजा हम वास्तविकता को धारण करने में असमर्थ हो जाते हैं। आज के बाद हमारे साथ ऐसा न हो इस हेतु हमारे लिए बनता है कि हम महाबीर जी की युक्ति अनुसार अपने मन को कामनामुक्त रख सदा परमेश्वर में ही लीन रखें और ए विध् हर क्षण उनकी चरण-शरण में बने रहें।

5. ऐसा ही हो उसके लिए सजनों सजन श्री शहनशाह हनुमान जी को हर पल सच्चे दिल से पुकारो व उनका संग इस तरह प्राप्त कर लो कि वह आपकी बेनती सुन अपनी मंत्रणा द्वारा आपको, जगत में विचरते हुए भी अपनी मनोवृत्ति निर्मल रखने में समर्थ बना दें यानि शांति शक्ति की धारणा द्वारा आपके व्यक्तिगत, शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक बल को प्रबल बना दें और आपके लिए आत्मसाक्षात्कार कर परमपद पाना सहज हो जाए।

अंत में सजनों बताए तथ्यों के आधार पर आत्मनिरीक्षण करो और विचार द्वारा खुद पर नियन्त्रण रखते हुए आत्मोन्नति के पथ पर प्रशस्त हो जाओ।

आज का विचार

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है
अर्थात् ज्ञानी को नहीं, ज्ञान को अपनाओ ।
यानि निमित्त में नहीं, नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

दिनाँक 2 जून 2019 का सबक़

कुसंगति छोड़ सत्संगति अपनाने का आवाहन

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ3म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों हम सब परमपद पाने हेतु आध्यात्मिक उन्नति करना चाहते हैं पर क्या कभी विचारा है कि आध्यात्मिक उन्नति सर्वाधिक किस पर निर्भर करती है?

मौन।

इस संदर्भ में सजनों जानो कि सत्-संगति एक मानव की आध्यात्मिक उन्नति में अहम् भूमिका निभाती है। ऐसा इसलिए क्योंकि मानव जिस प्रकार की संगति में रहता है उससे अवश्य प्रभावित होता है, इसलिए वैसा ही बन जाता है। इसी तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए सजनों सच्चेपातशाह जी ने हमें सबसे श्रेष्ठ, सबसे विद्वान, सबसे गुणवान, सबसे बलवान, सबसे धनवान, सबसे बुद्धिवान व सारी दुनियां में से ज्ञानवान सजन श्री शहनशाह हनुमान जी का संग कर, उन्हीं से प्रीत बढ़ाने व उनके वचनों पर चलने का आवाहन दिया है और साथ ही समझाया है कि 'अच्छे संग तरे, मंदे (बुरे) संग डूबे'। यहाँ अच्छे और बुरे संग को स्पष्ट करते हुए वह बताते हैं कि सत्-संग-यानि सत्य का संग-अच्छा संग है व असत्य/मिथ्यात्व का संग बुरा संग है। कहने का आशय यह है कि जब इंसान

का ख़्याल हृदय सुशोभित परमात्मा से जा जुड़ता है तो वह सत्संगति में बना रहता है परन्तु वही ख़्याल जब मिथ्या संसार से जा जुड़ता है तो वह कुसंग में जा फँसता है।

इस कुसंग से बचने का रास्ता बताते हुए वह समझाते हैं कि 'मनमत ते सजनों न चलना, गुरुमत दा संग असां करना'। गुरुमत से यहाँ तात्पर्य एक तो नित्य, अजर-अमर, अविनाशी प्रणव वाचक मूलमंत्र आद् अक्षर द्वारा सार्थक ध्वनि के रूप में प्रदान किए जाने वाले आत्मिक ज्ञान से है, दूसरा सद्ग्रन्थों में वर्णित शब्द ब्रह्म विचारों से है।

आगे सत्संग की महत्ता चंद शब्दों में व्यक्त करते हुए वह कहते हैं कि जानो जीवन उसी का सुखी हो सकता है जिसको प्रतिदिन सत्-संग मिलता रहे।

सत्-संग द्वारा इस सुख की प्रतीति कराने हेतु ही उन्होंने हमें मूलमंत्र आद् अक्षर व सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ (जो ईश्वर के मुख की वाणी है व जिसमें सूक्ष्मतया शब्द विचार विदित है) अनमोल दात के रूप में बक्षा है। मानसिक मौन धारने पर, इन दोनों ही साधनों से आत्मिक ज्ञान के रूप में अभिव्यक्त होने वाले सद्-ज्ञान का मनन व अनुशीलन करने से हमारे मन के भाव गूढ़ व आचार-विचार उच्च हो सकते हैं और हम उन सद्-विचारों को आत्मसात् कर अपना जीवन सफल बना सकते हैं। सजनों मानव जीवन में सत्संगति की इसी महत्ता को समझते हुए आओ आज सत्-संगति व कुसंगति के विषय में जानते हैं:-

सत्-संगति व कुसंगति

जानो सत्-संगति से तात्पर्य सत्य की संगति, श्रेष्ठ, भले और सज्जन व्यक्ति का संग-साथ करने से है।

सत्-संगति इंसान को दो तरीकों से प्राप्त होती है:-

1. युक्तिसंगत प्रणव मंत्र यानि मूल मंत्र आद् अक्षर के अजपा जाप द्वारा

जिसके अंतर्गत सीधा ख़्याल को ध्यान वल व ध्यान को प्रकाश वल कर, आत्मेश्वर से सम्पर्क स्थापित किया जाता है और अपने मन को अफुरता से उस परमेश्वर में लीन रख आत्मसाक्षात्कार किया जाता है। सजनों यह अपने संकल्प को स्वच्छ व सत्य का संगी बना, सीधा आत्मज्ञान प्राप्त करने का व एकात्मा के भाव में आ अपना जीवन बनाने का सरलतम तरीका है।

2. चूंकि वर्तमान कलुषित युग के भ्रमित बुद्धि इंसानों के लिए उपरोक्त तरीके से सत्संगति करना सरल नहीं है इसलिए बैहरुनी वृत्ति में उन्हें सत्संग द्वारा सत्-संगति करने के लिए प्रेरित किया जाता है। सत्संग का अर्थ है वह समाज जिसमें वेद-शास्त्रों-ग्रंथों के आधार पर धर्म अर्थात् अध्यात्म संबंधी चर्चा होती है और उन ग्रंथों के अध्ययन, चिन्तन, मनन व मन्थन द्वारा शब्द ब्रह्म विचारों का अनुशीलन करने पर बल दिया जाता है।

सजनों समझने की बात यह है कि दोनों ही तरीकों से की गई सत्-संगति द्वारा ईश्वर के प्रति विशेष श्रद्धा, प्रेम और विश्वास के अतिरिक्त, सभी के प्रति निर्मल स्नेह का भाव पनपता है। हृदय विदित आत्मज्ञान का बोध होता है। उस सत्य ज्ञान के बलबूते पर अपनाए विकारों के कारणों पर विचार करने का अवसर प्राप्त होता है। भाव-भावना, विचार, संकल्प, दृष्टिकोण, वृत्ति-स्मृति, बुद्धि आदि स्वच्छ व निर्मल होते हैं और फलतः आत्मनियन्त्रण द्वारा आत्मसुधार कर मनुष्यत्व में बने रहना सहज हो जाता है। इस तरह सत्संगति से मनुष्य में सद्ज्ञान व सद्गुणों का जागरण व संचार होता है। सद्गुणों के जागरण व संचार से मन की सद्-वृत्तियाँ जागती हैं और सद्भावना, सदाचार, सदाशयता, परोपकारिता, सत्य, न्याय, अहिंसा, क्षमा आदि मानवीय भाव उदित होते हैं। इस तरह सत्संग द्वारा सात्विक प्रवृत्तियों का विकास होता है और अशुभ प्रवृत्तियों का निराकरण होता है।

स्पष्ट है सजनों सत्-संगति के सम्पर्क में आने या रहने से हमारे आचरण पर गहन सकारात्मक प्रभाव पड़ता है जिसके फलस्वरूप दुर्गुण नष्ट हो जाते हैं, हमारा व्यक्तित्व निखरने लगता है, और हम दुश्चरित्र से सच्चरित्र इंसान बन सज्जन पुरुष कहलाते हैं। जानो ऐसे निर्मल व पावन चरित्र वाले सजन पुरुष

को ही ऐहिक और पारलौकिक दोनों प्रकार की समृद्धि प्राप्त होती है। ऐहिक समृद्धि से तात्पर्य जीवन में अच्छा पद-प्रतिष्ठा, सुख-समृद्धि, यश-कीर्ति और शान्ति की प्राप्ति से है तथा पारलौकिक समृद्धि से आशय यथार्थ ज्ञान के बोध द्वारा ब्रह्म साक्षात्कार करने व आवागमन के चक्रव्यूह से मुक्त हो परमानन्द को पाने से है। यह होता है सजनों सत्संग और सत्संगति का प्रभाव।

सत्संगति के प्रभाव को जानने के पश्चात् आओ अब जाने कुसंग और कुसंगति का प्रभाव। कुसंग क्या है इस विषय में सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार जानो कि 'कुसंग हमारा कोई भी नहीं अपितु हमारा संकल्प ही है' क्योंकि संकल्प से ही समस्त अच्छी या बुरी काम/कामनाएँ उत्पन्न होती हैं। इस आधार पर जो सत्य का संग छोड़, शरीर व संसार से अपना सम्बन्ध जोड़ बैठता है और मिथ्या जगत की चकाचौंध यानि विषय भोगों में गलतान हो कामनाओं के चक्रव्यूह में धँस जाता है, वही कुसंग में जा फँसता है और उसका ख़्याल व दृष्टिकोण नकारात्मक हो जाता है।

स्पष्ट है कि आत्मज्ञान का अभाव व संसार से कुछ प्राप्ति की इच्छा/काम/कामना इस कुसंग की शुरुआत का कारण स्वरूप है। इस आधार पर स्वार्थपरता कुसंग को बढ़ावा देती है और आशा-तृष्णा, कामना, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या-द्वेष, वैर-विरोध आदि में फँसा, वृत्तियों को अधोगामी बना देती है। फलतः मन चंचल, बुद्धि भ्रमित व भ्रष्ट हो जाती है और आत्मविस्मृति के कारण मनुष्य अपने आचार-विचार व व्यवहार को दूषित कर अधोपतन के मार्ग पर प्रशस्त हो जाता है। इस तरह जो मानव जन्म से संत होता है, आगे चलकर वही उचित लालन-पालन व सत्संगति के अभाव में कुसंग के कारण दुर्जन बन जाता है। इस संदर्भ में यह भी जानो कि जब अपने भीतर कमी यानि दोष होता है तभी बाहरी कुसंग का असर पड़ता है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि आकर्षण सजातीयता (समान चीजों) में होता है विजातीयता (विपरीत चीजों) में नहीं। तभी तो जिसका हृदय पात्र मलिन होता है वह मलिनता व नकारात्मकता की ओर जल्दी आकृष्ट हो जाता है व जिसका हृदय पात्र निर्मल होता है वह बाहर चाहे कितनी भी गंदगी क्यों न

फैली हो, उस मलिनता को कदाचित् ग्रहण व धारण नहीं करता।

इस तथ्य के दृष्टिगत सजनों एक तो हिम्मत में आकर, आत्मनिरीक्षण व परम पुरुषार्थ द्वारा अपने अन्दर छिपे दोषों व दुर्गुणों को पहचान कर उनका नाश करो दूसरा प्रत्येक कार्यव्यवहार करते हुए व सबके साथ विचरते हुए एकात्मा यानि आत्मीयता के भाव में सुदृढ़ बने रहो। इस तरह हर समय अपना विचार या इरादा पवित्र व निष्कपट रखो और जो मन मन्दिर, सो ही महाराज का रूप सारे जग अन्दर' देखते हुए संकल्प कुसंगी को संगी व सजन बनाओ और मृतलोक पर फतह पाओ। इस मृतलोक पर फतह पाने हेतु ही सजनों जो सतवस्तु के भजनों के भावाशयों को क्रमवार समझने का प्रयत्न चल रहा है, आओ उस श्रृंखला में अब आगे बढ़ते हैंः-

आज का पहला भजन है - भजन न॰ 17
तीनों तापों ने आन सताया ए

1. हम आत्मविस्मृत इंसानों ने तीनों तापों से छुटकारा पाने के लिए अपनी रक्षार्थ महाबीर जी की चरण-शरण में आ उन द्वारा प्रदत्त नाम हृदय में इस तरह बसा लेना है कि वह प्रसन्न हो हमें अपना संग प्रदान कर दें और ए विध् हमें जाग्रति में ले आएं और हम संसारी कनरस छोड़ परमार्थ की ओर सुदृढ़ता से बढ़ते हुए अंत शांति को पाएं यानि तीनों तापों से मुक्त हो जाएं।

2. फिर उनके हुकम अनुसार अपने मन से काम-क्रोध व आशा-तृष्णा रूपी दुर्भावों को हटा व स्थिर चित्त हो इस संसार से विरक्त हो जाना है। इस प्रकार संतोष धैर्य का सिंगार पहन व सतवस्तु की पोशाक पहन जितेन्द्रिय हो जाना है और अपने आत्मिक स्वरूप को निर्विकारी अवस्था में साध लेना है।

3. हमें बंधनमान करने वाली मोह माया त्याग आद् अक्षर के अजपा जाप द्वारा ब्रह्म सत्ता ग्रहण करते हुए महाबीर जी द्वारा बताए सत्य धर्म के निष्काम रास्ते पर सतत बने रहना है और सजन भाव अपना परस्पर लड़ाई झगड़ा करने का स्वभाव त्याग अपना सब कुछ परमेश्वर को अर्पण कर उन्हीं का ही होकर सहर्ष जीवन जीना है।

4. ऐसा सुनिश्चित करने हेतु नाम रूपी धन एकत्रित कर आत्मसाक्षात्कार कर लेना है और इस पुरुषार्थ द्वारा वाशना को परे हटा जन्म-मरण के चक्रव्यूह से बच जाना है अर्थात् मोक्ष को प्राप्त होना है।

5. ऐसा ही हो उसके लिए हर हाल में महाबीर जी द्वारा प्रदत्त नाम युक्ति पर स्थिरता से बने रहते हुए समदृष्टि का रास्ता उचित ढंग से समझने के लिए उन्हें बारम्बार करबद्ध प्रार्थना करनी है और समदृष्टि हो समदर्शन में स्थित हो जाना है।

भजन न0 18
नी सुरति बली जी दा ध्यान लगा

1. अगर हमारे मन में सही मायने में प्रभु मिलन की इच्छा है तो हमें सर्वप्रथम अपनी सुरति को बलधारी जी संग ध्यान स्थिर करना होगा क्योंकि महाबीर जी ही हम अधर्म के रास्ते पर प्रशस्त इंसानों को उचित ढंग से धर्म मार्ग पर चला, एक तो हमें प्रसन्नचित्तता से जीवन जीने के योग्य बना सकते हैं और दूसरा नाम के अजपा जाप द्वारा अर्थात् नाम हृदय में वसा हमारे हृदय को तेजोमय वातावरण से भरपूर कर सकते हैं ताकि इस नाम रूपी कवच को भेद कर हृदयंगत वातावरण में कोई बुराई घर न कर जाए। इसलिए मानो कि वह ही हमे निर्विकारी बना हमारी जीवन नैय्या को इस संसार सागर से सहज पार उतार अपने सच्चे घर पहुँचा सकते हैं।

2. इस महत्ता के दृष्टिगत हमारे लिए बनता है कि हम अपने हृदय में महाबीर जी के प्रति अटूट प्रेम रखें ताकि वह हमें काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार रूपी विषय विकारों से मुक्त करा हमारी सुरत का शब्द संग जोड़ बना दें और हम अंतर्निहित आत्मिक शक्तियों का यथोचित प्रयोग करते हुए, मौत के भय से भी आजाद हो जाएँ।

3. यह तो हम जानते ही हैं कि ईश्वर से विमुख रह अब तक जो जीवन व्यतीत हुआ है वह अत्यन्त दुःख भरा रहा। इस बात से हमें शिक्षा ले विषय विकारों में

कदापि नहीं उलझना। ऐसा ही हो उसके लिए हमें हृदय में नाम-अक्षर चलाते हुए अपने ख़्याल को हर घड़ी हर क्षण अनुशासित ढंग से ध्यान स्थिर रखते हुए प्रभु संग जोड़े रखना है। हमें याद रखना है कि इसके विपरीत कुछ भी करना अपनी वास्तविकता के प्रति अपरिचित रह, इधर-उधर कंटक भरे रास्ते पर चलते हुए व कदम-कदम पर दुःख झेलते हुए जीवन व्यर्थ करने की बात है।

4. हमें याद रखना है कि हम अंधकूप में पड़े अर्थात् नारकीय जीवन जीने वाले इंसानों को, केवल बलधारी जी ही उबार कर, पुनः अपना संसार में भटका हुआ ख़्याल सच्चे घर में ध्यान स्थिर करने में समर्थ बना सकते हैं। उसके लिए हमें श्वास श्वास नाम ध्याना सुनिश्चित करना होगा ताकि वह वाशना अर्थात् जन्म जन्मांतरों के प्रभाव से मानसिक सुख दुःख की भावना से छुटकारा दिला, हमें आत्मिक ज्ञान प्राप्त करने के काबिल बना दें और ए विध् हमारे अंधकारमय हृदय को पुनः प्रकाशित कर वास्तविक सत्-चित्त-आनन्द स्वरूप का अनुभव करा हमें यथार्थतापूर्ण जीवन जीने के योग्य बना दें। यह सत्य धर्म के निष्काम रास्ते पर स्थिरता से बने रहने की बात है।

5. अतः जानो व मानो कि ऐसा पुरुषार्थ दिखाने पर जैसे ही हमारा हृदय सूरजों के सूरज के प्रकाश से प्रकाशित हो जाएगा तो हम स्वतः ही अपने सत्-चित्त-आनन्द स्वरूप में स्थित रहते हुए यह जीवन आनन्द से व्यतीत कर अंत मोक्ष को प्राप्त कर लेंगे।

भजन न० 19
सांवले चरण लगदे हिन प्यारे मैनूं

1. सजनों जिस अलौकिक दर्शन ने महाबीर जी व सीता जी सहित सारी सृष्टि को मुग्ध कर रखा है, हमें भी उस ज्योति स्वरूप इलाही दर्शन के प्रति अपने मन में लोच रखनी है और महाबीर जी के वचनों पर चलते हुए एक निगाह एक दृष्टि, एक दृष्टि एक दर्शन हो जाना है।

2. इस हेतु सजनों हमें हृदय में प्रभु मिलन की प्रबल चाहना रखते हुए,

आजीवन परमेश्वर के प्रति समर्पित रहने वाले परम विद्वान महाबीर जी द्वारा प्रदत्त नाम जाप विधिवत् करना सुनिश्चित करना होगा ताकि हमारा हृदय पुनः प्रकाशित हो जाए और हम आत्मसाक्षात्कार कर एक सत्यनिष्ठ इंसान की तरह इस जगत में निर्भयता से विचरें।

3. सजनों चाहे अब तक का हमारा जीवन कर्त्ता भाव से कामनायुक्त कर्म करने में व्यतीत हुआ है पर अब हमें अकर्त्ता भाव से सब कुछ प्रभु के निमित्त समर्पित भाव से करते हुए नाम रूपी धन एकत्रित करना है। जानो ऐसा सुनिश्चित करने पर महाबीर जी स्वतः ही हमारी सुरत का प्रभु संग योग करा हमें निहाल कर देंगे। इस तरह हमारा जीवन आनन्द से भर जाएगा।

4. सजनों ऐसा पुरुषार्थ दिखा कर खुद पर तो उपकार करना ही है इसी के संग-संग महाबीर जी के सार्थक वचनों से कुल दुनियां को परिचित करा उनको भी भवसागर पार उतरने के प्रति जाग्रत करने का परोपकार कमाना है।

भजन न॰ 20
महाबीर जी नाल प्रीत लगा सुरति

1. आत्मोत्थान हेतु हमें महाबीर जी के संग अपना ख़्याल जोड़ उन संग प्रीत लगानी है ताकि हम संसारी झगड़े-बखेड़ों व मन में एक दूसरे के प्रति विष से भरे कषैले भाव रखने वाले आत्मविस्मृत इंसान, आत्मस्मृति में आ परस्पर मीठी व जीवनदायक वाणी बोलते हुए सजनता के प्रतीक बनें।

2. इसके लिए हमें अमृत रूपी शब्द ब्रह्म विचारों को ग्रहण कर व मन में एक दूसरे के प्रति पनपा द्वेषयुक्त वैर-विरोध का दुर्भाव हटाते हुए प्रभु चरणों में घनेरी प्रीत लगानी होगी व प्रभु सम हो यानि अमरता को प्राप्त हो, जन्म मरण के चक्रव्यूह से छुटकारा पाना होगा व अपना जीवन बना लेना होगा।

3. सजनों अब जब महाबीर जी ने सत्-शास्त्र के विचारों से हमें युक्त कर दिया है तो हमारे लिए बनता है कि हम संसार की तरफ कदापि मुख न घुमावें और

नाम की निरंतर रटन लगा उन द्वारा बताए रास्ते पर निरंतर आगे बढ़ते हुए अपने वास्तविक स्वरूप को पा लें।

4. ऐसा सुनिश्चित करने हेतु सजनों पुरुषार्थ दिखाओ और बाहर के मन्दिरों में भटकने के स्थान पर अपनी सुरति को निर्मल अवस्था में साधो व अपने हृदयगत वातावरण को पावन बना लो। इस तरह अपने ख़्याल को मन मन्दिर में सुशोभित परमात्मा में स्थित रखते हुए, जीवन की रमज जान, उसे सुखमय बना लो। इस संदर्भ में याद रखो कि इस कार्य की सिद्धि में रघुनाथ जी के प्यारे महाबीर जी ही आपके सहायक हैं क्योंकि वह ही आपकी सुरत का शब्द संग सम्बन्ध स्थापित कर उनके गुण, ज्ञान व शक्ति से आपको परिचित करा सकते हैं।

5. सजनों जब ऐसा शुभ हो जाए तो हमें सदा प्रभु चरणों में मस्त बने रहना है और उनकी अचरज व अपरम्पार लीलाओं के रूप में जो इस जगत में खेल चल रहे हैं व जिनका कोई अंत या पारावार नहीं है, वह उनके हुकमानुसार धर्मसंगत खेलते हुए तथा प्रभु के निमित्त ही सब कुछ करते हुए, खुद को इस जगत से आजाद रखना है।

अंत में सजनों बताए तथ्यों के आधार पर आत्मनिरीक्षण करो और अपनी अक्ल टिकाणे ला, कुसंगति छोड़, सत्-संगति अपना, आत्मोद्धार कर लो।

आज का विचार

शब्द गुरु जो जानियों, शब्द गुरु करो प्रवान।
शब्द गुरु है मूल मन्त्र, शब्द गुरु है महान।।

दिनाँक 9 जून 2019 का सबक़

आओ श्रेष्ठ मानव बनें

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों हम सब जानते हैं कि सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ हमें सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की चरण-शरण में आ, उन द्वारा प्रदत्त युवावस्था की भक्ति यानि समभाव-समदृष्टि की युक्ति प्रवान कर, पुनः खुद की वास्तविकता का बोध कर, उन जैसा ही श्रेष्ठ, विद्वान, गुणवान, बलवान, धनवान, बुद्धिमान व ज्ञानवान बनने के लिए प्रेरित कर रहा है। व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक व वैश्विक हित के लिए महत्त्वपूर्ण इस बात के दृष्टिगत सजनों हम सबके लिए बनता है कि हम इस कुदरती ग्रन्थ की वाणी का सत्कार व सम्मान करते हुए, इन सद्गुणों को धार व तीनों तापों से मुक्ति प्राप्त कर, न केवल स्वयं एक नेक व सदाचारी इंसान बनें अपितु आने वाली पीढ़ियों को भी इस आत्मतुष्टि की राह पर धीरता से प्रशस्त करने की दक्षता दिखाएं। इस तरह हमारे साथ-साथ उनके लिए भी सत्य-धर्म की साधना करना सहज हो जाए और वे सत्-वादी व धर्मपरायण इंसान बन निष्पाप जीवन जीने के योग्य बन जाएँ। इसी में सजनों एक इंसान की श्रेष्ठता निहित है। इसी संदर्भ में सजनों आओ आज सर्वप्रथम

श्रेष्ठ कौन होता है इस विषय में जानते हैं:-

श्रेष्ठ

जानो जो सर्वोत्कृष्ट व सबसे अच्छा होता है यानि सबसे उत्तम व सबसे बढ़कर होता है, उसे ही श्रेष्ठ कहते हैं क्योंकि उसमें श्रेष्ठ होने का गुण या भाव होता है। श्रेष्ठ ही सर्वोपरि, अपूर्व, अद्‌भुत, दुर्लभ, अनोखा व विशिष्ट होता है। उसे ही प्रधान शासक व प्रभावशाली होने के नाते प्रतापी की संज्ञा प्राप्त होती है और वह ही शंख, चक्र, गदा, पद्‌मधार श्री विष्णु भगवान के नाम से जाना जाता है।

एक मानव के संदर्भ में मनुष्य इस संसार का श्रेष्ठ प्राणी है क्योंकि उसके पास जैसी बौद्धिकशक्ति है, विचारशक्ति है, विवेक है, वह अन्य प्राणियों के पास नहीं। उसका आचरण जितना विकसित हो सकता है संभवतः अन्य प्राणियों का वैसा नहीं। इस दृष्टि से वह अपनी विशिष्ट विचार व विवेकशक्ति के प्रयोग द्वारा अपनी भाव-भावनाओं, विचारों और स्वभावों का परिष्कार कर व उच्चस्तरीय ईश्वरीय मूल्यों/गुणों को धारण करके, पूर्णता के शिखर पर पहुँच सकता है। इस आधार पर उसकी श्रेष्ठता उत्तरोत्तर उसके आत्मीयतायुक्त आचार-विचार व व्यवहार के आधार पर तय होती है। कहने का आशय यह है कि जब मानव 'स्व' व 'स्वार्थपरता' के भाव से ऊपर उठकर, शब्द ब्रह्म विचारों को धारण कर, सृष्टि के साथ तादात्म्य (एकरूपता) बिठाते-बिठाते सृष्टा यानि ईश्वर के समीप पहुँच जाता है और आत्मा में व्याप्त परमात्मा तत्त्व में मिलना उसके जीवन का एकमात्र लक्ष्य व साधना बन जाता है तो ही वह श्रेष्ठ पद को प्राप्त करने का अधिकारी बन, पूर्ण आत्मसंतोष प्राप्त कर पाता है। इस तरह यह श्रेष्ठता उसे परमात्म तत्व से जोड़ती है और वह हृदय में वीतराग तथा अनासक्त भाव धारण कर अपना नैतिक उत्थान कर लेता है जिसके परिणामस्वरूप वह धीर फिर न किसी से द्वेष करता है और न ही किसी से कोई कामना करता है अपितु वह सत्यदर्शी तो तेरी-मेरी, राग-द्वेषादि, सुख-

दु:ख, मान-अपमान आदि द्वन्द्वों से ऊपर उठकर संसार बंधन से मुक्त हो जाता है और परमेश्वर नाम कहाता है।

जानो हकीकत में ऐसा श्रेष्ठ समभावी मानव ही, 'ईश्वर एक है और वह ही विश्व के सभी प्राणियों और तत्त्वों में समान रूप से विद्यमान है', इस सत्य को धारण कर समदर्शिता अनुरूप परस्पर सजन भाव का व्यवहार करते हुए सदा एकता, एक अवस्था में बना रह पाता है। इस तरह वह ही सर्वविध् सभ्य, शिष्ट, शुभ और शुद्ध आचरण करने वाला सदाचारी, पवित्र व सर्वप्रिय इंसान कहलाता है और उच्च मानवीय गुणों से युक्त हो आचार, विचार, नीति आदि की दृष्टि से सदा नीतिबद्ध रहते हुए, महान हो जाता है। यही नहीं वह आत्मानुभूति रखने वाला तो अपनी इन्द्रियों और मन को अपने वश में रखते हुए, सबको अपने समान समझने की प्रवृत्ति में ढल, मानवता के सिद्धान्त अनुरूप सब प्राणियों की भलाई के निमित्त सार्थक पुरुषार्थ कर उनका उद्धार करता है। कहने का आशय यह है कि वह श्रेयमार्ग यानि पारलौकिक कल्याण के मार्ग पर निष्काम भाव से स्थिरता से चलता हुआ अपने मन-वचन-कर्म द्वारा आत्मानुशासन में बने रहने का परिचय देता है जो परमार्थ से भटके हुए इंसानों के लिए प्रेरणादायक होता है। इसी सद्गुण के कारण उसका आचरण अनुकरणीय बन जाता है। इस संदर्भ में जानो कि सतयुग की प्रधान व उत्कृष्ट संस्कृति इसी अनुकरणीय श्रेष्ठता की परिचायक है।

आप भी सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के आचार-विचारों को अध्ययन व मनन द्वारा व्यवहार में लाकर उनकी तरह अपना आचरण अनुकरणीय बना सकते हो। अब जब हमें पता ही है कि कलुकाल जा रहा है और सतवस्तु आ रहा है तो हमें भी समय की महत्ता को दृष्टिगत रखते हुए, नैतिक व आध्यात्मिक रूप से सर्वोत्कृष्ट इस आद् संस्कृति का अनुकरण कर श्रेष्ठ मानव बनना होगा। ऐसा सुनिश्चित करने के लिए हमें शब्द ब्रह्म विचारों को धारण कर अपनी-अपनी आंतरिक चेतना को जाग्रत करना है ताकि हम आज के पश्चात् भेड़ों की तरह दूसरों के पीछे नहीं, अपितु स्वयं अपने विवेक से चलने में समर्थ हो जाएं।

सजनों जानो कि यह अंतर्मुखी हो मानव होने के नाते अपनी मानवीय प्रतिष्ठा के प्रति निष्ठा रखते हुए निर्भयता से शास्त्रविहित् विचारों का मन-वचन-कर्म द्वारा यथा प्रकटीकरण करने की बात है। अन्य शब्दों में सजनों ए विध् मानवीय श्रेष्ठता को धारण कर जीवन पथ पर सुदृढ़ता से आगे बढ़ते हुए, अपने व्यक्तिगत जीवन को और सँवारने हेतु समाज, देश और मानव मात्र के लिए अपने आप को अधिकाधिक उपयोगी बनाओ और यश कीर्ति कमा अपना जीवन सफल बनाओ।

सारतः सजनों जानो कि मायावी संसार के परे, जो पारमार्थिक ब्रह्म सत्ता है, उसे ग्रहण कर आत्मस्वरूप हो जाता है यानि 'मैं' और 'मेरी' का विचार त्याग कर आत्मोत्कर्ष कर लेता है और रोते हुओं को हँसाता है, सोए हुओं को जाग्रति में ले आता है व गिरते हुओं को उठाकर श्रेष्ठता का पाठ पढ़ाता है वह ही हकीकत में श्रेष्ठ कहलाता है। आओ सजनों यह जानने के पश्चात् अब हम भी निकृष्ठ भाव-स्वभाव छोड़ आत्मनियन्त्रण द्वारा अपना व्यक्तित्व श्रेष्ठतम बनाना सुनिश्चित करें। इसी संदर्भ में श्रेष्ठ पद पाने हेतु प्रति रविवार जो भजनों के भावाशयों के माध्यम से हमें मानवता में लाने की जो प्रक्रिया चल रही है उसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए आज के भजनों के भावार्थों को समझते हैं :-

आज का पहला भजन है - भजन न० 21
लगदेम प्यारे जी

1. इस भजन में जिस प्रकार रघुनाथ जी के सांवले चरणों की उपमा गाई गई है उसको दृष्टिगत रखते हुए हमारे लिए बनता है कि हम अति विनम्र व सेवा भाव से श्रद्धापूर्वक उस सृष्टिकर्त्ता के वचनों की यथा पालना करने को अपने स्वभाव के अंतर्गत कर उनकी समीपता प्राप्त कर अपना परमात्म स्वरूप पहचान लें। सजनों यह परमेश्वर के आश्रय में स्थिरता से बने रहते हुए इस संसार सागर से अपनी किश्ती सहजता से पार उतार अपने सच्चे घर पहुँचने की बात है।

2. इसी महत्ता को दृष्टिगत रखते हुए हमें जीवन के अविचार व आडम्बरयुक्त मनगढ़ंत रास्तों पर चलते हुए व अनेकानेक कष्ट सहते हुए अपना जीवन बरबाद करने के स्थान पर, शास्त्र विहित् शब्द ब्रह्म विचारों को धारण कर परमेश्वर के चरणों का अनुगामी बन यानि उनके आचरण को व्यवहार में ला अपना जीवन आबाद करना है।

3. इस कार्य की सिद्धि हेतु हमें याद रखना है कि महाबीर जी ही रघुनाथ जी के चरणों के प्यारे हैं और वह ही भवसागर से हमारी जीवन नैय्या पार उतारने हेतु हमारा उचित मार्गदर्शन कर सकते हैं। अतः हमारे लिए बनता है कि उनका संग प्राप्त करने हेतु हम सच्चे दिल से उन्हें पुकारें ताकि हमारा ख़्याल उनके चरणों में जुड़ ध्यान स्थिर हो जाए व उनकी विशेष अनुकंपा प्राप्त करने का योग्य अधिकारी सिद्ध हो जाए।

4. सजनों जानो कि परमेश्वर ही इस सारी दुनियां के सहारे हैं। इसलिए उन्हीं के चरणों का अनुगमन करने पर ही हम शांति शक्ति का हथियार धारण कर इस जगत में विचरते हुए भी अपने मन को उनके चरणों में लीन रख सकते हैं। यह भी जानो कि ऐसा सामर्थ्यवान बनने पर हमारी सुरत सच्चे शौह को वर अटल सुहागन बन सकती है।

5. उपरोक्त को दृष्टिगत रखते हुए लगता है कि आपके मन में भी परमेश्वर के वचनों पर स्थिरता से यथा बने रहने की भरपूर उमंग पैदा हो गई होगी। अगर ऐसा ही है तो जानो कि आपके हृदय में सहसा ही ऐसा प्रकाश उत्पन्न होने वाला है जिसके प्रभाव से आपको सहज ही परमेश्वर की सर्वव्यापकता का बोध हो जाएगा और आप दिव्य दृष्टि का सबक़ लेने के योग्य बन जाओगे। ऐसा ही हो उसके लिए हृदय सुशोभित परमात्मा के आगे नतमस्तक हो करबद्ध प्रार्थना करो कि जीवन लक्ष्य प्राप्त करने हेतु मेरे सिर पर आपका हाथ सदा ही बना रहे यानि मेरे मन-चित्त पर आपका आधिपत्य नित्य स्थापित रहे। ए विध् मैं जितेन्द्रिय बन जगत विजयी हो जाऊँ।

भजन न॰ 22
महाबीर संगतां विच आया ए

1. इस भजन के अंतर्गत हमें सांसारिक कामों और सुख भोगों से निर्लिप्त रह, मन में वैराग्य भाव उत्पन्न करने के लिए कहा गया है ताकि हमारे हृदय में सूरजों के सूरज का प्रकाश उद्‌भव हो और हम मन मन्दिर में सुशोभित परमात्मा का आचरण धारण कर ठीक वैसे ही निर्मल स्वाभाविक स्वरूप पर स्थिरता से बने रहने के योग्य बन सदा आत्मस्मृति में बने रहें।

2. ऐसा सुनिश्चित करने हेतु हमें चन्द्रमा के चन्द्र बलधारी जी के संग साथ बने रहना होगा ताकि वह हमें अपने चरणों में स्थान दे दें और हम उनके चरणों में स्थित रह परम आनन्द का अनुभव करते हुए उसी मस्ती में इस तरह खो जाएं कि हमारे मन में संसार की सुध ही न रहे। इस संदर्भ में सजनों जानो कि महाबीर जी भी तेजवान सूरजों के सूरज परमेश्वर से प्रकाश ग्रहण करते हैं और उससे प्राप्त शक्ति के प्रयोग द्वारा अपनी कृपा के रूप में शीतलता आप पर बरसाते हैं। इस तरह उन संग जुड़ने पर आप जो प्रकाश वह ग्रहण करते हैं, उसको प्राप्त करने के योग्य अधिकारी सिद्ध हो जाते हो और उनकी सक्षमता व ताकत से आप भी उन सम सौम्य, शांत व शक्तिशाली हो जाते हो।

3. जानो ऐसा सुनिश्चित करने पर ही हम वैराग्य अवस्था को प्राप्त कर व अंतर्मुखी हो अपनी सुरत को प्रभु में लीन रख जीवनमुक्त हो पाएंगे।

4. ऐसा ही हो उसके लिए हम मनमत पर चलने वाले मानसिक रोगियों को गुरुमत अर्थात् शास्त्रविहित् शब्द ब्रह्म विचारों को ग्रहण कर धारण करना होगा। इस तरह उन विचारों को आत्मसात् करते हुए दिन-रात अपने मन में प्रभु दर्शन की प्रबल चाहना तब तक बनाए रखनी होगी जब तक आत्मसाक्षात्कार नहीं हो जाता। इस संदर्भ में यदि बार-बार यत्न करना पड़े तो भी नहीं घबराना यानि यह नहीं सोचना कि अभी तक आत्मेश्वर का साक्षात्कार क्यों नहीं हुआ अपितु धैर्य से प्रकाशित अवस्था में आना।

5. सजनों सुरत-शब्द के मिलाप के इस अचरज खेल को कोई विरला ही समझ सकता है। अतः सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे पर होने के नाते खुद को भाग्यशाली समझो और इस जीवन उद्धारक खेल को समझ जीवन की बाजी जीत जाओ।

भजन न० 23
महाबीर जी दे चरणां विच आ सुरति

1. सजनों सर्वप्रथम जानो कि सुरत ही हमारी वास्तविकता का प्रतिबिंब है जो ख़्याल के रूप में हमारे अन्दर क्रियावन्त रहती है। कुदरत के विधान अनुसार हमारी सुरत आद् अक्षर के अजपा जाप द्वारा परमात्मा के साथ वार्तालाप करने की सामर्थ्य रखती है। यह सब अन्दरूनी वृत्ति में चलता है क्योंकि वहाँ शरीर का कोई सवाल नहीं होता। सुरत परमात्मा की वाणी को स्पष्टतः सुन-समझ कर यथा धारण कर सके उसके लिए मानसिक मौन अनिवार्य है। इसी क्रिया की सक्रियता द्वारा ही हम सुरत को कंचन रखते हुए व प्रेम व मस्ती में रहते हुए, अपने यथार्थ स्वभावों को ग्रहण कर एक शक्तिशाली इंसान की तरह आत्मविश्वास के साथ निर्विकारिता से आनन्दमय जीवन जी सकते हैं व महाराज जी के साथ मेल खा त्रिकालदर्शी हो अंत विश्राम को पा सकते हैं।

2. इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए सजनों अगर हमने अपनी सुरत को कंचन रख अपना आप बनाना है तो हमें महाबीर जी के वचनों की पालना करते हुए उन द्वारा प्रदत्त नाम को हृदय में बसाने का पुरुषार्थ दिखाना होगा। ऐसा सुनिश्चित करने पर ही हमारी जगत में इधर उधर भटकती हुई अपनी वास्तविकता से अपरिचित सुरत पुनः सचेतन अवस्था में आ जाएगी और हमारा ख़्याल अंतर्मुखी हो आत्मेश्वर में लीन हो अपने यथार्थ स्वरूप को जान जाएगा।

3. सजनों अपने ख़्याल को काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार व संसारी झगड़े-बखेड़ों से मुक्त रखने की बात को समझो और नाम-अक्षर के अजपा द्वारा अपने

हृदय को इस तरह प्रकाशित कर लो कि सूक्ष्म रूप धार कर भी कोई विकार आपके मन में घुस आपकी वृत्ति-स्मृति व बुद्धि को विकृत कर दुराचारी न बना पाए। इस हेतु अपने ख़्याल पर सुदृढ़ता से ध्यान का पहरा रखो।

4. इसके प्रति सावधान रहो कि अगर ए विध् अपने हृदय को नाम का दीया जला कर प्रकाशित न किया तो काम, क्रोध, लोभ, मोह-माया के जाल में फँस इस तरह अहंकार वृत्ति हो जाओगे कि होश हवाश खो अपने यथार्थ को नहीं जान पाओगे और संतोष, धैर्य पर स्थिर बने रह सत्य धर्म के निष्काम रास्ते पर प्रशस्त रहते हुए अपना जीवन बनाना नामुमकिन हो जाएगा। सजनों हमें अपने साथ ऐसा कदापि नहीं होने देना ताकि हमें जन्म मरण की त्रास न भुगतनी पड़े।

5. इन तथ्यों के दृष्टिगत हमें बजरंग बली हनुमान जी की चरण शरण में बने रह उनकी युक्ति के वर्त वर्ताव द्वारा अपनी वृत्ति स्मृति व बुद्धि को विकृत करने वाले इन समस्त मनोविकारों का नाश करना होगा और इस प्रकार अपनी सुरत को शरीर के स्थान पर प्रभु संग जोड़े रख निज यथार्थ स्वरुप पहचान निषंग होकर निर्विकारता से इस जगत में विचरते हुए अपना नाम तो रौशन करना ही होगा, साथ ही परोपकार के निमित्त कुल दुनियां को भी इस सद्मार्ग पर प्रशस्त करने का उद्यम दिखाना होगा।

भजन न० 24
मैं दासी दे फुरने हटा ही दियो मेरे महाबीर प्यारे जी

1. जानो इंसान का ख़्याल जिस प्रकार का ज्ञान धारण करता है वैसी ही उसके मन में इच्छाएँ या विचार उठते हैं। यहाँ समझने की बात है कि फुरने के जगत का ज्ञान अस्पष्ट व असत्य होता है। इसलिए किसी धारण किए हुए जगतीय मिथ्या विचार को सत्य रूप देना सहज नहीं होता और मन में संकल्प-विकल्पों का अंतर्द्वन्द्व चलता है। परिणामतः विवेकशक्ति क्षीण हो जाती है और जब सत्य-असत्य की पहचान नहीं रहती तो जगतीय फुरने युक्त

मनोभाव बुद्धि पर हावी हो जाते हैं। इस परिस्थिति में हमारी सुरत का बहिर्मुखी हो अचेतन अवस्था को प्राप्त होना सुनिश्चित होता है, जो कमजोरी हमारी आत्मविस्मृति का कारण बनती है। हमारे साथ ऐसा अनर्थ न हो तभी तो सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ बार-बार हमें अपने मन में परमेश्वर संग बने रहने की लोच पैदा करने का आवाहन् दे रहा है क्योंकि जहाँ लोच होती है वहाँ खोज नहीं होती वरन् सुरत को शब्द ब्रह्म में खो, वहीं से ही जीव ब्रह्म के सत्यज्ञान को धारण कर व आत्मस्मृति में रहते हुए अपने अन्दर सद्भावों का विकास कर यथार्थता में बने रहना होता है।

2. ऐसा सुनिश्चित करने हेतु हमें महाबीर जी के वचनों पर चलते हुए सदा अंतर्मुखी अवस्था में स्थिरता से बने रहना है ताकि हमारी सुरत किसी भी संसारी प्रभाववश बहिर्मुखी हो फुरनों में न जकड़ी जाए। ऐसा पुरुषार्थ दिखा अपने हृदय को सदा अलौकिक प्रकाश से प्रकाशित रखना है ताकि आत्मा में जो है परमात्मा वह निरंतर दृष्टिगत रहे और हमारा मन पूर्णतः उनके प्रति समर्पित हो, शांत अवस्था को प्राप्त हो जाए और हमारे लिए सत्य के पारखी बन सत्-वादी व धर्मपरायण बनना सहज हो जाए।

3. सजनों जब हमारा भाग्य जगाने हेतु महाबीर जी ने हमें अपने चरणों में स्थान दिया है और अफुरता से उन द्वारा प्रदत्त नाम युक्ति का वर्त वर्ताव करते हुए अपनी सुरत को परमेश्वर संग जोड़े रखने का कौशल भी सिखाया है तो हमारे लिए बनता है कि हम सदा अफुर अवस्था में एकरस बने रहने हेतु एक तीव्र वैरागी इंसान की तरह सांसारिक कामों/बातों और सुख भोगों में अपने ख़्याल को कदापि न उलझाएं अपितु अपनी सुरत को हमेशा अपने सच्चे घर में ध्यान स्थित रखते हुए सदा सचेतन अवस्था में अर्थात् अपने वास्तविक स्वरूप में बने रहें।

4. सजनों सर्व एकात्मा के भाव में स्थिर बने रहने हेतु हमें जो समभाव-समदृष्टि का सबक मिल रहा है, उसके अनुसार हमें समभाव नजरों में कर

सबको एक सा समझते व देखते हुए समदर्शी बन जाना है। हमारे मन में किसी प्रकार का फुरना न उठे, उसके लिए हमें उचित पुरुषार्थ दिखा शांति शक्ति का हथियार धारण कर सदा विचारयुक्त निष्काम रास्ते पर सुदृढ़ता से बने रह सजन पुरुष बन जाना है।

5. यह सब जानने के पश्चात् सजनों हमें अपनी जिह्वा स्वतन्त्र, संकल्प स्वच्छ व दृष्टि को कंचन रखने के प्रति किसी विध् भी कमजोर नहीं पड़ना। आपके मन में किसी कारण भी फुरना न उठे उसके लिए अपना सर्वस्व भक्त हितकारी महाबीर जी पर निछावर करते हुए उन संग अटूट प्रीत बनाए रखने का दृढ़ संकल्प लो। ए विध् सुरत का शब्द संग योग बनाकर इस जगत में निर्भयता से विचरते हुए जितना जी चाहे उतना परोपकार कमाओ और उस शहनशाह के कर्त्तव्यपरायण सपुत्र कहलाओ।

अंत में सजनों बताए तथ्यों के आधार पर आत्मनिरीक्षण करो और निकृष्टता छोड़ श्रेष्ठता में आने का संकल्प लो।

आज का विचार

जिह्वा स्वतन्त्र, संकल्प स्वच्छ, दृष्टि कंचन
विचार शब्द द्वारा असलियत स्वरूप की पहचान
व परोपकार वृत्ति प्राप्ति हेतु सजन भाव अपनाओ,
मृतलोक पर फ़तह पाओ।

दिनाँक 16 जून 2019 का सबक़

आओ मूर्खता छोड़ विद्वान बनने का संकल्प लें।

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

गत सप्ताह सजनों हमने जाना कि श्रेष्ठता क्या है और कौन सर्वश्रेष्ठ होता है। इसी श्रृंखला में सजनों अब जानो कि श्रेष्ठता को प्राप्त रहने के लिए विद्वान बनना क्यों आवश्यक है?

इस संदर्भ में सजनों जानो कि वह जो समस्त वस्तुओं का जानकार होने के साथ-साथ आत्मा/परमात्मा का यथार्थरूप जानता है और तद्नुरूप सत्य, धर्म, सद्-ज्ञान, अहिंसा, सत्कार, शील इन गुणों को धारण कर आजीवन यानि हर परिस्थिति में उन पर स्थिर बने रहने का तप कर दिखलाता है, उस मनीषी या तत्वज्ञ को विद्वान कहते हैं। इस आधार पर ज्ञानसम्पन्न होने के कारण विद्वान व्यक्ति राग-द्वेष, सुख-दुःख, रोग-शोक, आलस्य, सुख-दुःख आदि से रहित, सुजान, अभिज्ञ व मर्मज्ञ होता है यानि उससे कुछ भी छिपा नहीं होता और वह प्रत्येक वस्तु की सार को जानता है। इसीलिए तो अंतर्वाणी को सुन, परा (ब्रह्मज्ञान या आत्मविद्या) और अपरा (लौकिक या पदार्थ विद्या) विद्या को

जानने वाले उस निरभिमानी, शांत, धीर, गंभीर, विज्ञानी, विद्यापति को ज्ञानगुणसागर नाम से जाना जाता है और उसकी लोक-परलोक में प्रशंसा होती है। इस सन्दर्भ में सजन श्री शहनशाह हनुमान जी का उदाहरण हमारे समक्ष ही है।

आप भी सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ का अध्ययन व मनन कर, ऐसे ही विद्वान इंसान बनो इस हेतु सजनों सर्वप्रथम अपने मन में प्रभु के प्रति लोच पैदा करो। ऐसा इसलिए क्योंकि जैसे ही हमारा संकल्प प्रभु को लोचेगा तो स्वतः ही हमारी दृष्टि अर्थात् ध्यान प्रभु की तरफ स्थिर हो जाएगा। कहने का आशय यह है कि जिस तरफ भी इंसान का संकल्प होता है उसी तरफ ही दृष्टि जाती है। इस तथ्य से सजनों स्पष्ट होता है कि अगर हमारे मन में संसार के प्रति लोच होगी तो हमारी दृष्टि संसार की तरफ जाएगी और हम वहीं से सब कुछ ग्रहण करेंगे। इसके विपरीत अगर हमारा संकल्प प्रभु को लोचेगा तो हमारी अंतर्दृष्टि प्रभु के संग जा जुड़ेगी और हम समस्त ज्ञान, गुण व शक्ति वहीं से ही ग्रहण कर पूर्ण हो जायेंगे। यहाँ ज्ञात हो कि संसार के साथ ख़्याल का जुड़ना, मिथ्यात्व को ग्रहण कर, वैसे ही नकारात्मक शारीरिक भाव-स्वभाव अपना कर स्वार्थी बन मंझधार में डूबने की बात है और प्रभु संग ख़्याल का जुड़ना, सत्य को ग्रहण कर तद्नुरूप आत्मिक भाव-स्वभाव अपना सत्यार्थ बन अपने वास्तविक आत्मीयता के धर्म पर सुदृढ़ बने रहने की बात है। यहाँ यह भी जानो कि जहाँ सुरत के प्रभु संग जुड़ने से हृदय बिन सूरजों प्रकाशित रहता है और उसमें सदा सत्य प्रगट रहता है वहीं सुरत के नश्वर जड़ संसार के साथ जुड़ने पर हृदय घोर अंधकारमय हो जाता है।

अतः सजनों अगर परमधाम का नजारा देख व उस चमत्कार के साथ स्थिरता से ख़्याल को साधे रख अपने हृदय को प्रकाशित रखने की कला में निपुण बन हकीकत में विद्वान बनना चाहते हो तो मूलमंत्र आद् अक्षर पर ख़्याल की पकड़ बनाओ और ऐसा पुरुषार्थ दिखा 'ये' को पा सर्व-सर्व की जानने वाले हो

जाओ। इस संदर्भ में जैसा कि सर्वविदित ही है कि 'अलफ' की रटन लगाने पर प्रकाश हो जाएगा। हृदय प्रकाशित होते ही विचार पर खड़े हो जाओगे और भूल का सुधार हो जाएगा यानि जो ख़्याल अज्ञानवश इधर-उधर भटकने की भूल करता है, उसका इस कदर सुधार हो जाएगा कि उसके लिए सदा एकरस अपने सच्चे घर में ध्यान स्थिर रहना सहज हो जाएगा। ऐसा मंगलमय होने पर एक तो आपको समझ आ जाएगा कि यही चमत्कार असलियत मेरा अपना आप है, दूसरा स्वतः ही प्रभु कृपा आप पर बरसने लगेगी। परिणामस्वरूप संसारी फुरना समाप्त हो जायेगा और आप आत्मतुष्ट हो अमीरों के अमीर हो जाओगे।

सजनों जब यह तथ्य समझ में आ जाए तो जगत के सब कार्यव्यवहार करते हुए अपने ख़्याल को उस चमत्कार के साथ ध्यान स्थिर कर लेना। जानो इस प्रयत्न द्वारा जब ख़्याल अलफ यानि मूलमंत्र आद् अक्षर में परिपक्वता से खड़ा हो जाएगा तो स्वतः ही प्रकाशपुन्ज अनादि जोत की प्राप्ति हो जाएगी। इस तरह अलफ पक्का हो जाने पर आपको एक तो बल की प्राप्ति होगी और दूसरा शक्ति ताकतवर हो जाएगी और आपके लिए युवावस्था का भक्ति-भाव अपना सत्य-धर्म के रास्ते पर डटे रहना सहज हो जाएगा। जानो जब शक्ति ताकतवर हो गई तो आपके लिए 'ईश्वर है अपना आप' इस विचार पर स्थिरता से बने रहना सहज हो जाएगा और आप समभाव नजरों में कर, समदर्शिता अनुरूप, परस्पर सजन भाव का व्यवहार दर्शा सकोगे यानि आप समभाव-समदृष्टि की युक्ति अपना, सजनता के प्रतीक बन जाओगे।

ऐसा अद्भुत होने पर सजनों जानो कि सब संसारी फुरने समाप्त हो जाते हैं और दूसरे ख़्यालों का कोई नामोनिशान नहीं रहता। तब फिर इंसान 'अलफ' को छोड़ देता है और 'ये' के एक फुरने में खड़ा हो जाता है। जानो इस सर्वोत्तम अवस्था को प्राप्त होने वाला सजन ही वैष्णव जन कहलाता है। इस तरह जिसके भी हृदय में वैष्णव होने का यह सर्वोत्तम भाव या धर्म जाग्रत हो

जाता है, उसी वैष्णवी के हृदय में इस सृष्टि का पालन-पोषण करने वाले, शंख, चक्र, गदा, पदम्-धारी श्री विष्णु भगवान प्रगटते हैं और अंतर्घट में सतवस्तु छा जाती है। ऐसा शुभ होने पर मन में संकल्प रहित अवस्था पनपती है और इंसान का ख़्याल 'ये' शब्द से जा मिलता है। यह ख़्याल के आकाशों-आकाश, पातालों-पाताल, सप्तद्वीप भूमंडल में प्रवेश करते हुए, गगनमंडल में निर्लिप्तता से स्थिर होने की, आनन्दप्रदायक बात होती है। फिर जब सुरत परमतत्व के साथ जा जुड़ती है तो 'अलफ' और 'ये' दोनों ही छूट जाते हैं और कुदरत के नियम अनुसार ऐसे पराक्रमी इंसान को चेतना के प्रवाह द्वारा स्वतः ही जीव, जगत और ब्रह्म का वास्तविक बोध कराने वाला, आत्मिक ज्ञान प्राप्त होना आरम्भ हो जाता है। इसलिए तो ऐसा विद्वान इंसान तीनों कालों की पहचान कर संसार में सब कुछ करते हुए भी अकर्त्ता भाव में बना रहता है यानि विचरता भी है और नहीं भी विचरता। यह अपने आप में उसे अपनी आत्मा की अजरता व अमरता का सत्य समझ में आने की बात होती है और इसलिए वह इस जगत में मौत के भय से विमुक्त रह सब कुछ सत्यनिष्ठा व धर्मपरायणता से करते हुए जगत विजयी हो अंत विश्राम को पा जाता है। यह है सजनों विद्वान बनने की अद्वितीय महत्ता। ऐसा ही विद्वान बनने हेतु सजनों प्रति रविवार जो भजनों के भावाशयों के माध्यम से हमें अच्छा इंसान बनाने की प्रक्रिया चल रही है उसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए हम आज के भजनों के भावार्थों को समझते हैं :-

आज का पहला भजन है - भजन न० 25
साँवले चरणां दे नाल प्यार

1. सजनों परमेश्वर के प्रति अखंड भक्ति भाव अपना कर, अपने मूल तत्त्व की रमज़ जानो। जानो निष्काम भाव से ऐसा पुरुषार्थ दिखाने पर ही मन में ईश्वर विषयक अनुराग पैदा होगा और हम ज्ञान, कर्म आदि अन्य तत्त्वों की अपेक्षा, भक्ति को प्रमुख मानने का सिद्धान्त अपनाकर, उस पर सुदृढ़ता से एकरस बने

रह सकेंगे। इस तरह हम अपने मन को संसार में लीन रखने जैसी भूल करने के स्थान पर, सदा परमेश्वर में लीन रखने को महत्त्व देंगे और हमें परमेश्वर का स्नेह प्राप्त होना आरम्भ हो जाएगा।

2. सजनों यह हृदय में शब्द रूपी परमात्मा के प्रति निर्मल प्रेम का उद्‌भव होने जैसी आनन्दप्रदायक बात होगी। अतः इस आनन्द को प्राप्त करने हेतु सजनों समर्पित भाव से बलधारी जी की चरण-शरण में बने रहो और ए विध् आत्मसाक्षात्कार कर, निषंग परमार्थ के रास्ते पर बने रह, अपने जीवन का वास्तविक अर्थ समझदारी से सिद्ध कर लो। ऐसा करने से अर्थात् महाबीर जी की युक्ति अपनाने पर आपके सब कष्ट मिट जाएंगे और परमशांति की प्राप्ति होगी।

3. उपरोक्त तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए सजनों अपने मन से द्वैत भाव मिटा अपना स्वाभाविक रूप संवार, निर्मल बना लो। आशय यह है कि गृहस्थ आश्रम व सत्संग में विचरते समय स्वार्थी बातों का आदान-प्रदान करने के स्थान पर महाबीर जी द्वारा प्रदत्त युक्ति अनुसार परमार्थ के रास्ते पर चलते हुए गृहस्थ आश्रम सतयुग बना परमपद को पा लो।

4. इस प्रयोजन में सुनिश्चित रूप से सफलता प्राप्त करने हेतु, वन्दनीय महाबीर जी ने जो कुंजी अर्थात् विधि बताई है, उस को युक्तिसंगत प्रवान कर व उस पर स्थिरता व सुदृढ़ता से बने रह, सहजता से भवसागर से पार उतर जाओ।

5. अंततः सजनों अपना असली जीवन लक्ष्य निश्चित रूप से सिद्ध करने के लिए, दासी भाव में आ, अपने मन में महाबीर जी के प्रति अटूट श्रद्धा रखते हुए, अपने कष्टों के निवारण हेतु, उन्हें सच्चे दिल से पुकारो ताकि आत्मतुष्ट हो परम आनन्द को प्राप्त कर सको। इसी संदर्भ में सजनों हमारे लिए यह भी बनता है कि हम निज फ़र्ज अदा के तहत् अपने परिवारजनों का जीवन

आनन्दमय बनाने के लिए उनके मन में भी परमेश्वर का संग प्राप्त करने के प्रति ऐसा ही उमंग व उत्साह भरें ताकि वे भी जीवन की बाजी जीत सकें।

भजन न० 26
हरदम राहवे ध्यान

1. सजनों उठत-बैठत, स्वप्न-जाग्रत, युक्तिसंगत श्वास-श्वास महाबीर जी द्वारा प्रदत्त नाम जाप में ध्यान स्थिरता से बने रह, एक उत्तम सपुत्र की तरह, इस जगत के समस्त कार्यव्यवहार परमेश्वर के निमित्त करने सुनिश्चित करो और ए विध् सदा अफुर बने रहो। ऐसा सक्षम इन्सान बनने हेतु सदा याद रखो कि सांसारिक कुटम्ब-कबीला व बन्धु-प्यारे, सब स्वार्थी हैं और इन संग प्रीत लगाने पर हम परमार्थ के रास्ते से भटक सकते हैं। इसलिए इनमें बंधनमान होने की भूल कदापि न करो।

2. इसी के साथ यह भी याद रखो कि विषय-विकारों में अपना चित्त लगाने की भूल करना नरकों को प्राप्त होने की बात है। इसलिए अगर संसार सागर से पार उतरने में दिलचस्पी रखते हो तो महाबीर जी के वचनों पर चलते हुए जाग्रति में आ जाओ और अपनी मनवांछित इच्छा पूरी कर अपने सच्चे घर पहुँच विश्राम को पाओ।

3. इस संदर्भ में सजनों अगर आपका ख़्याल जगत में बंधनमान हो गया है तो पुनः बंधनमुक्त होने हेतु अविलम्ब महाबीर जी की चरण-शरण में आ जाओ क्योंकि वह बलवान ही, संसार-सागर में डूबते हुए जीवों को सहजता से पार उतारने में समर्थ हैं। यही नहीं, जो भी जीव अनन्य भक्ति भाव से उन द्वारा प्रदत्त नाम ध्याता है और ध्याते-ध्याते उसे हृदय में बसा लेता है यानि आत्मदर्शन कर लेता है, तो ऊपर से उसके हृदय आकाश में ऐसा अलौकिक विमान आता है जिस पर वह आत्मप्रकाशी सुरत चढ़ कर अपने सच्चे घर पहुँच विश्राम को पाती है।

4. इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए अगर सजनों मन में सच्चे घर पहुँचने की उमंग है तो ध्यान स्थिर होकर, परमेश्वर के वचनों पर चलते हुए स्वाभाविक रूप से वैसे ही ढल जाओ जैसे वह चाहते हैं, ताकि सुनिश्चित रूप से सुरत-शब्द का मेल हो जाए।

5. ऐसा पुरुषार्थ दिखा सजनों एक तो अपना उपकार करो और दूसरा सांसारिक विषय-विकारों में उलझे हुए अन्य मानवों को अपने मूल आचरण से परिचित करा इस जगत में परमेश्वर के हुकम अनुसार ही सब कुछ करने के प्रति जागरूक करो ताकि उनका भी बेड़ा पार हो जाए। ए विध् जितना चाहो परोपकार कमाओ।

भजन न० 27
महाबीर जी दे चाह दे विच राहवां

1. परमार्थ के रास्ते पर स्थिरता से बने रहने के लिए अपने मन में महाबीर जी का संग प्राप्त करने की प्रबल अभिलाषा जाग्रत करो और उनके मार्गदर्शन में बने रह इस मिथ्या संसार की मर्म को जानो ताकि किसी विध् भी इस जगत के मायावी जाल में फँस, जीवन व्यर्थ न गँवा बैठो।

2. यहाँ याद रखने की बात है कि यह मृतलोक हर जीव को आवागमन के चक्र में फँसाए रखने के लिए अपने आप उनके प्रति मित्रता का हाथ बढ़ाता है पर हमें घबराना नहीं अपितु सतर्कता से अपने आपको इससे निर्लिप्त रखने हेतु अपने मन को सदा प्रभु में लीन रखना सुनिश्चित करना है।

3. इस तरह महाबीर जी संग बने रह उनके गुणों और शक्ति को धारण कर ऐसे विशेष मानव बनो जो अपने इन अलौकिक गुणों व शक्ति के प्रभाव से इस मायाजाल से विमुक्त रह, निर्भय होकर इस संसार में विचरते हुए अपने सच्चे घर मे पहुँचने में सक्षम हो। जानो यही सफलता प्राप्ति का विजयमंत्र है।

4. ऐसा सुनिश्चित करने के लिए अपने मन को वश में रखते हुए, सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के बताए हुए रास्ते पर स्थिरता से बने रह, हरदम अपना ख़्याल प्रभु संग जोड़े रखो और उसी दर्शन में स्थित रह निष्काम भाव से उनके हुकम पर बने रह सेवारत रहो।

5. ऐसा ही हो उस के लिए यानि महाबीर जी के संग बने रहने हेतु, ईश्वर को स्वामी और स्वयं को उसकी दासी समझते हुए, अपने हृदय में सूरजों के सूरज यानि आत्मा में परमात्मा को नित्य निहारते हुए आत्मानन्द की अनुभूति करो।

भजन न॰ 28
महाबीर जी आए ने फुलां वाले

1. संतोष व धैर्य का श्रृंगार पहन व सत्य को धारण कर अपने हृदय को सचखंड बनाओ और धर्म के रास्ते पर सीधे चलते जाओ। जानो ए विध् सत्य हृदय में स्थापित हो जाएगा और उसकी सुगंधि से अन्दरूनी वातावरण सकारात्मक हो जाएगा। इस तरह चित्त स्वतः ही प्रसन्न हो उठेगा और आनन्द की अनुभूति होगी। ऐसा शुभ होते ही महाबीर जी की अपार कृपा से अपने परमात्म स्वरूप के दर्शन हो जाएंगे। इस तरह आत्मस्मृति में आते ही सुरत रानी बनकर, पति परमेश्वर की चालें पकड़ेगी और हम सतवस्तु के इंसान बन जाएंगे।

2. इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए सजनों हमारे लिए बनता है कि हम भी अपने ख़्याल को मन-मन्दिर में सुशोभित परमात्मा में ध्यान स्थिर रखने का पुरुषार्थ दिखाएं। ए विध् प्रभु संग बने रह, उनके एक-एक गुण को धारण कर, अपने हृदय को मनमोहक सुगंध से इस तरह भर लें कि हमारा मन सुकर्मों की ओर प्रवृत्त हो, उन्हीं के निमित्त प्रत्येक कर्म निष्काम भाव से कर, कर्मगति से मुक्त हो जाएं।

3. ऐसा सुनिश्चित करने के लिए सजनों अविचार युक्त कंटक भरे अवलड़े

रास्ते पर बने रहने के स्थान पर विचारयुक्त सुकर्मों का रास्ता अपनाओ ताकि हृदय सदा एकरस प्रकाशित रहे और निज परमात्म स्वरूप हर पल दृष्टिगोचर रहे। सजनों याद रखो ऐसा पुरुषार्थ दिखाने पर ही हमारा ख़्याल कभी भी बहिर्मुखी नहीं होगा और हम इस जगत में विचरते हुए भी इससे आजाद रहेंगे।

4. जानो शिव-ब्रह्मा शेष-गषेश, शेरां वाली माता रानी, नारद जी आदि भी यही युक्ति अपना कर परमेश्वर के हुकम अनुसार इस जगत के उद्धार हेतु सदा निष्काम भाव से तत्पर रहते हैं और इसलिए तो सर्व उनकी मान्यता है। इस संदर्भ में यह भी जानो कि वे यह सब करते हुए कदापि तेरी-मेरी व दुई-द्वेष का भाव नहीं अपनाते। अतः हमारे लिए भी बनता है कि हम भी इस जगत में जो कुछ भी करें, वह ब्रह्म भाव पर स्थित रह कर ही करें और ए विध् परोपकारी नाम कहाएं।

5. अंत में सजनों परोपकारी नाम कहाने हेतु सांसारिक कनरस छोड़ कर, सदा अपनी बनत बनाने वाले परमेश्वर का ही यशोगान करने का स्वभाव बनाओ ताकि इस जगत में मानवता के सिद्धान्त अनुसार सब कुछ करते हुए, अंत अपने जीवन लक्ष्य को प्राप्त कर, तीनों लोकों में यश कीर्ति को पाओ।

अंत में सजनों बताए तथ्यों के आधार पर आत्मनिरीक्षण करो और मूर्खता छोड़, विद्वान बनने का दृढ़ निश्चय लो।

आज का विचार

सजन पुरुष मन, वचन, कर्म द्वारा
सच्चाई-धर्म पर अटल रह
भक्ति-शक्ति से गृहस्थाश्रम ठीक निभाते हुए
यश-कीर्त्ति पर फ़रक नहीं पड़ने देता।

दिनाँक 23 जून 2019 का सबक़

आओ अवगुण त्याग गुणवान बनने का निश्चय लें

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों अभी तक हमने श्रेष्ठ व विद्वान बनने के विषय में जाना। इसी श्रृंखला में आओ आज जानें कि हमारे वास्तविक गुण क्या हैं? वे कहां से आते हैं? कैसे प्राप्त होते हैं और उन्हें धारकर हम कैसे गुणवान बन सकते हैं?

इस संदर्भ में सजनों जैसा कि सर्वविदित ही है कि हम मानव रूप में और कुछ नहीं अपितु शरीरधारी आत्मा हैं और परमात्मा ही इस अजर-अमर आत्मा का आधार है। इस तथ्य के दृष्टिगत सजनों हमें समस्त शारीरिक भ्रम मिटाकर यह मानना होगा कि आत्मिक ज्ञान प्राप्त कर, आत्मा के गुणों पर स्थिरता से बने रहने पर ही हम निजी विशेषताओं को मन-वचन-कर्म द्वारा प्रकट कर सकते हैं और मानवता सिद्धान्त पर अटल बने रह सकते हैं। इसके विपरीत इन गुणों से च्युत होने पर हम बनावटी जगत में फँस जाते हैं। फिर हमारी सोच भी बनावटी हो जाती है, बातें भी बनावटी हो जाती हैं और कर्म भी बनावटी होते हैं। इस तरह आत्मिक गुणों से विपरीत चलन अपनाकर हम अपने जीवन का खेल बिगाड़ बैठते हैं। ऐसा न हो इस हेतु सजनों आत्मा के गुणों पर स्थिर बने रहने का महत्त्व समझो और मानो कि आत्मा के सभी गुणों

का भली-भांति ज्ञान होने पर ही हम इन गुणों की अलौकिक शक्ति का, प्रयोग द्वारा उचित लाभ उठा, सदा प्रकाशयुक्त अवस्था में एकरस बने रह सकते हैं और अपने सम्यक् दर्शन-ज्ञान-चरित्र के प्रभाव से आत्मा को प्रकाशमान कर, आत्मिक गुणों यथा पवित्रता, चैतन्यता, अहिंसा, समता, करुणा, सत्यता, सर्वदर्शिता, एकता आदि के द्वारा अधर्म पर चलने वालों पर विजय प्राप्त करते हुए धर्म का प्रचार कर सकते हैं। इस प्रकार गुणवान बनने पर ही हम एक तेजस्वी इंसान की तरह, जीवन के हर क्षेत्र में सहजता से सर्वहितकारी परिणाम प्राप्त कर सकते हैं और प्रभुमय हो यानि प्रभुसत्ता से युक्त हो सबसे बलवान नाम कहा सकते हैं।

सजनों बलवान बनने के प्रति, अपने आत्मिक गुणों की विशेषता का महत्त्व समझने के पश्चात्, हमें निर्भयता से श्रेष्ठ पद की ओर प्रशस्त होने के लिए, अपनी इस अच्छी व प्रशंसनीय आत्मिक विशेषताओं को भली-भांति समझना होगा। इसके पश्चात् इन गौरवमय चमत्कारी गुणों को धारण कर हमें उनके प्रति अपने मन में पूर्ण सम्मान का भाव रखना होगा। इस तरह फिर इन तेजोमय गुणों के प्रताप से हमें त्रिगुणातीत होकर इस कारण जगत में विचरना होगा ताकि हमें परमेश्वर ने जो भी करने के लिए इस जगत में भेजा है, हम जगत से आजाद रह, उसे सक्षमता से समयबद्ध पूर्ण कर सकें और ए विध् परमेश्वर को प्रसन्न कर दें कि वह हमें सहर्ष कंठ लगा लें।

इस संदर्भ में सजनों याद रखो कि अपने निजी आत्मिक गुण को ग्रहण करने पर ही हम कुदरत की रमज को जान सकते हैं यानि जिस प्रकृति द्वारा अनेक रूपात्मक जगत का विकास हुआ है, उस दृश्यमान जगत के परिवर्तनशील दृश्यों से अप्रभावित रह, निर्लिप्तता से अपने वास्तविक स्वरूप में स्थिर बने रह वास्तविक रूप से मानव नाम कहा सकते हैं। यही नहीं ऐसा सुनिश्चित करने पर ही हम अपना उपकार करने के साथ-साथ जगत का उद्धार करते हुए परोपकार भी कमा सकते हैं। अतः सजनों इस सर्वोत्तम अवस्था को प्राप्त करने के लिए हम सबके लिए बनता है कि हम आत्मिक ज्ञान प्राप्त कर अपने वास्तविक गुणों या धर्म को केवल जाने ही नहीं अपितु उसके पारखी बन, स्वयं

को अविलम्ब दोषमुक्त भी कर लें और ए विध् उत्तम कोटि के इंसान बन सर्वगुण सम्पन्न कहलाएं। इस परिप्रेक्ष्य में सजनों याद रखो आत्मीय गुणों से युक्त होने पर ही इंसान के मन में जगत के स्थान पर परमात्मा को प्राप्त करने की लोच पैदा होती है और इस प्रकार वह परमार्थ के रास्ते पर सीढ़ी-दर-सीढ़ी स्थिरता से चढ़ता हुआ, निपुणता से अपना जीवन सफल बना लेता है।

इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों सभी को सुझाव है कि अपने गुणों का आधार अपने माता-पिता आदि को नहीं अपितु परमात्मा को ही मानो और अपने नज़रिये मे परिवर्तन ला अलौकिक शक्ति वाले गुणेश्वर बनो। जानो यही आत्मस्मृति में बने रहने जैसी उत्तम बात है। इस अवस्था को प्राप्त करने पर ही इंसान सदा इस सत्य से परिचित रहता है 'अमर है मेरी आत्मा, न जन्म में है, न मरन में है, न रोग में है, न सोग में है, न खुशी में है, न ग़मी में है, न मान में है, न अपमान में है, न अमीरी में है, न गरीबी में है, वह अमीरों का भी अमीर है'।

इस तरह यह प्रतीति होने पर ही मन को संतोष प्राप्त होता है और हमारे लिए समभाव-समदृष्टि की युक्ति पर धीरता से बने रह सत्य धर्म के निष्काम रास्ते पर एकरस बने रहते हुए अपना जीवन उद्धार करना सहज हो जाता है। यह होता है सजनों आत्मिक गुणों का कमाल। यह सब सुनने-समझने के पश्चात् सजनो अब जो प्रति रविवार भजनों के भावाशयों के माध्यम से हमें गुणवान बनाने की प्रक्रिया चल रही है उसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए आज के भजनों के भावार्थों को समझते हैं :-

भजन न० 29
महाबीर जी आए ने, प्यारी दासी नूं

1. सजनों जिस किसी के भी भक्ति भाव पर प्रसन्न होकर महाबीर जी, उसके प्रति स्नेह रखते हुए, उसे अपने संग ले लेते हैं वह उनका प्रत्यक्ष करते हुए, संसार की सुध बुध खो, उसी दर्शन में मग्न हो जाता है और दिल ही दिल में हर्षाते हुए, हर क्षण उन्हीं के ही गुण ग्रहण करने में रत हो, धीरे-धीरे वैसा ही गुणी बन जाता है।

2. इस तथ्य के दृष्टिगत सजनों हमें भी महाबीर जी की चाल पकड़ कर, उनकी अपने अंतर्मन में उपस्थिति का अनुभव करना है और अन्दरूनी व बैहरूनी दोनों वृत्तियों में, एक दर्शन में सदा स्थित रह, प्रसन्नचित्त बने रहना है।

3. ऐसा सुनिश्चित करने पर सजनों जानो कि तेरी-मेरी व वैर-विरोध युक्त द्वि-भाव स्वतः ही दिल से हट जाएगा और महाबीर जी के आचरण अनुसार ढलने पर सब झगड़े समाप्त हो जाएंगे और हमारे लिए घर सतयुग बनाना सहज हो जाएगा।

4. ऐसा ही हो उसके लिए सजनों महाबीर जी के हुकम अनुसार, बिना किसी तर्क के सद्मार्ग पर आगे बढ़ते जाओ ताकि हृदय शुद्ध हो जाए और हम अपने यथार्थ को जान आत्मस्मृति में बने रहें।

5. जानो ऐसा पुरुषार्थ दिखाने पर ही हम अपने अलौकिक गुणों पर सुदृढ़ता से बने रहते हुए, शारीरिक बंधन से मुक्त रह सकेंगे और पुण्य कर्म करते हुए अपना जीवन सकार्थ कर लेंगे।

भजन न॰ 30
सड़दी दुनियां देख के

1. जानो कि अपने निज शक्तिशाली गुणों के स्थान पर सांसारिक गुणों को धार, आप अपना ही विरोध करते हुए, ऐसी विकृत स्थिति को प्राप्त हो चुके हो कि आपके लिए जीवनदायक विचारों व नीति-नियमों पर बने रहना असंभव हो चुका है। इसीलिए तो आप दुश्चरित्रता को प्राप्त हो, बुरी दशा में, जीवन का समय रोते-झुखते हुए मूर्खता भरा जीवन बिता रहे हो। सजनों अपने इस बिगड़े हुए स्वाभाविक स्वरूप को निर्विकारी बनाने के लिए अविलम्ब महाबीर जी की चरण-शरण में बने रहने का पुरुषार्थ दिखाओ।

2. जानो ऐसा सुनिश्चित करने पर ही आप पुनः सफलता के विचारयुक्त मार्ग पर प्रशस्त हो पाओगे। ऐसा इसलिए क्योंकि केवल महाबीर जी ही आपको

प्रतिकूल परिस्थितियों से उबार, सामान्य नियम/व्यवहार में यथा बनाए रहने के काबिल बनाने में समर्थ हैं।

3. सजनों यकीन मानो कि यदि ऐसा पुरुषार्थ दिखा सदाचारी व वैरागी बन गए तो स्वतः ही आपको अंतर्घट में सुशोभित परमेश्वर का साक्षात्कार हो जाएगा और आप उनकी अवर्णनीय लीलाओं और प्यार का आनन्द उठा सकोगे।

4. इस संदर्भ में सजनों अगर आपके मन में आत्मपद प्राप्त करने की लेश मात्र भी चाहना है तो फिर से कह रहे हैं कि तेरी-मेरी व दुई-द्वेष छोड़कर महाबीर जी के द्वारे पर समर्पित भाव से बने रहो। इस प्रकार उनके वचनों पर चलते हुए, अपने तीनों ताप मिटा, प्रभु से मेल खा जाओ। इस मंगलमय परिणाम को प्राप्त होने हेतु सजनों अपने परिवारजनों व अन्य संगी-साथियों को भी इस के प्रति प्रोत्साहित करो और परोपकार कमाओ।

5. अंत में सजनों हम तो यही कहेंगे कि दृढ़ संकल्प होकर अपने मन में प्रभु मिलन के प्रति प्रेम भाव पैदा करो और ए विध् प्रभु का स्नेह व दीदार प्राप्त कर, अपना जीवन रोते हुए गुजारने के स्थान पर, समस्त कष्टों से उबर, परम शांति को पाओ।

भजन न॰ 31
गुप्त रूप महाबीर जी आया ए

1. जानो जब किसी मानव को महाबीर जी द्वारा प्रदत्त भक्ति भाव पर स्थिर बने रहने के फलस्वरूप अपने हृदय में उनके गुप्त रूप चमत्कारी शक्ति का अनुभव हो जाता है तो उसके मन में शांति स्थापित हो जाती है। ऐसा अद्भुत होने पर वह भाग्यशाली अनहद वाजे के शब्द को सुनने के योग्य हो जाता है।

2. फिर जैसे ही मानव के मन में अनहद वाजे की झनकार झंकृत होती है तो वह जन्म जन्मांतरों से मोह-माया की नींद में सोया हुआ जाग उठता है और आत्मस्मृति में आ सच्चे घर की ओर प्रस्थान करते हुए अंत परमपद को प्राप्त कर लेता है।

3. सजनों जानो कि महाबीर जी की इस महिमा का भेद ऋषि-मुनि भी नहीं पा सकते। इस तथ्य के दृष्टिगत हम कलुकाल की आग से त्रस्त, जीवन के सद्मार्ग से भटके हुए इंसानों के लिए बनता है कि हम उनकी चरण-शरण में बने रह उनके रंग में पूरी तरह से रंग जाएं। ए विध् बलधारी जी से मंत्र प्राप्त कर अपने दिल से काम, क्रोध हटा जीवनमुक्त हो जाएं।

4. इस संदर्भ में याद रखो कि हमें प्रभु के इलाही रंग में इस तरह रंग जाना है कि वह रंग फिर किसी कारण भी उतरने न पाए। इस प्रकार सजनों हम भूले भटके इंसानों ने स्थिरता से प्रभु के वचनों पर चलते हुए परमेश्वर के चरणों में स्थान प्राप्त कर लेना है।

5. सजनों यकीन मानो ऐसा सुनिश्चित करने पर ही हम झूठी दुनियां की सुध-बुध खो व अंतर्मुखी हो परमेश्वर की इस जगत रूपी लीला का मर्म जान सकेंगे और महाबीर जी की कृपा से इस भवसागर से पार उतर सकेंगे।

भजन न॰ 32
महाबीर जी हो गए ने मेहरबान

1. हमें शारीरिक भाव स्वभावों को त्याग आत्मिक भाव-स्वभावों पर स्थिर बने रहना है और सुनिश्चित रूप से ऐसा बनने के लिए महाबीर जी के वचन प्रवान कर उन की कृपा प्राप्त करने का उचित पात्र बनना है। ऐसा पुरुषार्थ दिखाने पर आगे जो संगी-साथियों की बातें पहले कड़वी लगती थी व तीर समान चुभती थी वह हमें फूलों समान कोमल व अमृत समान मीठी लगने लगेगी और परस्पर व्यवहार में सजनता का भाव पनपेगा।

2. यह अपने आप में एक भाव हो ठीक उसी प्रकार एक दर्शन में स्थित होने की बात होगी जिस प्रकार कृष्ण दीवानी मीरा बाई के समक्ष सर्प आने पर उसे उस में भी भगवान ही नजर आए थे। कहने का आशय यह है कि इसी तरीके से जो प्रकाश मन मन्दिर में देखा है वह सबमें निगाह आने लगेगा।

3. सजनों इस सजनता से परिपूर्ण भाव को अपनाने के लिए, सपरिवार महाबीर जी की शरण में आना व बने रहना सुनिश्चित करो और उनकी कृपा

के पात्र बन नाम रूपी अमृत वर्षा द्वारा आशा-तृष्णा का नाश कर आत्मतृष्ट हो जाओ।

4. ऐसा पुरुषार्थ दिखाने पर सजनों महाबीर जी प्रसन्न होंगे और आप को आत्मज्ञान प्रदान कर अंतर्घट में छाया अज्ञान का बादल हटा देंगे। इस प्रकार वह आपके हृदय को पुनः सूरजों के सूरज के प्रकाश से प्रकाशित कर आत्मदर्शन करा देंगे। जानो ऐसा अद्भुत होते ही आपको आत्मिक सम्पदा प्रदान कर आत्मतुष्ट कर देंगे और आप कुदरती नियमों के अनुसार ईश्वर है अपना आप इस विचार पर खड़े हो जाएंगे।

5. उपरोक्त के दृष्टिगत सजनों जो आपको बताया गया है इसे महाबीर जी का फरमान मानो और उनके वचनों की स्थिरता से पालना करने हेतु अपना सब कुछ निछावर करने के लिए तत्पर हो जाओ। इस प्रकार उनकी कृपा के योग्य पात्र बन अपने जन्म की बाजी जीत लो। यदि ऐसा हो गया तो जानते हो, फिर क्या बोल उठोगेः-

जीतेंगे, जीतेंगे, हम जन्म की बाज़ी जीतेंगे,
हनुमान जी दे वचनां ते चल चल कर, हम जन्म की बाज़ी जीतेंगे।

अंत में सजनों बताए तथ्यों के आधार पर आत्मनिरीक्षण करो और अवगुण त्याग गुणवान बनने का संकल्प लो।

आज का विचार

हे इन्सानः-

जिह्वा सजन ख्याल सजन।
सजन नज़रों में पहचान।।
हम हैं सजन तुम हो सजन।
सजनों सजन सजन ही मान।।

दिनाँक 30 जून 2019 का सबक़

आओ निर्बलता छोड़ बलवान बनने का संकल्प लें

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों यह बात सर्वविदित है कि महाबीर जी के बल व तेज-प्रताप से मौत भी थर-थर काँपती है। इसीलिए तो वह अमर नाम कहाते हैं और कुल सृष्टि में उन प्रभु चरणों में समर्पित ज्ञानवान जैसी शान और किसी की नहीं है। इस संदर्भ में जब-जब भी इस संसार के उद्धार हेतु परमेश्वर सर्गुण रूप में प्रकट हुए तब-तब, भक्त शिरोमणि बलधारी सजन श्री हनुमान जी ने ही उनके सभी कारज सिद्ध करने का पराक्रम दिखाया और आज भी वही सर्व महान ही हम समस्त कलियुगवासियों को कलुकाल के दुष्प्रभाव से उबार पुनः सतयुग में प्रवेश करने योग्य बनाने हेतु सरल व सहज युक्तियाँ प्रदान करते हुए विधिवत् समभाव-समदृष्टि के सबक़ पर स्थिरता से बने रहने का आवाहन दे रहे हैं। सर्वहित के निमित्त सजनों उन जैसा ही पराक्रम दिखा पाने के योग्य बनने हेतु हमें भी समर्पित भाव से उनका कहना मानते हुए उन सम ज्ञानवान व बलिष्ठ बनना होगा। इस परिप्रेक्ष्य में हम सब भी इस मिथ्या जगत पर विजय प्राप्त

करने के निमित्त, उन जैसा सामर्थ्यवान बन मोक्ष प्राप्त कर सकें, उसके लिए हमें अपने शारीरिक बल, मानसिक बल व आध्यात्मिक बल का संगठित रूप से अनुशासनबद्ध होकर, समय अनुसार प्रयोग करने की कला सीख विदेही होना होगा। यहाँ शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक बल को स्पष्ट करते हुए बता दें कि शारीरिक/काय्/दैहिक बल से तात्पर्य शरीर के बलिष्ठ व तन्दुरूस्त होने से है। यह बलिष्ठता सेवन किए जाने वाले, पौष्टिक, संतुलित, सात्विक आहार, व्यायाम व नियमित जीवन शैली अपनाने से आती है। मानसिक/मनोबल से तात्पर्य मानसिक संकल्प शक्ति, भाव-भावनाओं की स्वच्छता व पवित्रता से है जो मन व इन्द्रियों को वश में रखते हुए, शब्द ब्रह्म विचारों के सतत् सेवन, उनके मनन व मौन वृत्ति धार जितेन्द्रिय बनने से आती है। इसके परिणामस्वरूप हठी व चंचल मन, एकाग्र व शांत रहता है व मनुष्य सजनता का प्रतीक बन सत्कार्यों में प्रवृत्त होता है। आध्यात्मिक/आत्मबल से तात्पर्य आत्मा के बल से है जो अपने शाश्वत, निराकार ईश्वरीय स्वरूप के प्रति गहन आस्था, श्रद्धा व विश्वास रखने से प्राप्त होता है व जिसके लिए अंतःकरण की पवित्रता, प्रयोजन की उच्चता व दृढ़ता अति अनिवार्य होती है। इस बल की प्राप्ति हेतु राग और भोग में रुचिशील जीवन जीने के स्थान पर वैराग्य और त्याग में प्रवृत्त हो, अपने चिंतन को सर्वथा विशुद्ध रखते हुए अंतर्निहित आत्मशक्ति को जाग्रत करना पड़ता है यानि आत्मिक ज्ञान द्वारा आत्मा और परमात्मा के स्वरूप और सम्बन्ध का विचार कर परमार्थी उन्नति करनी होती है। ऐसा करने पर ही मनुष्य का चरित्र व व्यक्तित्व महान बनता है और वह सदाचारी हिम्मतवान जीवन में आने वाली हर बड़ी से बड़ी बाधा को पार कर उन्नति के चरमोत्कर्ष तक पहुँच पाता है।

इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों पूर्ण शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक बल जुटा कर एक निपुण सेनानी की तरह, आत्मविश्वास के साथ अपना जीवन लक्ष्य इसी जीवन में प्राप्त करने के लिए निर्भयता से आगे बढ़ चलो और इस मंगलकारी कार्य की निर्विघ्न सिद्धि के लिए अगर तन-मन-धन भी वारना पड़े तो ऐसा करने से भी न सकुचाओ।

इस संदर्भ में सजनों हम सुनिश्चित रूप से जन्म की बाजी जीत सकें उसके लिए हमें समभाव-समदृष्टि की युक्ति अर्थात् युवावस्था का भक्ति भाव अपनाना होगा ताकि हमें एक तो बल की प्राप्ति हो जाए और दूसरा हमारी शक्ति ताकतवर हो जाए। सजनों इसके प्रति उचित पुरुषार्थ दिखाना आवश्यक समझो और अपने कुसंगी संकल्प को संगी बना संतोष, धैर्य और सच्चाई, धर्म के सवाल हल कर समभाव पर खड़े हो जाओ। इस प्रकार युवावस्था की भक्ति की प्रबलता के प्रभाव से जब शक्ति ताकतवर हो जाएगी तो आप के लिए अपने ख़्याल को स्वच्छ रखते हुए, स्थिर बुद्धि होकर प्रसन्नचित्तता से इस जगत में विचरना सहज हो जाएगा। यह अपने आप में उच्च बुद्धि, उच्च ख़्याल होने की बात होगी और इसके द्वारा आप अपने सामूहिक बल का यथोचित प्रयोग करते हुए बिना किसी दबाव या सहारे के जो कुछ भी इस जीवन में करने आए हो वह सब सुगमता से सहर्ष सिद्ध कर पाओगे। इसी परिप्रेक्ष्य में सजनों याद रखो कि समभाव नजरों में होने पर न तो आपके मन में बल का अभिमान उपजेगा और न ही आप कोई दोषयुक्त कार्य करने की ओर प्रवृत्त होवोगे। यह अपने आप में परम बलशाली बनने की बात होगी और इस बल के प्रताप से मन में स्वयंमेव परोपकार कमाने के प्रति उत्साह जाग्रत होगा।

इस विषय में सजनों अगर आपके मन में ऐसा ही बलवान इंसान बनने की इच्छा है तो जानो कि बलधारी जी ही आपके अन्दर शक्ति का वर्धन कर सकते हैं और उनकी ऐसी कृपा प्राप्त होने पर आप ठीक उन जैसे ही बलवान बन सकते हो। इस प्रकार उन सम ही शक्ति सम्पन्न होने पर आपके मन में अशांति फैलाने वाले समस्त अंतर्द्वन्द्व समाप्त हो सकते हैं और सर्वत्र पुनः शांति स्थापित हो सकती है। यही नहीं ए विध् ही आप शक्तिशाली इंसान बन विपत्ति ग्रस्त, दुर्बल इंसानों को, दुष्टता से भरे असत्य-अधर्म के मार्ग से उबार, सत्य-धर्म के निष्काम रास्ते पर प्रशस्त कर सकते हो और अपना सब कुछ प्रभु के निमित्त निछावर करते हुए, उन स्वार्थपरों को पुनः परमार्थ बना सकते हो। सजनों जानो यह किसी का शुभ चाहते हुए उसकी समस्त विपत्तियाँ अपने

ऊपर ले, उसे विपत्ति मुक्त करने जैसी सच्ची बात होती है।

सारतः सजनों अगर यह सब सुनने-समझने के पश्चात् सुनिश्चित रूप से अपने जीवन लक्ष्य को प्राप्त करना चाहते हो तो बिना किसी तर्क समभाव-समदृष्टि की युक्ति अपना इतने बलवान बन जाओ कि अविचार युक्त अवलड़े रास्ते पर चढ़ाने वाले काम, क्रोध रूपी दुश्मन आपके बल व तेज प्रताप के समक्ष खड़े होने का साहस न जुटा पाएँ और आप सत् शास्त्रों के विचारों को धारण करने के योग्य बन जीवन के विचारयुक्त सवलड़े रास्ते पर बिन औखियाईयों आगे बढ़ते हुए इतने विचारशील बन जाओ कि आपके लिए समदर्शिता अनुसार परस्पर सजनता का व्यवहार करते हुए, एकता, एक अवस्था में बने रहना सहज हो जाए। इस सर्वोत्तम अवस्था को प्राप्त होने पर सजनों सुनिश्चित रूप से आपको अपने हृदय में अपने आप ही ब्रह्म शक्ति का अनुभव होगा और ए विध् आप अपने वास्तविक ब्रह्म स्वरूप को जान ब्रह्म नाल ब्रह्म हो स्थिर-बुद्धि हो जाओगे।

इस संदर्भ में सजनों यदि किसी कारण भी आपके मन में निर्बलता का भाव घर कर गया है और आप अविचार अपना कर अपना प्रभाव खो चुके हो तो भी घबराओ मत। नकारात्मक सोचों में डूबे रहने के स्थान पर अपने मन को प्रभु में लीन रखने का पुरुषार्थ दिखाओ और उनके वचनों पर चलते हुए पुनः ओजस्वी हो जाओ। याद रखो कि निर्बल के बल परमात्मा हैं और उन्हीं का संग प्राप्त होने पर हम पुनः बलवान हो अपनी वास्तविक सामर्थ्यता अनुसार सब कुछ करने में सक्षम हो सकते हैं। इस तथ्य के दृष्टिगत सजनों मूलमंत्र आद् अक्षर की शक्ति को पहचानो और सजन श्री शहनशाह हनुमान जी द्वारा प्रदत्त युक्ति अपनाकर, उसको धारण करने के योग्य बनो।

इस विषय में जानो कि यह शक्ति अपने आप में वह महाशक्ति है जो हर कार्य की सफलता हेतु समर्थ है। इसी ब्रह्म शक्ति को परमात्मा की, सृष्टि-पालन और प्रलय करने की सामर्थ्य कहते हैं। मानो कि जिस किसी इंसान को भी

ब्रह्म शक्ति रूपी यह धन प्राप्त हो जाता है उस परमात्म बुद्धि के लिए आवश्यक होता है कि वह उस शक्ति को केवल परोपकार के निमित्त ही लगाए। यहाँ याद रखने की बात है कि अहंकारवश इस शक्ति का लेश मात्र भी दुरुपयोग विनाश का कारण बनता है और इतिहास इस तथ्य का गवाह है।

अंत में जानो कि परमात्मा शक्तिनाथ के नाम से जाने जाते हैं। इसलिए उन संग निर्मल प्रीत लगा अंतर्निहित शक्ति का अनुभव करो और इस प्रकार अपने मन में शक्तिमान होने के भाव का विकास कर, शक्ति सम्पन्न बन जाओ। ए विध् मौत के भय से भी आजाद हो मृतलोक पर फतह पाओ।

आओ सजनों अब ऐसा ही बलवान इंसान बनने हेतु, क्रमबद्ध प्रति रविवार चल रही श्रृंखला के अंतर्गत सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ से उद्धृत भजनों के भावार्थों को समझ कर, विचार में आने का यत्न करते हैं। आज का पहला भजन है:-

भजन न० 33
दुनियां दा रोग है भारी.....

1. सांसारिक बातों का ज्ञान अपनाकर व संसार के मोह में लिप्त होकर जो हम दुनियां के झंझटों व बखेड़ों में उलझ अपना सर्वस्व नष्ट करने की ओर बढ़ रहे हैं, इसको अपने आप में अति गंभीर रोग समझो और महाबीर जी के द्वारे पर पहुँच अपनी नाड़ी दिखाओ क्योंकि वह ही इस कठिन रोग को समझ इसके निवारण हेतु उचित औषधि प्रदान कर आपका विशुद्धिकरण कर सकते हैं।

2. जानो यह विशुद्धिकरण होते ही आपके मन में उठने वाली इच्छाओं का अंत हो जाएगा और इस प्रकार आप किसी भी सांसारिक व्यक्ति या वस्तु पर आधारित रहने के स्थान पर आत्मविश्वासी बन जाओगे। सजनों ऐसा कमाल होने पर ज्यों-ज्यों वैद्यों के वैद्य महाबीर जी द्वारा प्रदत्त दुःख निवारण युक्ति का नीतिसंगत प्रयोग करोगे त्यों-त्यों जन्म-जन्मांतरों से लगे आशा-तृष्णा के रोग से सहज ही मुक्त हो आत्मतुष्ट हो जाओगे। इस प्रकार मन में संकल्प-विकल्प की

तरंगें उठनी बंद हो जाएँगी और मन के संकल्प रहित होते ही आपके लिए अपने ख़्याल को सच्चे घर में ध्यान स्थिर रखना सहज हो जाएगा। परिणामतः हृदय में सद्ज्ञान का विकास होगा और दिन चैन से व रात सुखों में व्यतीत होगी।

3. इसी संदर्भ में जानो कि जब त्रेता युग में लक्ष्मण जी को बरछी का रोग लगा व अपने भाईयों से विपरीत विचारधारा रखने वाले प्रभु भक्त सुग्रीव-विभीषण को अनेकों कष्ट सहने पड़े तो भी गदाधारी महाबीर जी ने ही उन्हें मंत्र सिखा, उनके समस्त दुःखों का निवारण कर, उन्हें पुनः समृद्धशाली बना हर्षा दिया। यही नहीं उन भक्तजनों की कुल को भी ब्रह्मचारी महाबीर जी ने उचित मार्ग पर प्रशस्त कर भवसागर से पार उतार, कुल सृष्टि को दंग कर दिया।

4. इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए सजनों हमें भी जन्म-जन्मांतरों से लगे आशा-तृष्णा के रोग का निवारण कर, अपनी प्रभु मिलन की मंगलकामना को पूर्ण करने के लिए, गदाधारी जी के वचनों पर स्थिरता से बने रहना सुनिश्चित करना होगा। जानो ऐसा पराक्रम दिखाने पर ही सुरत शब्द का सहज मिलन हो सकेगा और हम अपने यथार्थ स्वरूप से परिचित हो, निर्विरोध सत्य-धर्म के निष्काम रास्ते पर प्रशस्त रहते हुए सत्-वादी बन सकेंगे।

5. सजनों अगर हिम्मत दिखा ऐसा कर दिखाया तो जानो आपका जीवन खुशियों से इस तरह भर जाएगा जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। इसलिए अपने आप को समझाओ और इस बात को याद रखते हुए कि 'महाबीर जी के बगैर इस सकल सृष्टि में आपके जीवन के दुःखों का निवारण करने में कोई भी सक्षम नहीं है', अविलम्ब बिना किसी तर्क उनकी चरण-शरण में बने रहने का साहस दिखाओ और उस परमपिता से जो चाहो वह सब पा आत्मतुष्ट हो जाओ।

भजन न॰ 34

बजरंग बली हुण आये ने.....

1. महाबीर बजरंग बली पर अटूट श्रद्धा व विश्वास रखते हुए ओले-भोले भाव से उनके रंग में रंगने हेतु अपना सब कुछ कुर्बान करने से मत सकुचाओ और इस प्रकार मस्तिष्क से जड़वादी चेतना के सिद्धान्त को प्राप्त करने के स्थान पर आत्मचेतना से सराबोर हो जाओ। इस तरह सजनों ऐसा पुरुषार्थ दिखा जड़ता से हट प्रभुता को प्राप्त हो जाओ।

2. जानो ऐसा सुनिश्चित करने पर स्वतः ही संसार की सुधबुध खो, सदा चिंतारहित व प्रसन्नचित्त बने रहने वाले व्यक्ति बन जाओगे। इस तरह प्रभु भक्ति में मस्त रहने पर, सब सांसारिक प्रपंचों से छूट, इस तरह जाग्रति में आ जाओगे कि आपके लिए विरक्त भाव से इस संसार में विचरना सहज हो जाएगा। ऐसा होने पर फिर अपने जीवन में जो भी करोगे फल की इच्छा से मुक्त रहकर ही करोगे। परिणामस्वरूप मोक्ष प्राप्ति के अधिकारी बन जाओगे।

3. इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए होश में आओ और अपने साथ-साथ अपने संगी साथियों को भी झूठ-चतुराईयों के दुःख भरे रास्ते पर चलने के स्थान पर, सत्य-धर्म के निष्काम रास्ते पर प्रशस्त करने का अनथक उद्यम दिखाते हुए, उनके जीवन का भी उद्धार कर परोपकार कमाओ।

4. सजनों जानो इस प्रकार जब महाबीर जी के रंग में परिपूर्णता रंग गए तो वैराग्य अवस्था को प्राप्त हो जाओगे। तब मन में सांसारिक विषयों की इच्छा नहीं रहेगी और आप महाबीर जी के गुण अपनाकर उन सम ही तेजस्वी व प्रतापी बन जाओगे।

5. ऐसा ही हो उसके लिए सजनों महाबीर जी के इस निराले खेल को समझो और उनके सद्-वचनों को धारण कर धर्मसंगत उन्हीं पर स्थिरता से बने रहने हेतु अपना सब कुछ निछावर करने से न सकुचाओ। जानो ऐसा सुनिश्चित करने पर ही आप मोह-माया की गहरी नींद में सोए हुए अचेतन इंसान पुनः जाग्रति में आ जाओगे और काम, क्रोध से छुटकारा पा, अपने जीवन का कारज सिद्ध कर हर्षा उठोगे।

भजन न० 35
मैं नही बली इक तूं....

1. सजनों सबसे बलवान महाबीर जी के प्रति समर्पित भाव रखते हुए, अपनी मानसिक शक्ति का यानि उन द्वारा प्रदत्त सद्-विचारों का, युक्तिसंगत स्थिरता से प्रयोग करना, अपने स्वभाव के अंतर्गत करो। जानो यह अपने आप में उनके रंग में रंग शांति-शक्ति को अपने हृदय में स्थापित कर, इस जगत में निर्भय होकर, निर्लिप्तता से निष्पाप विचरने की बात है। जानो ऐसा सक्षम व बुद्धिमान इंसान बनने पर ही जिन पाँच विषयों ने आपकी वृत्तियों को विकृत कर परेशान कर रखा है उनसे छुटकारा पा पुनः जाग्रति में आ जाओगे।

2. ऐसा मंगलकारी परिणाम प्राप्त होने पर जो मोह-माया के चक्कर में फँस व आत्मविस्मृत हो सांसारिक बन्धनों में धँस चुके हो, उन से छुटकारा प्राप्त हो जाएगा और आप सहसा ही कुमार्ग छोड़ सुमार्ग पर आ जाओगे। इस तरह जीवन-यात्रा के दौरान सुमार्ग के रास्ते पर चलते हुए, इस जगत में जो भी करोगे वह अपने व जगत के कल्याण के निमित्त ही करोगे। ए विध् श्रेष्ठ मानव कहला भवसागर से पार उतर जाओगे।

3. इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए सजनों मन से अविलम्ब 'मैं' भाव को त्याग दो और 'मैं नहीं बली इक तूं' के भाव को अपना लो। ऐसा सुनिश्चित कर पर्वतों, पहाड़ों, सूरज, चाँद, दरख्तों, फुलवाड़ी, जल-थल आदि जिधर-किधर भी देखो, उधर-उधर ही बली जी की शक्ति का अनुभव करो। यहाँ तक कि अपने मन-मन्दिर में भी उस प्रकाशित शक्ति के प्रभाव से, आत्मसाक्षात्कार कर आनन्द अवस्था को प्राप्त हो जाओ।

4. उपरोक्त तथ्य से सजनों स्पष्ट होता है कि इस कलुकाल के समय में जो बली जी ने अद्भुत रचना रचा कर, जन्म-जन्मांतरों से परमेश्वर से बिछड़ी हुई सुरतों का पुनः उन संग सहज भाव से मिलन कराया है, उसे देखकर सारी दुनियां हर्षित हो उठी है।

5. अतः सजनों हम भी बली जी की कृपा का लाभ उठा, अपना जीवन संवार सकें, उस के लिए हमें सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ पढ़ व सुनकर, उसमें विदित सत्यज्ञान को यथा वर्त-वर्ताव में ला पाने के योग्य बनना होगा ताकि हम भी परमेश्वर से मेल खा, इस कदर हर्षा उठें कि हमारे मन में अन्य परमार्थ से भटके हुए इंसानों को, सद्-मार्ग पर लाने हेतु उमंग व उत्साह पैदा हो जाए और ए विध् परोपकार कमाते हुए हम परोपकारी नाम कहाएं।

भजन न० 36
दिखा देसन महाबीर दिखा देसन .....

1. सजनों हम सभी इस सत्य से परिचित हैं कि महाबीर जी की उपमा अति भारी है व उसका अंत कोई नहीं पा सकता। अतः सर्वहित को ध्यान में रखते हुए हमें उनके आज्ञाकारी सपुत्र बन, उनके वचनों के युक्तिसंगत वर्त-वर्ताव द्वारा, सृष्टि में जो इंसान बहिर्मुखी हो पाप-पुण्य कर रहे हैं, उनके मनों को परिवर्तित कर, इस तरह अंतर्मुखी बनाना होगा जिससे वह मनमत से उबर, समझदारी से महाबीर जी द्वारा बताए हुए, सत्य-धर्म के निष्काम रास्ते पर प्रशस्त हो बुरे से अच्छे इंसान बन जाएं।

2. जानो ऐसा सुनिश्चित करना इसलिए आवश्यक है ताकि कलुकाल के विनाशक प्रभाव से सुरक्षित रहने हेतु वे महाबीर जी से उपदेश लें व उन द्वारा प्रदत्त नाम युक्ति के वर्त-वर्ताव द्वारा, समय रहते ही अपनी वास्तविक शक्ति को पहचान लें। इस प्रकार वे स्वप्न अवस्था से उबर जाग्रति में आ परमेश्वर की समीपता प्राप्त कर लें और वैसे ही गुण अपना अपना घर सतयुग बनाने में सक्षम हो जाएं।

3. सजनों तीनों तापों को मिटाने के लिए ऐसा सुनिश्चित करना आवश्यक मानो और इस प्रकार अपने सारे दुःखड़े हर प्रसन्नता में आ जाओ और सारी उम्र खुशी से गुज़ारो।

4. इस संदर्भ में सजनों कलुकाल के आखिरी वक्त को दृष्टिगत रखते हुए हमारे लिए बनता है कि हम महाबीर जी के द्वारे पर सुदृढ़ता से बने रह, वक्त रहते ही संभल जाएं और असत्य अधर्म का रास्ता छोड़, सत्य धर्म का रास्ता अपना उन्हें प्रसन्न कर, उन दीनदयाल की कृपा प्राप्ति के योग्य पात्र बन, अपने जीवन का उद्धार कर लें।

5. यह सब जानने के पश्चात् सजनों हमारे लिए बनता है कि जो भी हमारे भाई-बन्धु व संगी-साथी सांसारिकता का भाव अपनाकर, अपना सर्वस्व नष्ट करने की ओर बढ़ रहे हैं, उनकी रक्षा हेतु पुकार-पुकार कर उन्हें भी परमार्थ के रास्ते पर प्रवृत्त होने के लिए कहें ताकि वे सब बिगड़े हुए सजन भी महाबीर जी की चरण-शरण में आ अपने जीवन का अर्थ भली-भांति जान, इसी जीवन में उसे सिद्ध करने में कामयाब हो जाएं। सजनों ऐसा सुनिश्चित करो व यश कीर्ति कमाओ।

अंत में सजनों बताए तथ्यों के आधार पर आत्मनिरीक्षण करो और निर्बलता छोड़, बलवाल बनने का दृढ़ निश्चय लो।

आज का विचार

सजन हम हैं सजन तुम हो।
सजन दृष्टि मान लवो।
सजन मानो सजन जानो।
सजन बुद्धि पहिचान लवो।।

दिनाँक 7 जुलाई 2019 का सबक़

आओ निर्धनता से उबर धनवान बनें

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,

उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

इस तथ्य को समझना अति अनिवार्य है। जानो इस कथन द्वारा प्रणव मंत्र यानि मूलमन्त्र आद् अक्षर, गुरु रूप में आत्मा की अमरता का भान करा रहा है और साथ ही यह ज्ञान दे रहा है कि इस अमर आत्मा में परमात्मा है। अतः इस वाक्यांश **'ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा'**, के एक-एक शब्द को विचार कर धारण करो ताकि इसे प्रयोग में लाने के प्रति आपके अन्दर उचित उत्साह जाग्रत हो।

सजनों हम सब जानते हैं कि सजन श्री महाबीर जी सबसे धनवान हैं क्योंकि उनके पास सम्पूर्ण आत्मिक ज्ञान है। यही नहीं उनके पास उस ज्ञान-धन के साथ-साथ उसको प्रयोग करने की सद्बुद्धि भी है और बल भी है इसलिये वे बुद्धिमान, बलवान व धनवान भी हैं। उन शहनशाह के द्वारे पर होते हुए सजनों अगर हम आत्मिक ज्ञान के अभाव के कारण पनपी निर्धनता के भाव के प्रभाववश, अपने संकल्प को अस्वच्छ रखते हुए, रोने-झुखने के स्वभाव में उलझे रहें, यह अपने आप में कुछ अजीब सी बात लगती है। अतः इस विकट

परिस्थिति से उबर जीवन का वास्तविक धन प्राप्त करने के योग्य बनने के लिए सजनों हमें अपने उन गुण-दोषों की परख करनी होगी, जो आज तक हम अपने स्वभाव के अंतर्गत कर चुके हैं और जो हमारी चित्तवृत्तियों को रूप दे, हमसे निकृष्ट कर्म कराते हैं। निःसंदेह सजनों इस क्रिया को सत्यता पूर्ण व विधिवत् करने पर ही समझ पाओगे कि आप अपने वास्तविक अमोलक गुण धन पर स्थिरता से बने हुए हो या फिर जड़ता अपना, निज धर्म हार, निर्धनता को प्राप्त हो अपना चारित्रिक स्वरूप बिगाड़ चुके हो।

इस प्रकार सजनों यदि परख उपरांत लगे कि हमारे साथ ऐसा ही हो रहा है तो भी घबराओ मत अपितु इस सत्य को मानो कि आप स्वयं अपनी प्रेरणा से, अपने मन में मानवता अनुरूप स्वाभाविक परिवर्तन लाने के प्रति दृढ़ संकल्प ले, पुनः धर्मज्ञ महापुरुष बन सकते हो। जानो यह जाग्रति में आ, काल्पनिक जगत की ओर से अपना मानसिक झुकाव हटा, यथार्थ दृष्टा बनने की बात होगी। कहने का तात्पर्य यह है कि अगर अब भी चाहो तो आप मिथ्यता से उबर व सत्य को धारण कर अपने मूल स्वाभाविक गुण रूपी धन को ग्रहण कर सकते हो और उस ज्ञान-धन के बल पर सत्कर्म करते हुए, जितना चाहो उतना ही जगत का कल्याण करते हुए, परोपकारी सजन पुरुष कहला सकते हो।

इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए सजनों हमारे लिए बनता है कि हम अपने आंतरिक भावों की शुद्धि सुनिश्चित करने के लिए, सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ का पूरी लगन से गहन अध्ययन कर, उसमें विदित आत्मविद्या ग्रहण करें और ए विध् आत्मा, परमात्मा और प्रकृति का ज्ञान प्राप्त कर उसकी रमज जानने वाले ज्ञानी बन जायें। इस प्रकार हम परमात्मा का स्वरूप जानने वाले ब्रह्मज्ञानी बन, अपनी वृत्ति-स्मृति-बुद्धि व भाव-स्वभाव रूपी ताना-बाना निर्मल रखने में समर्थ हो जाएं। जानो सजनों यह अपने आप में, पूरी तरह स्वयं को आत्मेश्वर के प्रति समर्पित कर व पूर्ण चेतन अवस्था में बने रह, आत्मविश्वास के साथ खुद पर आत्मनियन्त्रण रखते हुए, अपना सुधार करने की मंगलमय बात होगी। इसी प्रयास के द्वारा हम निर्धनता के भाव से विमुक्त हो, अनमोल संतोष धन प्राप्त कर, अमीरों के भी अमीर हो जाएंगे और शान्ति प्रिय कहलाएंगे। याद रखो जहाँ

शान्ति है वहाँ विवेकशक्ति हमेशा ताकतवर व सक्रिय रहती है। परिणामतः ऐसे इन्सान की बुद्धि उसे कभी धोखा नहीं देती अपितु सदैव यथार्थ को ही धारण करती है। इस संदर्भ में सजनों यह भी जानो कि इस परमार्थी धन का जितना भी कोई शांति प्रिय इंसान, परम अर्थ सिद्ध करने के निमित्त अकर्त्ता भाव से इस्तेमाल करता है, यह धन उतना ही बढ़ता जाता है। इसलिए तो ऐसा धनवान, सकारात्मक व विशाल हृदय कहलाता है और उस पुण्यवान की ही इस जगत में प्रशंसा होती है।

उपरोक्त तथ्य से सजनों स्पष्ट होता है कि जीवन का वास्तविक धन प्राप्त करने के लिए हर मानव को विवेकशीलता से अपने मन में सत्य का भाव जाग्रत करने की नितांत आवश्यकता होती है। निश्चित रूप से जो भी सजन पुरुष पूरी लगन व मेहनत से ऐसा अदम्य पुरुषार्थ दिखाता है, वह ही, अपने यथार्थ गुण धर्म से सदा परिचित रह, जीवनयापन के दौरान उन पर सुदृढ़ता से बने रहने वाला सतपुत्र यानि सुपुत्र कहलाता है। यही नहीं वह फिर इस जगत के उद्धार हेतु जो कुछ भी करता है वह पूरी ईमानदारी व निःस्वार्थ भाव से करता है। इस बात को समझते हुए ही सजनों कहा गया है कि 'सत्य-धर्म की भक्ति ही परमात्मा को मंजूर होती है' और सजन श्री शहनशाह महाबीर जी की तरह 'जो भी सच्चा भक्त परमात्मा को पा लेता है, वही सबसे धनवान कहलाता है'। इसलिए तो सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में भी कहा गया हैः-

भक्ति सच धर्म दी कर, फिर इन्सान नूं मौत दा न रिहा डर।
शक्ति दा हथियार हाथों में फड़, बेखौफा-बेखतरा जगत में विचर।।

जानो ऐसे श्रेष्ठ व बलवान मानव को फिर काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार रूपी विषय विकार नहीं सताते। इसलिए तो उस निर्विकारी इंसान के लिए समभाव पर स्थिर रह, समदर्शिता अनुरूप परस्पर सजन भाव का व्यवहार करना सहज हो जाता है और ए विध् वह एक निगाह एक दृष्टि, एक दृष्टि एक दर्शन में स्थित रहने वाला सब का और सब उसके प्रिय बन जाते हैं और सजन पुरुष कहलाता है।

यह सर्वहितकर बात जानने-समझने के पश्चात् सजनों हमारे लिए बनता है कि हम अपने मन में इस असली परमार्थी धन को प्राप्त करने के प्रति उमंग व उत्साह पैदा करें और अपना यह शुभ लक्ष्य सिद्ध कर न केवल आत्मनिर्भरता से इस जगत में विचरें वरन् भौतिक धन इकट्ठा करने की होड़ में, परमार्थ से विमुख हुए, इंसानों को भी, वैसा ही सत्यधनी बनाने के प्रति, शास्त्रविहित् युक्ति अनुसार, समझदारी से खड़ा करने का परोपकार कमाएं।

ऐसा करना सजनों इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि आज का सामान्य इन्सान रूपया-पैसा, जमीन-जायदाद, सोना-चाँदी, मकान, पशु आदि सम्पत्ति को वास्तविक धन समझता है। तभी तो उसकी नजरों में कोई भी ऐसी मूल्यवान वस्तु जिसे खरीदा या बेचा जा सकता है, धन स्वरूप होती है। यह मिथ्या धन उसे इतना अधिक प्रिय लगता है कि वह इसको अर्जित करने के लिए चोरी-चकारी, झूठ व छल-कपट युक्त मिथ्याचरण करने से भी नहीं सकुचाता। इसलिए तो इस प्रक्रिया में इस धन के उपासक का मन व्यग्र व मलीन हो जाता है। परिणामतः वह आजीवन नकारात्मक सोचते, बोलते व करते हुए, अपना व समाज का अहित तो करता ही है साथ ही निंदा का पात्र भी कहलाता है।

इस परिणाम को मध्य नजर रखते हुए सजनों यह जानना व सबको जनाना आवश्यक है कि जहाँ सांसारिक धन का मालिक कुबेर देवता है, वहीं असली परमार्थी धन के स्वामी कुल सृष्टि के पालनहारे शंख, चक्र, गदा, पदम्-धारी श्री विष्णु भगवान हैं। इसलिए मिथ्या धन का धनी संकीर्ण हृदय व कंजूस होता है और असली धन का स्वामी उदार व विशाल हृदय होता है। तभी तो मिथ्या धन का लोभी, धन लिप्सा के कारण पिशाच वृत्ति बन जाता है व सच्चे धन से सम्पन्न संतोषी सत्यवृत्ति नाम कहलाता है। यही नहीं वह धनवान तो असहायों की सहायता करने के प्रति अपना सर्वस्व निछावर करने से भी नहीं सकुचाता और इस प्रकार यश-कीर्ति को प्राप्त हो गगन मण्डल में स्थिर हो जाता है।

आप भी सजनों ऐसे ही नेक दिल परोपकार कमाने वाले धनवान इंसान बन सको इस हेतु अपने साथ-साथ अन्य इंसानों को भी इस तथ्य से अवगत

कराओ कि 'मिथ्या धन एकत्रित करने की प्रतिस्पर्धा में रत होने पर काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार रूपी विकारी भाव घर कर जाते हैं और समझदार से समझदार इंसान भी सदाचार के रास्ते से भटक दुराचार, भ्रष्टाचार व व्यभिचार के रास्ते पर चढ़, मानव से दानव बन जाता है। इस तरह सजनों अपने गुण, धर्म का सत्यता से प्रयोग करते हुए अपने परिवार व समाज को विनाश के रास्ते पर और आगे बढ़ने से रोक लो और चहुं ओर शांति की स्थापना करने में सहायक बनो। जानो यही सबसे बड़ा परोपकार है।

सजनों ऐसा ही शांतिदूत बनाने हेतु प्रति रविवार जो भजनों के भावाश्यों के माध्यम से हमें सुमति में ला सत्य धनी बनाने का प्रयास चल रहा है आओ अब उसे आगे बढ़ाते हैं और जानते हैं कि आज का पहला भजन हमें क्या संदेश दे रहा है:-

भजन न0 37
महाबीर सबदे प्यारे ने

1. हम सब जानते हैं कि त्रिलोकी के सहारे महाबीर जी सबके प्यारे हैं। अगर हम उनकी मेहर के पात्र बन उनकी आज्ञाओं पर स्थिरता से बने रहना अपने स्वभाव के अंतर्गत कर लेते हैं तो हम परिपूर्णतया उनके रंग में रंग बधाई प्राप्ति के योग्य बन सकते हैं।

2. जानो जो भी मानव इस प्रकार उनके मनमोहक सुन्दर रंग में रंग जाता है उसकी सोहबत में रहने वालों का मन हर्षा उठता है। इसलिए हमारे लिए बनता है कि हम भी अपना स्वाभाविक रूप इसी इलाही रंग में रंग लें ताकि हमारे सम्पर्क में रहने वाले सभी आत्मविस्मृत अचेतन संगी-साथियों के मन में भी उस इलाही रंग में रंग जाने की अभिलाषा उत्पन्न हो और वे भी अपने जीवन का लक्ष्य सुगमता से प्राप्त करने के योग्य बन जाएं।

3. जानो ऐसा सुनिश्चित करने पर दुराचार, भ्रष्टाचार व व्यभिचार के मार्ग पर प्रवृत्त अन्य इंसान भी अपनी कमजोरी से उबर पुनः सदाचार का रास्ता

अपनाने के प्रति लालायित हो उठेंगे। परिणामतः मानवता अनुरूप जीवन जीते हुए मानवता की शान बढ़ाएंगे।

4. मानो कि एक बार जब पथभ्रष्ट इंसान सत्य-धर्म का निष्काम रास्ता अपना लेता है तो सजन श्री शहनशाह महाबीर जी स्वतः ही उसको आत्मसाक्षात्कार करा अपने यथार्थ ज्योति स्वरूप से परिचित करा देते हैं और उसका जीवन बना देते हैं।

5. जब हमने जान ही लिया कि महाबीर जी के द्वारे पर होने के नाते सहजता से आत्मबोध करना संभव है तो हमारे लिए बनता है कि हम अविलम्ब अपना सर्वस्व उन सर्वमहान को अर्पण कर दें और उनके संरक्षण में स्थिरता से बने रह आत्मस्वरूप को पा सबकी बधाई के पात्र बन जाएं।

भजन न॰ 38
खबरदार खबरदार खबरदार रहो

1. जब हम इस सत्य से परिचित हो ही गए हैं कि महाबीर जी इस दुनियां में आ गए हैं और मोह-माया की गहरी नींद में सोए हुए व पाप कर्मों में प्रवृत्त इंसानों को पुनः धर्म के मार्ग पर प्रशस्त करने के लिए उपदेश दे रहे हैं तो हमारे लिए बनता है कि हम आत्मपद प्राप्त करने के प्रति खबरदार हो जाएं और उन द्वारा बताए धर्मयुक्त रास्ते पर सुदृढ़ता से बने रह उनके संग हो लें और ए विध् अपना सोया भाग्य जगा लें।

2. जानो ऐसा सुनिश्चित करने के लिए समस्त शास्त्र आवाहन् दे रहे हैं कि अगर परमात्मा की समीपता प्राप्त करना चाहते हो तो बिना किसी तर्क के महाबीर जी द्वारा बताए हुए सद्मार्ग पर आगे बढ़ते हुए अपने मूल लक्ष्य को प्राप्त कर लो।

3. अपना यह उद्देश्य सिद्ध करने के लिए सजनों उनके उपदेशों पर युक्तिसंगत बने रहने का पुरुषार्थ दिखाओ और इस प्रकार शांत अवस्था को प्राप्त कर,

दिन प्रभु की चाहना में आनन्द से व्यतीत कर, रात्रि में सुख की नींद पाओ। जानो यह अपने आप में मन को उपशम कर सभी चिंताओं से मुक्त होने की बात है।

4. माना सजनों कि कलियुग के प्रभाव के कारण आपके मन में ऐसा कर पाने के प्रति घबराहट यानि व्याकुलता पनपी हुई है परन्तु इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए कि 'पहले महाबीर जी के प्रति निष्ठा रखने वाले उनके सेवक बाल अवस्था के कमजोर भक्ति भाव का खेल खेलते हुए सामान्य जनता को शांति प्रदान करने में असफल रहे', भक्त शिरोमणि श्री महाबीर जी स्वयंमेव सबको उपदेश देकर, उनके दिलों से कलियुग का प्रभाव मिटा कर, सतयुग में प्रवेश पाने की उनकी आस पुजा रहे हैं।

5. अतः सजनों इस बात को समझते हुए कि हम सत्य-धर्म के मार्ग से भूले-भटके हुए इंसानों की आरत वाणी सुन महाबीर जी पुनः हमें स्वयंमेव धर्मज्ञ बनाने के लिए तरह-तरह की युक्तियाँ प्रदान कर रहे हैं, हमें इसी जीवन में अपना जीवन लक्ष्य प्राप्त करने हेतु यथासमय ही उनकी शास्त्रविहित् वचनों की पालना तत्क्षण करनी आरम्भ कर देनी चाहिए। सजनों इसी में अपनी व सबकी भलाई मानो।

भजन न० 39
तृष्णा दी सबको आग लगी है

1. सजनों यदि तृष्णा का रोग यानि कोई प्रबल वासना या भोग की इच्छा लोभ का रूप ले आपको सता रही है तो दिन-रात महाबीर जी द्वारा प्रदत्त नाम का सिमरन करो ताकि उस द्वारा होने वाली निर्मल वृष्टि से वह तृष्णा की आग शांत हो जाए। जानो ऐसा सुनिश्चित करने पर ही मन से तृष्णा का नाश होगा और परम संतोष की प्राप्ति होगी।

2. स्पष्ट है सजनों जब नाम रूपी औषधि का विधिवत् सेवन करने पर, अंतर्मन से समस्त कष्ट-क्लेश मिट जाएंगे तो फिर दिन आराम से व रात्रि चैन की नींद

में व्यतीत होगी। इस विश्राम अवस्था में निर्विघ्नता से बने रहने के लिए सजनों अपने पर हर समय खबरदार रहो ताकि कहीं फिर से खाते-पीते, उठते-बैठते समय हमें तृष्णा न सताए और घर में झगड़ा डालने का कारण न बने। इस प्रयोजन में सफल होने हेतु सजनों निरंतर घड़ी की टक-टक की तरह नाम जाप में स्थिर बने रहना सुनिश्चित करो।

3. इस परिप्रेक्ष्य में मत भूलो कि यह तृष्णा आजीवन इंसान का पीछा नहीं छोड़ती। इसलिए तो जब इंसान की वृद्धावस्था आती है और हाड-माँस सारा सूख जाता है तो भी बहुत समय से मन में रहने वाली यह तृष्णा यानि अतृप्त कामना व वाशना मन को सताती रहती है। जानो ऐसा पूर्व जन्मों में अविद्या के प्रभाव से उत्पन्न संस्कारों के कारण होता है। इन्हीं के दुष्प्रभाववश हमारे मन में ऐसे मिथ्या विचार उठते रहते हैं जो हमारी परेशानी का कारण बनते हैं।

4. उपरोक्त के दृष्टिगत सजनों अगर दिल से भवसागर पार उतरना चाहते हैं तो युक्तिसंगत महाबीर जी द्वारा औषधि रूप में प्रदत्त, नाम की खुराकों का, नियमित रूप से, तीन वक्त सेवन करने का पुरुषार्थ दिखाओ। ऐसा इसलिए भी करना आवश्यक है क्योंकि इसके अतिरिक्त आशा-तृष्णा को मन से उखाड़ फैंकने का अन्य कोई दूसरा रास्ता या उपाय है ही नहीं।

5. इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए सजनों अपने मन में महाबीर जी के प्रति अति निर्मल प्रेम भाव रखते हुए उनकी चरण-शरण में बने रहो ताकि किसी कारण भी आप नाम जाप में कमजोर पड़ कर तृष्णा रूपी काली सर्पणी के शिकार न हो जाओ। अंततः जानो कि यही परमपद पाने का सबसे सुगम मार्ग है।

भजन न॰ 40
महाबीर जी ने अचरज खेल रचाया

1. सजनों सतवस्तु का कुदरती शास्त्र प्रदान कर महाबीर जी ने ऐसा अचरज खेल रचाया है कि जिसका अंत शेष-गणेश भी नहीं पा सकते। इसलिए तो

सच्चेपातशाह जी कहते हैं कि भजनों में विदित विचार भी वह आप ही बताते हैं और कलुकाल की भयावह आग से सबको बचाने हेतु वह उन्हें आप ही लिखते-पढ़ते हैं व आप ही उनका अर्थ कर सुनाते हैं ताकि इन सद्-विचारों की धारणा के प्रभाव से कलुकालवासियों के मन से मिथ्यता का भाव छँट जाए और वे पुनः अपने यथार्थ नित्य स्वरूप को जान जाएं।

2. इस तथ्य को जानने के पश्चात् सजनों हमारे लिए बनता है कि हम सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित हर विचार व उस पर स्थिरता से बने रहने की युक्ति ग्रहण कर विचारयुक्त चलन अपना लें। सजनों जानो ऐसा पुरुषार्थ दिखाने पर हमें सभी विषय-विकारों से मुक्ति प्राप्त हो जाएगी और हमारे लिए एक निर्विकारी इंसान की तरह इस जगत में विचरना सहज हो जाएगा।

3. जानो इस अवस्था को प्राप्त होने पर हमारे मन से 'मैं' का भाव समाप्त हो जाएगा और परस्पर वर्त-वर्ताव के समय हमारे लिए समभाव-समदृष्टि की युक्ति अपनाकर, सजन भाव पर स्थिर बने रहना सुगम हो जाएगा। आशय यह है कि हम 'जो प्रकाश है मन मन्दिर-सोई प्रकाश है जग अन्दर' इस विचार पर स्थित रह, हर वस्तु व व्यक्ति में आत्मदर्शन करते हुए, जीवन में जो कुछ भी करेंगे वह सर्वहित के निमित्त अकर्त्ता भाव से ही करेंगे।

4. इस प्रकार समदृष्टि होने पर हम अनेक नामों में उलझने के स्थान पर, एक दर्शन में इस प्रकार स्थित हो जाएंगे कि फिर देवी-देवते, सूरज-चाँद आदि जिधर-किधर भी देखेंगे, उसी दर्शन का अनुभव होगा। जानो जब इस प्रकार मन में सजन भाव का उद्भव हो जाएगा तो तेरी-मेरी, मान-अपमान, बड़ा-छोटा, ईर्ष्या-द्वेष, अमीरी-गरीबी आदि का भेदभाव समाप्त हो जाएगा और हमारे लिए बेख़ौफा-बेख़तरा अपने जीवन लक्ष्य को प्राप्त करना आसान हो जाएगा।

5. यह सब जानने के पश्चात् सजनों हमारे लिए बनता है कि हम भ्रमरहित होकर इन शास्त्रविदित विचारों को आत्मसात् करना आरम्भ कर दें और सर्व एकात्मा के भाव पर स्थिर रह, हर श्वास प्रभु का यशोगान करने में ही व्यतीत

करना सुनिश्चित करें ताकि हमारा हृदय सचखंड हो जाए और हम महाबीर जी के इस अचरज खेल को समझने में सक्षम हो जाएं।

अंत में सजनों उपरोक्त तथ्यों के आधार पर आत्मनिरीक्षण करो और स्वाभाविक निर्धनता से उबर आत्मिक रूप से धनवान बनने का पुरुषार्थ दिखाओ।

आज का विचार

सजन भाव अपनाने हेतु आवश्यकः-

जिह्वा गाली गलूचे न कढ ओय। सब नूं सजन भाव तूं सड ओय।।
जिह्वा सजन सजन सड ओय। निंदया चुगली करनो बच ओय।।

दिनाँक 14 जुलाई 2019 का सबक़

आओ बुद्धिहीनता त्याग, बुद्धिमान बनने का संकल्प लें

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

आशय यह है कि ईश्वरीय गुणों की धारणा तक ही सीमित रहो।
यदि मात्र इतना ही कहना मान लो तो गुणवान बन जाओगे।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस को अपनाने से अज्ञानियों की चंगुल में फँसने से स्वतः ही बच जाओगे।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

ऐसा करने पर ही सत्-वादी बन इस जगत में विचर पाओगे और सत्य को अपने मन-वचन-कर्म द्वारा प्रकाशित कर प्रकाशमय हो जाओगे।

सजनों अब तक हम जान चुके हैं सर्वोच्च व्यक्तित्व के मुख्य आधार, श्रेष्ठ, विद्वान, गुणवान, बलवान व धनवान बनने के विषय में। आओ इसी श्रृंखला में आज जानें कि वास्तविक रूप से बुद्धिमान कौन होता है और हम किस प्रकार बुद्धिजीवी इंसान बन सकते हैं?

इस संदर्भ में सजनों जैसा कि सब जानते ही हैं कि परमतत्त्व का ज्ञान रखने वाला आत्मज्ञ ही सबसे बुद्धिमान कहलाता है क्योंकि केवल वह ही ब्रह्मज्ञान के प्रकाश से ब्रह्म को जानने वाला होता है। इस तथ्य के दृष्टिगत ही सजनों सभी

शास्त्र हर मानव को ब्रह्मज्ञानी बनने के लिए प्रेरित करते हैं ताकि मानव ब्रह्म होने की अवस्था या भाव में स्थिरता से बने रह, इस ब्रह्ममय मायावी जगत की सार जान, बुद्धिमत्तापूर्वक अकर्त्ता भाव से शास्त्रविहित् कर्म करते हुए, सदा निर्लिप्तता से अपने वास्तविक स्वरूप में स्थिर बना रह सके। इस आधार पर सजनों याद रखो कि इस सृष्टि में जो भी स्वावलंबी व तेजस्वी इंसान इस प्रकार आत्मा और ब्रह्म का सादृश्य कर, आत्मभाव अनुसार विचरने का पराक्रम दिखाता है केवल वह ही सबसे बुद्धिमान कहलाता है।

इस महत्त्वपूर्ण बात को ध्यान में रखते हुए ही सजनों बारम्बार आप सबको सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ का नियमित रूप से अध्ययन करते हुए व उसमें विदित शब्द ब्रह्म विचारों के अर्थ और तत्त्व को समझदारी से धारण कर, इस सत्य से कि 'यह सम्पूर्ण विश्व ब्रह्ममय है अथवा ब्रह्म निर्मित है और उसी की शक्ति से चल रहा है', परिचित कराने का यत्न कई तरीकों से किया जा रहा है। याद रखो केवल मानसिक रूप से ऐसा करने के प्रति तैयार हो, उचित पुरुषार्थ दिखाने पर ही आप ब्रह्म विद्या के बल पर ऐसे शक्तिशाली इंसान बन सकते हो जो ब्रह्म के ध्यान में लीन रहते हुए व समबुद्धि होकर इस ब्रह्मांड में विचरते हुए, अंत बिना किसी कठिनाई मोक्ष को प्राप्त कर, अपना जन्म सफल बना सकता है।

अन्य शब्दों में कहने का आशय यह है कि जिस किसी भी बुद्धिजीवी को, परमात्मा में अनुराग रखते हुए यानि अपने सभी कर्मों का फल अर्पित करते हुए, शास्त्रविहित् कर्म करने का, औचित्य समझ आ जाता है, केवल वह अक्लमंद इंसान ही, अपने हृदय में ब्रह्म की अनुभूति से प्राप्त आनन्द को, लौकिक वस्तुओं के उपभोग आदि से प्राप्त आनन्द की अपेक्षा, बहुत अधिक और परम उत्कृष्ट कोटि का मानते हुए, आत्मसंतोष को प्राप्त होता है। सजनों जानो कि इस मंगलमय अवस्था को प्राप्त होने पर उस श्रेष्ठ बुद्धि इंसान के मन में कोई इच्छा नहीं उठती और उसे अपनी अजरता व अमरता का भान हो जाता है और वह युग पुरुषों की भांति अपनी बुद्धिमत्ता के बल पर इस जगत में चिरस्थाई सम्मान प्राप्ति का अधिकारी बनता है।

उपरोक्त महत्ता को दृष्टिगत रखते हुए सजनों फिर से कहा जा रहा है कि अपने ख़्याल को मिथ्या जगत की तरफ से मोड़, अटल सत्य ब्रह्म शब्द आद् अक्षर में ध्यान स्थिर कर, ब्रह्म विद्या प्राप्त करने में कदापि कमजोर मत पड़ो और इस प्रकार अपने बुद्धिबल को पहचान लो ताकि आपकी बुद्धि इस काल्पनिक जगत में विचरते समय उसके प्रति मोहित हो भ्रष्ट व भ्रमित न हो जाए और आप एक सशक्त इंसान बन जाओ। जानो ऐसा सुनिश्चित करने पर ही अंतःकरण स्वच्छ व स्वस्थ तथा मन शांत हो पाएगा और आप एक स्थिर बुद्धि इंसान बन अपनी जानने, समझने, विचार व निश्चय करने की शक्ति का विवेकशीलता से प्रयोग करते हुए, केवल सत्य को ही धारण करने में सक्षम हो जाओगे और मानव-धर्म अनुसार अपना जीवन निष्पाप व्यतीत करोगे। यही नहीं तभी आप सत्त्वगुणी बन, धीरता से सत्य-धर्म के पथ पर निष्कामता से चलते हुए, आत्मविश्वास के साथ अपने कर्त्तव्यों का ठीक से पालन कर पाओगे व श्रेष्ठ आचरण करने वाले सद्बुद्धि इंसान बन जाओगे।

यहाँ यह भी याद रखो कि यदि एक दफा ऐसा अदम्य पुरुषार्थ दिखा, अपने जन्मजात गुणों अनुसार स्वाभाविक आचरण को स्थिरता से अपना लिया, तो आपके लिए अपने चित्त को शुभ कर्मों की ओर प्रवृत्त करना कोई कठिन कार्य नहीं रहेगा। अतः ऐसा ही हो इस हेतु सजनों आपको सुनिश्चित रूप से आत्मिक ज्ञान प्राप्त कर, उसके प्रकाश से हृदय में चिरस्थाई शांति को स्थापित करना होगा। अन्यथा आप कभी भी जीवनी शक्ति से युक्त होकर अपनी वृत्ति-स्मृति, बुद्धि व भाव-स्वभावों को निर्मल रखने का साहस नहीं दर्शा पाओगे यानि पुण्यात्मा नहीं बन पाओगे।

इस अनमोल मानव रूप को प्राप्त करने के उपरांत सजनों आप व हम में से किसी के साथ ऐसा न हो इस हेतु हम परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वह हमें ऐसी सद्बुद्धि प्रदान करें कि हम समदर्शी बन, सत्य और असत्य का विवेक रखने वाले इंसान बनें और सत्य और उसकी महिमा में विश्वास रखते हुए सत्य के धनी कहला सकें। सजनों ऐसा सत्यधनी बनाने हेतु ही बार-

बार सबको अपने हृदय को विशुद्ध रखते हुए उसमें सत्य स्थापित करने के प्रति जाग्रति में लाने का प्रयत्न तरह-तरह से किया जाता है ताकि ए विध् हम अपने हृदय को सचखंड बना वास्तविक रूप से अक्लमंद नाम कहाएं।

यह सब जानने-समझने के पश्चात् सजनों अगर आपके अन्दर भी सद्बुद्धि इंसान बनने के प्रति उमंग व उत्साह जाग्रत हुआ है तो, पाँच ज्ञानेन्द्रियों द्वारा जड़वादी जगत को धारण कर, अज्ञान स्वरूप होकर इस जगत में लिप्तता से विचरने के स्थान पर, सजन श्री शहनशाह हनुमान जी द्वारा बताई युक्ति अनुसार, अपने ख़्याल का, ब्रह्म बीज, प्रणव मंत्र ओ३म् आद् अक्षर के साथ, सुदृढ़ता से नाता जोड़ो। ए विध् मस्तक की ताकी यानि अंतर्दृष्टि खोल व ब्रह्म सत्ता ग्रहण कर अपने वास्तविक परमात्म स्वरूप को जान जाओ और सचेतन अवस्था को प्राप्त हो सकारात्मक जीवन व्यतीत करने वाले सबसे बुद्धिमान इंसान कहाओ।

अंत में सजनों जानो कि अगर मनमत से उबर गुरुमत पर स्थिर बने रह, उच्च बुद्धि इंसान बनना चाहते हो तो आत्मनियन्त्रण रखते हुए, मस्तिष्क के स्थान पर हृदय में स्थित परमात्मा की बात सुनने को महत्त्व दो और ब्रह्मशक्ति से उत्पन्न ब्रह्मवाणी यानि शब्द ब्रह्म विचारों को आत्मसात् कर, परमार्थ की ओर बढ़ जाओ। इस प्रकार परम अर्थ के निमित्त निष्पाप जीवन जीते हुए, अंत परमधाम में प्रवेश कर ब्रह्म नाम कहाओ और जगत ते रौशन हो जाओ।

इसी संदर्भ में सजनों आप सब भी ऐसे ही परमात्म बुद्धि इंसान बन अपने जीवन का मकसद सिद्ध करने में कामयाब हो जाओ इसीलिए तो प्रति रविवार क्रमवार सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ से उद्धृत भजनों के भावाशय को आत्मसात् कर आपको नेक इंसान बनने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। इसी श्रृंखला में आओ सजनों आज आगे बढ़ते हैं और जानते हैं कि आज का पहला भजन कौन सा है:-

भजन न० 41
अज हो रिहा मंगलाचार

1. सजनों हमारे हृदय में मंगलमय वातावरण बने और हम भी सबकी बधाई के पात्र बनें उसके लिए हमें महाबीर जी की संगति में अत्यन्त श्रद्धा और विश्वास के साथ एकरस बने रह, उनकी युक्ति के वर्त-वर्ताव द्वारा, परमेश्वर की समीपता प्राप्त कर, अपना हृदय सचखंड बनाना होगा।

2. ऐसा सुनिश्चित करने के पश्चात् उस इलाही जीवन साथी की आज्ञाओं का पालन करते हुए अपनी कथनी और करनी की परस्पर संगत कर, उनसे मेल खाने के योग्य बनना होगा। यह अपने आप में सुरत और शब्द के मिलाप की कल्याणकारी बात होगी। जानो एक बार यह मेल हो गया तो एक विचार हो, अटल सुहागन पतिव्रता स्त्री की तरह, पति परमेश्वर के प्रति समर्पित भाव रखते हुए उनकी चरण-शरण में स्थिरता से बने रहना होगा और उन्हें ही अपना जीवन आधार मानना होगा।

3. फिर सजनों अखंड सुहागन की तरह अपने सच्चे घर की चालें पकड़ते हुए सत्य-धर्म के प्रतीक बन जाना होगा और उनके निरंतर सम्पर्क में रहते हुए उन्हीं से एकाकार होकर परमात्मा नाम कहाना होगा।

4. सजनों हम ऐसा ही बनने में समर्थ हों उसके लिए हमें अपना ख़्याल व ध्यान हर समय प्रभु चरणों में स्थिर रखने की कला सीखनी होगी। सजनों जानो अगर ऐसा सुनिश्चित करने में सफल हो गए तो ही प्रभु से मिलन होगा व मन से स्वतः ही इस संसार के प्रति मोह भंग हो जाएगा। परिणामतः सत्यप्रकाशी बन व परमात्मा से तालमेल रखते हुए एकरूपता से इस जगत में विचरने के योग्य बन जाओगे।

5. तत्पश्चात् ऐसा विचित्र होने पर कह उठोगे 'इको रूप तुम्हारा महाराज जी इको रूप तुम्हारा, प्रकाश रिहा जग सारा महाराज जी प्रकाश रिहा जग सारा'। इस प्रकार हृदय में आत्मभाव स्थित होते ही जब हृदय के सिंघासन पर

विराजमान रघुनाथ जी, संग सीता महारानी, हाथों में गदा धारण किए हुए महाबीर जी व चंवर झुलाते हुए लक्ष्मण भाई को निहारोगे तो सबमें एक ही रूप नजर आएगा। ऐसा होते ही आपके मन में स्वतः ही ओ३म् ध्वनि यानि अनहद की झनकार झंकृत हो उठेगी और प्रभु प्रेम की मस्ती में इस तरह मस्ताने हो जाओगे कि फिर उनके चरणों में स्थिरता से बने रहने के लिए अपना सब कुछ निछावर करने से नहीं सकुचाओगे। इस प्रकार जब त्रिलोकीनाथ प्रभु आपके भक्ति भाव से प्रसन्न होकर आपको अपने संग ले लेंगे तो तीनों लोकों में ऐसी खुशी व मंगलाचार मनाया जाएगा जिसका वर्णन करना असंभव होगा।

भजन न० 42
मैं बलिहार बलिहार बलिहार महाबीर जी

1. महाबीर जी के द्वारे पर होने के नाते सुनिश्चित रूप से अपना जीवन उद्धार करने के लिए हमारे लिए बनता है कि हम उनके विचारों को ध्यान से धारण कर आत्मसात् करें और इस हितकर क्रिया में अवश्य रूप से सफल होने के लिए अपना कुछ भी वारने से न सकुचाएँ। यहाँ सतर्क रहें कि भूल से भी हमारा ख़्याल व ध्यान संसार की तरफ न जाए यानि उसे हर समय प्रभु चरणों में स्थिरता से जोड़े रखो।

2. सजनों ऐसा सुनिश्चित करने पर ही उनके सद्-विचार हमारे मन को भा जाएंगे। जब ऐसा हो गया तो फिर प्रभु का दीदार किए बगैर एक पल भी रहना मुश्किल हो जाएगा। इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों प्रभु की नीतियों पर स्थिरता से बने रहने के प्रति, अपना सब कुछ वारने के लिए तत्पर हो जाओ और सदा उनके संग बने रहने का पुरुषार्थ दिखाओ।

3. ऐसा ही हो उसके लिए याद रखो कि जीवन की किसी भी अच्छी-बुरी परिस्थिति में आपका ख़्याल महाबीर जी व रघुनाथ जी संग स्थिर बने रहने के स्थान पर, किसी भी अन्य ऋषि-मुनि व देवी-देवता के छलावे में आकर इधर-उधर भटक यानि अपने यथार्थ से अलग थलग पड़, संसार में फँस न जाए।

4. ऐसा ही हो उसके लिए सजनों महाबीर जी के वचनों पर बने रह अपने मन को वश में रखो और श्वास-श्वास नाम ध्याते हुए उस प्रभु के नाम को अपने हृदय में बसा लो ताकि आपके लिए आत्मसाक्षात्कार करना सहज हो जाए।

5. जानो जब ऐसा शुभ हो जाए तो मानना कि हम दीनों पर दयाल हो, प्रभु ने अपनी अपार कृपा के तहत् ही हम कलियुगी भटके हुए जीवों का आत्मसुधार किया है। इस मंगलकारी परिणाम को प्राप्त करने पर सजनों, सच्चे मन से पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ, महाबीर जी के आगे नमस्कार कर, हर पल उनके चरणों में बने रहने का दृढ़ संकल्प लो और ए विध् निश्चिंत होकर अपने जीवन का लक्ष्य सुनिश्चित रूप से प्राप्त करने के लिए निर्भयता से आगे बढ़ जाओ और अपना जीवन सफल बनाओ।

भजन न॰ 43
झंडा झुल रिहा जी

1. निःसंदेह सजनों आत्मविस्मृति के कारण, हमें स्वाभाविक रूप से जैसा होना चाहिए हम वैसे नहीं बन पा रहे। इसीलिए असत्य-अधर्म के रास्ते पर चलते हुए, निरंतर जीवन हारने की ओर बढ़ते जा रहे हैं। इस भयावह परिस्थिति से उबर पुनः हृदय में सत्य स्थापित कर, धर्म के रास्ते पर चलने के योग्य बनने के लिए सजनों हमारे लिए अपने मन को मन्दिर के समान पावन बना व आत्मज्ञान प्राप्त कर, कड़ी मेहनत करने की आवश्यकता है।

2. जानो ऐसा पुरुषार्थ दिखाने पर ही हम सत्-पुरुष बन अपने हृदय आकाश में पुनः धर्म का झंडा बुलंद कर सकते हैं और पारमार्थिक सत्ता ग्रहण कर अपने स्वभावों का विशुद्धिकरण कर सकते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि ए विध् ही हम ब्रह्म को जान व सत्त्वगुणी बन, समभाव-समदृष्टि की युक्ति अनुसार, परस्पर सजनता का व्यवहार करते हुए, सदाचारी इंसान बन सकते हैं।

3. इस विषय में सजनों मानो कि एक सदाचारी इंसान ही शास्त्रविहित् श्रेष्ठ आचरण अपनाकर, सत्य-धर्म के निष्काम रास्ते पर स्थिरता से बने रह, अपने

जीवन के हर कर्त्तव्य का पालन उत्तम ढंग से कर, परोपकार कमा सकता है। इस संदर्भ में इतिहास भी गवाह है कि युगों-युगांतरों में जब-जब असत्य व अधर्म पर विजय पा, त्रिलोकी में पुनः सत्य धर्म का झंडा झुलाने की आवश्यकता पड़ी तब-तब सर्गुण स्वरूप में प्रकट परमात्मा ने इस शुभ कार्य की सिद्धि हेतु महाबीर जी का साथ लिया और धर्म की स्थापना करी।

4. प्रत्येक युग में ऐसा अद्‌भुत घटित होने पर सजनों जब मानवों के मन में परमेश्वर के प्रति निर्मल प्रेम जाग्रत हुआ तो प्रभु कृपा से उन मानवों का इस जगत में भटकता हुआ ख़्याल प्रभु में ध्यान स्थिर हो गया। उपरोक्त तथ्य से सजनों स्पष्ट होता है कि जिस किसी के भी हृदय में सत्य-धर्म का झंडा बुलंद रहता है वही महाबीर जी की अपार कृपा प्राप्त करने का योग्य पात्र सिद्ध होता है इसलिए तो मृतलोकवासी तो क्या देवलोक के देवतागण भी महाबीर जी की उपमा गाते हुए नहीं थकते क्योंकि केवल वह ही अपने प्रियवर भक्तों को आत्मसाक्षात्कार करा उन्हें हमेश जीवन विजयी बनाने में समर्थ सिद्ध होते हैं।

5. अंत में सजनों जानो कि त्रेता युग में जब ऋषि मुनियों को रावण अहंकारी ने सताया तो तब भी महाबीर जी ने उनके सब कष्ट मिटा, उन्हें धर्म पर स्थिर बने रहने का मंत्र दे, पतित होने से बचा लिया। उनकी भांति सजनों महाबीर जी अब भी हम भाग्यशालियों को सत्य-धर्म के निष्काम रास्ते पर स्थिरता से बने रहने के लिए उचित नाम व युक्ति बख़्श, जाग्रति में ला रहे हैं। अतः हमारे लिए बनता है कि हम उनके वचनों की पालना करते हुए अपने दिल से वैर-विरोध हटा, सब जनों के प्रति सजन भाव अपनाएँ व अपना घर सतयुग बना अपने हृदय में शांति स्थापित कर दें। जानो सजनों यही भवसागर से पार उतर आत्मविजयी बनने का एकमात्र तरीका है।

भजन न॰ 44
हुण सीस झुकाओ जी

1. सजनों हमारे लिए बनता है कि सद्‌बुद्धि प्राप्त करने के लिए हम अपना सीस महाबीर जी के चरणों में अर्पण कर दें और उनके वचनों पर अटलता से

बने रहने के लिए, अपना सब कुछ निछावर करने के लिए सदा तत्पर रहें। जानो ऐसा करने पर ही हम उनसे सद्ज्ञान प्राप्त कर, उन जैसे महान बन सकते हैं।

2. मानो ऐसा सुनिश्चित करने पर ही हम महाबीर जी की कृपा प्राप्त करने के सुपात्र बन, अपनी प्रभु मिलन की आशा पूरी कर सकते हैं। इस संदर्भ में जानो कि चाहे महाबीर जी अपनी शरण में आए देवी-देवताओं की प्रभु मिलन की आस पुजा, उनके मन की व्याकुलता को दूर कर देते हैं पर फिर भी वे उनका भेद नहीं पा सकते। इस तथ्य के दृष्टिगत हमारे लिए भी बनता है कि हम दिल से उनके आज्ञाकारी सपुत्र बनें और ए विध् उनसे सब कुछ प्राप्त करें।

3. इस विषय में जानो कि परमश्रेष्ठ महाबीर जी ने, न केवल सीता माता की सुध लाकर, अपने इष्ट रघुनाथ जी की आस पुजा दी अपितु माता सीता का भी उनसे मिलन करा दिया। यही नहीं जब दुष्टों के संतापों से त्रस्त ऋषि-मुनियों ने महाबीर जी को रक्षार्थ प्रार्थना की तो उन दयालु परमपिता ने तुरन्त सभी दुष्टों को मार मुका उनकी भी आस पुजा दी।

4. इसके अतिरिक्त उन्होंने सुग्रीव-विभीषण को मंत्र सिखा व रघुनाथ जी से उनको मिला, उनके सिर पर भी ताज पहना दिया व उनकी भी इच्छा पूरी कर उन्हें हर्षा दिया। इस बात को स्मरण रखते हुए सजनों हमारे लिए बनता है कि हमारे मन में जो भी अच्छा-बुरा है वह सब उनके समक्ष खोल कर रख दें और आत्मसुधार हेतु उनके आगे विनम्र भाव से विनती करें।

5. इस प्रकार उनके उपदेशों को प्रवान कर हम अपने आचार-व्यवहार को इस तरह सजनता से परिपूर्ण कर लें कि घरों के सभी झगड़े-बखेड़े समाप्त हो जाएं। याद रखो ऐसा पुरुषार्थ दिखाने पर ही हम समदर्शी हो पाएंगे और एकता, एक अवस्था में बने रह बुद्धिमान नाम कहाएंगे।

अंत में सजनों बताए तथ्यों के आधार पर आत्मनिरीक्षण करो और बुद्धिहीनता से उबर पुनः बुद्धिमान बनने के लिए यानि असत्य-अधर्म को त्याग, पुनः सत्य-

धर्म का झंडा बुलंद करने के लिए अपने अन्दर आन्दोलन छेड़ दो। ए विध् सजनों कलियुगी मंदे भाव-स्वभाव छोड़, आत्मीयता युक्त सतयुगी निर्मल भाव-स्वभाव अपना निर्मल बुद्धि हो जाओ और अपने जन्म की बाजी जीत जाओ।

सारतः सजनों जानो कि यह सब जो बताया जा रहा है वह सब करने से ही यानि पूरी दिलचस्पी में आकर भरपूर उत्साह व उमंग के साथ पुरुषार्थ दिखाने पर ही सिद्ध होगा। अतः बुद्धिमान इंसान बनने हेतु हिम्मत दिखाओ। इस विषय में याद रखो कि बुद्धिमान इंसान कभी भी स्वार्थी नहीं होता और न ही वह कभी व्यर्थ की बातें करता है अपितु वह निःस्वार्थी तो सार्थकता को ग्रहण करता है और सार्थक ही बातें करता है। ए विध् बुद्धिमान बनने के पश्चात् वह आत्मज्ञानी जिस विधि से भी बुद्धिमान बना वह कला अन्यों को भी सिखाता है। आप भी सजनों उपरोक्त सबक़ को ध्यान से समझ कर व मनन में लाकर आप तो बुद्धिमान बनो ही साथ ही अन्यों को भी बुद्धिमान बनाओ। मानव होने के नाते सजनों इसे अपना सर्वोपरि कर्त्तव्य समझो और इसकी पालना द्वारा अपना जीवन सफल बनाओ। सबकी जानकारी हेतु अगले सप्ताह हम ज्ञानवान बनने के विषय में बात करेंगे।

आज का विचार

संकल्प लोः-

1. **मन, वचन, कर्म द्वारा सजन-भाव प्रयोग करने हेतु।**
2. **सच्चाई-धर्म के रास्ते पर चलने हेतु।**
3. **शरीर व रिहायशी मकान को साफ़ रखने हेतु।**
4. **हैसियत अनुसार कपड़ा पहनने व खुराक खाने हेतु।**

दिनाँक 21 जुलाई 2019 का सबक़

आओ अज्ञानता का त्याग कर ज्ञानवान बनें.....

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सर्वप्रथम हमें यह बताओ कि आप क्या हो?

आत्मा।

आत्मा नित्य है या शरीर?

आत्मा।

यह शरीर साथ छोड़ता है या आत्मा आजाद होने के लिए इसका साथ छोड़ती है?

आत्मा आजाद होने के लिए इसका साथ छोड़ देती है।

पर आजादी को प्राप्त करना तो उसी के लिए लाभदायक होता है जिसको व्यक्तिगत रूप से अपने सच्चे घर का मार्ग पता हो?

हाँ जी।

जानते हो वह मार्ग कैसे पता चलता है?

मौन।

वह मार्ग आत्मज्ञान से पता चलता है और आत्मप्रकाशी बन एक आत्मिक ज्ञानी ही यह लाभ उठा सकता है।

आओ अब ज्ञान के विषय में समझते हैं।

सजनों जानो कि किसी विषय या बल के तथ्य की सामान्य या विशेष जानकारी ज्ञान कहलाती है। इसीलिए तो ज्ञान को, जानने-समझने आदि की प्राकृतिक यानि कुदरती शक्ति कहते हैं। यह अपने आप में पदार्थ का ग्रहण करने वाली मन की वृत्ति है। ज्ञान का प्रयोग ज्ञान सम्बन्धी अनेक प्रकार की बातें करने या केवल दिखावे के लिए विद्वानों जैसी बातें कर मात्र उपदेश देने यानि दूसरों को चतुराई से छलने के लिए नहीं होता अपितु ज्ञान तो परमात्मा, प्रकृति, आत्मा इत्यादि का विचार करने का आधार होता है यानि ज्ञान द्वारा ही इंसान ब्रह्म, जीव और जगत की सत्यतापूर्ण जानकारी प्राप्त कर बुद्धिमान बन सकता है।

इस संदर्भ में सजनों जिस प्रकार किसी विषय की भी सत्यपूर्ण जानकारी प्राप्त करने के योग्य बनने के लिए, उस विषय का समुचित ज्ञान प्राप्त करने की तपस्या करनी पड़ती है, तब ही बुद्धि को उस विषय का सत्य बोध होता है और वह सत्य हमारी स्मृति में ठहर व्यवहार में आ पाता है, उसी तरह आत्मसाक्षात्कार कर, अपने आत्मिक गुणों व शक्ति से वास्तविक रूप से परिचित होने के लिए भी, आत्मिक ज्ञान ग्रहण कर, उसे आत्मसात् करने की साधना करनी पड़ती है। तभी आत्मा और परमात्मा के स्वरूप का सत्य बोध हो पाता है और वह सत्य हमारी स्मृति में ठहर पाता है। फिर जिस किसी का भी हृदय इस प्रकार प्राप्त आत्मिक ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित हो जाता है, वह

आत्मसाक्षात्कार करने वाला आत्मज्ञानी ही अन्यों के समक्ष विदित ज्ञान का सत्य रूप प्रकट कर सकता है और उस ज्ञान के सदुपयोग द्वारा अपना व सबका कल्याण करते हुए सबसे विद्वान व बुद्धिमान व्यक्ति कहलाता है। यही नहीं ऐसा पूर्ण आत्मज्ञानी ही चारों ओर होने वाली घटनाओं आदि के अच्छे-बुरे प्रभाव से अप्रभावित रह हर परिस्थिति में अपना मानसिक संतुलन सम अवस्था में बनाए रख पाता है। सजनों जानो कि यह स्वयं को यथार्थतः जानने वाला आत्मज्ञ व्यक्ति बन, अपने आप को जीतने यानि जितेन्द्रिय बन आत्मविजयी होने की बात होती है और इसी युक्ति की प्रवानगी द्वारा इंसान श्रेष्ठता को प्राप्त हो पाता है। अतः ऐसा श्रेष्ठ व्यक्ति बनने हेतु अपने ख़्याल को विषयों की तरफ से हटाकर व आत्मिक ज्ञान प्राप्त कर परमात्मा, प्रकृति और जीव का सत्य जानने का पुरुषार्थ दिखाओ और अपनी वास्तविक शक्ति को पहचान अजरता-अमरता के भाव में ढल जाओ।

अन्य शब्दों में श्रेष्ठता की ओर उन्मुख होने पर जब आत्मिक ज्ञान प्राप्ति के पश्चात् मनुष्य के मन में अपने विषय में या आत्मा के विषय में जानने की इच्छा जाग्रत होती है तो वह स्वतः ही आत्मचिंतन द्वारा आत्मा का प्रत्यक्ष अनुभव करते हुए अपने वास्तविक अलौकिक गुणों व शक्ति को भली-भांति जान जाता है। जानो यह अपने आप में आत्मदर्शन में स्थित रह, खुद पर आत्मनियन्त्रण रखते हुए, स्वावलम्बी बन, आत्मविश्वास के साथ, मानवता के सिद्धान्त अनुसार, निर्विकार व निष्पाप, आनन्दमय जीवन जी पाने के योग्य बनने जैसी कल्याणकारी बात होती है। ऐसा सुनिश्चित करने पर ही परमार्थी ज्ञान धन से सम्पन्न व्यक्ति, उस सद्ज्ञान के सदुपयोग द्वारा, सत्य-धर्म के निष्काम रास्ते पर स्थिरता से बने रह, इस जगत का सत्यनिष्ठा व धर्मपरायणता से उद्धार कर सकता है। इस महत्ता को दृष्टिगत रखते हुए सजनों हमारे लिए बनता है कि हम दिलचस्पी में आकर आत्मोद्धार हेतु, भौतिक ज्ञान प्राप्ति से अधिक, आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्ति को महत्त्व दें और ए विध् श्रेष्ठ मानव बन जाएं।

यहाँ यह भी समझो कि अपने लक्ष्य को इसी जीवन में सिद्ध करने के लिए ऐसा सुनिश्चित करना क्योंकर आवश्यक है? इस संदर्भ में सजनों जानो कि अगर

हम आध्यात्मिक न होकर केवल भौतिकवाद के सिद्धान्त अनुरूप इस संसार में विचरते हैं तो हम संसार चक्र यानि जन्म-मरण में फँसे रह, निरंतर एक अवस्था से दूसरी अवस्था में जाते रहेंगे। ऐसा इसलिए क्योंकि यह अहंतात्मक अनित्य संसार अपने आप में अत्यन्त प्रपंचमय है जिसके द्वारा इंसान के मन में अविद्या का विस्तार होता रहता है और छल-बल द्वारा नित् नया संसार रचता रहता है। सजनों मन में इस नश्वर संसार का प्रसार होने पर अंतःकरण के आगे अंधकार छा जाता है और इंसान को सब कुछ दुःखमय और सूना-सूना लगने लगता है। ऐसा होने पर इंसान की पकड़ से विचार छूट जाता है और वह निज आत्मस्वरूप को भूल स्वार्थी हो जाता है । इस तरह वह सत्य-धर्म का निष्काम रास्ता छोड़, छल-कपट, झूठ-चतुराईयों भरा अविचारयुक्त रास्ता अपना भौतिक सुखों की प्राप्ति को ही जीवन का लक्ष्य मान बैठता है। परिणामतः घर-गृहस्थी व समाज में ऐसा नकारात्मक वातावरण बनता है कि इंसान कर्त्ता भाव से कर्म करते हुए, दुराचारी बन जाता है और पाप कर्म कमा, आवागमन यानि जन्म-मरण के चक्रव्यूह में फँस जाता है। इस संदर्भ में आप सब स्वीकारेंगे कि इस भयावह परिस्थिति से उबरने के लिए आत्मिक ज्ञान प्राप्त कर पुनः आत्मस्मृति में आना आवश्यक होता है जिसके लिए विरक्त भाव से इस संसार का अंतर्मन से त्याग करना पड़ता है। ऐसा करने पर ही हम अपने वास्तविक जीवन लक्ष्य यानि मोक्ष को प्राप्त कर भवसागर से पार उतरने में समर्थ हो सकते हैं। जानो ऐसे समर्थवान पर ही ईश्वर प्रसन्न हो उसे अपने कंठ से लगा लेते हैं और कह उठते हैं:-

तूं तो जो भी है खुशनसीब है
क्योंकि सभी सुरतों का शहनशाह तेरे करीब है
गर गौर से तूं देखे और मुझ को जान जाए
तो तूं भी कह उठेगी यह तो सबकी दीद है

इस विषय में सजनों, हम किसी प्रकार की भूल कर, अपने आप को परमार्थी विद्या से वंचित रख, जड़वाद को प्राप्त न हो जाएँ, उसके लिए हमें सर्वप्रथम अपने मन में पहले परमार्थ को जानने या प्राप्त करने की प्रबल इच्छा व

उत्सुकता उत्पन्न करनी होगी और फिर स्वार्थ वृत्ति त्याग कर, परमार्थ सम्बन्धी ज्ञान का चिंतक और साधक बन परोपकारी प्रवृत्ति में ढल जाना होगा। जानो ऐसा पुरुषार्थ दिखाने पर ही ब्रह्म और जीव का ज्ञान प्राप्त होगा और आप सबसे श्रेष्ठ वस्तु बन जाओगे। निःसंदेह ऐसा सौभाग्यशाली बनने पर आप इस जगत को परमार्थ की दृष्टि से देख सकोगे और परोपकारी दृष्टिकोण अपना कर अपने मन, वचन व कर्म से यथार्थतः सब कुछ करते हुए सर्वोच्च सत्य यानि अपने परमात्म स्वरूप को प्रगट कर 'ईश्वर है अपना आप' के विचार पर खड़े हो जाओगे। इस संदर्भ में सजनों सभी संसारी धन के लोभी, तन के लोभी व मन के लोभी ध्यान से सुनो कि इस जगत में केवल सत्य ही प्राप्त करने योग्य सबसे उत्तम संपत्ति है। अतः इस सत्य-धन को प्राप्त कर अमीरों के भी अमीर हो जाओ। जानो ऐसा इसलिए भी कह रहे हैं क्योंकि जिस किसी के भी हृदय में एक बार यह सत्य स्थित हो जाता है, केवल वह ही ब्रह्म की प्राप्ति को, अपने जीवन का सर्वोच्च कर्त्तव्य मान, परमतत्व की साधना के प्रति, अकर्त्ता भाव से समर्पित हो जाता है और अपना जीवन सकार्थ कर सबसे ज्ञानवान कहलाता है। हमें भी सजनों ऐसा ही बनना है।

इस परिप्रेक्ष्य में सजनों हम जिन सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे पर हैं, उनके जीवन की मिसाल हमारे सामने ही है कि उन्होंने आप खुद कितनी कठिन तपस्या के पश्चात्, अपने हृदय में सत्य को प्रकाशित कर, स्थापित किया और इस अदम्य पुरुषार्थ द्वारा वह जीव, जगत व ब्रह्म की रमज जानने वाले आत्मज्ञानी कहलाए। स्पष्ट है सजनों कि सत्यज्ञान प्राप्त होने पर ही वह, अंतर्निहित अलौकिक गुणों व शक्ति को पहचान कर, सबसे बुद्धिमान व बलवान कहलाए।

तभी तो सजनों सभी युगों के श्रेष्ठ मानवों ने, सुनिश्चित रूप से अपना जीवन लक्ष्य प्राप्त करने हेतु, उनके चरण कमलों की धूलि से, अपने मन रूपी दर्पण को पवित्र करना उचित समझा और समर्पित भाव से उनके मार्गदर्शन में एकरस स्थिरता से बने रह, पुनः शारीरिक बल, सद्बुद्धि एवं सत्यज्ञान प्राप्त किया और समस्त संसारी दुःखों व दोषों से मुक्त हो, अपना जीवन सफल

बनाया। इसी कारण सजनों आज उन सर्वमहान दाता की तीनों लोकों में यश-कीर्ति है। निःसंदेह सजनों इस संसार में उन जैसा और कोई बलवान व महान नहीं, जिसके संग रह, एक निर्बल बुद्धि इंसान, पुनः ज्ञान और गुण अपना वैसा ही शक्तिमान बन सकता है और किसी भी कुमति में पड़े हुए इंसान को सुमति में ला परोपकारी नाम कहा सकता है।

यहाँ समझने की बात सजनों यह है कि अपने हृदय सुशोभित परमात्मा की चरण-शरण में निष्काम भाव से बने रहने पर ही, सजन श्री शहनशाह हनुमान जी सभी विद्याओं के ज्ञाता बने व सबसे गुणवान व अत्यन्त कार्यकुशल कहलाए। इस तथ्य के दृष्टिगत सजनों हमारे लिए भी बनता है कि हम भी उन द्वारा प्रदत्त युक्ति पर सुदृढ़ता से बने रह ऐसा तप करके दिखाएं कि हमारे हृदय के सभी कपाट इस तरह खुल जाएं कि हमें स्वतः ही आत्मज्ञान प्राप्त होना आरम्भ हो जाए। इस प्रकार मस्तक की ताकी खोल हमारे लिए उन जैसे गुणी व शक्तिशाली बन, इस संसार में जितने भी कठिन से कठिन कार्य हैं उन्हें सर्वहित के लिए सिद्ध करना सुगम हो जाए।

सजनों इस तथ्य से आप सबको समझ आ गया होगा कि बिना साधना के किसी को कुछ भी प्राप्त नहीं हो सकता इसलिए मानो कि आत्मज्ञान प्राप्त करने जैसे महत्त्वपूर्ण कार्य को सिद्ध करने के लिए, विशेष त्याग और परिश्रम वाला एकाग्र प्रयत्न, नियमित ढंग से करना अति आवश्यक है। इसी के द्वारा हम सर्वगुण सम्पन्न होकर, निपुणता से सत्य-धर्म के निष्काम रास्ते पर बने रह, निष्पाप जीवन जी पाने के योग्य बन सकते हैं। सजनों जानो यह अपने आप में, अपने मन व इन्द्रियों को साध जगत विजयी होने की बात है। ऐसा पराक्रम दिखाने पर ही हम हर परिस्थिति में अपना मानसिक संतुलन बनाए रखते हुए, जीवन का हर काम ठीक प्रकार से कर सकते हैं।

इस संदर्भ में सजनों यह भी जानो कि ज्ञान प्राप्त करने के उपरांत विद्वान बनने के लिए कई वर्षों तक पढ़ाई को साधने का विधान होता है क्योंकि किसी विषय के प्राप्त ज्ञान के विशेष अभ्यास से ही इंसान तद्नुकूल वर्त-वर्ताव करने में

निपुणता हासिल कर पाता है। अब इस परिप्रेक्ष्य में सजनों अपना आत्मनिरीक्षण करो और मानो कि आप द्वारा अब तक अपने जीवन का असली मकसद सिद्ध न कर पाने का एकमात्र कारण यही है कि आप शास्त्र के अध्ययन द्वारा आत्मिक ज्ञान प्राप्त नहीं कर पा रहे और यदि यह यत्न करते भी हो तो प्रयोग द्वारा उसको साधने में कमजोर पड़ जाते हो। इसलिए आप अपनी वास्तविकता से अपरिचित रह मानसिक तौर पर सांसारिकता से जा जुड़ते हो और मिथ्या ज्ञान प्राप्त कर व अज्ञानयुक्त हो जीवन में जो भी सोचते, बोलते व करते हो वह सब नकारात्मक ही करते हो। इस तरह आप खुद दुःख-क्लेश भोगते हुए, औरों के लिए भी दुःख का कारण बन, पाप कमाते हो। सजनों ऐसा न हो इस हेतु अपने जीवन में आत्मिक ज्ञान प्राप्ति की उपयोगिता को समझो और इसे ही अपने जीवन के असली प्रयोजन की सिद्धि का परम साधन मानो।

आप सब ऐसा करने में कामयाब हों इस हेतु हम सब सजनों का ध्यान सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में, जो युक्ति शब्द ब्रह्म विचारों को धारण करके इस शरीर को पवित्र करने व खालस सोना हो, एकता-एक अवस्था में आ, प्रभु के साथ प्रभु होने के विषय में विदित है, उसकी ओर आकर्षित करते हुए, कहना चाहते हैं कि युवावस्था की भक्ति अर्थात् समभाव- समदृष्टि की युक्ति अपनाने के महत्त्व को गहराई से समझो और उसको व्यवहार में लाने की कला सीखो। ऐसा सुनिश्चित करने के लिए सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अध्ययन द्वारा शब्द ब्रह्म विचारों को धारण कर उनको वर्त-वर्ताव में लाना अपने स्वभाव के अंतर्गत करो। इसके अतिरिक्त अपने मन व ज्ञानेन्द्रियों को इस संसार से हटा लो। ए विध् कुछ भी नकारात्मक धारण करने से बचो। कहने का तात्पर्य यह है कि आत्मिक ज्ञान प्राप्त कर, मन को संसार के प्रति इस तरह निरासक्त कर लो कि परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करना आपके लिए सहज हो जाए। यहाँ अन्दरूनी वृत्ति में आत्मिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए मानो कि हम सभी परमात्मा की आत्माएँ हैं और यह प्राकृतिक शरीर हमें सब कुछ परमात्मा के निमित्त ही करने हेतु यानि उनकी आज्ञाओं का पालन करने के लिए ही प्राप्त हुआ है। इसलिए हमें अपने जीवन काल में केवल वही करना है जो प्रभु चाहें और इसके अतिरिक्त कुछ नहीं करना। अगर भूल से भी सजनों इस मर्यादा का

उल्लंघन किया तो मृतलोक के ही होकर रह जाओगे क्योंकि सांसारिकता में उलझे हुए आपको कई तरीकों से गिराने का यत्न करेंगे और आप उनके बहकावे में आ पतित हो जाओगे। ऐसा न हो इस हेतु सजनों मानो कि हम परमात्म स्वरूप हैं, शरीर नहीं। अतः यह प्रकृति हमारी है, हम प्रकृति के नहीं। हम चाहें तो इसको बना भी सकते हैं और हम चाहें तो इसको मिटा भी सकते हैं। जबकि यह प्रकृति न हमें बना सकती है और न मिटा सकती है। इस बात को सजनों गहराई से समझो।

कहने का आशय यह है कि सदा याद रखो कि हम सत्य स्वरूप, अजर-अमर हस्ती हैं और अपने वास्तविक गुणों पर स्थिरता से बने रहने पर ही हम निर्लिप्तता व निपुणता से इस जगत में, वह सब कुछ करने में सक्षम हो सकते हैं जिस कारण प्रभु ने हमें यहाँ भेजा है। इस हेतु आवश्यकता मात्र आत्मिक ज्ञान प्राप्त करने की है। इस जीवनदायक आत्मिक ज्ञान को प्राप्त करने के लिए ही सजन श्री शहनशाह हनुमान जी ने हमें मूलमंत्र आद् अक्षर को गुरु मानने का आदेश दिया है और अपने ख़्याल को मूलमंत्र आद् अक्षर के प्रति ध्यान स्थिर करने का पुरुषार्थ दिखाने के लिए कहा है। जानो ऐसा पराक्रम दिखाने पर ही हमारा ख़्याल अपनी ब्रह्म सत्ता के साथ जा जुड़ेगा और हम अपनी उस महान ब्रह्म सत्ता को आत्मिक ज्ञान के रूप में ग्रहण कर सकेंगे। इस तरह 'अलफ', 'ये' में घुस जाएगा और आत्मबोध करने हेतु कोई वेद-शास्त्र या किताबी ज्ञान पढ़ने की आवश्यकता नहीं रहेगी क्योंकि हृदय प्रकाशित सत्य ज्ञान स्वतः ही हमारे ख़्याल में उतरने लगेगा। परिणामतः हम 'विचार ईश्वर है अपना आप' पर सुदृढ़ता से खड़े हो जाएंगे और हमारे लिए समभाव-समदृष्टि की युक्ति पर स्थिरता से बने रहना सहज हो जाएगा। इस तरह वचन प्रवान कर हम इतने शक्तिशाली हो जाएंगे कि फिर संसार विकृत मनोवृत्तियों के रूप में जो भी नकारा हमारे अन्दर डालना चाहेगा वह हमारे अन्दर नहीं घुसेगा और हमारे लिए अपनी वृत्ति-स्मृति, बुद्धि को निर्मल रख व सत्य-धर्म के निष्काम भक्ति भाव पर एकरस बने रह अपने मन को संकल्प रहित अवस्था में साधे रखना सुगम हो जाएगा। यही नहीं ऐसा होने पर ही हम

भ्रम रहित अवस्था को प्राप्त हो, परस्पर सजन-भाव का वर्त-वर्ताव कर सकेंगे व गृहस्थ-धर्म के वचनों पर स्थिरता से बने रह, 'जो प्रकाश मन मन्दिर में देखा है, वही प्रकाश सारे जग में देखते हुए', हर परिस्थिति में एकरसता से प्रसन्नचित्त बने रह सकेंगे। सजनों जानो यह अपने आप में सर्व-सर्व में एक ही का अनुभव करते हुए, आत्मभाव में स्थित होने की बात होगी जिसके परिणामस्वरूप संसारी विषयों में आसक्त हो मनोवृत्तियाँ विकृत नहीं होंगी और द्वि-द्वेष का भाव अपना कर हम कदाचित् विकारयुक्त शारीरिक स्वभाव नहीं अपनाएंगे। जानो ए विध् हम निर्विकारी बन अपने स्वरूप में स्थित रह पाएंगे।

सजनों हम सुनिश्चित रूप से ऐसा करने में कामयाब हों इस हेतु जानो कि हमारे शरीर का निर्माण प्राकृतिक तत्त्वों से हुआ है और उपजना-बिनसना इसका गुण है। अपना जीवन लक्ष्य सिद्ध करने के लिए जब अमर आत्मा इस जड़ वस्तु में प्रवेश कर इसे क्रियाशील करती है तो मानो सम्पूर्ण आत्मिक ज्ञान, चार वेदों व छः शास्त्रों के रूप में मानव के हृदय सहित उसके रोम-रोम, रग-रग में अस्थित हो जाता है। मानव को तो केवल आत्मस्थित हो, ख़्याल को ध्यान वल व ध्यान को प्रकाश वल कर, आत्मा के ही प्रकाश से उसे प्रकाशित कर ग्रहण करने की कला सीखनी होती है। सजनों जानो कि जो भी ए विध् आत्मज्ञानी बन जाता है, केवल वह ही अपने जीवनकाल में उस सत्यज्ञान का, प्रभु की आज्ञाओं के पालन के निमित्त यथोचित प्रयोग कर, उन्हें इस तरह प्रसन्न कर लेता है कि स्वतः ही मैं-तूं का भेद समाप्त हो जाता है और इंसान सर्व एकात्मा के भाव में खड़ा हो, अपने सच्चे घर पहुँच विश्राम को पाता है।

सजनों आप भी अपने सच्चे घर पहुँच विश्राम को पाओ इस हेतु ही तो प्रति रविवार क्रमवार सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ से उद्धृत भजनों के भावाशय को आत्मसात् कर आपको ज्ञानवान इंसान बनने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। इसी श्रृंखला में आओ सजनों आज आगे बढ़ते हैं और जानते हैं कि आज का पहला भजन कौन सा हैः-

भजन न॰ 45
मेरा सुनने वाला इक तूं

1. सजनों आज तक अविचारयुक्त रास्ते पर चलते-चलते जो भी कुकर्म-अधर्म कर चुके हो, उसी के विषय में ही सोचते मत रहो। इसके स्थान पर विश्वास रखो कि जिनकी चरण-शरण में आप हो वह अपने आप में आप को उन दुष्कर्मों के बुरे फलों से मुक्ति दिलाने में समर्थ हैं। ए विध् वह ही आपको नरकों की यातना को भोगने से बचा सकते हैं। अतः एकांत में बैठकर आत्मनिरीक्षण करो और सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के समक्ष जैसे भी व जो कुछ भी बुरा आप से हुआ है, उसे सच्चे दिल से स्वीकार क्षमायाचना करो। इस तरह आगे से उनके वचनों की पालना करनी आरम्भ कर दो और इस प्रकार अपनी वास्तविकता जान हर्षा उठो।

2. ऐसा सुनिश्चित करने पर सजनों जानो कि सब भौ-भ्रम मिट जाएंगे और मोह-माया की निद्रा से जाग महाबीर जी का संग प्राप्त कर लोगे। ऐसा होने पर आपके लिए उन द्वारा प्रदत्त नाम युक्ति पर स्थिरता से बने रहना सहज हो जाएगा और आप अपने मन को वश में रखते हुए व जीवन के विचारयुक्त रास्ते पर सीधे चलते हुए अंत अपने जीवन लक्ष्य को सिद्ध कर लोगे।

3. इस संदर्भ में सजनों याद रखना कि यह मन जब संसार में लीन हो चंचल हो जाता है तो वाशनाओं (जन्म्-जन्मांतरों के प्रभाव से उत्पन्न मानसिक सुख-दुःख की भावना या मिथ्या विचारों व ख़्यालों) के वशीभूत हुए इंसान का परमार्थ की ओर ध्यान ही नहीं जाता। ऐसा आपके साथ न हो इस हेतु सजनों महाबीर जी द्वारा बताए भक्ति भाव पर स्थिरता से बने रहना अपने स्वभाव के अंतर्गत करो और अपने हृदय में नाम बसा संसार सागर से पार उतर जाओ।

4. सजनों महाबीर जी पर अटल विश्वास रखो कि केवल वह भक्त हितकारी ही कलियुगवासियों को उचित युक्ति बता व उन्हें अंतर्मुखी बना सुरत शब्द का मेल कराने में समर्थ हैं।

5. जानो सजनों यदि एक बार ए विध् अंतर्मुखी हो गए तो स्वतः ही सूरज-चाँद तो क्या जगत की हर वस्तु में परमेश्वर का अनुभव होगा। ऐसा अद्भुत होने पर ही त्रिलोकी को तारने वाले महाबीर जी का यथार्थ जान दंग रह जाओगे और फिर कभी भी आप के लिए भक्त शिरोमणि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के चरणों से दूर रहना संभव नहीं होगा।

भजन न॰ 46
महाबीर जी मैं तेरे चरणां नूं धो धो पीवां

1. सजनों यह तो सर्वविदित है कि महाबीर जी ने सुग्रीव जी का रघुनाथ जी से मिलन कराने उपरांत बालि का वध करा सुग्रीव को राज सिंघासन पर बैठा प्रसन्न कर दिया। इसी तरह विभीषण द्वारा उनकी हृदय को शांति प्रदान करने वाली मंत्रणा पर खरे उतरने पर उन्होंने उसे अमर पद प्रदान कर दिया। इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों हमारे लिए बनता है कि हम भी महाबीर जी के वचनों को ध्यानपूर्वक प्रवान करते हुए अपने मन की मैल धो लें और ए विध् अपने ख़्याल को स्वच्छ कर, अपने जीवन का महान लक्ष्य यानि परमपद प्राप्त करने में जुट जगत विजयी हो जाएं।

2. इस विषय में सजनों हम सब यह भी जानते हैं कि सीता माता की सुध लेने के लिए जब सजन श्री शहनशाह हनुमान जी समुद्र पार कर लंका को जा रहे थे तो उन्होंने मिनाक पर्वत को दर्शन दिखा निहाल कर दिया था और लंका पहुँच सीता माता को रघुनाथ जी की मुंदरी दिखा उनके हृदय को भी प्रसन्न कर दिया था। तत्पश्चात् उन्होंने लंकापति रावण को भी सुमति में आने के लिए बहुत समझाया। पर इतना समझाने पर भी जब वह दुर्बुद्धि उनकी बात मानने के स्थान पर उनके साथ दुर्व्यवहार करने लगा तो उन्होंने उसकी सोने की लंका जलाकर राख कर दी। इसी के साथ ही जो भी राक्षस उनके रास्ते में आया उन्होंने उसको मार दिया व सब बाग-बगीचे उजाड़ वीरान कर दिए।

3. इस दृष्टांत से सजनों सीख लो और जानो कि इस मिथ्या जगत ने भी आपके मन में प्रवेश कर, आपकी बुद्धि का हरण कर आपको कुमतिवान बना

दिया है। तभी तो आप आत्मविस्मृत हो इस जगत के कलुषित वातारण से हर क्षण संतप्त रहते हो और इस परिस्थिति व अवस्था से उबरने हेतु कुछ भी ठीक से कर पाने में असक्षम हो चुके हो। सजनों अगर अब भी अपने मन को अपने वश में रखते हुए, पुनः स्थिर बुद्धि होकर जगत में निर्लिप्तता से निष्पाप विचरना चाहते हो तो महाबीर जी के एक-एक वचन की यथा युक्तिसंगत पालना सुनिश्चित करो और सुमतिवान बन पुनः विवेकशील हो जाओ।

4. आपके मन में महाबीर जी के प्रति अटूट श्रद्धा भाव व विश्वास जाग्रत करने के लिए हम आपको बताना चाहते हैं कि राम-रावण के युद्ध के दौरान बरछी लगने पर जब लक्ष्मण जी मूर्च्छित हो गए तो महाबीर जी ने ही संजीवनी बूटी ला उनके प्राण बचाए। आज लक्ष्मण की तरह सजनों हम कलुकालवासी भी सांसारिक अज्ञान अपनाने के कारण अचेतन अवस्था को प्राप्त हो, छल-कपट, झूठ-चतुराईयों का रास्ता अपना अमानवीय चलन को अपने स्वभावों के अंतर्गत कर चुके हैं। ऐसे में सजन श्री शहनशाह हनुमान जी ही हम सब पथभ्रष्ट इंसानों को इस मूर्च्छित अवस्था से उबार पुनः सचेतन अवस्था में ला आत्मस्मृति करा सकते हैं। अतः सच्चे दिल से उन दाता की चरण शरण में आ जाओ और अपनी रोकथाम हेतु उन द्वारा तीन वक्त के पाठ के रूप में बताई तीन ख़ुराकें नियमित रूप से लेना आरम्भ कर दो ।

5. अगर सजनों अपना मंगल चाहते हो तो तत्क्षण ही महाबीर जी के चरणों में स्थिरता से बने रहना सुनिश्चित करो और उनके वचनों पर चलते हुए अपने मन व इन्द्रियों पर फतह पा लो। जानो ऐसा पुरुषार्थ दिखाने पर महाबीर जी इतने प्रसन्न हो जाएंगे कि वह आपकी सुरत का पुनः परमेश्वर संग ठीक उस तरह मिलाप करा देंगे जैसे लंका पर विजय प्राप्त करने के पश्चात् उन्होंने भरत और श्री रामचन्द्र जी का मिलाप कराया था। यहाँ यह भी जानो कि कलियुग में भी आज तक कई कंचन सुरतों का इसी युक्ति द्वारा प्रभु संग मेल हो चुका है, अतः आप भी इस हेतु उनकी इस कृपा प्राप्ति के योग्य पात्र बनने का पुरुषार्थ दिखाने में कमजोर मत पड़ो और प्रभु के साथ प्रभु हो एकरूप हो जाओ।

भजन न॰ 47
दासी दे हृदय पोंदी ए ठंड

1. हे भाग्यशालियो ! जानो थोड़ा सा उद्यम दिखा महाबीर जी के वचनों पर चलते हुए जब आपको उनका संग प्राप्त हो जाएगा तो आपके हृदय में ऐसा वातावरण पनपेगा जैसे तीनों ताप मिट गए हों।

2. ऐसा चमत्कार होने पर आपको स्वयंमेव अपने मन में सुख, शांति व संतोष यानि परम तृप्ति का एहसास होगा। जानो ए विध् मन के संकल्प रहित होते ही आप इस तरह स्थिर बुद्धि हो जाओगे कि आपके लिए अपनी विवेकशक्ति का प्रयोग करते हुए अपनी अन्दरूनी व बैहरूनी दोनों वृत्तियों द्वारा केवल सत्य धारणा करना कोई कठिन कार्य नहीं रहेगा।

3. इस प्रकार हृदय में सत्य के स्थापित होते ही आप के मन से अप्रियता का भाव समाप्त हो जाएगा और आप एक आत्मज्ञानी इंसान की तरह समभाव नजरों में कर एक निगाह एक दृष्टि हो जाओगे। जानो ऐसा पुरुषार्थ दिखाने पर आप अवश्यमेव भवसागर से पार उतर जाओगे।

4. सजनों अगर चाहते हो कि ऐसा ही हो तो महाबीर जी द्वारा प्रदत्त नाम अक्षर ध्याते हुए अपने इष्ट की समीपता प्राप्त कर लो। जानो सभी वेद-शास्त्र भी, हर मानव को जीवन का मुख्य लक्ष्य प्राप्त करने के प्रति सक्षम बनने के लिए, पुकार-पुकार कर महाबीर जी द्वारा बताए हुए रास्ते को, बिना किसी तर्क अपना कर, उसी पर चलने का सतत् आवाहन दे रहे हैं। सजनों परमपद पाने हेतु ऐसा सुनिश्चित करना आवश्यक मानो और असत्य-अधर्म का रास्ता छोड़, एक समझदार योद्धा की तरह, सत्य-धर्म के रास्ते पर सुदृढ़ता से डटे रहो व जगत विजयी नाम कहाओ।

5. सजनों इस संदर्भ में जानो कि चाहे ऋषि मुनि भी महाबीर जी के इस अचरज खेल का अंत नहीं पा सकते पर इतिहास गवाह है कि जो भी उनके वचनों पर चलते हुए उन सम ही प्रभु दिवाना हो गया, उस मस्ताने की किश्ती

स्वयंमेव भक्त हितकारी महाबीर जी ने अपनी कृपा से भवसागर से पार उतार दी व ए विध् उसके समस्त कष्ट निवारण कर दिए। जानो सजनों यह अपना अनमोल जीवन सफल करने जैसी कल्याणकारी बात है। अतः इस हेतु जाग्रति में आओ और ए विध् जो रोज गाते हो कि 'जीतेंगे जीतेंगे हम जन्म की बाजी जीतेंगे, महाबीर जी के वचनों पर चल-चल कर हम जन्म की बाजी जीतेंगे', उस कथन को सत्य सिद्ध कर अपने पर उपकार करो।

भजन न॰ 48
फिर फिर के देखां मैं

1. सजनों इस सत्य को ग्रहण करो कि सब कुछ करने की शक्ति से युक्त परमात्मा सर्वव्यापक है अर्थात् सबमें रहने वाला है व विश्वव्यापी नाम कहाता है। अब मानो कि वह ही परमात्मा आत्मस्वरूप में मुझ में व सब में एक समान शोभित है। इस तरह जब सर्व-सर्व वही है तो इससे इस तथ्य की स्पष्टता होती है कि हम सब एक हैं और हमें एकता के भाव में बने रहना ही शोभा देता है।

2. इस भाव को ह्रदयगत करते हुए सजनों मन से द्वि-द्वेष, वैर-विरोध आदि जैसे नकारात्मक भाव समाप्त कर दो ताकि एक अवस्था में बने रहना सहज हो जाए। याद रखो यदि इतना कर लिया तो फिर जिधर-किधर भी देखोगे वही एक दर्शन ही सर्वव्याप्त नजर आएगा। ऐसा अद्भुत होने पर आप ब्रह्म भाव पर स्थित हो जाओगे और फिर ब्रह्म नाल ब्रह्म होना कोई कठिन कार्य नहीं रहेगा।

3. इस हितकर तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए सजनों एक निगाह एक दृष्टि हो जाओ। इस तरह सर्व-सर्व यानि जनचर, बनचर, जड़-चेतन में एक ही दर्शन का अनुभव करो व मानो कि शेष-गणेश, देवी-देवताओं और यहाँ तक कि शिव ब्रह्मा में भी वही सर्वशक्तिमान व्याप्त है।

4. जानो ऐसा नजरिया अपनाने पर आपको केवल सूरज-चाँद, सितारों में और वैश्य-शुद्र, क्षत्री-ब्राह्मण में ही नहीं वरन् लक्ष्मण जी, सीता महारानी व महाबीर जी में भी उसी मनभावन सुन्दर दर्शन का अनुभव होगा। ऐसा अद्भुत होने पर

जब वह अलौकिक दर्शन आपके मन को भा जाएगा तो फिर पर्वतों, दरख़्तों, फुलवाड़ी यहाँ तक कि इन्द्र, कुबेर, वरुण और आपके मन-मन्दिर के सिंघासन पर शोभित आत्मस्वरूप में भी, उसी बिन सूरजों प्रकाशित परब्रह्म परमेश्वर का अद्वितीय बोध होगा और आप मन ही मन कह उठोगे 'मैं नही इक तूं, इक तूं'।

5. इस प्रकार सजनों सत्य-धर्म के निष्काम भक्ति भाव पर स्थिर बने रहते हुए महाबीर जी का संग प्राप्त कर लो और प्रभु दर्शन में इस तरह मस्त हो जाओ कि आपका ख़्याल व ध्यान इस संसार की ओर जाने की भूल कदापि न करे। जानो ऐसा पुरुषार्थ दिखाने पर जो भी जड़-चेतन व जीव-जन्तु परमेश्वर ने रचाए हैं उन सबके प्रति स्वतः ही आपके मन में सजनता का भाव उपजेगा और आप इस जगत में सबके साथ नीतिबद्ध विचरते हुए जितना चाहोगे, परोपकार कमा सकोगे। सजनों अपना जीवन सफल बनाने हेतु अवश्यमेव ऐसा सुनिश्चित करो और परमेश्वर के सपुत्र कहलाओ।

अंत में सजनों बताए तथ्यों के आधार पर आत्मनिरीक्षण करो और आत्मिक ज्ञान द्वारा अज्ञानता का नाश कर, ज्ञानवान बनो व सर्वश्रेष्ठ मानव बनने का लक्ष्य सिद्ध कर लो।

आज का विचार

सृष्टि का सत्यः-

जीव जन्तु प्रभु जी तेरे उपजाये, फुरने दे स्त्री पुरुष नज़र आये।
सब स्त्रियाँ इक पुरुष हर थाईं, बेअंत बेअंत बेअंत गुसाईं।।

दिनाँक 28 जुलाई 2019 का सबक़

आओ अधम व मंद अधम अवस्था से उबर

उत्तम पुरुष बनने हेतु महाबीर जी के वचनों की पालना करने का संकल्प लें।

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

आओ सबसे पहले सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार जानें कि 'तीन प्रकार के पुत्र होते हैं उत्तम, मध्यम, मन्द अधम'। इस संदर्भ में जहाँ उत्तम पुत्र पिता का आज्ञाकारी होता है, वहीं मध्यम पुत्र गिर-गिर कर फिर खड़ा होता है और मन्द अधम पिता के वचनों के विरुद्ध चलता है। आशय यह है कि उत्तम पुत्र पिता के हुकम अनुसार हर कार्य खुशी से करता है और दुःख-सुख में स्थिर बने रहने के कारण सबसे उत्कृष्ट व श्रेष्ठ कहलाता है। यही कारण है कि हर हाल में सदा सन्तुष्ट, धीर व प्रसन्नचित्त बने रहने वाले उस सजन का ख़्याल व ध्यान समस्त कार्य व्यवहार करते हुए भी जीवन लक्ष्य यानि मोक्ष प्राप्ति की ओर लगा रहता है और वह कर्मठ अंत सर्वोच्च पद प्राप्त कर वैश्विक एकता और शांति की भावना से ओत-प्रोत हो, अपना व सबका सजन बन सबसे सुयश प्राप्त करता जाता है। इसके विपरीत मध्यम पुत्र जो मध्य का यानि न

इधर का होता है न उधर का वह कारज करने योग्य तो होता है पर उसे खुशी के साथ नहीं करता। यही कारण है कि वह सुकर्म पकड़ तो लेता है मगर कष्ट-क्लेश तथा दुःख आने पर छोड़ देता है। इसी प्रकार मंद अधम इंसान नीच, निकृष्ट व खोटी वृत्ति का बुरा इंसान होता है इसलिए परस्पर कटुता का व्यवहार करता है और पापाचरण करने वाला मूर्ख, आलसी, दुष्ट व अभागा पुरुष कहलाता है। यही कारण है कि वह कहने पर भी पिता के वचनों पर नहीं चलता यानि सुकर्म नहीं करता और अपने जन्म का वैरी बन निम्न श्रेणी की योनियों में भटकता रहता है। जानो कि इन तीन प्रकार के पुत्रों में से उत्तम पुरुष महाराज जी को प्यारा है, इसलिये हमें चाहिए कि हम महाबीर जी के वचनों को आत्मसात् कर, उत्तम सपुत्र बन के दिखाएं।

निःसंदेह सजनों ऐसा सुनिश्चित करने के लिए हमें परमार्थी पिता, सजन श्री शहनशाह हनुमान जी ओ दाता ओ ताकतवर, जिनसे मौत भी काँपती है, सच्चे दिल से उनके वचनों की पालना प्रसन्नचित्तता से करने का स्वभाव अपनाना होगा। जानो सजनों वह ताकतवर पिता श्री शहनशाह हनुमान जी तो केवल नाम का दाम लेकर ही प्रसन्न हो जाते हैं और ऐसे उत्तम सपुत्र को सब कुछ प्रदान कर देते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि ऐसे सुपुत्र को वह स्वार्थ की तरफ से सुखी बना देते हैं और परमार्थ की तरफ से उसका प्रभु से मेल करा देते हैं। तभी तो यह बात शास्त्र विदित है कि जो इंसान परमेश्वर के हुकम अनुसार खुशी से हर कारज करने के स्वभाव में ढल जाता है उस 'उत्तम दा सीस ताज सुकर्म, उत्तम दा अटल राज सुकर्म, सुकर्मों में उत्तम जकड़ता है, दुःख कलेश कष्टों के आने पर भी सुकर्म नहीं छोड़ता अपितु सच का वर्त-वर्ताव करता है'। इस प्रकार 'सुकर्मों को धारण करके फिर वह किसी से नहीं डरता'।

सजनों इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए हमें तेरी-मेरी, वड-छोट, अमीरी-गरीबी, मान-अपमान आदि के दुष्प्रभाव में आकर सत्य पथ से न विचलित होना है और न ही किसी शरीरधारी के आगे आत्मसमर्पण कर, परमेश्वर की आज्ञाओं की अवहेलना करने जैसी मूर्खता करनी है। अपितु हमें तो केवल

महाबीर जी की आज्ञा अनुसार आत्मिक स्वभावों में स्थिर बने रह इस बदन से खोट निकाल खालिस सोना होना है ताकि हम उत्तम पुरुष बन जोत के साथ मेल खा पहले अनादि और फिर धीरे-धीरे त्रिकालदर्शी बन जाएं।

निःसंदेह इसके लिए सजनों हमें 'शब्द है गुरु, शरीर नहीं है', इस विचार को आत्मसात् करते हुए, अपने ख़्याल को जगत के स्थान पर अपने सच्चे घर में ध्यान स्थिर रखने में कुशल होना है। जानो ऐसा पुरुषार्थ दिखाने पर आत्मिक स्वभावों पर स्थिर बने रहते हुए व महाराज जी की गोदी के लाड मानते हुए, आत्मबोध करने में सक्षम हो जाओगे। ऐसा मंगलमय होने पर फिर आत्म ज्योति स्वरूप में ख़्याल-ध्यान सुदृढ़ता से एकरस जोड़े रख, निर्भयता से सर्गुण रूपी संसार में परिपक्व रहना यानि अपने समस्त फर्ज़ अदा, सच्चाई-धर्म से निभाते हुए किसी के घेरे में न आना अपितु सर्व के प्रति समदृष्टि रखना व सर्व राम रूप समझना। जानो ऐसा करने पर यानि अपने स्वभावों को ए विध् जीत कर परिपक्व हो जाने पर शीघ्र ही कामयाब हो जाओगे और अमर पद पाओगे। अतः इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों इस दुनियां में रह कर धर्म सच्चाई पकड़ो विशाल और यश कमाओ, यश कमाओ व अपना जीवन सफल बनाओ।

सजनों अब जब हमने जान लिया कि आत्मनियन्त्रण रखते हुए मात्र इतना सा प्रयास करने से हम त्रिकालदर्शी बन उत्तम पुरुष बन सकते हैं तो फिर इस शुभ कारज को सिद्ध करने में देरी कैसी? आओ हिम्मत दिखाएं, हिम्मत दिखाएं और उत्तम पुरुष बन जाएं। इस संदर्भ में आप सबको ऐसा ही उत्तम पुरुष बनाने हेतु, प्रति रविवार भजनों के भावाश्य बता कर तद्नुरूप आत्मिक स्वभाव में ढाल सुमति में लाने का प्रयास चल रहा है। आओ अब इस प्रयास को आगे बढ़ाते हैं और जानते हैं कि आज का पहला भजन हमें क्या संदेश दे रहा है:-

भजन न॰ 49
महाबीर जी रहे ने पुकार

1. इस भजन के अंतर्गत सजनों सजन श्री शहनशाह महाबीर जी, संसार में बंधनमान हर जीव को संसार की असारता के बारे में बताते हुए पुकार-पुकार कर कह रहे हैं कि हे मानव ! तूं परमेश्वर संग प्रीत छोड़ जिसके संग प्रीत लगा चुका है वह संसार तो मिथ्या है यानि आज है कल नहीं। इसी तरह यह तेरी देही भी नश्वर है क्योंकि इस देही से आत्मप्रकाश के निकलते ही यह खाक की ढेरी हो जाती है। अतः देह अभिमान मत कर क्योंकि यह तेरे साथ नहीं जाने वाली। इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए हे इन्सान ! होश में आ और परमेश्वर संग प्रीत लगाना सुनिश्चित कर। याद रख यदि ऐसा करने के प्रति कमजोरी दिखाई तो काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार रूपी जो पाँच चोर मन में घर कर चुके हैं, वे तुझे अपने दुष्प्रभाव से जन्म-मरण के चक्रव्यूह में उलझा देंगे।

2. ऐसा बुरा तेरे साथ न हो इस हेतु अपनी जीवन यात्रा के दौरान, कामनायुक्त होकर मिथ्या धन व महल-माड़ियां एकत्रित करने व अहंकार वृत्ति में ढलने के स्थान पर, इस संसार में निष्काम भाव से विचरना सुनिश्चित कर क्योंकि यह सब मिथ्या धन केवल चार दिन की बहार है। हे इन्सान ! ऐसा पुरुषार्थ दिखा और परमार्थी धन एकत्रित कर, यमों की त्रास भुगतने से बच जा।

3. इस संदर्भ में इस तथ्य को भी जान कि सब भाई-बंधु, मित्र प्यारे जिनके लिए धर्म का पथ छोड़ असत्य का कंटक भरा रास्ता अपना चुका है, अंत समय उनमें से कोई भी तेरे संग नहीं जाने वाला अपितु वे सब ही तेरे को अग्नि की भेट चढ़ा काल का ग्रास बना देंगे। अतः उन संग मिथ्या प्रीत त्याग नित्य परमेश्वर संग अटूट नाता जोड़ ले और अमर हो जा।

4. हे मानव ! अगर इस भयावह परिस्थिति से बच जीवनमुक्त होना चाहता है तो अभी भी वक्त है, महाबीर जी की पुकार सुन संभल जा और मूर्खता त्याग महाबीर जी के द्वारे पर आ जा। फिर उनसे युक्ति ले व उसकी पालना करते हुए संसार की तरफ से प्रीति हटा परमेश्वर संग प्रीत जोड़ अपना जन्म संवार

ले। जान ऐसा सुनिश्चित करने पर व महाबीर जी द्वारा प्रदत्त नाम ध्याने पर वह आपको अवश्य कालपाश से छुड़ा अपने सच्चे घर पहुँचा देंगे।

5. यह सब समझने के पश्चात् सजनों हमारे लिए बनता है कि हम महाबीर जी के चरणों में इस तरह से प्रीत बढ़ाएँ कि वह प्रसन्न होकर हमें आत्मबोध करा दें। ऐसा ही हो इस हेतु सच्चे दिल से महाबीर जी के समक्ष करबद्ध सीस झुका कर प्रार्थना करो और उनकी अपार कृपा प्राप्त कर अपने सच्चे घर पहुँच विश्राम को पाओ।

भजन न० 50
मेरे महाबीर जी महाराज

1. सजनों जिस सुन्दर परमेश्वर का शिव-ब्रह्मा भी अंत नहीं पा सकते और शेष-गणेश व देवी-देवता भी जिनमें ध्यानस्थ रह, उनकी उपमा गाते हैं, उन परमेश्वर से शीघ्रता-अति-शीघ्र मिलन के प्रति अपने मन में भी तीव्र उत्कंठा पैदा करो। जानो कि इस कारज की सिद्धि केवल महाबीर जी ही कराने में सक्षम हैं इसलिए इस हेतु उनके समक्ष तहे दिल से प्रार्थना करो।

2. इस संदर्भ में ईश्वर की बेअंत महिमा जिसका अंत कोई नहीं पा सकता, उसे समझने के लिए महाबीर जी की चरण-शरण में बने रहो और उनकी समीपता प्राप्त कर जानो कि सारी सृष्टि किस प्रकार परमेश्वर के विशाल उदर में समाई हुई है और वह कैसे जब चाहें त्रिलोकी को अपने उदर से प्रकट करके दिखा सकते हैं? यह अलौकिक खेल समझने के लिए महाबीर जी की युक्ति अनुसार अपने हृदय में जन्म-जन्मांतरों से छाई हुई मैल को हटाओ। इस प्रकार अपने हृदय को पुनः स्वच्छ कर अपने जीवन के वास्तविक अभिप्राय को समझो और उसी की सिद्धि के निमित्त अपना तमाम जीवन व्यतीत करते हुए अंत अपना जीवन सफल बना लो।

3. ऐसा ही हो उसके लिए सजनों महाबीर जी द्वारा विभीषण को दिया गया मंत्र यानि मंत्रणा प्रवान करो ताकि आपके हृदय के आगे छाया अविद्या रूपी

अज्ञान का बादल छँट जाए और आत्मदर्शन हो जाए।

4. जानो इस अवस्था को प्राप्त होने पर आपको सबमें प्रभु का प्रतिबिम्ब नजर आएगा और आप इस सत्य को जान पाओगे कि सारी त्रिलोकी में वह प्रभु आप ही सर्व-सर्व समाए हुए हैं। इस प्रकार आपके मन से सब संशय-भौ-भ्रम व द्वि-द्वेष मिट जाएगा और सर्व एकात्मा का भाव स्थापित हो जाएगा। जानो यह अपने आप में प्रभु मिलन जैसी शुभ बात होगी।

5. सजनों इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए व सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे पर होने के नाते संसार में निर्भयता से विचरो यानि घबराओ मत। बस केवल एकरस महाबीर जी की चरण-शरण में बने रह उनके वचनों की ठीक से पालना करना अपने स्वभाव के अंतर्गत करो। इस तरह प्रभु की बेअन्त लीला का अंत पा आनन्दविभोर हो जाओ।

भजन न॰ 51
सदके मैं सारी

1. सजनों यह तो सर्वविदित है कि निर्मलता से परिपूर्ण क्षीर समुद्र में शेष की बिछाई पर सृष्टि के पालनहारे, शंख, चक्र, गदा पद्म-धारी सुसज्जित हैं। वह ही त्रेता युग में सत्य से भटके हुए मानवों के मन में, पुनः सत्य की स्थापना करने हेतु, राम रूप में अवतरित हुए और सजन श्री शहनशाह हनुमान जी ने उनकी हर आज्ञा का यथा पालन करते हुए यह शुभ कारज सिद्ध कर, उनके चरणों में स्थान पा लिया और भक्त शिरोमणि कहलाए। इस तथ्य के दृष्टिगत सजनों मानो कि रघुनाथ जी के चरणों में शोभित महाबीर जी ही, सत्य-धर्म के रास्ते से भटके हुए हम कलियुगवासियों के हृदय में पुनः सत्य की स्थापना कर, धर्म के निष्काम रास्ते पर बने रहने में सक्षम बना सकते हैं।

2. इस विषय में सजनों अगर अपना ऐसा ही मंगल चाहते हो तो ऐसा योग्य इंसान बनने हेतु विरक्त भाव से महाबीर जी संग निर्मल प्रीत लगा व उनके वचनों पर स्थिर बने रहते हुए, उन पर अपना सर्वस्व निछावर करने से

कदाचित् न सकुचाओ। जानो ऐसा समर्थवान बनने पर ही जीव और ब्रह्म की वास्तविकता जान पाओगे और जगत में विचरते हुए अपनी सुरत को महारानी रूप में शब्द ब्रह्म जो सृष्टि का आधार है, उस संग जोड़े रख आध्यात्मिकता की ओर बढ़ पाओगे।

3. यही नहीं याद रखो ऐसा पुरुषार्थ दिखाने पर ही आप समस्त कष्टों से उबर पाओगे और आपको महाबीर जी के वचनों पर स्थिरता से बने रहना अच्छा लगने लगेगा। इस प्रकार जब आप के मन को संकटटारी का संग भा जाएगा तो स्वतः ही उनकी सुन्दर छवि आपके हृदय में उतर जाएगी और ऐसा प्रतीत होने लगेगा जैसे आपके अंतर्घट में व जीवन में विचित्र खुशियाँ भरने वाली अलौकिक शक्ति का उद्भव हो गया हो।

4. इसी महत्ता के दृष्टिगत सजनों ऋषि-मुनि भी सजन श्री शहनशाह महाबीर जी के गुण गाते हुए नहीं थकते। अतः हमारे लिए भी बनता है कि हम इस बात को समझें और इस हेतु महाबीर जी द्वारा प्रदत्त नाम विधिवत् ध्याते हुए पुनः जाग्रति में आ जाएं तथा ए विध् आत्मविस्मृति के कारण जीवन में जो हजारों कष्ट भोग रहे हैं, उन सबसे मुक्ति पा आनन्द से जीवन बिताएं। सजनों याद रखो ऐसा पराक्रम दिखाने पर जब आत्मस्मृति में आ जाओगे तो ही सुरत शब्द का अटूट नाता बन पाएगा और आप अपने जीवन का वास्तविक रहस्य जान अंत अपने सच्चे घर पहुँच विश्राम को पाओगे।

5. सजनों ऐसा ही हो उसके लिए हमें स्मरण रखना होगा कि केवल महाबीर जी ही हमारा उचित मार्गदर्शन कर व गुरुमत की खैर पा हमें मनमत से बचा सकते हैं। इसलिए हमारे लिए बनता है कि उन सृष्टि के वाली महाबीर जी के वचनों पर स्थिर बने रहने हेतु, अपना सब कुछ उन पर कुर्बान करने के लिए तत्पर हो जाएं और ऐसी समझदारी दिखा व स्थिर व सचेत बुद्धि बन, अपने ख़्याल को, सच्चे घर में स्थिर कर, निर्विकारता से जीवन जीते हुए, सहर्ष अपने जीवन लक्ष्य को प्राप्त कर लें।

भजन न॰ 52
भैणां पंजां विषयां नूं छोड़ के

1. महाबीर जी की इतनी महिमा सुनने व समझने के पश्चात् सजनों हमारे लिए बनता है कि हम पाँच इन्द्रिय विषयों यथा रूप, रस, गंध, स्पर्श व शब्द को त्याग कर निरंतर महाबीर जी के द्वारे पर बने रहना सुनिश्चित करें और इस प्रकार उनके वचनों पर स्थिरता से बने रह, अपने यथार्थ परमात्म स्वरूप को जान सारी उमर अफुरता से यानि खुशी में गुज़ारते हुए अपने जीवन का असली मकसद सिद्ध कर लें।

2. निःसंदेह ऐसा सुनिश्चित करने के लिए सजनों हमें दिल से वैर-विरोध हटा महाबीर जी का नाम एकरस ध्याना होगा ताकि हमारा हृदय शांत हो जाए व हम सहजता से आत्मबोध कर पाएं। इस तरह इस अवस्था को प्राप्त करने के लिए हमें आशा-तृष्णा को छोड़, महाबीर जी संग अटूट प्रीत लगानी होगी ताकि वह हम दीनों पर दयाल हो हमें मौत के भय से बचा लें और हम निर्भयता से इस जगत में विचरते हुए अपना लक्ष्य प्राप्त करने में सफल हो जाएं।

3. यहाँ यह भी जानो कि सेवकों की निर्मल प्रीत देखकर महाबीर जी इतने प्रसन्न हो जाते हैं कि उन दीनों पर दयाल हो वह उन्हें सहर्ष असली परमार्थी धन बख्श देते हैं। हम पर भी उनकी ऐसी अपार अनुकंपा हो उसके लिए सजनों श्वास-श्वास नाम ध्या, अपना जन्म संवार लो। याद रखो ऐसा पुरुषार्थ दिखाने पर ही मोह-माया की फाँसी व आशा-तृष्णा की काली सर्पणी के दुष्प्रभाव से बचे रह सकोगे। इसके विपरीत अगर ऐसा सुनिश्चित न किया तो हर समय मौत के भय से संतप्त रह आजीवन रोते-झुखते रहोगे यानि कभी शांत नहीं हो पाओगे।

4. स्पष्ट है सजनों कि अगर हमने महाबीर जी द्वारा प्रदत्त नाम विधिवत् ध्याने का साहस दिखाया तो महाबीर जी प्रसन्न होकर हमें मौत के पंजे से बचा, मोक्ष प्रदान कर देंगे। ऐसा इसलिए कहा गया है क्योंकि जिस किसी के हृदय में भी महाबीर जी के नाम का वास होता है उसको मौत किसी विध् भी डरा नहीं

सकती और वह आत्मविश्वासी इंसान रघुनाथ जी की समीपता प्राप्त कर सदा के लिए जी उठता है। इसी संदर्भ में इस दृष्टांत से महाबीर जी के तेज पराक्रम को समझो कि जब महाबीर जी सीता महारानी की खोज में लंका गए तो उन्हें भयभीत करने के लिए रावण ने काल के रूप में मौत को उनकी तरफ छोड़ा। उसके ऐसा करने पर महाबीर जी तनिक भी भयग्रस्त नहीं हुए अपितु उन्होंने तो झपट्टा मारकर उसे अपनी चंगुल में फँसा लिया। ऐसा विचित्र होने पर तैतीस करोड़ देवता घबरा गए और महाबीर जी के आगे नमस्कार कर यह कहने लगे कि हे महाबीर जी ! संसार की नीति को दृष्टिगत रखते हुए मौत को छोड़ दो। उनकी इस पुकार पर महाबीर जी ने मौत को छोड़ दिया। इस तथ्य से सजनों सीख मिलती है कि जैसे महाबीर जी ने रघुनाथ जी के नाम की ताकत से मौत को डरा दिया वैसे ही हमें भी शास्त्र विधि अनुसार महाबीर जी द्वारा प्रदत्त नाम ध्याना सुनिश्चित कर मौत के भय से आजाद हो जाना है।

5. सजनों इस प्रकार महाबीर जी की बात मानकर, अपने ख़्याल को मिथ्या जगत से आजाद रखने के महत्त्व को समझो और मन से आशा-तृष्णा व अभिमान त्याग कर, सर्व एकात्मा के सत्य का बोध कर लो। याद रखो ऐसा पराक्रम दिखाने पर ही महाबीर जी स्वतः ही आपके जीवन के सारे कारज सिद्ध कर देंगे। जानो महाबीर जी के कथनानुसार यह अपने आप में इस मिथ्या संसार की असारता समझ में आने व आत्मस्वरूप में स्थित होने की बात है।

6. जानो ऐसा करने पर ही प्रभु शरण में आ, असत्य को छोड़, सत्य को धार अपना बेड़ा पार कर सकोगे। ऐसा ही हो उसके लिए सजनों परमेश्वर बार-बार कहते हैं कि कूड़-कपट का स्वभाव छोड़ने के साथ-साथ दिल से अभिमान भी त्याग दो ताकि महाबीर जी द्वारा प्रदत्त नाम आपके हृदय में स्थित हो जाए और प्रभु आप की विशेष प्रीत देखकर आप पर इस तरह प्रसन्न हो जाएँ कि आपकी परमपद पाने की मनोकामना स्वतः ही पूरी हो जाए।

7. उपरोक्त को दृष्टिगत रखते हुए सजनों मानो कि महाबीर जी उचित पात्र को सब कुछ देने में सक्षम हैं इसलिए जन्म-जन्मांतरों से बिछुड़ी हुई दासियो ! उनके द्वारे पर होने के नाते घबराओ मत अपितु इसके स्थान पर महाबीर जी के

वचनों की सहर्ष पालना करते हुए रघुनाथ जी की समीपता प्राप्त कर लो और ए विध् उनके विचारों अनुसार जीवन जीना आरम्भ कर दो। इस प्रकार प्रभु के निमित्त आत्मसमर्पण कर आनन्द अवस्था को प्राप्त हो जाओ।

8. इस विषय में सजनों अगर पूर्ण परमानंद को प्राप्त करना चाहते हो तो आपको महाबीर जी की चरण-शरण में स्थिरता से बने रहना होगा। याद रखो कि अब तक आत्मविस्मृति के प्रभाववश, अपनी मनमत के अनुसार कामनायुक्त अवलड़ा रास्ता अपना कर, हम जो मिथ्या संसार के संग दोस्ती लगा, उस के साथ झूठा प्यार लगा चुके हैं, उसी कारण ही हम हजारों कष्ट भोग रहे हैं। निःसंदेह यह अपने आप में अचेतन अवस्था को प्राप्त हो, बेपरवाही से जीवन जीते हुए अपना ही विनाश करने की बात है। इसी वजह से हम यह सत्य भूल चुके हैं कि यह जगत हमारा असली घर नहीं अपितु हम तो यहाँ एक मेहमान की तरह आए हैं। अतः इस बात को सजनों समझो और इस मिथ्या घर में बने रहने की नादानी मत करो अपितु इसके स्थान पर सत्य-धर्म के निष्काम पथ पर आगे बढ़ते हुए अपने सच्चे घर परमधाम की ओर प्रस्थान करो।

9. स्पष्ट है सजनों कि आदि, अनादि, परमादि सर्वमहान एक ईश्वर को भूलने पर ही इंसान, इस जगत में सकाम कर्म करता है। इसी कारण वह कर्मानुसार अनेकानेक कष्टों को भोगता है और जीवन भर रोता-झुखता है। इसके विपरीत जो सर्वव्यापक एकरूप को पहचान, सर्वहित को दृष्टिगत रखते हुए इस संसार में निष्काम कर्म करता है उसको किसी विध् भी कर्मफल नहीं भोगना पड़ता।

10. इस संदर्भ में सजनों जानो कि जब शरीरधारी जीव छोटी उम्र से ही कामनायुक्त कर्म करने में रत हो जाता है तो वह अपनी इसी भूल के कारण सांसारिकता अपना कर, अपना यह अनमोल मानव जन्म बिगाड़ बैठता है। सजन श्री शहनशाह महाबीर जी के द्वारे पर होने के नाते सजनों हमारे साथ ऐसा न हो इस हेतु हमारे लिए बनता है कि हम सच्चे दिल से अपना सीस महाबीर जी के चरणों में अर्पण कर दें और कर्मगति से मुक्त हो परमार्थी बन जाएं व विश्राम को पाएं।

11. अंत में सजनों जानो कि संत, महात्मा व शिव, ब्रह्मा सब महाबीर जी ही हैं क्योंकि वह ही हम भूले-भटके जीवों को प्रभु संग मिलाने वाले हैं। अतः अगर आपके मन में भी कर्म बंधन से छुटकारा पाने की प्रबल अभिलाषा है तो महाबीर जी द्वारा प्रदत्त नाम का अजपा जाप करने में किसी प्रकार की कमजोरी दिखाने की भूल मत दिखाओ क्योंकि इस नाम बल से ही आपके समस्त बिगड़े हुए कारज पूर्ण सिद्ध हो पाएंगे अर्थात् महाबीर जी आपके निर्मल भक्ति भाव पर प्रसन्न होकर आपको ऋद्धि-सिद्धि व नव निधि बख्श मौत के भय से आजाद कर, अजर अमर बना देंगे।

अंत में सजनों बताए तथ्यों के आधार पर आत्मनिरीक्षण करो और यदि लगे कि अभी भी अन्दर अधमता या मंद अधमता का यानि जड़ता का भाव छाया हुआ है तो इस अधम व मंद अधम अवस्था से उबर सदा उत्तमता को प्राप्त रहने के लिए, संतोष-धैर्य अपना कर, सच्चाई-धर्म के रास्ते पर निष्काम भाव से स्थिर बने रहते हुए, हर परिस्थिति में अपने जीवन के समस्त फर्ज अदा तद्नुसार ही निभाओ और कष्ट-क्लेश व दुःख-सुख आने पर भी सुकर्मों का रास्ता छोड़ने की भूल कदापि न करो। कहने का आशय यह है कि शब्द ब्रह्म विचारों को धारण कर व उन्हें यथा प्रयोग में लाते हुए अपना आत्मसुधार कर, उत्तम पुरुष बन जाओ और इस तरह सजन श्री शहनशाह महाबीर जी के वचनों की पालना पर सुदृढ़ बने रह जन्म की बाजी जीत लो।

सजनों यह अपने आप में मुकम्मल बात है। इस तरीके से यदि आप चल पड़ो तो जीवन कारज सिद्ध हो सकता है। इसके विपरीत यदि मात्र सुनते ही रहे तो कुछ सिद्ध नहीं होने वाला। अतः आत्मिक ज्ञान प्राप्ति हेतु मेहनत करो, मेहनत करो और मेहनत करके अपना जीवन सफल बनाओ।

आज का विचार

इक (ईश्वर) नू भैणां भुलियां। कर्मां कष्ट दिखाए हज़ार।।
इको रूप पछान लवो। फिर कर्म न सकन कुछ बिगाड़।।

दिनाँक 4 अगस्त 2019 का सबक़

आओ बहिर्मुखी बने रह अपना जीवन बिगाड़ने के स्थान पर अंतर्मुखी हो व सद्ज्ञान प्राप्त कर अपना जीवन संवार लें।

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों हम सब भली भांति जानते हैं कि हमारी चेतना का मुख्य आधार आत्मा व उसमें स्थित परमात्मा है। चूंकि सजनों 'संसार है ओ आत्मा, परमात्मा आधार है', इसलिए व्यक्ति व्यापी चेतना यानि आत्मा और विश्व व्यापी चेतना यानि परमात्मा, इनका प्रवाह बाह्य के साथ-साथ आंतरिक रूप से भी प्रवाहित होता है। इस संदर्भ में जब इन्द्रियों के रसों के अधीन हो चेतना नौ दरवाजों से आँख, नाक, कान आदि से बाहर की ओर प्रवाहित होती है तो व्यक्ति का सम्बन्ध संसार व सांसारिक पदार्थों से जा जुड़ता है और जब चेतना आत्मास्रोत परमात्मा की ओर प्रवाहित होती है तो सम्बन्ध आत्मेश्वर से जा जुड़ता है।

अन्य शब्दों में कहें तो जब चेतना का प्रवाह बहिर्मुखी होता है तो हमारी सुरत का संसार से सम्बन्ध जा जुड़ता है और जब यह प्रवाह अंतर्मुखी होता है तो

निराकार यानि रूप, रंग, रेखा से रहित परम तत्त्व से सम्बन्ध जा जुड़ता है। इस विषय में कामना चेतना का प्रवाह बहिर्मुखी करती है और निष्कामता से अंतर्मुखी होता है। यदि ध्यान से देखा जाए तो संसार की सारी यात्रा इन्द्रियों के माध्यम से नौ द्वारों के अधीनस्थ व्यतीत होती है। इस तरह कामनायुक्त जीव इन्हीं नौ द्वारों के रस में ही भटक कर रह जाता है। पर अन्दर की यात्रा कर अपने सच्चे घर पहुँचने के लिए अंतर्मुखी होना पड़ता है और दृढ़ संकल्पी हो जितेन्द्रिय बनना पड़ता है। इस तरह यह पुरुषार्थ दिखा कोई विरला अंतर्मुखी ही दसवें द्वार से गुजर कर परम पुरुष तक पहुँच पाता है और परिपूर्ण आत्मिक ज्ञान प्राप्त कर लेता है। इसीलिए तो सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में भी कहा गया है किः-

'इस नगरी दे हिवे नौ दरवाज़े, दसवें द्वार सिंघासन साजे,
उत्ते बैठे श्री भगवान, तेरी रचना तों हैरान',

इस संदर्भ में सजनों उदाहरणस्वरूप में जानो कि सच्चेपातशाह जी ने भी अपने जीवन के इसी मकसद को सिद्ध करने के लिए, महाबीर जी की चरण-शरण में समर्पित भाव से बने रह व उनके वचनों पर युक्तिसंगत चलते हुए, सर्वप्रथम मस्तक की ताकी खोलने की युक्ति प्राप्त करने हेतु प्रार्थना करी ताकि उन्हें अविनाशी आत्मेश्वर का साक्षात्कार हो जाए व उनका मन तृप्त होकर यानि इच्छा व संकल्प रहित अवस्था को प्राप्त हो जाए। इस दृष्टांत से प्रेरणा ले सजनों समझने की बात तो यह है कि उन्होंने न केवल स्वयं बहिर्मुखता को त्याग व स्थिरता से अंतर्मुख बने रहने का तप कर, आत्मज्ञान व ब्रह्मज्ञान प्राप्त कर ब्रह्म नाल ब्रह्म होने का पुरुषार्थ दिखाया अपितु उन परोपकार प्रवृत्ति ने तो सर्व कल्याण के निमित्त कुल दुनियाँ वालों को भी तद्नुसार अपने मन में पुनः शांति स्थापित करने हेतु सत्य-धर्म के निष्काम भाव पर स्थित बने रहने के लिए प्रेरित किया। इस बात को समझते हुए सजनों हमारे लिए भी बनता है कि हम भी उनकी चाल पकड़, बताई युक्ति अनुसार आत्मविजयी होने का साहस दर्शाएं।

उपरोक्त विवेचना से सजनों स्पष्टतः ज्ञात होता है कि परमपुरुष चैतन्य से

जुड़ने के लिए, प्रणव मंत्र आद् अक्षर के अजपा जाप द्वारा इन्द्रियों समेत मन को सच्चिदानंद में लीन रखते हुए अन्तर्मुखी बनाना आवश्यक है। इसीलिए वेद शास्त्रों में ब्रह्मबोध और ब्रह्म के साक्षात्कार के लिए अन्तर्मुखता को अत्याधिक महत्त्व दिया गया है। परन्तु सजनों यहाँ समझने की बात यह है कि यह अंतर्मुखता, व्यावहारिक अन्तर्मुखता या मनोविज्ञान के अन्तर्मुखी स्वभाव से बहुत पृथक है। व्यावहारिक अन्तर्मुखता या अन्तर्मुखी स्वभाव की स्थिति में व्यक्ति बाहरी विषयों की तुलना में चित्त में स्थित विषयों के मानसिक रूपों में रमा रहता है, इसलिए विषयों के मानसिक रूपों का ग़ुलाम हो सदा उसके विषय में ही सोचते हुए तनावग्रस्त रहता है। इसके विपरीत आत्मा और ब्रह्म के साक्षात्कार के लिए जिस अन्तर्मुखता की बात हमारे धर्म ग्रन्थों में कही गई है, उसमें चित्त स्थित मानसिक रूपों का निषेध आवश्यक होता है। यह अन्तर्मुखता सही अर्थों में तभी प्राप्त होती है, जब इन्द्रियों और मन ने जो एक दुनियाँ हमारे अन्दर रची है, उसे आंतरिक तेज की अग्नि में जलाकर राख कर दिया जाये यानि निर्विकारी बना जाए। इसी हेतु ही सजनों मूलमंत्र आद् अक्षर के अजपा जाप की महत्ता है। सारतः सजनों बाहर जो साँसारिक विषयों की दुनियाँ है और हमारे भीतर - जो मानसिक रूप में विषयों की दुनियाँ है, दोनों से मन और इन्द्रियों को विमुख करके आत्मा-परमात्मा की ओर उन्हें उन्मुख करना ही वास्तविक अन्तर्मुखता है।

अंतर्मुखता और बहिर्मुखता को समझने के पश्चात् आओ अब जाने कि अंतर्मुखी और बहिर्मुखी कौन होता है?

जानो जिस साधक के मन की प्रवृत्ति बाहरी बातों, वस्तुओं या बाहरी घटनाओं आदि के प्रति न होकर, आन्तरिक अर्थात अन्तःकरण की ओर प्रवृत्त होती हो और जो आत्मिक शब्द ब्रह्म विचारों में तल्लीन रहता हो, वह अन्तर्मुख या आत्मरत कहा जाता है। ऐसा आत्मलीन/अंतर्लीन व आत्मकेन्द्रित मनुष्य अपनी इन्द्रियों और मन को हठात् आन्तरिक उत्थान में नियोजित कर आत्म-शक्ति संचय करता हुआ आत्म-उत्कर्ष में लगा रहता है। इसलिए वह अन्त में आत्मा में ही व्याप्त विराट् परमात्म चेतना से सम्बद्ध हो आत्मज्ञानी हो जाता

है। जानो ऐसा आत्मज्ञानी साधक बाह्य व्यवहार करता हुआ भी अन्तर्मुख रहता है और सोता हुआ दिखाई देता हुआ भी सदा जाग्रत रहता है यानि जगत में विशेष होते हुए भी उससे निर्लेप रहता है।

इसके विपरीत जिसके मन की प्रवृत्ति बाह्य जगत में होती है यानि जिसके ध्यान की एकाग्रता अंतर्जगत से हटकर बाह्य इन्द्रिय विषयों यथा रस, रूप, गन्ध, स्पर्श और शब्द में रुचिशील रहती है वही बहिर्मुखी कहलाता है। ऐसा व्यक्ति इन्द्रिय सुख-भोगों में रत होकर, अपनी आन्तरिक व मानसिक शक्ति को खोता चला जाता है और शनैः-शनैः आत्मविस्मृत हो अपने यथार्थ से अपरिचित हो जाता है।

यह सब जानने के पश्चात् आओ सजनों अब अंतर्मुखी व बहिर्मुखी व्यक्ति के स्वाभाविक ढाँचे का अंतर भी समझ लेते हैं:-

अंतर्मुखी सदा सत्य का ग्रहण कर उसे ही धारण करता है व उसी से जुड़ता है इसलिए उसकी वृत्तियाँ, बुद्धि व स्वभाव कभी भी दूषित नहीं होते। बहिर्मुखी जगत में व्याप्त जड़ पदार्थों के रूप में मिथ्यात्व का ग्रहण कर उसे ही धारण करता हुआ उसी से जुड़ता है इसलिए उसकी वृत्तियाँ, बुद्धि व स्वभाव मलिन हो जाते हैं।

नाम-ध्यान द्वारा आत्मेश्वर से जुड़े रहने के कारण अंतर्मुखी का संकल्प सजन व संगी हो जाता है और वह सदा निष्कलुष, निश्छल व निर्विकारी बना रहता है। जगत से जुड़ने के कारण बहिर्मुखी का संकल्प कुसंगी हो जाता है और वह कलुषित, छली-कपटी व काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकारयुक्त हो विकारी बन जाता है।

अंतर्मुखी सदैव अपनी सच्ची प्रकृति ईश्वरत्व में बना रहता है इसलिए आत्मीयता युक्त भाव-स्वभाव अपना कर तद्नुकूल आचार-व्यवहार दर्शाता है। बहिर्मुखी अपनी अंतःप्रकृति से च्युत हो शरीर से जा जुड़ता है इसलिए शारीरिक भाव-स्वभाव अपना कर तद्नुकूल आचार-व्यवहार दर्शाता है।

अंतर्मुखी अनेक रूप, रंगों वाले जीवों के मध्य विचरते हुए भी, सबमें एक सर्वव्यापक ईश्वर को ही हाज़िर-नाज़िर जानता है इसलिए उसकी दृष्टि कंचन बनी रहती है। बहिर्मुखी अनेकता में एकता के रहस्य को नहीं समझ पाता इसलिए विभिन्न आकारों प्रकारों वाले जीव जन्तुओं के प्रति कामुक हो दृष्टि की कंचनता भंग कर बैठता है।

अंतर्मुखी सदा सार्थक बात करता है इसलिए उसकी जिह्वा स्वतन्त्र रहती है। बहिर्मुखी सदा निरर्थक, निंदासूचक बातें करता है इसलिए उसकी जिह्वा की स्वतन्त्रता भंग हो जाती है।

अंतर्मुखी के अन्दर निष्कामता का भाव प्रधान होता है इसलिए उसका मन सदा आत्मतुष्ट, धीर व शांत रहता है। बहिर्मुखी के अन्दर स्वार्थपरता का भाव प्रधान होता है इसलिए उसका मन असन्तुष्ट, अधीर व अशांत रहता है।

अंतर्मुखी की बुद्धि विवेकशील, प्रकाशित व निर्मल होती है इसलिए वह सदाचारी सच्चाई-धर्म की राह पर चलता है। बहिर्मुखी की बुद्धि अस्थिर व मलिन होती है इसलिए वह दुराचारी अधर्म की राह पर अग्रसर होता है।

अंतर्मुखी की इन्द्रियाँ नियंत्रित, ख़्याल अफुर, निर्भय व निषंग होता है। बहिर्मुखी की इन्द्रियाँ चंचल व अनियन्त्रित, ख़्याल फुरनों से ग्रस्त व मौत के भय से त्रस्त रहता है।

अंतर्मुखी सदा ख़्याल ध्यान वल व ध्यान प्रकाश वल रख एकाग्रचित्तता से अपने परमपिता परमेश्वर की आवाज सुन उनकी आज्ञाओं का पालन करता है इसलिए आत्मिक ज्ञान प्राप्त कर ब्रह्मज्ञान प्राप्त करने का उचित अधिकारी सिद्ध होता है। बहिर्मुखी को अपने यथार्थ का बोध ही नहीं होता इसलिए वह आत्मा की आवाज की अवहेलना कर, जड़ पदार्थों को ही सब कुछ मानते हुए भौतिक ज्ञान प्राप्ति तक ही सीमित रह जाता है।

अंतर्मुखी जान जाता है कि यह जगत मायावी है। अतः माया के वश आकर वह इस को धारण कर इसमें अटकता व भटकता नहीं अपितु सदा विचारयुक्त

एकता व एक अवस्था में एकरसता से स्थिर बना रहता है। बहिर्मुखी माया के हाथ की कठपुतली बन उसी के ईशारों पर नाचता है इसलिए अविचारयुक्त, अज्ञानमय अवस्था में बना रहता है।

अंतर्मुखी ब्रह्म भाव पर डटा रहता है इसलिए समभाव उसकी नजरों में हो जाता है और वह समदर्शिता अनुरूप परस्पर सजनता का व्यवहार करता है। बहिर्मुखी द्वि-भाव युक्त विषमता का व्यवहार दर्शाता है।

अंतर्मुखी आत्मिक बल द्वारा प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अपना मानसिक संतुलन कायम रख व अपने यथार्थ स्वरूप में अचल बने रह सदा शुभ कार्यों में प्रवृत्त रहता है। बहिर्मुखी का आत्मिक बल बहुत क्षीण होता है इसलिए वह प्रतिकूल परिस्थितियों में अपना मानसिक संतुलन कायम नहीं रख पाता और परिस्थितियों के वशीभूत हो सुकर्मों को छोड़ कुकर्म, अधर्म का रास्ता अपना लेता है।

अंतर्मुखी मन-वचन-कर्म से विनम्र, नीतिपरायण व मृदुभाषी होने का परिचय दे, अपने शील और चरित्र का आदर्शतम् रूप सबके सामने प्रस्तुत करता है इसलिए मनुष्य के, मनुष्यता अनुरूप चरित्र का परिचायक होता है। बहिर्मुखी के लिए ऐसा करना संभव नहीं।

अंतर्मुखी सबके दुःख को अपना दुःख समझता है इसलिए परहित और पर पीड़ा मिटाने के निमित्त सब कुछ त्याग करने की सामर्थ्य दर्शाता है। बहिर्मुखी के अन्दर स्वार्थ सिद्धि का भाव प्रधान होता है इसलिए उसे ऐसा करना दुष्कर प्रतीत होता है।

अंतर्मुखी स्वयं सम्मानरहित होकर सबको सम्मान देने वाला, सजन पुरुष कहलाता है। बहिर्मुखी अपनी पूजा-मानता कराने वाला अहंकारी होता है इसलिए किसी को सम्मान देना उसे कठिन प्रतीत होता है।

अंतर्मुखी सदा आत्मानंद में लीन रह प्रसन्नचित्त रहता है। बहिर्मुखी सदा आशा-तृष्णा के वशीभूत हो रोता-झुखता रहता है।

अंतर्मुखी एक निगाह एक दृष्टि, एक दृष्टि एक दर्शन में स्थिर हो अपना जीवन सफल बना लेता है और यश कीर्ति को प्राप्त होता है। बहिर्मुखी जन्म की बाजी हार जाता है इसलिए अपयश को प्राप्त कर जन्म मरण की त्रास भुगतता है।

सजनों शहनशाह के द्वारे पर होने के नाते व बहिर्मुखी अवस्था में बने रहने के कारण आप में से किसी के साथ ऐसा न हो इसलिए प्रति रविवार सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ से उद्धृत भजनों के भावाशय बता व समझा कर आपको अंतर्मुखी बनाने का भरसक प्रयास किया जा रहा है। आप सब ऐसा बनने में कामयाब हों यानि जाग्रति में आ जाओ इस हेतु आओ सजनों अब इन भजनों के माध्यम से अंतर्मुखी बनने की महत्ता व बहिर्मुखी बनने से जीवन में होने वाली हानि को जानते हैं-

आज का पहला भजन है
भजन न॰ 53
अन्दर राहवाँ मैं बाहर न जावां

1. सजनों इस भजन के अंतर्गत जीवन में इन्सान के अंतर्मुखी बने रहने का महत्त्व व बहिर्मुखी होकर अपना मन जगत में लगाने से जीवन-लक्ष्य प्राप्ति में बाधक सिद्ध होने वाली हानि का वर्णन है। अतः सजनों अगर हकीकत में जीवन का लक्ष्य प्राप्त करने में दिलचस्पी है तो बैहरूनी वृत्ति त्याग कर अपना मुख भीतर की ओर मोड़ लो। ऐसा पुरुषार्थ दिखाने पर आपका ध्यान और शक्ति अपने पर ही केन्द्रित रहेगी और आप अपने हृदय की सब बातें जानने वाले हो जाओगे। जानो यह हृदय स्थित परमात्मा सम बन, आनन्दमय जीवन व्यतीत करते हुए अंत मोक्ष प्राप्त करने की बात है।

2. इसके विपरीत अगर ईश्वर से विमुखता को, अपने स्वभाव के अंतर्गत कर लिया है तो आपके मन में बाह्य विषयों के प्रति रुचि पनपेगी और जीवन लक्ष्य सहित अन्य किसी कार्य को ध्यानपूर्वक सिद्ध करने में कमजोर पड़ जाओगे। ए विध् हर तरफ से हार खाते हुए सदा रोते-झुखते रहोगे और अंत जन्म-मरण के चक्रव्यूह में फँस जीवन बरबाद कर बैठोगे।

3. इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए सजनों संकल्प लो कि हम बहिर्मुखी हो, अविचारयुक्त अज्ञानमय रास्ता नहीं अपनाएंगे। ऐसा सुनिश्चित करने हेतु सजनों जगत से अपनाया अपना सब कुछ त्यागने के लिए तत्पर हो जाओ और परमेश्वर के सम्मुख, अंतर्मुखी बने रह एकाग्रचित्तता से जीवन के असली मकसद को सिद्ध करने के योग्य पात्र बनने के लिए प्रार्थना करो। आपकी प्रार्थना स्वीकार हो उसके लिए परमात्मा के चरणों में बने रह, मन ही मन उन्हें वचनों पर स्थिरता से चलने का आश्वासन देकर उनकी मेहर प्राप्त करो।

4. आगे जानो किः-

क) अंतर्मुखी होने पर जहाँ मन में प्रेम प्रीति पनपती है वहीं बहिर्मुखी होने पर कामना सताती है। फलतः मन में व्याकुलता उत्पन्न होती है और इंसान अपना दिन-रात का चैन खो बैठता है।

ख) अंतर्मुखी होने पर जहाँ परमेश्वर के लाड-प्यार का अनुभव होता है और ख़्याल अपने घर में ध्यान स्थिर रहता है वहीं बहिर्मुखी होने पर बात-बात पर क्रोध सताता है जिसके प्रभाव से परस्पर घर में लड़ाई-झगड़ा व वैर-विरोध बढ़ता है।

ग) आपके साथ ऐसा बुरा कदाचित् न हो उसके लिए जानो कि अंतर्मुखी हो, मन को सदा परमेश्वर में लीन रखने से ही शांति का अनुभव होता है। इसके विपरीत अगर हम इस यत्न में हार खाते हैं तो जगतीय विषयों व सुखों को प्राप्त करने का लोभ मन में पनपता है। ऐसा होने पर मन को परमेश्वर में लीन रखना कठिन हो जाता है और इसी भटकाव के कारण ही इंसान बहिर्मुखी हो अपने सच्चे घर का रास्ता भूल जाता है तथा सदा भयग्रस्त रहता है।

घ) जानो ऐसा होने पर ख़्याल संसारियों के साथ जा जुड़ता है जिससे मन में मोह का भाव विकसित होता है और विवेकहीन मानव अपनी इसी भूल के कारण जीवन भर संतप्त रहते हुए, सांसारिक सम्बन्धियों, धन-संपत्ति आदि में आसक्त हो, अनेकानेक कष्ट भुगतता रहता है।

च) अतः सजनों अगर आप में से किसी के साथ भी ऐसा ही हो रहा है तो इस अवस्था में बने रह दुःखों को गले मत लगाओ। इसके विपरीत भ्रमित अवस्था में बने रहने के स्थान पर अंतर्मुखी हो व आत्मिक ज्ञान प्राप्त कर देवलोक की सुगंधि को भी मात करने वाली फूलों की खुशबू युक्त गुणमाला पहन सजन पुरुष बन जाओ।

छ) इस संदर्भ में जानो कि अन्दरूनी वृत्ति में युक्तिसंगत बने रहने पर ही मन-मन्दिर में फूलों जैसी सेज पर विश्राम पाने जैसा आनन्द अनुभव होगा। इसके विपरीत अगर बहिर्मुखी हो गए तो जीवन काँटों की सेज जैसा दुःखद प्रतीत होगा और उन काँटों की चुभन से आपका हाल बेहाल हो जाएगा। ऐसा न हो इस हेतु सजनों अविलम्ब परमेश्वर की चरण-शरण में आ जाओ।

ज) मानो अंतर्मुखी रहने पर मन को आनन्दविभोर करने वाली पुष्प वर्षा की अनुभूति होगी। इसके विपरीत बहिर्मुखी बने रहने पर तृष्णा की काली सर्पणी फुकारें मार-मार कर इस तरह जहर खिलारती रहेगी कि किसी विध् भी बचाव की आशा नहीं रहेगी। अतः फिर कह रहे हैं कि इस अनर्थ से अपनी रक्षार्थ अंतर्मुखी हो जाओ और महाराज जी संग प्रीत लगा अपने मन में सम, संतोष का अनुभव करो। ए विध् अहंकार वृत्ति को प्राप्त हो, अभिमान का संताप भोगने से बच जाओ। जानो ऐसा पुरुषार्थ दिखाना मौत के पंजे से बच अमरता को प्राप्त होने की कल्याणकारी बात है।

5. उपरोक्त को दृष्टिगत रखते हुए सजनों हमारे लिए बनता है कि हम इन पाँच विकारों यथा काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार से बचने के लिए परमेश्वर को इस तरह से पुकारें कि वह हमारी आरतवाणी सुन, इन पाँचों विकारों का नाश कर इनसे हमें विमुक्त कर दें और ए विध् हम सर्व-सर्व इको रूप देख, एक दृष्टि एक दर्शन में स्थित हो जाएं। अंत में हमारी प्रार्थना है कि युक्ति प्रवान कर सब यह पराक्रम दिखाओ और अपने जीवन का अर्थ सिद्ध करने के योग्य बन जाओ।

भजन न॰ 54
जरजरी भूत नूं उतरन नहीं

1. सजनों जब इस मिथ्या जगत संग प्रीत लगा इंसान सांसारिक विषय भोग के रस में उलझ जाता है और उसके मन में मोह-भाव उत्पन्न हो जाता है तो इंसान अपनों को खुशी प्रदान करने हेतु स्वार्थपर बन, अन्यों के साथ झूठ-चतुराईयाँ, चोरियाँ-ठगियाँ करने लगता है।

2. निःसंदेह ऐसा अज्ञानी मूर्ख इंसान अंत समय अत्यन्त दुःख पाता है क्योंकि उसका यह शरीर जर्जर हो जाता है और सभी मिथ्या सम्बन्धी उससे दुर्व्यवहार करते हुए, अनुचित वर्ताव दिखाकर उस का हृदय जलाते हैं। यही कारण है कि इस परिस्थिति में उसके प्राण भी सहजता से नहीं निकल पाते।

3. इस तथ्य के दृष्टिगत सजनों हमारे लिए बनता है कि संसारियों के संग प्रीत लगा व उनके मोह बंधन में फँस, हम उनके स्वार्थों को सिद्ध करने हेतु, आशा-तृष्णा के विषाक्त स्वभाव कदापि न अपनाएँ। जानो अगर ऐसी भूल करी तो आशा-तृष्णा की काली सर्पणी फुकारे मार-मार कर हमारे हृदय को इस तरह जला देगी कि हम अशांत व अज्ञानमय अवस्था को प्राप्त हो अपना जीवन बिगाड़ बैठेंगे। इस संदर्भ में सदा यह याद रखो कि स्वार्थी हमेशा मतलब के यार होते हैं और जब उनका मतलब निकल जाता है तो वे निश्चित रूप से परायों जैसा व्यवहार कर दुःख पहुँचाते हैं।

4. हमारे साथ सजनों ऐसा न हो इस हेतु आओ सजनों इन तथ्यों को विचार में ला, आत्मनिरीक्षण करें कि क्या हम सांसारिक धन कमा, महल-माड़ियाँ बनाने में तो नहीं उलझे हुए? अगर ऐसा ही है तो जानो हमारे अंतर्मन व घर परिवार से झगड़े-बखेड़े कभी समाप्त नहीं हो सकते। यही नहीं भविष्य में अवस्था के मुताबिक जब हमारा शरीर रोगग्रस्त होने पर लाचार हो जाएगा तो सब मखौल उड़ा हम पर खिड़-खिड़ हँसेंगे। जानो किसी के साथ भी ऐसा दुर्भाग्यपूर्ण होने पर उसका और जीना स्वार्थी रिश्ते-नातों को अच्छा नहीं लगेगा और उनके मन में यह सोच घर कर जाएगी कि यह कब मरेगा और इसकी सारी धन

सम्पत्ति कब हमारी होगी?

5. इस संदर्भ में सजनों हमारी यह दुर्गति न हो इस हेतु हमारे लिए बनता है कि हम इस दृष्टांत से शिक्षा लें और सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के वचनानुसार सद्मार्ग पर चलते हुए, सहर्ष संसार संग मोह व आसक्ति का भाव त्याग दें तथा अंतर्मुखी हो प्रभु संग प्रीत लगा अपना जीवन संवार लें। जानो यही एकमात्र अशांत मन में पुनः शांति धारण कर संसार-सागर से पार उतरने की युक्ति है।

भजन न॰ 55
धन मेरे हनुमान न्यायकारी

1. सजनों सांसारिक ज्ञान अपनाकर इस मायावी जगत में हम जितना भी उलझ चुके हैं व इस द्वारा हमारा जो भी अच्छा-बुरा स्वाभाविक रूप बन चुका है उसे दृष्टिगत रखते हुए, अपना जीवन संवारने हेतु सब कुछ सत्यतापूर्ण न्यायकारी हनुमान जी के समक्ष रख दो और बुराई छोड़ पुनः अच्छा इंसान बनने के लिए निष्काम भाव से तत्पर हो जाओ।

2. जानो ऐसा सुनिश्चित करने पर वह भक्त हितकारी आपकी पुकार सुन आपकी लाज रख लेंगे और उचित युक्ति प्रदान कर रघुनाथ जी से आपका मेल करा देंगे। जानो ऐसा सुनिश्चित करने के प्रति उचित पुरुषार्थ दिखाने पर ही जो बाहरी पाँच चोर रूपी दुश्मन आपके मन में घर कर गए हैं, वे स्वतः ही भाग जाएंगे और आप आत्मस्मृति में आ जाओगे।

3. यह जानने के पश्चात् भी सजनों अगर ऐसी हिम्मत न दिखाई तो आशा-तृष्णा की काली सर्पणी डंक मार-मार कर आपके हृदय को इतना विषैला बना देगी कि मन की शांति भंग हो जाएगी। इस शांति के भंग होते ही मोह-माया के चक्रव्यूह में उलझ सदा मौत के भय से तड़फते रहोगे।

4. ऐसा न हो उसके लिए सजनों जगत हितकारी महाबीर जी की आज्ञाओं का पालन करना सुनिश्चित करो। इस संदर्भ में मन में उत्साह पैदा करने हेतु

जानो कि जब त्रेता युग में ऋषि मुनियों को रावण अहंकारी ने सताया तो भी उनकी पुकार सुन महाबीर जी ने ही उसे मरवा, उन्हे भयमुक्त किया।

5. आप भी सजनों मौत के भय से मुक्त हो इस संसार में निर्भयता से प्रसन्नतापूर्वक जीवन जीने के योग्य बन सको उसके लिए महाबीर जी की युक्ति पर चलते हुए परमेश्वर का साक्षात्कार करने में सफल हो, तीनों तापों से मुक्ति पा लो व हनुमान जी की जय-जयकार करते हुए, दिन-रात खुशी से आराममय जीवन व्यतीत करना आरम्भ कर दो। अंत में महाबीर जी की महानता को दृष्टिगत रखते हुए सजनों जानो कि आजीवन रघुनाथ जी के चरणों में उम्र व्यतीत करने वाले वह दाता ही हम कई जन्मों से औगुणहारी दासियों पर मेहर कर हमें पुनः जाग्रति में ला सकते हैं और हमारा रघुनाथ जी से मेल करा सकते हैं। इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों हिम्मत दिखाओ, हिम्मत दिखाओ, हिम्मत दिखाओ और जन्म की बाजी जीत जाओ।

भजन न॰ 56
चलो चलो नी प्यारी

1. सजनों बहिर्मुखी हो संसार से नाता जोड़ अपना जीवन बरबाद करने के स्थान पर अंतर्मुखी होने के महत्त्व को समझो। इस तरह समझदारी में आ अविलम्ब विषय भोगों के मिथ्या सुख से मन को हटा लो। जानो ऐसा सुनिश्चित करने पर ही आपको अपने जगमगाते हुए मन-मन्दिर में रघुनाथ जी संग सुशोभित महाबीर जी की समीपता प्राप्त होगी और आप समर्पित भाव से उन संग रहते हुए अपने हृदयेश्वर को जान जाओगे।

2. ऐसा सुनिश्चित करने के प्रति अपने मन में उत्कंठा पैदा करने के लिए जानो कि शिव-ब्रह्मा भी उन्हीं सर्वव्यापी हृदयेश्वर का ही सिमरन करते हैं। यही नहीं आज तक कोई भी चाहे वह शेष-गणेश ही क्यों न हों उनका अंत नहीं पा सके हैं।

3. आगे जानो कि उस बेअन्त का दर्शन करने हेतु जब देवी-देवता आते हैं तो महाबीर जी की कृपा से नारद जी की बीणा की धुन के साथ-साथ मन में

अनहद बाजे की झनकार गूँज उठती है।

4. आपके मन में भी सजनों ऐसा मंगलमय वातावरण पनपे और महाबीर जी आप पर प्रसन्न होकर आपको भी अपने हृदय के सिंघासन पर सुशोभित बेअंत रघुनाथ जी का दर्शन करा कृतार्थ कर जीवनमुक्त बना दें इस हेतु अविलम्ब अपना सीस महाबीर जी के चरणों में अर्पित करना सुनिश्चित करो व उनसे उचित मार्गदर्शन की प्रार्थना कर अंतर्मुखी हो व आत्मज्ञानी बन विश्राम को पाओ।

5. जानो ऐसा मंगलमय होने पर स्वर्ग की अप्सराओं के हर्षाने के साथ-साथ देवी देवता भी ऐसी फूलों की वर्षा करेंगे कि आपके मन-मन्दिर की शोभा किसी से लखी नहीं जाएगी। परिणामतः आप अपना यथार्थ स्वरूप जान सहजता से सत्य पथ पर धर्मसंगत चलते हुए व अपने कर्त्तव्य समयबद्ध निभाते हुए पुण्यात्मा बन जाओगे।

अंत में सजनों बताए तथ्यों के आधार पर आत्मनिरीक्षण करो और संसार की तरफ से अपना मुख मोड़ ईश्वर की तरफ जोड़ना सुनिश्चित करो। ए विध् बहिर्मुखी से अंतर्मुखी बन जाओ और सच्चाई-धर्म के रास्ते पर निष्काम भाव से चलते हुए यश कमाओ व अपने जन्म की बाजी जीत जाओ।

आज का विचार

सदा याद रखोः-

आना अकेला फिर जाना अकेला,
चार दिनों का है दुनियां का मेला
आने जाने वेले फिर कोई नहीं तेरा साथी
ईश्वर परमात्मा दी देख लवो झांकी।

दिनाँक 11 अगस्त 2019 का सबक़

आओ चरित्रहीनता का त्याग कर, चरित्रवान बनने का दृढ़ संकल्प लें

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों हम सब जानते हैं कि जीवन - चरित्र की अभिव्यक्ति है इसलिए चरित्र किसी भी अन्य वस्तु से ज्यादा महत्त्वपूर्ण है यानि चरित्र का जो मूल्य है वह किसी और का नहीं। इस तथ्य के दृष्टिगत सजनों मनुष्य, जो अपने बुद्धि बल के कारण सब प्राणियों में श्रेष्ठ है, उसके लिए चारित्रिक गठन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। चारित्रिक गठन से यहाँ तात्पर्य चरित्र निर्माण से है जो कि नेक चाल-चलन अपना कर, स्वयं को अनुशासित, सुसंगठित और व्यवस्थित बनाने से आता है। इसी आधार पर ही मनुष्य अपने विचारों व मनोभावों को निर्मल रखते हुए, उत्तम गुण धारणा द्वारा नैतिक दृष्टि से अच्छा आचरण करने वाला सदाचारी व धर्मात्मा इंसान बन पाता है। यही नहीं सद्भाव, सद्-विचार, उत्कृष्ट चिंतन, नियमित व व्यवस्थित जीवन शैली, शांत-गंभीर व्यक्तित्व, राग-द्वेष हीन मनोभूमि, निःस्वार्थता, सेवा, दया, धीरता, परोपकार, उदारता, त्याग, शिष्टाचार, सद्व्यवहार आदि उस चरित्रवान व्यक्ति के जीवन के अभिन्न स्वाभाविक लक्षण होते हैं और वह आत्मसंयम, आत्मत्याग व आत्मीयता के बल

पर खुद को व समाज को परमार्थ की राह पर प्रशस्त करते हुए चारित्रिक पराकाष्ठा का उच्चतम आदर्श कायम कर पाता है।

इस संदर्भ में सजनों यदि ध्यान से देखा जाए तो समाज की एकमात्र आशा का केन्द्र बिन्दु व्यक्तिगत चरित्र ही होता है क्योंकि उसी पर परिवार, राष्ट्र व कुल विश्व की स्थाई समृद्धि और विकास का स्तर निर्भर करता है। इसके विपरीत चरित्रहीनता से तो व्यक्तिगत विवेकशक्ति, समृद्धि और विकास के साथ-साथ पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय व वैश्विक शक्ति व सुख-समृद्धि का भी विघटन हो जाता है जो कि वर्तमान हालातों की बद् से बद्तर होती निराशाजनक चरित्रहीनता की स्थिति से स्पष्ट हो ही रहा है।

इस तथ्य के दृष्टिगत सजनों इस कथन को याद रखते हुए कि 'चरित्र ही जीवन की सबसे बड़ी स्थाई सम्पत्ति है', जीवन की समस्त प्रवृत्तियों का उद्देश्य चारित्रिक गठन ही होना चाहिए यानि चरित्र की परिभाषा को कभी नहीं भूलना चाहिए और न ही चारित्रिक मर्यादा का उल्लंघन करना चाहिए। यही नहीं चरित्र निर्माण ही हमारी शिक्षा का मुख्य उद्देश्य भी होना चाहिए। ऐसा इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि चरित्र की शुद्धि ही सारे ज्ञान का ध्येय है और चरित्र के बिना ज्ञान, बुराई की ताकत बन जाता है। ऐसे में चरित्र का निर्माण करना कठिन प्रतीत होता है और उसका शीघ्र पतन हो जाता है क्योंकि तब बुराई व्यक्तिगत स्तर पर हावी हो जाती है और जीवन में पतझड़ आ जाती है यानि सारे अच्छे स्वभाव झड़ जाते हैं और शरीर व मन बुरे स्वभावों का घर बन जाता है।

उपरोक्त विवेचना से सजनों स्पष्ट होता है कि चरित्र ही आत्मसम्मान की नींव है और यही उसका सबसे बड़ा रक्षक है। यही नहीं यह आत्मा के रूप में प्रखरित वह प्रकाश पुंज है जो मनुष्य को कठिनाईयों, आपत्तियों, निराशा व अंधकार में मार्ग दिखाता है और जीवन की तमाम कठिनाईयों को जीतने, वासनाओं का दमन करने और दुःखों का सहन करने से उच्च, सुदृढ़ और निर्मल हो जाता है। यहाँ यह भी याद रखना आवश्यक है कि धन, विद्या, शक्ति के अभाव में चरित्रवान तो उन्नति कर पाता है किंतु चरित्र के अभाव में कोई भी उत्कृष्टता के स्तर को प्राप्त नहीं कर पाता है।

इस संदर्भ में यद्यपि हम मानते हैं कि अच्छे चरित्र का निर्माण करना एक कष्टपूर्ण कार्य यानि तप होता है तथापि उस कष्ट को सहे बिना यानि यह तपस्या किए बिना जीवन में वास्तविक उन्नति भी नहीं की जा सकती। इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों अपने चारित्रिक सुधार का परफैक्ट आर्किटेक्ट खुद को बनाओ और इस हेतु श्वास-प्रश्वास की क्रिया के समान, अपने चरित्र में एक ऐसी सहज क्षमता विकसित करो जिसके बल पर जो कुछ प्राप्य है, उसे अनायास ग्रहण कर सको और जो त्याज्य है वह बिना क्षोभ के त्यागने में समर्थ हो जाओ। ऐसा करने से खुद में साहस का विकास होगा, गुणों में वृद्धि होगी और उद्देश्य के प्रति अटूट निष्ठा व लगन जाग्रत होगी और आप आत्मसुधार कर आत्मोद्धार करने में सफल हो जाओगे।

मानव जीवन में चरित्रवान बनने की इसी आवश्यकता के दृष्टिगत आओ सजनों अब व्यापक रूप से चरित्र व उससे जुड़े अन्य पहलुओं को समझते हैं।

चरित्र क्या है?

जानो जीवन में किए जाने वाले कार्यों या आचरणों का स्वरूप, जो किसी की योग्यता व मनुष्यत्व आदि का सूचक होता है, उसे चरित्र कहते हैं। चरित्र मनुष्य के स्वभाव, व्यवहार और शील का समन्वित रूप होता है। इसलिए श्रेष्ठता, विद्वता, गुणवत्ता, सामर्थ्य, बुद्धिमत्ता, प्रवीणता, अनुकूलता, उपयुक्तता, सभ्यता, शिष्टता, व्यवहारज्ञान, अच्छा चाल-चलन व आचरण, इसके अंतर्गत आता है। कहने का आशय यह है कि जितने भी सन्मूल्य हैं वे सब चरित्र के व्यवहार की दिशाएँ हैं।

अन्य शब्दों में मानव का चरित्र उसके द्वारा जीवन पर्यन्त अनुसरण किए गए सिद्धान्तों व तदनुरूप किए गए आचरण का स्पष्ट दर्शन कराता है। यह दर्शन उसके जीवन वृत्तान्त यानि प्रवृत्ति और जीवन क्रम का स्पष्ट आईना होता है। इस आईने में झाँक कर कोई भी बुद्धिजीवी, व्यक्ति विशेष के सदाचारी या दुराचारी होने का मर्म स्पष्टतः जान सकता है अर्थात् यह समझ सकता है कि अपने जीवनकाल में उस व्यक्ति विशेष ने अपनी इन्द्रियों के द्वारा किस प्रकार

का चेतन व्यापार किया। संक्षेपतः कहने का अभिप्राय यह है कि कोई भी व्यक्ति जीव विषयक गुणों को समझकर जीवन मुक्ति के लिए प्रयत्न करता है या फिर मायावी दृश्यों में भ्रमित और कर्त्तव्य बोध से विमुख हो बंधनमान होता है यह उसके जीवन चरित्र द्वारा स्पष्टतः परिलक्षित होता है।

एक व्यक्ति को चरित्रवान बनाने का क्रम कब से आरंभ होता है?

व्यक्ति को चरित्रवान एवं संस्कारवान बनाने का आरंभ उसके जन्म के पूर्व यानि गर्भ का बीज रखते समय से ही आरंभ हो जाता है।

मानवीय चरित्र निर्माण की प्रक्रिया क्या है?

जानो एक मानव के जीवन चरित्र का मुख्य आधार उसके हृदयगत भाव होते हैं। ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से सांसारिक पदार्थों के सम्पर्क में आने पर मनुष्य के हृदय में अच्छे या बुरे भाव उदित होते रहते हैं। भाव विशेष को बार-बार कल्पना, अनुभव, विचार व स्मृति में लाने से मनुष्य के हृदय में उस भाव की प्रकृति के अनुरूप भावना सुदृढ़ हो जाती है। तत्पश्चात् मनुष्य इसी भावना के अनुरूप ही पुरुषार्थ यानि कर्म करता है। इस प्रकार क्रमशः भाव से भावना, भावना से करनी/कर्म, करनी/कर्म से आदत/स्वभाव, आदत/स्वभाव से चरित्र एवं चरित्र से प्रारब्ध का निर्माण होता है। स्पष्ट है कि भावों की शुद्धता और अशुद्धता के अनुसार ही व्यक्ति का दृष्टिकोण सकारात्मक या नकारात्मक बनता है। तद्नुरूप ही अच्छे या बुरे दृश्यों, ज्ञान व आहार के प्रति उसकी रुचि पनपती है और वह अपनी रुचिनुसार अच्छी या बुरी करनी करता हुआ सदाचारी या दुराचारी इंसान बन जाता है।

चरित्र के विकास का उत्तम साधन क्या है?

चरित्र के विकास का उत्तम साधन है सत्-संगति। जानो सत्-संगति से इंसान में ईश्वर के प्रति श्रद्धा और विश्वास जागता है। सद्ग्रन्थों के अध्ययन व उनमें वर्णित विचार शब्द को चिंतन एवं मनन द्वारा व्यवहार में लाने की रुचि पनपती है। इस तरह अपनी इसी अभिरुचि की पूर्ति हेतु इंसान अभ्यास द्वारा अपने मन

व इन्द्रियों को वश में रखते हुए, अपने अन्दर सद्-वृत्तियों व सद्गुणों का विकास करता है और दुर्गुणों को त्यागने का साहस जुटा पाता है। ऐसा होने पर ही वह अंततः मानवता के हित में अपने को व्याख्यायित यानि स्पष्टतः निरूपित कर पाता है।

चरित्र की कसौटी क्या है?

इस संदर्भ में सजनों जैसा कहा गया है कि किसी का सच्चा चरित्र जानना हो तो उसे सत्ता के पद पर बिठा दो। सत्ता के तमाम अधिकारों और प्रलोभनों के बीच भी जो निर्लिप्त रहता है वही यथार्थ में चरित्रवान कहलाता है। इस तरह जीवन के हर कदम पर यानि प्रतिपग व्यक्ति के चरित्र की परख होती है। दूसरे लोग हमारे व्यवहार, हमारे विचारों व वचनों से हमारे चरित्र का आंकलन करते हैं। इसके अतिरिक्त विपत्तिकाल व सत्ताकाल दोनों ही समय में हमारे चरित्र की परीक्षा होती है। आशय यह है कि जो विपत्ति आने पर धैर्य नहीं त्यागता और अपनी मर्यादा में रहकर अपना कर्त्तव्य पूरा करने में ही आत्मतुष्टि का अनुभव करता है वही चरित्रवान कहलाता है। इसी तरह जो सत्ता हाथ में आने पर भी अपने अधिकारों का दुरूपयोग नहीं करता या गर्व नहीं करता यानि मद में अंधा होकर विवेक नहीं त्यागता व समभाव नज़रों में कर समदर्शी हो जाता है, वही चरित्रवान होता है। इस तरह व्यक्ति का आजीवन कार्यकलाप चरित्र की कसौटी पर कसा जाता है।

चरित्र निर्माण क्यों आवश्यक है?

जानो अपनी अंतर्निहित क्षमताओं को पहचान कर उत्तम मनुष्य बनने के लिए चरित्र निर्माण आवश्यक है क्योंकि यदि किसी भी कारणवश आचरण की खराबी से चरित्र में दोष पैदा हो जाता है तो मानव खराब चरित्र वाला बदचलन इंसान बन जाता है और चरित्रहीन या दुष्चरित्र कहलाता है। इस तरह चरित्र बिगड़ता है तो जीवन व्यर्थ हो जाता है और जीवन का सारा यश मिट्टी में मिल जाता है। जैसा कि कहा भी गया है कि 'यदि धन-दौलत गई तो कुछ नहीं गया, यदि स्वास्थ्य गया तो समझो कुछ गया परन्तु यदि चरित्र चला

गया तो समझो सब कुछ चला गया'। ऐसा न हो इस हेतु चरित्रवान बनो क्योंकि चरित्रवान ही मन-वचन-कर्म से सत् का वाहक बन, अपने भाई-बन्धुओं, समाज व राष्ट्र में मनुष्यता के आदर्शों को स्थापित कर उनका पोषण कर पाता है और श्रेष्ठ व्यक्ति कहलाता है। इस संदर्भ में राम, रहीम, कृष्ण, करीम जैसे अनेक युग पुरुषों का उदाहरण हमारे समक्ष ही है जिन्होंने महान चरित्र दर्शा कर न केवल अपना अपितु जन सामान्य का भी कल्याण किया।

चरित्रवान व चरित्रहीन मानव में अंतर स्पष्ट करो?

चरित्रवान मानवीय मूल्यों का पालन कर, उनका आदर करता है जबकि चरित्रहीन मानवीय मूल्यों की अवमानना कर उनका अनादर व उपेक्षा करता है।

चरित्रवान धीर व गंभीर जितेन्द्रिय इंसान होता है। चरित्रहीन का स्वयं पर काबू नहीं होता इसलिए वह अधीर छोटी सी बात पर बेकाबू हो जाता है व दुर्बल चरित्र वाला इंसान कहलाता है।

प्रेम, संतोष, धैर्य, क्षमा, अहिंसा, जितेन्द्रियता, बुद्धिमत्ता, विवेकशीलता, वीरता, मधुरिमा, नीतिपरायणता, निष्कामता, कृतज्ञता, सत्यवाक्यता, दृढ़व्रतता, परोपकारिता आदि चरित्रवान के लक्षण होते है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, दर्प, अभिमान, ईर्ष्या, अज्ञान, असत्य आदि चरित्रहीन के लक्षण होते हैं।

भाव-शुद्धि के कारण चरित्रवान की धारणा सदा सात्विक व दृष्टिकोण हमेशा सकारात्मक बना रहता है इसलिए उसकी वृत्ति, स्मृत्ति व भाव-स्वभाव रूपी बाणा कंचन रहता है। भावों की अशुद्धता के कारण चरित्रहीन की धारणा अज्ञानमय व दृष्टिकोण नकारात्मक होता है इसलिए उसकी वृत्ति, स्मृत्ति व भाव-स्वभाव रूपी बाणा मलीन हो जाता है।

चरित्रवान सबसे सजन-भाव अनुरूप सात्विक व शिष्ट व्यवहार करता है। चरित्रहीन द्वि-द्वेष से युक्त हो सबसे अशिष्ट व असभ्य व्यवहार करता है।

चरित्रवान आत्मनिरीक्षण द्वारा अपने मन की प्रवृत्तियों पर आत्मनियंत्रण रख इन्द्रिय-निग्रह करने की कला बखूबी जानता है। चरित्रहीन आत्मनिरीक्षण की महत्ता नहीं समझता इसलिए आत्मनियन्त्रण उसके वश की बात नहीं होती।

चरित्रवान संतोष-धैर्य को धारण कर निष्कामतापूर्वक सच्चाई-धर्म की राह पर चलते हुए मन-वचन-कर्म द्वारा परोपकार कमाता है। चरित्रहीन कामनाओं के वशीभूत हो भोगविलास व दुर्व्यसनों में ग्रस्त हो जाता है व दुराचार व व्यभिचार कमाता है।

चरित्रवान अपने सद्व्यवहार से विपक्षी को भी अपने पक्ष में कर लेता है जबकि चरित्रहीन अपने दुर्व्यवहार से अपनों को भी विपक्ष में खड़ा कर देता है।

चरित्रवान सबके हित में सोचता हुआ उनकी हितचिन्ता में अपने प्रयास को विनियोजित करता है तथा समाज के समक्ष एक आदर्श रखने का प्रयत्न करता है। इसके विपरीत आत्मकेन्द्रित चरित्रहीन स्व के दायरे में घिर कर स्वार्थी आचरण करता है और अपने तांई स्वार्थी आचरण करने के लिए ही सबको बाध्य करता है।

चरित्रवान लघुचित्त वालों की तरह मैं और मेरा की संकीर्ण धारणा से मुक्त रहता है। चरित्रहीन आजीवन मैं और मेरा में ही फँसा रहता है।

चरित्रवान कभी भी अपने पद और शक्ति का अनुचित लाभ नहीं उठाता। चरित्रहीन अपने तो क्या दूसरों के पद और शक्ति का भी अनुचित लाभ उठा कर अपना स्वार्थ सिद्ध करने की चेष्टा करता है।

चरित्रवान विचारपूर्वक अपने भाव-स्वभावों यानि अपनी मूल प्रकृति को मानव-धर्म के अनुरूप साधे रख सदा चेतन अवस्था में बना रहता है और आत्मज्ञान व ब्रह्मज्ञान प्राप्त कर आत्मप्रेरणा द्वारा अपना मार्गदर्शन स्वयं करते हुए अपना शासक स्वयं बन जाता है। चरित्रहीन अपनी मूल प्रकृति से च्युत हो जाता है इसलिए अचेतन अवस्था को प्राप्त हो आजीवन पराश्रित रहता है।

चरित्रवान विचार को पकड़ जीव, जगत व ब्रह्म के यथार्थ को जान जाता है। चरित्रहीन अविचार पर चलते हुए जगत में रुल जाता है।

चरित्रवान सदा स्वतंत्र, शांत व आनंदित बना रह सकता है इसलिए मोक्ष का अधिकारी बन अखंड यश-कीर्ति को प्राप्त होता है। चरित्रहीन सदा अशांत, खिन्न व दुःखी रहता है इसलिए आवागमन में फँस जाता है।

एक मानव के जीवन को महान बनाने में चरित्र की महत्ता स्पष्ट करो?

चरित्रवान बनने पर ही मानव के व्यक्तित्व का आत्मविकास संभव हो पाता है। चरित्रवान भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों दृष्टियों से स्वयं को सम्पन्न कर उदारचित्त बना लेता है। इस तरह चरित्रवान ही चारित्रिक उन्नति द्वारा खुद से खुदी को मिटाने की तरफ बढ़ पाता है यानि निजी अहं का विसर्जन कर, समस्त व्यक्तियों/वस्तुओं/कार्यों के प्रति समदृष्टि का विकास कर, समस्त विश्व को अपने कुटुम्ब के समान समझते हुए, संसार और प्रकृति के प्रति सकारात्मक सोच को विकसित कर पाता है। आश्चर्य की बात यह है कि इस स्वीकृति में आसक्ति और फलाकांक्षा न होकर एक आनंदात्मक प्रसाद भाव यानि असीम आत्मतोष होता है जो चरित्रवान को सर्वस्व प्रदान कर देता है और इंसान साधारण मानव से महामानव बन जाता है।

स्पष्ट है सजनों नर का भूषण विजय नहीं अपितु उज्ज्वल चरित्र है। इसी चरित्र में व्यक्ति के समस्त सन्मूल्यों का समाहार होता है। इस प्रकार चरित्र शब्द स्वयं में वांछित महान गुणसम्पत्ति को समेटे हुए होता है। इस सम्पत्ति का अर्जन करने हेतु यानि चरित्रवान बनने हेतु अपने आचार-व्यवहार द्वारा सद्‌गुणों का अर्जन तथा विकास करना अनिवार्य होता है जिसके लिए परमेश्वर के वचनों की मननकारी आवश्यक होती है। परमेश्वर के वचनों पर चलने वाला ही अपने आचरण की सत्यता से हकीकत में सज्जन पुरुष बन पाता है और दूसरों को अपने अनुकूल बनाने वाला चरित्रवान व सदाचारी इंसान कहलाता है। कहने का आशय यह है कि ऐसे श्रेष्ठ, चरित्रवान व सदाचारी का आचरण फिर लोक के समक्ष प्रमाणरूप होता है इसलिए उसके

आचरण को फिर समाज उद्धृत (उदाहरण देता) करता है और उसका अनुसरण कर तद्नुरूप चलने की कोशिश भी करता है। इस प्रकार चरित्रवान अखंड यश कीर्ति की प्राप्ति कर अमर हो जाता है।

आप भी सजनों चरित्रहीनता त्याग इसी अखंड यश कीर्ति को प्राप्त कर अमर पद प्राप्त कर सको इसलिए तो सजनों प्रति रविवार सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ से उद्धृत भजनों के भावाशय बता व समझा कर आपको चरित्रवान बनाने का भरसक प्रयास किया जा रहा है। आप सब ऐसा बनने में कामयाब हों इस हेतु आओ सजनों अब इसी क्रम को आगे बढ़ाते हैं और जानते हैं कि आज का पहला भजन क्या है?

भजन न० 57
महाबीर आप पवाया जी

1. सजनों अगर शांति-शक्ति का प्रतीक गदा पहनना चाहते हो तो अखंडता से महाबीर जी के ध्यान में मग्न रहने का व उनकी हर आज्ञा का यथा पालन करने का युक्तिसंगत अदम्य पुरुषार्थ दिखाओ। सजनों आत्मकल्याण व जगत उद्धार हेतु, सुनिश्चित रूप से आत्मिक ज्ञान प्राप्त करने में कदापि कमजोरी मत दिखाओ।

2. जानो निश्चित रूप से ऐसा करने पर ही मेहरों के वाली महाबीर जी आप पर प्रसन्न होंगे और दुष्टों का नाश करने वाला यह शांति-शक्ति का हथियार आपको प्रदान कर देंगे। ऐसा मंगलमय होने पर आपका मन संकल्प रहित हो जाएगा और आपके लिए इस जगत में सत्य-निष्ठा व धर्मपरायणता से निष्पाप विचरना सहज हो जाएगा। यह अपने आप में आत्मज्ञानी बन, आत्मनिर्भरता व आत्मविश्वास के साथ विचार पर खड़े हो, परमेश्वर के वचनों की पालना करने के योग्य बनने की बात है। इस योग्यता को प्राप्त करने पर आप इतने गुणवान हो जाओगे कि फिर आपके लिए गृहस्थ-आश्रम के फर्ज अदा ठीक ढंग से निभाते हुए, परमार्थ में सफलता प्राप्त करना कोई कठिन कार्य नहीं रहेगा।

3. जानो यह अपने आप में परोपकारी प्रवृत्ति में ढल, अपने दिव्य गुणों का विधिवत् व युक्तिसंगत प्रयोग करते हुए, वास्तविकता से भटके हुए कलुकालवासियों के मन में पुनः शांति स्थापित करने के योग्य बनने की बात है।

4. अतः यह जानते-समझते हुए सजनों हमारे लिए बनता है कि हम सबकी आस पुजाने वाले इस शांति-शक्ति के प्रतीक गदा को धारण करने के प्रति दृढ़ संकल्प हो जाएं और इस महत्त्वपूर्ण कार्य की सिद्धि हेतु शास्त्र विदित शब्द ब्रह्म विचार धारण कर व मैं-तूं का सवाल मिटा, मन में ब्रह्म भाव स्थापित कर लें। जानो यह अपने आप में एक निगाह एक दृष्टि हो, एक दर्शन में स्थित होने की बात है।

5. सजनों जानो कि इस अवस्था को प्राप्त होने पर समभाव नजरों में हो जाएगा और आप वज्र अवस्था को प्राप्त हो व मौत के भय से निर्भय हो, यम की त्रास भुगतने से बच जाओगे। इसके पश्चात् आप इतने श्रेष्ठ व गुणी बन जाओगे कि जगत का मायावी प्रभाव आपको अपने जाल में उलझा यानि अंतर्मुखी से बहिर्मुखी बना, स्वार्थपर रास्ते पर नहीं चढ़ा पाएगा। जानो यह अपने आप में समस्त लड़ाई-झगड़ा मिटा, अपनी वास्तविकता के अनुरूप, प्रभु सेवा के निमित्त निष्काम भाव से सब कुछ करते हुए निर्विकारी बनने की बात है। अतः सजनों हिम्मत दिखाओ और अपने व जगत कल्याण के निमित्त, परमार्थ वृत्ति अपनाकर तीनों तापों से मुक्त हो जाओ। इस तरह शांति-शक्ति के हथियार के बल पर न केवल खुद समभाव-समदृष्टि के सबक अनुसार, इस जगत में सत्य-धर्म के पथ पर चलते हुए अपना जीवन बनाओ वरन् अन्य समस्त कलुकाल के दुष्प्रभाव में उलझे हुए कमजोर इंसानों का भी उचित मार्गदर्शन कर, उन्हें भी शांति शक्ति का हथियार धारण कर, एकता, एक-अवस्था में आने के लिए उत्साहित करो व ए विध् भरपूर परोपकार कमाओ।

भजन न० 58
सीस निवांवाँ मैं फुल बरसावां

1. सजनों जानो कि इस जगत में सबसे विद्वान और बलवान हनुमान जी ही हैं,

जो कलियुग में भटके हुए जीवों की सुरत का शब्द ब्रह्म से मेल करा, उन्हें अपने वास्तविक इलाही स्वरूप से परिचित कराने की सामर्थ्य रखते हैं। अतः मानो उन्हीं द्वारा प्रदत्त युक्ति के प्रयोग द्वारा ही, आज का विभ्रमित इंसान, अपने मन की मैल धो, उसे स्वच्छ बना सकता है और मन-मन्दिर में सुशोभित परमात्मा का साक्षात्कार कर, अपनी सुरत को उन संग जोड़ने में सक्षम हो सकता है। सजनों यह अपने आप में परमात्मा की समीपता प्राप्त कर उन संग बने रहने की मंगलकारी बात है।

2. इस बात को समझते हुए सजनों हम स्वार्थियों के लिए भी बनता है कि हम भी महाबीर जी के मार्गदर्शन में स्थिरता से बने रह, निष्कामता से परमार्थ की ओर बढ़ चलें। इस तरह जाग्रति में आ, ब्रह्म शब्द प्राप्त कर व उसके वर्त-वर्ताव की उचित युक्ति अपना, अपने मन को परमेश्वर में लीन रखें व इस जगत के सारे कार्य प्रसन्नचित्तता से करते हुए एकता, एक अवस्था में बने रहें।

3. यहाँ यह भी जानो कि हर युग में महाबीर जी ने ही तीनों तापों से संतप्त इंसानों को विधिवत्, तीनों तापों के प्रभाव से मुक्त करा, उन्हें परमार्थी धन प्रदान किया। ए विध् उनके मन में संतोष व्याप्त होने पर, उनके अंतर्मन से स्वार्थी धन प्राप्त करने की इच्छा ही समाप्त हो गई। सजनों यह परमार्थी धन प्राप्त कर, उस अनखुट भंडार को बाँटते हुए, अमीरों का अमीर होकर शहनशाहों की तरह जीवन जीने जैसी शुभ बात है।

4. इस महत्ता के दृष्टिगत ही सजनों बार-बार कहा जा रहा है कि हनुमान जी की मंत्रणा अनुसार अपना स्वाभाविक रूप निर्मल बना, इस जगत से आजाद हो जाओ। जानो ऐसा सुनिश्चित करने पर आपकी विकृत मनोवृत्तियाँ शुद्ध हो जाएँगी और आपके लिए स्थिर बुद्धि होकर अपने मन-चित्त को एकाग्रता से सभी सुरतों के वाली के संग, अखंडता से जोड़े रखना सहज हो जाएगा।

5. अतः सजनों इस हितकर बात को गहनता से समझो और उन मेहरों के वाली दाता महाबीर जी के चरणों में बारम्बार सम्मानपूर्वक सीस झुका, आत्मोद्धार कर लो।

भजन न॰ 59
उत्तर हुण मैं कैनूं देवां

1. सजनों इस जगत में विचरते समय, मन में सर्व एकात्मा का भाव स्थित कर, समस्त चराचर जीवों में उस आदि-अनादि-प्रमादि परमेश्वर का ही अनुभव करो। इस प्रकार बाल अवस्था के स्वार्थपर भक्ति भाव से उबर, युवा अवस्था के भक्ति भाव को अपना लो और निष्कंटक परमार्थ के रास्ते पर निर्भयता से बढ़ते चलो। जानो कि इस सद्मार्ग में बाधा डालने हेतु, अनेकानेक अज्ञानी आपके साथ सम्पर्क स्थापित कर, तर्क-वितर्क द्वारा आपको उन्नति पथ पर प्रशस्त होने से रोकने का यत्न करेंगे परन्तु आपने किसी विध् भी विचलित नहीं होना वरन् उनमें भी परमात्म स्वरूप का आभास करते हुए कुदरत के इस विचित्र खेल को समझना है।

2. जानो ऐसा सुनिश्चित करने पर ही आप एक निगाह एक दृष्टि हो, एक दर्शन में स्थित हो सकोगे और 'सब सजन हुण वैरी कौन' इस कथन के अनुसार इस जगत में समता से विचर पाओगे।

3. ऐसा होने पर सजनों पाँच तत्वों के शरीरधारी सगे-सम्बन्धियों में भी आपको परमेश्वर का ही प्रतिबिम्ब नजर आएगा और आप जान जाओगे कि यह सारा खेल आपकी परीक्षार्थ कुदरत ने ही रचाया है। इस प्रकार आपके मन में सकारात्मक वातावरण ज्यों का त्यों बना रहेगा।

4. ऐसा अद्भुत होने पर आपको परमेश्वर की सर्वव्यापकता का भान हो जाएगा और आप कह उठोगे कि जल-थल, अन्दर-बाहर सबमें आप ही आप हो। फिर सहसा ही परमेश्वर को कह उठोगे कि हे प्रभु ! इस जगत में आपके अतिरिक्त और कौन है जिसके प्रति मैं उत्तरदायी हूँ?

5. यहाँ आपको समझ आ जाएगी कि त्रिलोकी में रोशनी फैलाने वाले सूरज-चाँद के प्रकाश का आधार भी वह सर्वव्यापक भगवान ही है। ऐसा अनुभव होने पर आप जान जाओगे कि युग युगांतरों में सत्य-धर्म का झंडा बुलंद करने हेतु

परमेश्वर के शांति दूत इस संसार में आए और उन सब महान आत्माओं में भी आप ने विद्यमान रह अद्वितीय पराक्रम दर्शाया। आपकी इसी श्रेष्ठता के कारण चाहे ऋषि मुनि भी आपको ध्याते हैं पर आपका अंत कोई नहीं पा सकता। इसलिए मानो कि यह सारा खेल कुदरत के वाली द्वारा ही रचित है और एक योग्य पात्र के रूप में महाबीर जी की चरण शरण में निर्भयता से बने रह इसे निर्भय होकर खेलना अपने स्वभाव के अंतर्गत करो और त्रिलोकी के सिंघासन पर सुशोभित हो आत्मविजयी नाम कहाओ।

भजन न॰ 60
अज्ञान का बादल जो था पड़ा

1. सजनों जानो कि जड़ता को प्राप्त होने के कारण, हृदय में जो संसारी अज्ञान छा गया है, केवल महाबीर जी द्वारा प्रदत्त आत्मिक ज्ञान को अमल में लाने से ही उससे छुटकारा पाया जा सकता है और आप पुनः भ्रमरहित अवस्था को प्राप्त हो स्थिर बुद्धि बन, विवेकशील नाम कहा सकते हो।

2. जानो हृदय में छाए अज्ञान बादल के छँट जाने पर आप आत्मज्ञान प्राप्त कर, परिपूर्ण सचेतन अवस्था को प्राप्त हो जाओगे। ऐसा हो जाने पर एक चैतन्य व्यक्ति की तरह जितेन्द्रिय बन व मोह बंधन से आजाद हो शांति का प्रतीक बन सकोगे व समदृष्टि के सबक़ को अमल में लाते हुए, सबको एक सा समझते व देखते हुए परस्पर सजनता का व्यवहार करने में निपुण हो जाओगे।

3. यही नहीं आत्मज्ञानी बनने पर आपको आत्मतुष्टि का एहसास होगा जिसके प्रभावस्वरूप चित्त व बुद्धि के स्थिर होने के साथ-साथ मन भी दृढ़ हो जाएगा। ऐसा होने पर आपके लिए संतोष-धैर्य का सिंगार पहन सत्य-धर्म के रास्ते पर निर्विकारता से आगे बढ़ते हुए अपने सच्चे घर पहुँच विश्राम को पाना सहज हो जाएगा।

4. अतः इस सर्वोत्तम आनन्दमय अवस्था को प्राप्त होने के लिए सजनों, आत्मिक ज्ञान प्राप्त करने का पुरुषार्थ दिखाओ और परमार्थी तौर पर उन्नति

पथ पर प्रशस्त रहते हुए, अपने अंतर्मन में सत्य को उजागर कर दो। फिर आत्मस्मृति में आ, अपनी सुरत को शब्द संग जोड़, सत्य पथ से भटके हुए जीवों को विधिवत् रास्ते पर लाते हुए परोपकार कमाओ।

5. अंत में जानो कि महाबीर जी के कथनानुसार अन्दर काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार जैसा जन्मजात कोई विकार नहीं होता। ये सब विषय विकार संसार के साथ जुड़ने पर ही मन में प्रवेश करते हैं और परस्पर व्यवहार के समय वैर-विरोध का चलन चलता है। इस बात को समझते हुए सजनों हमारे लिए बनता है कि हम सब फुरनों से निवृत्त हो, वियोग का दुःख भोगने के स्थान पर, अपनी सुरत को शब्द संग जोड़, अमरत्व के भाव से इस जगत में विचरते हुए, मौत के भय से आजाद हो जाएं।

इस संदर्भ में महाबीर जी के द्वारे पर होना, उस प्रभु की अपार कृपा मानो और ख़्याल ध्यान वल व ध्यान प्रकाश वल रखते हुए, वांछित स्वाभाविक परिवर्तन ले आओ। इस तरह कलुकाल का चलन छोड़ सतयुगी इंसान बन जाओ व अपना जीवन सफल बनाओ।

अंत में सजनों बताए तथ्यों के आधार पर आत्मनिरीक्षण करो और चरित्रहीनता त्याग चरित्रवान बन जाओ। ए विध् दुराचारी से सदाचारी बन, सच्चाई-धर्म के रास्ते पर निष्काम भाव से चलते हुए यश कमाओ व अपने जन्म की बाजी जीत जाओ।

आज का विचार

जीवन लक्ष्य प्राप्ति हेतुः-

उस ईश्वर दे तूं गुण गा लै, उस ईश्वर दा ध्यान लगा लै।।
उस ईश्वर दा सिमरन करके, एहो धन-दौलत चलेगा साथ।।

दिनाँक 18 अगस्त 2019 का सबक़

आओ चंचलता छोड़ एकाग्रचित्त होने का पुरुषार्थ दिखाएं

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों हम सब जानते हैं कि मनुष्य का जीवन आत्मसाक्षात्कार की साधना है। इस साधना की सफलता पूर्ति के लिए जो उपक्रम किए जाते हैं उनमें मन/चित्त की एकाग्रता बहुत जरूरी है क्योंकि इसी के द्वारा ज्ञान स्मृति में उतरता है और व्यवहार में आता है। एकाग्रता से अभिप्राय किसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए अन्य बातों या विषय पर ध्यान न लगाते हुए, उसी उद्देश्य विशेष पर ही अपने ध्यान व प्रयास को केन्द्रित करने से है यानि विशेष विषय, संदर्भ या वस्तु में पूरी तरह ध्यान केन्द्रित करने को एकाग्रता कहते हैं। यह तल्लीन होने की अवस्था या भाव है जो स्थिरचित्तता नाम से भी जानी जाती है क्योंकि इस अवस्था में मन, वाणी व शरीर स्थिर हो जाता है। मन/चित्त की चंचलता समाप्त हो जाती है और वह शुद्व, पवित्र व शांत होकर लक्ष्य पर केन्द्रित हो जाता है। फलतः समस्त मार्ग अवरोधक बाधाएँ दूर हो जाती हैं, आत्मज्ञान की प्राप्ति होती है और मानसिक व आत्मिक शक्तियों का विकास होता है।

यहाँ याद रखने की बात है कि मन/चित्त की चंचलता उन्नति पथ की सबसे

बड़ी बाधा है। चंचलता से अभिप्राय गतिशीलता से है। इस संदर्भ में सजनों जिस प्रकार दीपशिखा बहती हुई वायु के सम्पर्क में आकर निरन्तर काँपती रहती है, उसी प्रकार मन/चित्त कामना, ईर्ष्या, राग-द्वेष आदि विषयों के विकार के कारण क्षोभयुक्त होने पर चंचल हो जाता है यानि सांसारिक कोलाहल से घिरा रहता है और एक स्थान पर एक स्थान या विषय पर स्थित हो एकाग्र नहीं हो पाता। ऐसा होने पर मन/चित्त व्याकुल व अस्थिर हो उपद्रवी, नटखट, शरारती, अधीर व अशांत हो जाता है और नाना प्रकार के संकल्प-विकल्प उठा बुद्धि को भ्रष्ट व भ्रमित कर विद्रोह की स्थिति उत्पन्न कर देता है। इसी वजह से मानव संसार में आसक्त हो, अज्ञान, स्वच्छन्दता, भर्त्सना, कठोरता आदि का शिकार हो जाता है और संकल्प की स्वच्छता, वृत्तियों की निर्मलता व मानसिक दृढ़ता दया व करुणा के अभाव में दुराचरण करने लगता है। इस संदर्भ में सजनों जिस प्रकार हिलते हुए दर्पण में मुँह दिखाई नहीं देता और स्थिर दर्पण में ही मुँह देखा जा सकता है, उसी प्रकार जब मन/चित्त के स्थिर होने से स्वभावों का घटता-बढ़ता टैम्प्रेचर सम हो जाता है व चेतना स्थिर हो जाती है तब ही अंतर्व्याप्त आत्मदर्शन नजर आता है। इसके विपरीत मन/चित्त के अस्थिर होने से स्वभावों का टैम्प्रेचर बिगड़ जाता है। इस तरह चेतना अस्थिर रहती है और हमें भीतर कुछ भी दिखाई नहीं देता। इस तरह मन/चित्त की चंचलता के कारण हम अपनी असीम क्षमताओं को निरर्थक गँवा नष्ट-भ्रष्ट कर देते हैं। इसलिए तो कहा गया है:-

'एक चित्त होकर कर्म करने वाले को सफलता मिलती है और दुविधा युक्त चित्त वाला नष्ट हो जाता है।'

क्योंकि उसे अपने यथार्थ आत्मस्वरूप की विस्मृति हो जाती है और बुद्धि मनुराज में जा गिरती है जिसके प्रभाववश इन्सान की पकड़ से परमार्थ का रास्ता छूट जाता है और वह मनोकामनाओं का गुलाम हो स्वार्थपर अवलड़ा रास्ता अपना, जीवन भर कठिनाईयाँ भोगता हुआ, मानव रूप में अपना यह अनमोल जन्म बरबाद कर, जन्म मरण के चक्रव्यूह में फँस जाता है।

स्पष्ट है सजनों विषय-विकार एकाग्रचित्तता के बाधक तत्व हैं। झूठ, कपट, चोरी, व्यभिचार, दुराचार आदि दूषित वृत्तियों के नष्ट हुए बिना मन/चित्त का एकाग्र होना कठिन है और मन/चित्त के एकाग्र हुए बिना आत्मसाक्षात्कार भी कठिन है। इस प्रकार एकाग्रचित्तता के लिए मानसिक सात्विकता यानि संकल्प की स्वच्छता अपेक्षित है। कहने का आशय यह है कि जब तक हमारी चित्तवृत्तियाँ विविध सन्दर्भों में एक साथ नियोजित रहती हैं, तब तक एकाग्रचित्तता नहीं बनती, किन्तु जब मन सब ओर से खिंचकर, सिमटकर केवल एक ही विषय का चिन्तन करता है, तब एकाग्रचित्तता की अवस्था आती है। इस प्रकार यह अनन्य चिन्तन की दशा है। इस अवस्था में मन/चित्त में किसी प्रकार की चंचलता नहीं रहती और आत्मतुष्ट समाहित एकाग्र चित्त पूर्ण स्थिरता को प्राप्त करता है। इस आशय से एकाग्रता का अर्थ हुआ समग्रता। यह वह कला है जिसके आते ही मन संकल्प रहित होने लगता है और आत्म-विश्वास के पनपने से सफलता निश्चित हो जाती है। इसलिए तो कर्म, भक्ति, ज्ञान, योग और सम्पूर्ण साधनों की सिद्धि का मूलमंत्र एकाग्रता को माना जाता है।

याद रखो विषय विशेष के प्रति अत्यधिक रुचि की उपस्थिति एकाग्रचित्तता की प्रथम अनिवार्य शर्त है क्योंकि मनुष्य अपनी रुचि के कार्य एकाग्रचित्त होकर करता है। इसी के साथ यह भी मानो कि अभ्यास और प्रयोग एकाग्रचित्तता को विकसित करने के सर्वोत्तम उपाय हैं। जैसा कि कहा भी गया है कि चित्त की एकाग्रता को, स्नायुओं के समान बढ़ाया या सुदृढ़ बनाया जा सकता है। नित्य के अभ्यास और प्रयोग से ये दोनों अधिकाधिक विकसित होते चले जाते हैं। अन्य शब्दों में मनुष्य जैसे-जैसे ख़्याल ध्यान वल व ध्यान प्रकाश वल कर, एकाग्रचित्तता का अभ्यास और प्रयोग करता है, वैसे-वैसे वह उत्तरोत्तर बढ़ती जाती है और लाभ प्रदान करती है। इसके अतिरिक्त चित्त की एकाग्रता शब्द ब्रह्म विचार धारण करने से आती है, मानसिक पवित्रता से प्राप्त होती है क्योंकि इससे बुद्धि स्थिर हो जाती है। सात्विक धारणा व मानसिक पवित्रता के बिना एकाग्रता का कोई मूल्य नहीं है।

स्पष्ट है कि एकाग्रचित्तता अभ्यास अर्जित गुण/मूल्य है। जिस प्रकार हम अर्जित सम्पत्ति-सामर्थ्य को विभिन्न रूपों में नियोजित-निवेशित करके लाभान्वित हो सकते हैं, उसी प्रकार एकाग्रचित्तता का महान मूल्य प्राप्त करके उससे अनेक क्षेत्रों में सफलताएँ प्राप्त कर सकते हैं। इसलिए तो एकाग्रचित्त संसार के किसी भी कार्य में असफल नहीं होते अपितु सर्वथा विजयी होते हैं।

इस आधार पर हम कह सकते हैं कि एकाग्रता एक उपयोगी सत्प्रवृत्ति है जिसके लिए आत्मनियन्त्रण व ध्यान-साधना अनिवार्य है। यदि कोई इस सत्प्रवृत्ति को अपने जीवन में ढाल ले तो उसका संकल्प कुसंगी, संगी व सजन हो जाता है, वृत्तियाँ व बुद्धि निर्मल हो जाती हैं, विचारशक्ति सुदृढ़ हो जाती है और वह असंभव कार्य स्वतः ही सिद्ध कर पाता है। तभी तो कहा गया है कि जो एकाग्रता को साधते हैं, निर्विकल्पता और समता को साधते हैं, उन्हें ही अतीन्द्रिय ज्ञान की प्राप्ति होती है। यहाँ स्पष्ट कर दें कि एकाग्रता और निर्विकल्पता में अंतर है। एकाग्रता से ख़्याल और ध्यान आत्मस्रोत पर टिकता जाता है यानि स्थिर होता जाता है। परिणामतः संकल्प स्वच्छ व सजन होता जाता है। परन्तु निर्विकल्पता शब्दातीत अवस्था है, संकल्प रहित अवस्था है। पूर्ण मौन की स्थिति है। यहाँ समभाव सध जाता है। इस तरह समभाव की फतह हो जाती है।

सारतः सजनों जान लो कि समस्त ज्ञान जो हमारे पास है चाहे वह बाहरी दुनियां का है या आंतरिक, उसे सिर्फ एक ही माध्यम द्वारा प्राप्त किया जा सकता है वह है मन-चित्त की एकाग्रता। बाहरी विज्ञान में मन की एकाग्रता से तात्पर्य उसे बाह्य चीजों पर केन्द्रित करना है और आन्तरिक विज्ञान में उसे स्वयं की तरफ मोड़ना है। मन की इसी एकाग्रता को योग कहते हैं। इस तरह मन-चित्त को बाह्य पदार्थों पर एकाग्र करने से संसार के साथ योग हो जाता है और अन्तरात्मा पर एकाग्र करने से आत्मेश्वर के साथ योग हो जाता है। जानो संसारी योग में वियोग सन्निहित होता है परन्तु परमात्मा के साथ योग से अमरता प्राप्त हो जाती है। यहाँ स्पष्ट कर दें कि चित्त की एकाग्रता योग की समाप्ति नहीं अपितु योग की शुरुआत है। जिस व्यक्ति में इस योग द्वारा

एकाग्रता की शक्ति विकसित हो जाती है उसकी सारी अंतर्निहित शक्ति केन्द्रित होती जाती है और वह केन्द्रित शक्ति विस्फोट करती है। जैसे किसी शिलाखंड को निकालने के लिए बारूद का विस्फोट किया जाता है वैसे ही शक्ति पर छाया अज्ञान आवरण हटाने के लिए यह विस्फोट होता है और अंतर्निहित सत्य प्रकट हो जाता है।

इस संदर्भ में हम मानते हैं कि मन अपनी प्रवृत्ति अनुसार विभिन्न वस्तुओं की ओर आकृष्ट होता है, उन तक ले जाता है, उनकी प्राप्ति की ओर दौड़ता है, परन्तु जानो यह इसका निम्न स्तर है और इससे व्यक्ति का पतन होता है। मन की एक उच्चतम अवस्था भी है, जब वह केवल एक परमश्रेष्ठ वस्तु (ब्रह्म सत्ता) का ग्रहण करता है और बाकी सबको पृथक कर देता है। जानो इसी का नाम समाधि है। समाधि से यहाँ तात्पर्य किसी विषय, वस्तु या विचार पर चित्त के पूर्णतः एकाग्र हो जाने से या चित्त के ब्रह्म पर केन्द्रित हो जाने से है। यह चित्त निरोध यानि विषय मुक्ति की व ध्यान की उच्चतम अवस्था है जिसके द्वारा ख्याल अपने सच्चे घर में स्थिर हो जाता है और जीव विश्राम को पाता है।

कहने का आशय यह है कि किसी भी विषय का ज्ञान तब तक नहीं प्राप्त किया जा सकता जब तक हमारा मन-चित्त उस विषय पर एकाग्र न हो जाए। अगर आत्म अध्ययन करना है तो भी यही प्रक्रिया अपनानी होगी यानि मन-चित्त को एकाग्र करना होगा। यदि ध्यान से देखो तो मनुष्य और पशुओं के बीच मुख्य अंतर इस एकाग्रता की शक्ति का ही है। एक जानवर में एकाग्रता की शक्ति बहुत कम होती है यानि वह बहुत देर किसी चीज पर एकाग्र नहीं रह सकता इसलिए प्रशिक्षण के बाद भी जो सिखाया जाता है उसे भूल जाता है। पर मनुष्य के पास एकाग्रता की बहुत शक्ति है। एकाग्रता की शक्ति पर अधिकार का अंतर ही मनुष्य और मनुष्य के बीच का अंतर स्थापित करता है। वे जो दूसरों की तुलना में ज्यादा एकाग्र हैं और पूर्ण मनोयोग से प्रत्येक कार्य करते हैं वे ही अपनी आत्मा को जान आत्मज्ञान प्राप्त कर सकते हैं और जो अपनी आत्मा को जान आत्मज्ञान प्राप्त करते हैं वही सभी आत्माओं के अतीत, वर्तमान और भविष्य को जानने वाले हो त्रिकालदर्शी नाम कहाते हैं। इसके

विपरीत जिनका चित्त एकाग्र नहीं होता वह सुनकर भी कुछ नहीं समझते। उदाहरणस्वरूप कक्षा में अध्यापक की बातें उसी की समझ में आती हैं, जो एकाग्रचित्त होकर उसे सुनता है। अन्य छात्र जिनमें एकाग्रचित्तता की कमी होती है, वे अध्यापकीय व्याख्यान सुनकर भी उसे ग्रहण नहीं कर पाते हैं, उससे लाभान्वित नहीं हो पाते हैं। इससे ज्ञात होता है कि एकाग्रचित्तता कार्यगत सफलता के साथ-साथ सीखने के क्षेत्र में भी महत्त्वपूर्ण है।

अंततः सजनो इस उपलब्धि के दृष्टिगत मन-चित्त की एकाग्रता साधने को जीवन लक्ष्य प्राप्ति हेतु आवश्यक मानो। इस हेतु अपनी कामनाओं को वशीभूत कर, कुविचारों का त्याग करो और प्रणव मंत्र के अजपा जाप द्वारा केवल अपनी ब्रह्म सत्ता को ग्रहण करो। इस तरह शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक सभी स्तरों पर, अनेकत्व में एकत्व की खोज करने में, मन की शक्तियों को एकाग्र करो। निश्चित ही इस प्रकार एकाग्र होने पर आपको लगने लगेगा कि जैसे आप उस अनंत शक्ति के अटूट भंडार के साथ मिल रहे हो जिससे इस ब्रह्मांड की उत्पत्ति हुई है। इस तरह मन-चित्त लय होता जाएगा और ब्रह्मांड के सभी बाहरी और आंतरिक सत्य प्रकट होने लगेंगे। फिर जैसे मंथन दूध में से मक्खन को बाहर ले आता है वैसे ही ध्यान एकाग्रता, निर्विकल्पता, आत्मा में व्याप्त परब्रह्म को प्रकट कर देगी। आत्मस्वरूप का प्राकट्न, समस्त संकल्पों की समाप्ति यही सजनों समस्त ज्ञान का सार है। अतः एकाग्रता की शक्ति को ज्ञान के खजाने की एकमात्र कुंजी मानो और आत्मज्ञानी बन जगत पर विजय प्राप्त कर श्रेष्ठ मानव कहलाओ।

आप सब ऐसा करने में सफल हो सको इसीलिए सजनों प्रति रविवार सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ से उद्धृत भजनों के भावाशय बता व समझा कर आपको एकाग्रचित्त होने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। इसी श्रृंखला में आओ अब आगे बढ़ते हैं और जानते हैं कि आज का पहला भजन कौन सा है:-

भजन न० 61
महाबीर जी दे चरणां तो वारी प्यारियाँ

1. सजनों जानो कि केवल महाबीर जी ही कलुकाल में भटके मानवों को सत्य-धर्म का निष्काम भक्ति भाव विधिवत् सिखा पुनः सीधे रास्ते पर ला सकते हैं। इसलिए उनकी चरण-शरण में आ व उनके वचनों की पालना करते हुए उन्हें प्रसन्न कर लो व आत्मज्ञान प्राप्त कर परोपकार प्रवृत्ति में ढल जाओ। ऐसा पुरुषार्थ दिखाना उत्तम पुरुष बनकर जगत में अकर्त्ता भाव से विचरने के योग्य बनने की बात मानो।

2. सजनों संसार संग दोस्ती लगा, अज्ञानता के प्रभाव से अचेतन अवस्था को प्राप्त होने पर, जो जन्म-जन्मांतरों से गहरी निद्रा में सोए हुए हो, उसे त्याग अब जाग्रति में आ जाओ। इस प्रकार हिम्मत दिखाओ और अविलम्ब अविचारयुक्त अवलड़े रास्ते पर चलना छोड़ दो और महाबीर जी के उचित मार्गदर्शन में बने रह विचारयुक्त सीधे व सरल रास्ते पर आ जाओ। ऐसा सुनिश्चित करने पर ही जो किश्ती आज संसार समुद्र में डोल रही है वह भवसागर से पार उतर जाएगी।

3. इस कल्याणकारी मकसद की सिद्धि हेतु महाबीर जी के अनुग्रह को दृष्टिगत रखते हुए व उनका दिन रात गुणगान करते हुए उन्हें अपने हृदय में बसा लो। जानो सजनों उन तेजधारी की अवर्णनीय अलौकिक छवि जब हृदय में बस जाएगी तो आपके मन में सूरजों का सूरज चढ़ पड़ेगा। ऐसा विचित्र होने पर आपका हृदय प्रफुल्लित होगा और मुख चमक उठेगा।

4. जानो इस अवस्था को प्राप्त होने पर स्वतः ही आपका ख़्याल-ध्यान हृदय प्रकाशित आत्मस्वरूप के साथ जा जुड़ेगा। ऐसा अनुभव होने पर अगर आपने खुद पर नियन्त्रण रखते हुए, हृदय प्रकट यथार्थता को अपनी वृत्ति-स्मृति व स्वभावों के ताने बाने में उतार लिया तो आप निश्चित रूप से सदाचारिता में ढल जाओगे और श्रेष्ठ पुरुष कहलाओगे।

5. ऐसा श्रेष्ठ मानव बन जगत विजयी होने हेतु हमारी हाथ जोड़ कर प्रार्थना है कि अब तो होश संभालो और जिस परमेश्वर का ऋषि मुनि भी अंत नहीं पा सकते उन संग अखंडता से नाता जोड़ लो। ए विध् अपनी मानसिक शक्ति को

चेतनायुक्त बना स्थिर बुद्धि हो जाओ और महाबीर जी के चरणों में दिल से बने रह व इस जगत में निष्काम सेवा भाव से विचरते हुए अपने जीवन का बिगड़ा खेल संवार लो।

भजन न॰ 62
हुण लग गई लगन महाबीर जी दे नाल

1. सजनों आत्मोन्नति हेतु सबसे पहले दिल में द्वि-द्वेष के भाव में उलझाने वाले स्वार्थपर रास्ते को छोड़ने का संकल्प लो और फिर मन में परमार्थ के विचारयुक्त रास्ते पर अग्रसर होने की लगन जाग्रत करो। तत्पश्चात् महाबीर जी का ध्यान लगाते हुए इस इंसानियत के कार्य की सिद्धि हेतु करबद्ध प्रार्थना करो।

2. उनकी मेहर प्राप्त होने पर अपना ध्यान उनके प्रति स्थिर रखते हुए आत्मेश्वर संग स्नेह सम्बन्ध स्थापित करो। तत्पश्चात् वैराग्य भाव से ईश्वर के प्रति विशुद्ध प्रेम रखते हुए उनके साँवले चरणों का प्यार प्राप्त करने की याचना कर, जगत के सब कार्य व्यवहार नीतिसंगत संकल्प रहित होकर सम्पन्न करो।

3. जानो अगर ऐसा करने में समर्थ हो गए तो आपका मन हर क्षण प्रभु में लीन रहेगा और अन्दर सद्-विचारों का विकास होगा। हृदय में ऐसे सकारात्मक वातावरण के निर्मित होते ही आपके लिए सम, संतोष व शास्त्र के विचारों पर स्थिरता से बने रह उन्हें आत्मसात् करना सरल व सहज हो जाएगा।

4. जब आप ऐसे योग्य व्यक्ति बन गए अर्थात् आपकी सुरत अखंडता से शब्द संग जुड़ गई तो आपके विशुद्ध हृदय में परमेश्वर की झांकी बस जाएगी। ऐसा होने पर आपके स्वाभाविक रूप में सकारात्मक हितकर परिवर्तन आएगा और आप सांसारिक स्वभाव छोड़ आत्मीयता युक्त स्वभाव अपना जगत उद्धार करते हुए अपना जीवन सँवार लोगे।

5. सजनों यकायक इस स्वाभाविक परिवर्तन के सद्-प्रभाव से आपको कुसंग

में बने रहना नहीं भाएगा और ए विध् आप सत्संगति में बने रह अपना संकल्प स्वच्छ, जिह्वा स्वतन्त्र व दृष्टि कंचन कर लोगे। सजनों इसे अपने आप में अध्यात्म के रास्ते पर स्थिरता से बने रहने हेतु तप मानो।

इस महत्ता के दृष्टिगत हम सबसे प्रार्थना करते हैं कि विषयों के प्रति इच्छाओं का विरोध करते हुए व ब्रह्म शब्द विचारों पर बने रहते हुए अपनी वृत्ति-स्मृति, बुद्धि व भाव स्वभाव रूपी बाणे को निर्मल कर ईश्वर सम पवित्र हो जाओ।

भजन न० 63
अज्ञानी चुगलियाँ लांदा

1. सजनों अपना व्यक्तिगत रूप से आत्मनिरीक्षण करो कि कहीं सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ पास होते हुए और नित्य प्रति सत्संग में आकर उसमें कथित सद्-विचारों को सुनने समझने के पश्चात् भी हमारा व्यावहारिक रूप अज्ञानियों जैसा तो नहीं है? याद रखो अगर अपने यथार्थ तत्त्व की जानकारी रखते हो तो आप विवेकशक्ति द्वारा जगतीय वस्तुओं और विषयों का यथार्थ ज्ञान रखने वाले सशक्त ज्ञानी हो वरना अविवेकी जड़ बुद्धि, पीठ पीछे दूसरों की बुराई करने वाले निंदक व मूर्ख इंसान यानि निर्बोध ज्ञान भ्रष्ट अज्ञानी हो।

2. अगर आपकी गणना अज्ञानियों में आती है तो परम पुरुषार्थ दिखा आत्मतत्त्व की सार पाने वाले आत्मज्ञानी बनो और जीवन के विचारयुक्त सवलड़े रास्ते पर प्रशस्त हो जाओ। अगर ऐसा सुनिश्चित न किया तो आत्मा-परमात्मा की अभेदता का सत्य बोध कभी नहीं कर पाओगे और मोहपाश में उलझ अविचारयुक्त कवलड़े रास्ते पर चलने वाले अज्ञानी कहलाओगे और अंत विनाश को प्राप्त हो जाओगे।

3. जानो एक अज्ञानी सत्यबोध करने के स्थान पर कई-कई प्रपंच रचा अपने व अपनों के जीवन में खुद बाधाएँ खड़ी करता हुआ व निंदा करने या निंदा सुनने में ही अपना अनमोल जीवन निरर्थक गँवा बैठता है। यही नहीं वह तो अपने संगी साथियों की बातें इधर की उधर और उधर की इधर लगा घर-घर में

झगड़े पवा तमाशे देखने में ही गर्व अनुभव करता है व इसी काम में अपना पूरा जीवन व्यर्थ व्यतीत कर देता है।

4. सजनों इस तथ्य के दृष्टिगत जाग्रति में आओ और जड़ता को प्राप्त हो जन्म मरण के चक्रव्यूह में फँसने के स्थान पर नियमित रूप से सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ समझदारी से पढ़ते हुए अपना जीवन जीने का नजरिया व व्यावहारिक रूप सकारात्मक बना लो। जानो ऐसा पुरुषार्थ दिखाना ज्ञानशून्यता से उबर व सत्य को धारण करते हुए आत्मस्मृति में आ श्रेष्ठ मानव बनने की बात है।

5. अंत में जानो कि बुरी करनी का बुरा ही नतीजा निकलता है। इसलिए मानो कि जो इंसान ऊपरलिखित निकृष्ट भाव-स्वभावों के रस में मस्त रहता है वह अपने जीवन का सारा अनमोल समय लिड जैसा निकृष्ट पदार्थ खरीद करने में ही लगा देता है और अंत लोकनिदंक बन मौत को प्राप्त हो जाता है। इसलिए अपने जीवन कल्याण हेतु आत्मिक ज्ञान प्राप्ति के प्रति उमंग व उत्साह पैदा कर विद्वान बन जाओ और परोपकार कमाते हुए श्रेष्ठ मानव कहलाने में ही अपनी शान समझो।

अंत में सजनों बताए तथ्यों के आधार पर आत्मनिरीक्षण करो और चंचलता छोड़ एकाग्रचित्त हो जाओ। ए विध् अपने जीवन के सारे कारज सिद्ध कर महान पुरुष बन जाओ।

आज का विचार

मानोः-

श्री राम हर अंदर वस्से, तुसां ढूँढन जंगल मत जावनां

क्योंकि

हर अंदर है ओ जोत इलाही, मन मंदिर टिकाणां है जानना

दिनाँक 25 अगस्त 2019 का सबक़

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान
अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों ध्यान दो जब हम जगत में गलतान, नादान व कमजोर बुद्धिहीन भ्रमित इंसान, सच्चेपातशाह जी की विशेष कृपा प्राप्त होने पर, इस अवस्था को प्राप्त करने में, समर्थ हो सकते हैं तो आप, आज कलुकाल के प्रभाववश, जिस भी निम्नतम अवस्था को प्राप्त हो चुके हो, सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ पास होते हुए क्योंकर उनकी ऐसी ही विशेष कृपा प्राप्त नहीं कर सकते और सांसारिक वृत्ति छोड़, परमार्थिक वृत्ति नहीं अपना सकते?

जानो इसके प्रति आवश्यकता केवल एक आत्मविश्वासी इंसान की तरह मन में तीव्र उमंग व समुचित उत्साह पैदा करने की है। यहाँ हम यह भी बताना चाहते हैं कि जैसे ही आपकी यह उमंग व उत्साह लगन में परिवर्तित हो जाएगा तो आपके अन्दर अपने वास्तविक स्वरूप को जानने की अग्न यानि उत्कंठा स्वयंमेव पैदा हो जाएगी। ऐसा शुभ होते ही आपके मन में सांसारिक स्वभाव छोड़, बुरे से अच्छा इंसान बनने के प्रति पुरुषार्थ दिखाने का भाव जाग्रत होगा और आप जगतीय फुरनों में जकड़े हुए अपने ख़्याल को जगत की तरफ से मोड़, निज आत्मस्वरूप के साथ जोड़ने में समर्थ हो जाओगे। इस तरह जब समस्त विकृतियाँ व ताप-संताप समाप्त हो जाएंगे तो फिर आप सहजता से अपने अजर-अमर वास्तविक स्वरूप का अनुभव करते हुए कह उठोगे कि 'ओ३म अमर है आत्मा और आत्मा में है परमात्मा'।

यह सर्वोत्तम भाव मन में स्थित होते ही सजनों आप निम्नतम अवस्था से उत्तम अवस्था की ओर बढ़ जाओगे यानि मनुराज की अचेतन अवस्था से उबर, उच्च बुद्धि, उच्च ख़्याल हो चेतन अवस्था को प्राप्त हो जाओगे और शीघ्रता-अति-शीघ्र मानसिक रूप से ताकतवर हो निज आत्मतत्व का अनुभव करने के प्रति इस तरह मग्न हो जाओगे कि संसार में भटके हुए आपके नादान मन को फिर सदा प्रभु में लीन रहना भाने लगेगा। इस तरह आपकी सुरत पहले रानी और फिर पटरानी बनकर सर्गुण-निर्गुण के नजारों का आनन्द उठा अपने सच्चे घर में ठहर जाएगी। फिर जब इस उच्च अवस्था में स्थिर रहते हुए आपके मन को आनन्द का अनुभव होने लगेगा तो वह स्वतः ही कलुकाल के कलुषित स्वभावों से किनारा कर, सतवस्तु के निर्मल स्वभावों को अपना, स्थाई रूप से सजन भाव अपना लेगा।

इस प्रकार आप में जब, सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में वर्णित शब्द ब्रह्म विचारों को, एकाग्रचित्तता से ग्रहण कर व उन्हें आत्मविश्वास के साथ यथोचित ढंग से सर्वविध् आत्मसात् करने का भाव जाग्रत हो जाएगा तो समझ लेना कि आपके मन की सारी मैल धुल गई। ऐसा मंगलमय परिणाम प्राप्त होने पर सजनों मान लेना कि अब आप ही के पराक्रम द्वारा आपका मलीन मन, पुनः पवित्रता को प्राप्त हो, मंदिर की तरह पावन हो गया है। इसलिए अब आपके लिए अपना स्वाभाविक रूप, समभाव-समदृष्टि की युक्ति अनुसार बना कर, इस मायावी जगत में निर्लिप्तता से विचरना किसी प्रकार से भी कोई कठिन कार्य नहीं है।

इस अवस्था को प्राप्त होने पर सजनों आपको अपने यथार्थ बल की प्राप्ति होगी जिसके सद्प्रभाव से आप के लिए एक स्थिर बुद्धि शक्तिशाली इंसान की तरह ताकतवर होकर, शब्द ब्रह्म विचारों को धारण कर व उन्हें युक्तिसंगत प्रयोग में लाते हुए अपने कुसंगी संकल्प को संगी बनाना सहज हो जाएगा। फिर सजनों जैसे ही आपका कुसंगी संकल्प संगी बन गया तो जान लेना कि आपके संतोष, धैर्य और सच्चाई, धर्म के सवाल हल हो गए और अब आपके लिए सदा सम अवस्था में सुदृढ़ता से बने रहना कोई बड़ी बात नहीं। ऐसा होने पर सजनों सम का कोई सवाल नहीं रहेगा यानि आप परमात्मा समरूप हो जाओगे और

परमात्मा सम गुण, बल व शक्ति के अधिकारी बन अपनी बनाई कुदरत में कुछ ऐसा नहीं करोगे जिसका किसी पर दुष्प्रभाव पड़े। ऐसा इसलिए क्योंकि आपको लगने लगेगा कि सब मेरा ही तो स्वरूप है और मैं ही सबका मालिक हूँ। इस तरह कुल दुनियां के मालिक बन आप अमीरों के अमीर हो जाओगे।

इस संदर्भ में सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार जानो कि जब सजन श्री शहनशाह महाबीर जी के वचनों पर युक्तिसंगत चलते हुए सम का कोई सवाल नहीं रहता तो इंसान नौजवान युवावस्था को प्राप्त हो इस तरह आत्मनिर्भर हो जाता है कि फिर उसे अपने जीवन को सही दिशा में साधे रखने के प्रति किसी अन्य संसारी से किसी प्रकार का भी कोई ज्ञान प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं रहती। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि मस्तक की ताकी खुल जाती है और वहीं से समुचित सत्य आत्मिक ज्ञान प्राप्त होता है। इस तरह सजनों इस आत्मिक ज्ञान को धारण कर उसकी भक्ति प्रबल व शक्ति ताकतवर हो जाती है और वह उच्च बुद्धि, उच्च ख़्याल, सदा परमार्थ वृत्ति में स्थिर बने रह, अपनी स्मृति, बुद्धि व स्वभावों के ताने बाणे को निर्मलता में साधे रखने में सक्षम हो जाता है। ऐसा होने पर सजनों इस मायावी जगत की कोई भी ताकत किसी विध् भी उस के निर्मल मन में काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार रूपी विषय विकारों को विकसित नहीं कर पाती। कहने का तात्पर्य यह है कि फिर माया उस जितेन्द्रिय के मन की चेतन अवस्था का ह्रास कर यानि उसे अचेतन बना मनुराज का वासी नहीं बना पाती। सजनों मानो कि ऐसा अदम्य पुरुषार्थ दिखाने पर ही हमारे शारीरिक स्वभावों की सफाई हो सकती है और हम बैहरूनी वृत्ति से अन्दरूनी वृत्ति में ढल, सहजता से अपनी जिह्वा को स्वतन्त्र व संकल्प को स्वच्छ कर उसको सजन और संगी बना सकते हैं। जानते हो ऐसे इंसान को देखकर फिर दुनियां क्या कहती है?

मौन।

वह कहती है कि इंसान हो तो ऐसा। अंग्रेज़ी में कहें तो वह कहती है - He is the real man.

इस तथ्य के दृष्टिगत ही सजनों अपने मन को संकल्प रहित अवस्था में साधने के योग्य बनाने हेतु, सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ बार-बार, हमें संकल्प को स्वच्छ व संगी बनाने का आवाहन् देते हुए कह रहा है कि 'कलुकाल के प्रभाव से शारीरिक स्वभावों में उलझ, बुद्धिहीनों की तरह यह अनमोल जीवन बरबाद करने के स्थान पर, अपने संकल्प को संगी बना, उसे पूर्ण रूप से सजन बना लो' यानि लेश मात्र भी नकारात्मकता को अपने अन्दर प्रवेश मत करने दो। जानो बस इतना सा पुरुषार्थ अकलमंदी से दिखाने पर, घर-परिवार और कुल संसार का हर जीव, आपका सजन बन जाएगा। जैसा कि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा भी गया हैः-

सजन हम है सजन तुम हो, सजन दृष्टि मान लवो।
सजन मानो सजन जानो, सजन बुद्धि पहिचान लवो।।

इस संदर्भ में ऐसा सुनिश्चित करने हेतु, दिलचस्पी में आकर मन-चित्त लगाकर मेहनत करने से न सकुचाओ अपितु हिम्मत दिखा आत्मीयता अनुकूल ढल जाओ व रोने-झुखने के स्वभाव से छुटकारा पा सतवस्तु के इन्सान कहलाओ। ए विध् अपने चंचल मन को पुनः शांत अवस्था में साध लो और जनचर, बनचर, जड़-चेतन कैसे एक रूप हैं, इस सत्य को जान आत्मज्ञान प्राप्त कर लो। जानो आपके हृदय में इस सत्य के स्थित होते ही आपकी दृष्टि कंचन हो जाएगी और आप आत्मतुष्ट हो प्रसन्नचित्त हो जाओगे। ऐसा होने पर, आपके भीतर प्रतिबिम्ब के रूप में जो अन्दर का ख़्याल यानि स्त्री रूप में सुरत है, वह स्वतः ही ताकतवर होकर, नश्वर शरीरों के संग-साथ बने रहने के स्थान पर, शब्द ब्रह्म का अटल संग प्राप्त करने के लिए, पूर्ण आत्मज्ञान प्राप्त करने हेतु तत्पर हो जाएगी। अतः आप भी आत्मकल्याण हेतु ऐसा सुनिश्चित कर अविलम्ब जीवन लक्ष्य को समयबद्ध सिद्ध करने हेतु तत्पर हो जाना।

जानो इस लक्ष्य को समयबद्ध सिद्ध कर पाने के योग्य बनने के प्रति निरंतर विधिवत् यत्नशील बने रह आत्मज्ञान प्राप्त करना ही होगा। ऐसा इसलिए क्योंकि आत्मज्ञानी बनने पर ही, हम जीवों में विद्यमान चैतन्य को पहचान सकते

हैं यानि आत्मा को आत्मा का यथार्थ बोध होने पर ही हम, अपने मन को ब्रह्म में लीन रख, जगत से आजाद अवस्था में, स्थिरता से बने रह एकभाव हो सकते हैं। अन्य शब्दों में इसी तरह हम अपनी इन्द्रियों व मन को अपने वश में रखते हुए, जगत विजयी हो मोक्ष को प्राप्त कर, ब्रह्म के साक्षात्कार से मिलने वाला आनन्द प्राप्त करने में सफल हो सकते हैं।

इस परिप्रेक्ष्य में सजनों इसी अजर अमर अवस्था को प्राप्त करने हेतु सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में वर्णित अनेक युक्तियों द्वारा हमें बार-बार अपना जीवन लक्ष्य पाने हेतु उत्साहित किया जा रहा है ताकि हम अपने वास्तविक आत्मिक स्वरूप की अनुभूति कर, आजीवन सत्य-धर्म के निष्काम रास्ते पर चलते हुए व सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की तरह समर्पित भाव से परमेश्वर की अटल आज्ञाओं का यथा पालन करते हुए, जो कुछ भी इस संसार में करने के लिए भेजे गए हैं उस कारज को सिद्ध करने में जुट जाएं। इस प्रकार उनके सभी कारज समयबद्ध सिद्ध करने वाले सुपुत्र कहला, पुनः अपने सच्चे घर पहुँच सुरत शब्द के मिलन का यानि एक निगाह एक दृष्टि, एक दृष्टि एक दर्शन होकर, दिव्य दर्शन में स्थित होने का अद्वितीय अलौकिक आनन्द उठाएं व अपना जीवन सकार्थ कर लें।

इस संदर्भ में हम मानते हैं कि आप भी सब दिल ही दिल में चाहते होंगे कि ऐसा ही हो। इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए ही सजनों ध्यान कक्ष में हर रविवार को लगने वाली कक्षा का रूप बदलना आवश्यक समझा गया है। ऐसा इसलिए क्योंकि केवल छपे या लिखे हुए किसी विषय विशेष के ज्ञान को बोल कर या सुना कर, इंसान के हृदय में नहीं टिकाया जा सकता अपितु इस क्रिया द्वारा उसे उस लिखे या सुने हुए ज्ञान को अपने जीवन व्यवहार में यथा उतारने में पारंगत बन कैसे वांछित लाभ प्राप्त करना होता है, उसके लिए भी युक्तिसंगत तैयार करने की आवश्यकता होती है।

इस परिप्रेक्ष्य में सजनों जानो कि किसी ज्ञान को जीवन में आत्मसात् करने के योग्य बनने के लिए उस पढ़े या सुने हुए ज्ञान को स्व अध्ययन द्वारा खुद

एकाग्रचित्तता से समझना होता है और उनके भावार्थों को हृदय में टिका लेना होता है। इस योग्यता को प्राप्त करने के लिए मन से उस विशेष ज्ञान के प्रति हर भ्रांति मिटाने के लिए, लिखित ज्ञान का बार-बार अध्ययन करते हुए उस ज्ञान को अपने मन में धर्मरूप में स्थित कर लेना होता है। जानो ऐसा सुनिश्चित करने पर सजन स्वतः ही कर्त्तव्यपरायण बन सुकुर्मों में प्रवृत्त हो जाता है। सजनों अगर हम भी ऐसे बुद्धिजीवी बनना चाहते हैं तो हमें भी खुद के अन्दर सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित आत्मिक ज्ञान प्राप्त करने के प्रति विशेष रुचि पैदा कर, खुद को समय रहते ही आत्मज्ञानी बनने के लिए प्रोत्साहित करना होगा। अंत में हम जानते व मानते हैं कि यह हितकर बदलाव सबको स्वीकार्य होगा और इसी शुभ कार्य के प्रति अग्रसर होने के लिए हमें क्या विधि अपनानी है वह आगामी कक्षा में सविस्तार समझाई जाएगी।

आज का विचार

ज्योति स्वरूप का प्रकाश पाने हेतु पकड़ो अपना आप
खावन पीवन विच दिन न बिताइयो, निद्रा विच न रात।
नाम ध्यान विच इस्थर रहियो, जपियो अजपा जाप।।

दिनाँक 01 सितम्बर 2019 का सबक़

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,
उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहोः-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों गत सप्ताह के संदर्भ में जो अब बताया जाने लगा है उसे वैराग्य भाव से, कन धर देकर ध्यान से सुनो व इस सर्वहितकारी बात को समझने के लिए, एकाग्रचित्त होकर, प्रयत्नशील होने का दृढ़ संकल्प लो।

जैसा कि सजनों आप सब जानते ही हैं कि इस वर्ष आपको, सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अंतर्गत भजनों में विदित, सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की युक्ति अनुरूप, सेवा भाव से विधिवत् उपासना करते हुए, जीवन लक्ष्य प्राप्ति के महान संकल्प को पूर्ण कर, अपने मन को संकल्प रहित अवस्था में इस तरह साधने के लिए कहा गया कि संसार में विचरते समय किसी विध् भी कामुक भाव आपके मन में घर कर, आपको क्रोधी, लोभी बना, मोह और अहंकार में न फँसा सके। ऐसा समर्थवान बनाने के लिए सजनों आपको शास्त्र विदित परमात्मा स्तुति में रचित, हर भजन के भावार्थ से, सत्संग में परिचित कराने के साथ-साथ, ध्यान-कक्ष में उनमें से अपनाने योग्य विचारों को भी गहनता से बताया व समझाया गया ताकि आप सबको इस पठन क्रिया द्वारा जो भी आत्मोद्धार हेतु ज्ञान प्राप्त हुआ है, आप सब दिलचस्पी में आ, परमात्मा का श्रद्धापूर्ण स्मरण यानि गुण-गाथा गाते हुए और भजन-पूजन द्वारा आत्मनिवेदन करते हुए व उनकी हर

आज्ञा का यथा पालन करते हुए, उस सृष्टि के वाली से अपनी सुरत का अटूट नाता जोड़ लो। ऐसा ही हो सजनों इस हेतु, इस पठन क्रिया द्वारा, विचारसंगत आपके मन को जगतीय विषयों से हटा व परमात्मा के प्रति प्रेम बढ़ा, अपने ख़्याल को आत्मप्रकाश में ध्यान स्थिर रखते हुए, उस वधाता की ओर अति ही गतिशीलता से आगे बढ़, निष्काम भाव से अपना सर्वस्व निछावर करने व उस परमशक्ति के प्रति पूर्णतः समर्पित हो जाने का बार-बार आवाहन दिया गया।

सजनों यहाँ हम यह भी बताना चाहते हैं कि यह सब खेल आपको केवल भजनीक यानि भजन गा कर उपदेश करने वाला बनाने के लिए नहीं रचा गया अपितु इस परमार्थी खेल के द्वारा आपको इस सत्य से परिचित कराया गया कि इस सर्व ब्रह्मांड में केवल मिथ्या संसार का रचनाकार ब्रह्म ही भजने योग्य है और हर इंसान को अपने मन में ब्रह्म भाव जाग्रत करने हेतु, निष्काम भाव से केवल उसी को ही भजते हुए उसी की ही गुण शक्ति ग्रहण करनी चाहिए। इस संदर्भ में सजनों इस तथ्य का सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित भजनावली के अंतर्गत इस प्रकार वर्णन हैः-

'भजन वी तुसां आप बताया, लिखन वेले वी तूं नज़र आया।
आप ही पढ़े आप ही अर्थ करे, आप ही सुनने आया',

उपरोक्त के दृष्टिगत सजनों दुःख व भय भंजक महाबीर जी के इस अचरज खेल को समझो और उन्हें प्रसन्न कर उनका दिव्य साक्षात्कार कर लो। हाँ, फिर ऐसा सुनिश्चित करने हेतु, अपने आप को उस श्रद्धेय के प्रति पूर्णतया समर्पित कर, जीवन का हर पल उन्हीं के आश्रय में बिताते हुए यानि उन्हीं के हुकम अनुसार उनकी हर आज्ञा का अटलता से, सत्य-धर्म अनुसार पालन करते हुए, उनकी समीपता प्राप्त कर आत्मतुष्ट हो जाओ। इस उच्च अवस्था को प्राप्त कर सजनों यदि आप अपने मस्तक की ताकी खोल, शीघ्रता-अति-शीघ्र आत्मपरिचय पाने के प्रति मन में आत्मेश्वर के प्रति पूरा विश्वास रखते हुए, इन भजनों को गाना स्वीकार लोगे तो स्वतः ही आपके मन में भगवान के

भजन से प्राप्त होने वाले आनन्द का अनुभव होना आरम्भ हो जाएगा। यकीन मानो सजनों कलुकाल के समय में ऐसा विचित्र होते ही आपको इस दुनियां के समस्त भौतिक सुख फीके लगने लगेंगे। कहने का आशय यह है कि ऐसा मंगलमय होने पर आपका मन कदाचित् जगत के साथ जुड़ने की भूल नहीं करेगा और सहर्ष परमात्मा की आज्ञाओं का पालन करते हुए, अपने जीवन का उद्देश्य सिद्ध करने के लिए तत्पर हो जाएगा। इस तरह शांत अवस्था को प्राप्त हुआ आपका मन 'काम-भाव' से मुक्ति पा जाएगा और इन्द्रियों द्वारा निष्काम भाव से केवल शास्त्रविहित कर्म कराते हुए आपकी मुक्ति का कारण बनेगा। इस तथ्य के दृष्टिगत ही सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा गया है:-

'मन मिटया ते होया है आनन्द मालका,
तेरी जोति हिम कुल जहान मालका

जानों सजनों यह अपने आप में मन की सत्ता समाप्त हो जाने के कारण जीव के लिए परमानन्द को प्राप्त होने की बात है। अतः इस मस्ती के आलम का वर्णन अकथनीय है।

इसी परिप्रेक्ष्य में सजनों आगे जानो कि इस परमानन्द की प्राप्ति करने हेतु हमें कुदरती वेद शास्त्रों में विदित परमात्मा की अटल आज्ञाओं का यथा पालन करते हुए व मानव-धर्म पर स्थिर बने रहते हुए, निष्काम भाव से मन में उस आराध्य के प्रति पूर्ण श्रद्धापूर्वक सम्मान का भाव स्थापित करना होगा। जानो ऐसा पुरुषार्थ दिखाने पर ही हम आत्मिक रूप से इतने बलवान बन जाएंगे कि हमारे लिए जन्म-मरण, रोग-सोग, खुशी-गमी, मान-अपमान, अमीरी-गरीबी यानि दुःख-सुख में, समभाव पर स्थित बने रह, उस उपास्य की प्रत्येक आज्ञा का यथा निर्भीकता व आत्मविश्वास के साथ पालन करना सहज हो जाएगा। कहने का तात्पर्य यह है कि फिर हमारे मन को, सांसारिक विषयों में आसक्त हो, इन्द्रिय-भोगों द्वारा विकारों को अपने स्वभावों के अंतर्गत कर, जन्म-मरण की पीड़ा भोगने के स्थान पर, केवल आत्मोद्धार के निमित्त आत्मिक ज्ञानी बनने हेतु आध्यात्मिक विद्या ग्रहण कर व अपने वास्तविक ज्ञान, गुण व शक्ति

से परिचित हो, हर पल परमात्मा की सेवा में रत रहना ही भाएगा। ऐसा होने पर सजनों इस जगत में जो भी करोगे निष्काम भाव से सर्वहित के लिए ही करोगे व कर्मगति से आजाद हो जीवन मुक्त हो जाओगे यानि अपने सच्चे घर पहुँच विश्राम को पाओगे।

सजनों आप सबको इस परम अर्थ के लक्ष्य की सिद्धि के प्रति समर्थ बनाने के लिए ही तो सत्संग के जरिए सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित शब्द ब्रह्म विचारों को विधिवत् ढंग से आप तक पहुँचाने का यत्न किया जाता है और इसी प्रकार ध्यान कक्ष में कई विध् उन ब्रह्म विचारों को धारण कर, स्थिर बुद्धि होकर उन जीवनोपयोगी विचारों को आत्मसात् कर, वांछित लाभ उठाने के उपाय गहनता से समझाए जाते हैं। निःसंदेह ऐसा करने के पीछे अभिप्राय यही है कि आप चेतनायुक्त हो आत्मस्मृति में आ जाओ और मानसिक रूप से स्वस्थ और शक्तिशाली हो यानि अपने मन व इन्द्रियों को वश में रखते हुए, इस जगत में निष्पाप विचरने के योग्य बन 'ईश्वर है अपना आप' के विचार पर खड़े हो जाओ।

जानो सजनों यह युक्ति अपनाना इसलिए भी उचित समझा गया ताकि आप आत्मिक ज्ञान की पढ़ाई कर व्यावहारिक रूप में इस तरह आत्मनिर्भर हो जाओ कि आपका ख़्याल व ध्यान किसी विध् भी संसार की तरफ न जाए और आप हर दम अपने सच्चे घर में स्थित रहते हुए निज आत्मस्वरूप को पा लो। सजनों आप सब मानोगे कि यही एकमात्र युक्ति है ब्रह्म जीव के खेले को जानने की और एकरूपता में आ, समभाव-समदृष्टि के सबक़ अनुसार परस्पर सजन भाव का व्यवहार करते हुए निष्कामी बन परोपकारी वृत्ति में ढलने की।

इस संदर्भ में सजनों आत्मोन्नति के लिए किए गए इन तमाम प्रयासों के बावजूद अब तक पाए गए परिणामों से समझ आ रहा है कि चाहे हर यत्न द्वारा, आप तक ब्रह्म शब्द विचारों को उचित ढंग से पहुँचाने का प्रयास ध्यान कक्ष से चल रहा है पर आप में से अधिकतर अभी भी अपने ख़्याल-ध्यान को मनुराज से निकाल, फुरने की सृष्टि से आजाद करने में असक्षम हैं। शायद इसलिए ऐसे

सजन सूरजों के सूरज के प्रकाश को ग्रहण कर आत्मस्थित नहीं हो पा रहे हैं और समझाने के बावजूद भी शारीरिक भाव-स्वभावों में फँसे रह, रोते-झुखते रहते हैं।

इस विषय में सजनों हमारा आप सब से विनम्र निवेदन है कि अपने घर में सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के होते हुए भी, आत्मघाती न बनो। आपको इस धृष्टता से बचाने हेतु ही सजनों अब दृढ़ संकल्प होकर, समझदारी से परमार्थ की ओर बढ़ते हुए, अपने जीवन का महान मकसद इसी जीवन में सिद्ध करने के लिए, स्व पठन क्रिया आरम्भ करने का निश्चय लिया गया है। इस संदर्भ में हमारे साथ आप भी मानोगे कि एकाग्रचित्तता से स्व अध्ययन करने पर ही आप कुदरती शास्त्र में विदित ज्ञान की उचित ढंग से प्राप्ति कर सकोगे और अपने जीवन उद्धार के उद्देश्य की प्राप्ति को साकार करने के लिए, उस शास्त्र में सहज व सरल भाव से वर्णित सत्य के प्रतीक ब्रह्म विचारों पर गंभीर विचार करते हुए, यानि जाँच-पड़ताल द्वारा अपने मन और इन्द्रियों को पूरी तरह वशीभूत रखते हुए, उन शास्त्र विहित् विचारों का, अपने वास्तविक जीवन उन्नति के प्रति योग्यता से अनुशीलन करने में समर्थ हो पाओगे और विवेकशील बन जाओगे।

यही नहीं यकीन मानो कि इस क्रिया द्वारा जब मन को प्रिय लगने वाला यह विशुद्ध ज्ञान प्राप्त हो जाएगा तो सभी मनोरथ सिद्ध हो जाएंगे। इस प्रकार मनगढ़ंत कल्पित सांसारिक ज्ञान से विकलित मन की सकल अभिलाषाएँ पूरी होने पर वह पूर्णतया उद्वेग रहित होकर शांत हो जाएगा। परिणामतः आप का ख़्याल व ध्यान जगत की कल्पना से रहित हो प्रभु में स्थिर हो जाएगा। तत्पश्चात् आप मन द्वारा केवल इस परिचित ज्ञान का प्रयोग करने पर, किसी प्रकार भी मानसिक पाप करने की ओर प्रवृत्त नहीं होगे और पवित्र मन/हृदय वाले पवित्रात्मा कहलाओगे। ऐसा होने पर सजनों आपको कभी भी मानसिक कष्ट नहीं भोगने पड़ेंगे यानि विसूचिका सूचिका बन जाएगी और आपके लिए जीवन की हर परिस्थिति में समभाव पर स्थित रहते हुए प्रसन्नचित्त बने रहना सहज हो जाएगा। कहने का तात्पर्य यह है कि प्रभु कृपा से आत्मिक ज्ञान रूपी

प्रसाद मिलने पर मन में प्रभु संग घनेरी प्रीत पनपेगी और आत्म व मनोबल इतना बढ़ जाएगा कि जीवन का कठिन से कठिन कार्य आत्मीयता के बल पर सफलता से करने के योग्य बन जाओगे। ऐसा होने पर आपका अंतःकरण यानि मन सहित बुद्धि, अहंकार और चित्त सब निर्मल हो जाएंगे और अंतर्दृष्टि खुल जाएगी। इस प्रकार मस्तक की ताकी खुलने पर आत्मस्वरूप का साक्षात्कार हो जाएगा। सजनों जानो जब इस प्रकार मन में शाश्वत सत्य प्रकट हो गया तो आपका तीनों तापों का रोग मिट जाएगा। इस प्रकार मन उपशम हो प्रभु में लीन हो जाएगा और आपको अपने नित्य सत्-चित्त-आनन्द स्वरूप का बोध हो जाएगा। इस तरह सुरत शब्द का योग होने पर आपकी जीवन यात्रा सुगम हो जाएगी और आप हर्षा उठोगे।

इस महता के दृष्टिगत सजनों मानो कि अपने जीवन के प्रयोजन की सिद्धि हेतु यह कुदरती ग्रन्थ हकीकत में पढ़ने योग्य है। इसका स्व अध्ययन के स्वभाव में ढलने पर ही आपके अन्दर अध्ययनेतर कल्याणकारी कार्यों में रत होने के प्रति रुचि जाग्रत होगी और आप धीरे-धीरे स्थिरता से आत्मीयता के स्वभावों पर मजबूत बने रहने में समर्थ हो जाओगे।

सुनिश्चित रूप से सजनों आप ऐसे समर्थवान बनने में कामयाब हो जाओ उसके लिए आपको स्व अध्ययन द्वारा प्राप्त ज्ञान का मनन करने के साथ-साथ, अपनी बुद्धि द्वारा उसका निश्चयात्मक बोध भी करना होगा। ऐसा करना इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि इस क्रिया को एकाग्रता से करने पर आप द्वारा प्राप्त ज्ञान के सम्बन्ध में मानसिक चित्र बन जाएगा। जानो इसी को ही, समझ-बूझ कर, मन में स्थिर की हुई धारणा कहते हैं, जिससे ख़्याल उस धारणा के प्रति ध्यान स्थिर हो जाता है। इस तरह इस क्रिया द्वारा शब्द ब्रह्म विचार आपके मन को भाने लगेंगे और आप उन विचारों अनुकूल सब कुछ न्यायसंगत करते हुए, अपने जीवन का हर निर्णय विवेकशीलता से लोगे। इस तरह आपके लिए जीवन के विचारयुक्त सवलड़े रास्ते पर चलना सहज हो जाएगा क्योंकि आपका मन-चित्त उन सद्-विचारों में लीन रह स्थिर व प्रसन्न अवस्था में सधा रहेगा।

सजनों जानो एक चिंतक की तरह ऐसा अभ्यास करने से आपकी विचारशक्ति यानि चिंतन क्षमता अत्याधिक बढ़ जाएगी। परिणामतः आप विवेकशील बन, किसी भी विषय पर न केवल स्वतन्त्रता से विचार करने के योग्य बन जाओगे वरन् अपने उन विचारों को अन्यों के समक्ष स्वतन्त्रता से प्रकट करने में भी समर्थ हो जाओगे। सजनों इसे ही चिंतन और अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता कहते है। इसलिए तो कहा गया है कि 'एक विचारक यानि चिंतक ही अध्ययन द्वारा प्राप्त किए हुए ज्ञान को सर्वहित के निमित्त समझदारी से प्रयोग करते हुए उस विशेष विषय का पंडित कहलाता है'। अतः सजनों मानो कि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में युक्ति सहित विदित शब्द ब्रह्म विचार विचारणीय व स्वीकारनीय हैं क्योंकि केवल इन्हीं का मनन करते हुए ही हम अपने जीवन का उद्धार सहजता व सरलता से कर सकते हैं।

इस तथ्य के दृष्टिगत सजनों हम सब सजनों से पुनः प्रार्थना करते हैं कि स्व अध्ययन के उपरांत सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में वर्णित आत्मिक ज्ञान को धारण कर, उसका समुचित लाभ प्राप्त करने हेतु, मन ही मन उसका बार-बार ध्यानपूर्वक विचार और विवेचन करना सुनिश्चित करो और इस प्रकार चिंतन करने के स्वभाव में ढल विचारशील बन जाओ। सजनों जानो कि ऐसा पराक्रम दिखाना यानि प्राप्त किए गए सद्-ज्ञान का गंभीरता से चिंतन व मनन करना हमारे लिए इसलिए भी हितकारी है क्योंकि ए विध् ज्ञान प्राप्ति के उपरांत, उसे समुचित ढंग से, पूर्ण आत्मविश्वास के साथ, सद्ज्ञान से अपरिचित लोगों तक यथा पहुँचा परोपकारी प्रवृत्ति में ढलना सहज हो जाता है।

इस बात को समझते हुए सजनों हमारी आप सबसे प्रार्थना है कि जीवन के इस पड़ाव में तो कम से कम अब आप स्व अध्ययन द्वारा आत्मिक ज्ञान प्राप्त करने के काम में दृढ़तापूर्वक जुट जाओ। याद रखो ऐसा लगातार परिश्रम दिखाने पर भौतिकवादता से विकसित हुए रजोगुण और तमोगुण से निवृत्त हो जाओगे। इस तरह ऐसा मंगलमय होने पर मान लेना कि आपके हृदय में सत्त्वगुण का उदय हो गया यानि हृदय सत्य से प्रकाशित हो गया और आपके लिए आत्मज्ञान प्राप्त कर उच्च बुद्धि, उच्च ख़्याल होना किसी प्रकार से भी

कोई असंभव बात नहीं रही। ऐसा उद्यम दिखाने पर सजनों यकीन मानो कि मौजां ही मौजां हो जाएँगी क्योंकि फिर आप जैसे दृढ़ विचारी आत्मज्ञानी के मन में अध्यात्म का भाव इस तरह सुदृढ़ हो जाएगा कि आप सहजता से प्रत्येक शरीर में स्थित परमात्मा की सत्ता को जान, आत्मा-परमात्मा से अपना सीधा सम्बन्ध स्थापित कर लोगे।

ऐसा शुभ परिणाम प्राप्त होने पर आपके अन्दर स्वतः ही आत्मा और अनात्मा का विवेक जाग्रत होगा और आप आध्यात्मिक विषयों का परिपूर्ण ज्ञान प्राप्त कर व उसे आत्मसात् करते हुए अंत अध्यात्म योगी बन जाओगे। इस भ्रमरहित अवस्था को प्राप्त होने पर सजनों आप स्वयंमेव सर्वत्र व्याप्त एकात्मा मानने का सिद्धान्त अपना लोगे। इस प्रकार जब जीव और ब्रह्म यानि परमात्मा के स्वरूप का वास्तविक बोध कराने वाली अध्यात्म ज्ञान की विद्या को अपने स्वभाव के अंतर्गत कर लोगे तो आपके मन को इस जगत से कुछ भी प्राप्त करना नहीं भाएगा अपितु वह तो केवल हर क्षण, हर पल परमेश्वर में लीन रह, समर्पित भाव से उनकी आज्ञाओं को विधिवत् समझते व स्वीकारते हुए, परमेश्वर को प्रसन्न कर अपना बना लेगा यानि सत्य-धर्म के रास्ते पर स्थिर बने रह, निष्कामता से जिस कारण को सिद्ध करने हेतु परमेश्वर ने जीव को मानव रूप देकर इस जगत में भेजा है उस कारण को सिद्ध कर अंत अपने सच्चे घर परमधाम पहुँच विश्राम को पाएगा। आप सब ऐसा करने में कामयाब हो इस हेतु मिल कर बोलोः-

ओ३म् शांति शांति शांति ओ३म्

आज का विचार

ध्यान दोः-

त्रेते विच होय सेवक स्वामी, द्वापर होय भक्त भगवान।।
कलुकाल गुरु चेला कहावे, सतवस्तु साजन सजन महान।।

निवेदन

इस पुस्तक को और अधिक जीवन उपयोगी बनाने हेतु आपके सुझाव सादर आमन्त्रित हैं।

SATYUG DARSHAN TRUST (REGD.)

ALLEVIATING PHYSICAL, MENTAL AND SPIRITUAL SUFFERINGS OF HUMAN BEINGS.

info@satyugdarshantrust.org | www.satyugdarshantrust.org

Institutions under the aegis of Satyug Darshan Trust (Regd.)

SATYUG DARSHAN CHARITABLE DISPENSARIES & LABORATORIES
Multidiscipline dispensaries, labs & diagnostic centres spread in 15 cities
www.satyugdarshandispensaries.org

SATYUG DARSHAN VIDYALAYA
Nursery-XII, Co-Ed. English medium, residential & day boarding school. Affiliated to CBSE.
www.satyugdarshanvidyalaya.net

SATYUG DARSHAN INSTITUTE OF EDUCATION & RESEARCH
B.Ed. College for Girls. Affiliated to CRS University, Jind.
www.sdier.org

SATYUG DARSHAN INSTITUTE OF ENGINEERING & TECHNOLOGY
UG College, offering B.Tech. and BBA courses. Co-Ed., residential & day boarding facilities. Affiliated to J.C.Bose University of Science & Technology, YMCA, Faridabad.
www.satyug.edu.in

DHYAN KAKSH
World's first School of Equanimity & Even-sightedness. It is open to all age and gender.
www.schoolofequanimity.com

SATYUG DARSHAN SANGEET KALA KENDRA
Imparting true teachings of music and dance, open to all age and gender. 17 Centers in operation. Affiliated to Prayag Sangeet Samiti, Allahabad.
www.satyugdarshansangeet.org

Initiatives of Satyug Darshan Trust (Regd.) on Humanity and Ethics

INTERNATIONAL HUMANITY OLYMPIAD
www.humanityolympiad.org

HUMANITY DEVELOPMENT CLUB
www.awakehumanity.org